के नट्या कर्गनट के बाक्टरबाव

ध्यं अठा तक।

"কুলং প্রিত্তং জননী কৃতাথা বিষ্ণার পুণারতী চ তেন। অপার স্থিং সুখ্যাগ্রেমিন্, লীনং প্রে ত্রন্সণি বীয় চেতঃ॥"

১৪শ ভাগ

३म मर्थान

" এক এব সভাদশো নিধনেহপ্যসুষাভি যঃ। শরীরেণ সমন্ধাশং সক্ষমন্ত্র গছাভি ॥"

শক্ষা ১৮১৩ শৈশাখ মাস

যাজ্ঞবন্ধ্যা-সংহিতা। (পুকায়ুর্ভি)

ইন্ধ্যাধ্যমন দানানি বৈশস্ত ক্ষজিয়স্য চ।
আভারহোধিকো বিপ্রে যাজনাধ্যাপনে তথা।
যাগ, অধ্যমন, দান এই জিবিধ কর্মোর সম্প্রান
বৈশ্য ও ক্ষজিয়ের পক্ষে শিশ্য, প্রভিত্তহ, যাজন ও
অধ্যাপন এভজিভয় বিপ্রের পক্ষে অধিক দশ্য।

প্রধানং ক্রিয়ে ক্রে প্রজানাং পরিপালনম্।
কুর্মীন কুমি বালিক্য পাশুপাল্যং বিশঃ স্মৃত্য।
প্রজার পরিপালন ক্রিয়ের পক্ষে প্রধান কর্ম।
ক্ষিক্র মহজনী কার্ধার বালিক্যাদি বৈশ্যের পক্ষে
ক্রান কর্ম বলিয়া পরিগণিত।

प्रमा विकल्क्ष्या उग्राष्ट्रकीनम् विश्वदन्द ।

भिटेहार्व। विविध्य श्रीदशिष्ट्र का शिष्ट्र के शाहतन् ॥

ধিজশুক্রানাই শুন্তের থকে প্রধান করা। মনি তাহাতে জীবিকা নিবর্বাহ না হয় তবে বনিগ্রুভি জন-লম্মন করিবে। অপনা বিজাতির হিকাচরণ কর্মজ বিবিধ শিল্পনার্যা ধারা জীবন ধারণ করিবে।

ভার্যারিতিঃ শুচিভূতি।ভর্তা আদ্ধক্রিয়ারতঃ। নমস্কারিশ মন্ত্রেশ পঞ্চয়জ্ঞা হাপয়েছে।

পুর্বেক চতুর্বর্ণ নিজ ভাষ্যাতে রক্ত, পঞ্জি, ভজ্জাবর্গের ভরণকর্ত্তা ও পিতৃগণের আদ্ধান্ত্রায় নিরভ হইবে। নমস্কারাত্মক মন্ত্র দারা পঞ্চয়তের অনুষ্ঠান করিবে।

षहिः मा मङागरखशः (भी हिसि खिशानि खहः।

मानः मशा मभः का छिः गर्व्यमाः भगामानम्।

व्यहिः मा, गङ्य, व्यक्षिश्च, भी हे, किर्डिश्वशः, भान,

मशा, मभ, कमा এই छुलि भट्यांत का तन निशा छै छ

वता। वृक्षार्थवागरमण खाङा जिल्लाग करामारून बाहरतर मन्नीर वृद्धिमित्रमामण्डर छथा।

বয়, বৃদ্ধি, নাণী, বেশ বিদ্যা, কুল ও নিজহ কর্ণোর অনুসারে কৌটলা ও শঠত। বিবজ্জিত কীবিক্। অবলম্বন করিবে। दिव गार्मिका मिका (ज्ञागः ज कु त्मागः शिर्म् प्रकः । बाक् गोमिकीः कियाः क्ष्या मृगम्। भः नार्थिकः छत्यः।

বাঁহার গৃহে তিন, বংসরেরও অনিক উদরালের শংস্থান পাকে, তিনি সোম্যাগ করিতে পারেন। বাঁহার গৃহে এক বংসবের মধুসংস্থান পাকে তিনি আক্ষোমিকী ক্রিয়া (সোক্ষ্যাগের পুরের কর্ত্তবা দশ পৌর্নাগাদি ক্রিয়া) অনুষ্ঠান করিতে পারেন।

नगः (सं जागातित कथा।

১৮:३ नकाका ठालशा (गँग । घडेनातानि तुरक कतिया थं ७ । ल गंदाकाटन गिलिया (गल। गर्। गायत নাট্যশালায় কভ নৃত্ৰ গভিনয় দেখাইয়া বিগ্ত বৰ্ষ **च ी: इ**त शंकीत शक्कें छुनिया (शल । थंधकाल महा-इ: লের চুরণে উপহার দিবার জন্ম জগতের কত হাঁগি। काता कुड़ाईसा पूल्यांना दांशिसा नहेसा जन। इ भी ৰীৰ প্লেৰে ক্ষালাতে প্ৰীড়িত হইয়া বিগত বৰ্ষকে क्रमग्रामा विषाय क्रियात क्रमण क्रम माधा माधना कतिशाएक, छ्वी कीव चानत्मत हिल्लांटन ভागमान **इ**हेशा निशंख वर्षक भतिशा ताथिनात अन्य कंछ चार्नात कतिपाद्ध, किस्तु छेज्दात हे ८० छ। वार्थ कति॥ विशव ৰৰ্ষ আপনার কাৰ্য। আপনি করিয়াধীরে ২ অনন্ত नीलामशीत लीलपाउँ भिलाईशा श्वल । अक्रु जित अग छ-ভাব ত্রোতে তৃণকণিকার আয় বিগতবর্ষ কোণায় ভাগিয়া গেল, ভাহার সংবাদ কেহ বলিভে পালে 🚁 । निचक्षांनी श्रास्त्रात्र कीमन कार्तरा शर्वत हमः। रयमन छामिया गाय (भई ऋथ अनम्र कालस्यास्ट कीत कीतन छातिशा गाँठ (छ. ए. काहात माना (म सीज-**धनत्मतः श्रांककृत्म माथा कृलिया मैं। ए**ष्ट्र कुछ २ कतिया काल श्रवाङ् चितिङ चनस्र गावत मध्य म ধানিত হইতেতে। প্রতি পলে প্রতি বিপলে 🐠 ত মুহুর্ত্তে মহাকাল--- মজাগর মর্পের বিরাট গর্ভে জগং

পট প্রক্রেপানর্ভার আবার আ / একটি প্রট উল্লোল্ড হইতেছে, ইহারতি নাম নববর্ষ।

ज (अब्बाहातका निक (माम देशनाकि महाएक श्रिक উপধর্ম স্ভতের ুনিরুদ্ধে ধর্মপ্রচারকট প্রথম সাপা ভূশিয়াতিলেন। ঘোর সেচ্ছাচালিক প্লিত কল্পনারাশির বিক্সে শান্ত্রীয় সনাভন দর্গোর সাহাল্যা কীন্তন করি-বার জন্ম ধর্মাচারকই প্রথম নীর্বেশে দ্রায়ম্ম इठेशांकित्यन । भग्नधानत्कत (भाष्टे क्यापित्नतः भावतः বর্ত্তিমান দিনের কুলনা করিলে আকাশ পাভাল প্রভেদ বলিয়া বোদ হয়। তখন গ্রাণচার্ক যে ত্রত উদযাপন করিশার সূচনা করিয়াছিলেন, ভাষাতে কাহার 🕏 সহাতভূতি পাওয়া দূরে পাকুক, অনেকেরই স্নাপুর্ব কৃট্কটাক্ষনিকেশে পদে ১ লাগুনা সহা করিতে হইয়া-हिन । " बहे छैनित्म मेळाकीएड माहे स्मार्काम दिन्तु भार्यात नाकातजनक कर्ण लहेगा (छ। भना भागलाभी कतिएं ठान (कन १ " अहे जान कछ छर्माह भषाः থাচারককে পুরস্কার পাইতে হইগাছিল। এখন কিন্তু णात (मैं निय स। है। अथन धर्मधाठ तिरुत अख्याधित অনেক সহায় মিলিয়াছে। আশা ভরসার অভয় বাপী (प्राप्तिक कतिया अथन करनेटक है (यात्र विद्या कार्या-ক্ষেত্রকে বিস্তু করিয়া জুলিয়াছেন। ভাষাদের কুলে শক্তি সমগ্রেদেশের সন্মিলিত শক্তির মধুর আখাসংঘনি থাপু হইয়। আশার অমুভগর উচ্ছোলে সভেঞা হইরা উঠিয়াছে। শত দাতনা সহা করিয়া আমাদের কীৰ শক্তি বিরাট সহীয়সী শক্তির চরণ ভালে ताभिग्रः या भागिकत्त युग सूका हैगा अङ्गित क्रूड़ा हैवां व चनकान भारेताएक हेराएक चामता मग्र । भून्त कः ध ভুলিয়া গিয়া পুরাত্তন লাঞ্জনা কফাকে বিশ্বতির অভলভাগে ভুৰাইয়া প্রীতিপূর্ব श्रपरश आमता ভবিষ্যতের আবাহন করিতেটি।

মুহুর্ত্তে মহাকাল— মজাগর গর্পের বিরাট গর্ভে জগং । বিগ্রত্যারের খাদশণীর্ষিকী কুস্তমেলায় এম্নি দিনে থাবিট হইতেছে। অন্ত ইত্তকোল্ময়ী থাকুতির একটি √ভারত্যমীয় গার্য্য শর্মাগ্রানী সভার এতিঠা হইয়াছে। তে গভাই এপনে মৃত্র নি কার্যালয় স্থাপন পূর্বক, লেশে হ আর্মাণশ্ম এচা বিদ্ধৃতি প্রবৃত্তিক করিয়াছিলেন। সেই সমুয়েই হিন্দু প্রচার পদ্ধতির পক্ষপাতী হইয়া আদি আলা সমাজের সভাপতি মানাবর জীয়ক্ত রাজ নারায়ণ বস্তু মহাশয় শ সাধারণ জালা সমাজের সভাপতি মানাবর জীয়ক বিশ্বতি সানাবর জীয়ক শিবচন্দ্র দেব মহাশাকে লিখিয়াছিলেন—

whether you should adopt a strictly Hindu mode of propagation, for if you do not adopt it at once, the Arya Samajes bid fair to outstrip the Bramba Samajes, as has been the case at Monghyr and elsewhere &c. ** **

" আংগ্নাবা শীঘ্ট তিল্নী শিতে ধর্ম হাচারণাছতি অবল্যন করিবেন ; বদি এপনই এতং প্রক্তিগ্রণ না কবেন, তবে আর্থাসভা (বেরণ মুতে । অভাতি ছানে ছোনে দেখা বাইতেছে) প্রাহ্ম গালকে অভিক্রম করিনী চলিয়া বাইবে।

(महे क् खरमना शिवादक, श्रूनताव क खरमना चामिता। - आहे बाम गर्स मर्रा । वार्यामर्यात व्यारम्बान किताश केम जित शार्थ शांतिज् इन्हेगारह, तमरभाव त्लारकत चार्या-- বর্ণের দিকে মতিগতি কিরূপ ফিরিয়াছে, ইংরালি महाखात कीमन पूर्व किंग कतिया सन्त्री तकात कना াকিরণে হিন্দুর অন্তরাত্ম। বিচলিত হয়, সে সমন্তেরপূর্ণ भतिहा। गर्भागिनिगाभक आहेरात आस्मालरा म्लाहे ক্রপে পাওয়া গিয়াছে। মতীদাহ উঠাইবার সময়েও ত আন্দোলন হইগাছিল, কিন্তু এমন দেশবাপী चारमालन, जमन पहोराज २ श्रांजिनन, जमन है दार्जिन শিকিত সম্প্রবায়ের ধর্মগুক্তিমূলক প্রতিবাদ আর কথনও হয় নাই, ইহা একরণ সিদ্ধান্তিত হইয়া शिशार्ह । मञा वर्षे, जारमालन जन्नाय, कतिया ताजा निक ताक्रभिक्तिं (प्रथाहेतात जना चाहेन शाम कतिएक बाधा इहेलान, (कनमा कोहेन शाम कता ताङ्कात मण्युर्ग অক্তিয়ায়ের মধ্যে। কিন্তু রাজা ভিতরে ১ ইহা ত

विशित्तन, आहे जाहित्नत कना धकामगृहित मान किन्नण ভয়ানক অস্স্তোস জনিয়াছে। এই রুণ দেশনাপী অসক্তোস মে কমিনে, রাজা সংগ্রাকুনিচেত পারেন নাই। मात के साठे देवलि विलया जिल्लान, कर्न कछ क गुर्भ अर्थ-ভৃক্সক্যাদের লোক এই গাইনের বিরুদ্ধে চীংকার कीतरव नरहें, किस्त (मर्मुत मिर्किष्ठ मंख्यानाश हेहात. জন্য গণ্রপটকে আ শুর্বিল করিবে। বিস্তা দেখের ুস্পিকাংশ শিক্ষিত ব্যক্তিই যুখন আইনের বিরুদ্ধে তীব जारत शाल्काम कतिहमन एथन अवर्गार्कत क्रिमक ভাঙ্গিল, জম ঘুচিল। কিন্তু গাইনু মুখন প্রেম ১ইয়াছে ख्यन थाम कति एक इं इहेर १ कोहरल (श्रिष्ठिक [मान] तकाश शाकित्य गा, जाइ नी जित तथाय ही रहेशा अवन्री মেণ্টকে আপাতত আইন পাস করিছত হইল। ভবিষাতে अहे (मग्नाशी चाल्नालानत क्षां गत्न क्रिया क्याश्र প্রজার অগত্তোষ রৃদ্ধির কথা ভাপিয়া এতৎ সহত্তে शन्तिकित्क निर्मित्र मानगान क्टेट इहेरत । गन्न व्हिष्ट वश्रातिक वाहित्वत वाधिक थालियाम इक्सार्ह, वर्धित শ্রাণভাস্মিতি **হট্তে** মেমন অভিনাদ इरेग़ाएक, ८७भन शक्षातानि धारमण इरेडि स्मानारे, हैशत कारण करा के वर्ष इंडेट्ड हिन्दू मर्स्यात श्राहत क्षान ষঙ্গেই অধিক পরিপ্রা করিয়া আসিভেছেন তাই আইন भगत्य वात्रहे भगारमालन धारलकत इहेगारह। जनन पञ्चातानि अतिए जात्मानन याहाराज तीजियाज **. इ**त्, ভাহার ব্যবস্থা করিতে হইবে। আর্যা দক্ষের আক্ষোলন সম্বন্ধে গভটা উপতি হইয়াছে, কাগাাংশে ভছটা হয় নাই, এই রূপ মুঁ:হারা আৰু ক্লপ করিয়া পাকেন, তাহা-रतत कथाहै। अकट्टे विहास कतिया स्तिथिएक हाहै। डीहा-रतत हेश है कि अधिक्षास त्य कहे आत्माल हुनत करन গুছে ২ একবারে প্রব গ্রহ্মাণের মন্ত এহাপুরুষ সমাজে ভাৰতীৰ্ ইইবেন্ শুক্দেৰাদির মন্ত মহাযোগী আকাশ कुँ जिया हिला या है तन । अहे तन या होता हा हिन, हीहाता भूना गार्थि मरनाइत छिलान वैभावेटक ठारहन,

ज भारतम पिछि । मत्रक्षा के शिता, जकरारत है पूण-मिल्ला मन्द्रा करीत लग्न कि एक्षा के वहा है एक । दिन, रिशामणी हहे एक गोनः एक कि ग्रिन् भार्तिक भन्नारक पूनतास के शिता रिशामणीत निर्केट फिताहेसा छकान वहा हैसा बहस। साहर कि कथन ७ मछन ?

' ध्या मणा मंगणित बारमहत्ता (मरम यिम धर्य-निष्ठीत छात छेनी भित्र ह्या, श्रिश्मा छिम्भी छेळ् खल लाम्हाइड मणाळात गित्र यिन कि फिल्ट शित्रमाद्य छ-द्या मिळ ह्या, आ छोत छात्रात मिन छेम्न छिम् छात छोत बार्या भर्या भरायोगित्यत मृत्य वामद्यान, छात्रा श्रीत छहम छ वर्ग निश्चित स्पर्य भित्र छ। छ क्र का यिन मृत्य ह्या, छाट्या हहेत्य हे त्यात धर्या भणात छ छम्या शिङ हस्ता छाट्या हहेत्य हे त्या प्राप्त छ छम्या शिङ हस्ता धर्या मित्रमा थ कित्रमा यान, छाह्या हहेत्य धर्या मणा नित्य म बार्या भराय कित्रमा यान, छाह्या हहेत्य धर्या मणा नित्य म कित्रमात छाह्या धर्याता छात्र स्वामा छात्र स्वामा छात्र स्वामा आ कित्रमात स्वामा भर्याता छात्र स्वामा छात्र स्वामा छात्र स्वामा आ

নিগত নর্ধে ধর্মদক্ষীয় আন্দোলনের মধ্যে সহ্বাদআইনের আচ্ছালনই স্মরণীয় ঘটনা। এই আইন পাস
হ্রায় গাসানের লোক্সান হয় নাই, লাভই হইয়াছে।
আসরা সৌনিদেশী বিদ্দালী রাজার রাজত্বে এত দিন
বাদ করিতেছিলাম, তাহা ভুলিয়া গিয়াছিলাম, এই
ভাল্দোলন ভাহা মনে করাইয়া দিল। ইংরাজি শিক্ষার
প্রেপ্ত বিষে আমাদের সমাজ জর্জরিত প্রায় হইয়া কি
রূপ ধ্রংস্পপে সাইতেছে, তাহা সামাজিক গণ
ব্রিয়া তৎ প্রতিবিদানাপ জাগরুক হইয়াছেন।
ইংরাজকে ক্ষর্ফ করিবার জ্যুই হউক বা যে কারণেই
হউক ইংরাছি সভ্যতা ও বিলাদ্যামন্ত্রীর প্রতি
লোকের বিশেবদর্ভি জ্যায়াছে । স্বধ্রারক্ষা ও
স্বজাতীয় ভাষার পুঞ্জি দাধনার্থ দেশের ধনী সম্প্রদার
স্পানুকর হইয়াছেন। তাই কলিকাতায় শ্বর্থন

তিকিয়া যাহা শিপে, তাহা কণাও ভূলে না ভাষা
মক্ষাগত হইয়া যায়। এই ছাইন উপলক্ষে হিন্দুসমাক
যাহা ঠেকিয়া শিখিলেন, ভাষা কথন ডুলিবেন না।
এই সম্মতিদী শিক্ষা ছাইন না হইলে হইভ না।
স্থানাং ছাইনি অনেক শিক্ষা হইল।

আইন পাস হওয়ায় অনেকেই নিরুৎসাই ও নিরাশ হইয়াছেন। আমরা কিন্তু ইহার কারণ বৃঝি না। বিদেশী বিদ্দ্রী রাজার রাজত্বে কোন্ কালেই বা আশা করিবার কারণ ছিল, সে এখন ভাহা নক হওয়ার নিরাশ হইতে হইবে। মহাদের সহিতৃ ধর্ম ও সমাজ সম্বন্ধে আমাদের অহিনকুল সম্বন্ধ, অদৃষ্টদোষে ভাহাদদের হাতে যখন পাড়য়াছি, তখন আমাদের নির্যাতিত হওয়াই স্থাভাবিক এই টুকু ভুলিয়া মাওয়ায় আশাভাসের নিমিত্ত আমরা রুপা মূলস্তাপ পাইতেছি। বে রাজার লাজতে আমরা রুপা মূলস্তাপ পাইতেছি। বে রাজার লাজতে আমরা রুপা মূলস্তাপ হইবে—

" গৃথীত ইও কেশেষু মৃত্যনা ধর্মাচরেৎ "।

বিন্দু সমাজের গৃহশক্রগণ সন্দাই চিত্র অনুসন্ধান করিয়া নেড়াইতেছে, বিধন্দী 'রা,জাও ভাষাদের পরিদর্শিত ছিদ্রের ভিতর দিয়া সমাজে ইস্তক্ষেপ করিছে শোলুপ ইইয়াছেন, সমাজকে উৎসন্ধ করিবার জন্ম শাণিত কুঠার সন্দাই উদ্দোলিত করিয়া রহিয়াছেন। ইতরাং এসন অবস্থায় বিশেষ সতর্ক, বিশেষ দৃচপ্রতিজ্ঞ, বিশেষ অধাবসায়শীল না ইইলে সমাজের ধ্বংস অবশ্যন্তাবী। হিন্দু সমাজে গদি পুনরায় সামাজিকী শক্তি ফিরিয়া আসে, ভাষা ইইলে উক্তরণ শত সহজ্ঞ আইনেও হিন্দু সমাজের কিছুই ইইবে না । প্রতি দেশে প্রতি নগরে প্রতি গ্রামে সামাজিক পঞ্চায়ৎ প্রস্তুত করিবার বালকা ইউক । বে ব্যক্তি পরিবারচ্তে করিবার বালকা ইউক । বে ব্যক্তি কর্মান সম্ভ্রের উপর আঘাত

করিতে চাহে, তাহার পাঞ্চার এক বেশ ইওয়া তাচত।
সমাকে নানারূপ সহাটোর অপকর্ম চলিতেছে সমাস
সে সমস্তের প্রত্তীকার করিতেছেন না বটে, কেন্না
সমাল সে সমস্ত বিষয়ে উলাসান। কিন্তু ত্রী কাভির
মান্যপ্রথের হানির মন্তাবনা হটলে হিল্মু প্রাণ পর্যন্ত
পাণ করিতে পারেন। ইতরাং উক্ত বিষয়ে সমালকে
বাধ্য হইয়া লামত হইতে হইবো নহিলে আর কেন্ন্র
উপায় নাই। কেবল এক সামালিক শাসনের বলে
বিধরা বিবাহ সমক্রে পরোক্ষ রূপে হাইন হইলেও
ভাহা সমালে চলে নাই। পুরেসকার দশ্যনরের সম্মতি
ভাহা সমালে চলে নাই। পুরেসকার দশ্যনরের সম্মতি
ভাইনও কেবল সামাজিক শাসনের গ্রেনই বিগত
ক্রিশ বংসরের মধ্যে কার্যা পরিণত হয় নাই।
হতরাং সামালিক বন্ধন দৃত্তর ইইলে বর্ত্তমান অইনের
বিশ্বয়ী শক্তি নিশ্চমুই শুমাজে ক্রিয়ার করিতে প্রারিষে
না।

নিগত বর্ষ এক প্রকার কাটিয়া '(গল । বর্তুমান
নাৰ ব্যাল প্রান্তারক চতুর্দ্ধ বর্ষ বয়দে পদার্পণ
করিলেন। নানা বিল্ল বাদা অতক্রম করিয়। য়াহার
কুপার গর্গপ্রারক দীর্বজীবী হইতে পারিমাতেন,
সেই পরাহ পর পরম গুডুকে প্রনিপাত করি । অনুব্যাহক ব্যাহক বর্গের জাশীব্যাদপ্রভাগ্রিল মাগায়
কাইয়া আমরা নববর্ধে জামস্ত্রণ করিভেডি।

(নিবেদন—বিভ্রমান বর্ষের মুল্য সাঁহোর। হৈছে সংক্রাপির মধ্যে পাঠাইবৈন, ওঁছোনের ভাক মাশুল দিতে হইবেনা, অর্থাৎ মাঁহোরা এ। ১০ বা ২। ১০ অথবা ১। ১০ ম্ল্যের কাগলেব প্রাহক, ভাঁহাদেব ব্যাক্রমে ৩১, ২১, করিয়া মনি ভার্ডার পাঠাইলেই ১ইবে। ধর্মান্তারকের প্রাহক সকলেই ধর্মান্তা, অনুভাই পুনর্ক সকলেই ধর্মা কার্যের সহায়তা জন্ম শীন্তে মুল্য পাঠাইরা। তথা করিবেন। ইহাতে গাহক ও প্রকাশক উভয়েরই ত্রিধা।)

नव-र्य ।।

যাহা গিয়াতে ভাগা কি আগার আগিবে,-- মথন ভিল তথন ভাহার সম বায় নাই, তাঁহার খাসাদ (भूगन मान । महें | इसा लाई नाई, बारन अंक नात छ नस नाई নে নীমনটি পার পাইব না, লাবি নীই মে জলত্রোতের মতন সময় ভাষিয়া মাই কৈছে হয়ত আর ফিরিবে না, আই শেলা তৃষ্ণার প'রতৃ'প্ত করি। মেই• ছতৃপ্তিকর অগচ এখ স্থান্য অতীত খাবার কি গভাবন্য বতীনারে নিশিনে 🔊 শুলিয়াছি জগৎ চক্রের সায় মুরিভেছে। गाहा हिल. छाठा है औरह अर छाठा है शांकरत. লুতনের সৃষ্টি থিতি বিনাশ নাই, নুত্র প্রিয়া কোন किहुई इंग्राडि, इडेरन मा अनः इडेर्ड ५ शास्त्र मा অবস্থার পোনঃপুন্য সংঘটনে কগতের স্থিতি। যেমন धानन नेपीरव्यार्ड कार्छभशामि क्यनवना जागिरन्छ. ভুনিতেছে, আৰার লাগিখা উত্তিতেছে, ঘুরিয়া ২ তাঁরে, লাগিতেছে আবার ভাগিয়া যাইকেছে কেননি অবসার পরিবর্ত্তনে উলটি পালটি ভাসিয়া, ডুবিয়া ঘু'রয়া সৃষ্টির কুর্ত্তি লবং পরিণতি ইইতেছে। যাহ। ছিল [®] ভাষাই जार्ड जनः गारिता

• স্থি দ্বিত অলাধের কথা শুনিয়া লামুতেছি,
কিন্তু গাত এবং পরিণতি শৃতীত অনা কিছু লাছে কি দ
এই লাবরাম জনবরত গতি কোথা ইইতে আমিতেছে,
কোথায় মাইবে দ একটি বর্ম ছবিল, বু'র আর কিবিবে
না। এমনি জলবিন্দ্রাতবহ মেনটা ২ করিয়া কত
কুর্ম কত শতবর্ষ, কত সহত্র কর্ম—কোটা ১ বর্ষ কোথায়
পাতত ইইয়াছে, কেন এমন করিয়া চলিয়া মাইতেছে
কে বলিবে দু মনুষ্য-স্মৃতিপটে প্রথের, ছঃথের কত
কল্পরেখা লাপ্ত ক একটি করিয়া মে সকল্প কি শ্বির
ইয়া লাকে দ এক একটি করিয়া মে সকল্প কি শ্বির
ইয়া লাকে দ এক একটি করিয়া মে সন শোকগাণা
কাণের বুজ্মিটুকা কোলে লুক্মায়ত হইতেছে । কেন
এমন হয়, কেন এমন মায়, পুনঃ পুনঃ এমন
করিয়া কেন জাগিতেছে, জাতীয় শ্বভিপটে কেন পুনঃ

পুনঃ আঘাত করিয়া, কলকৈ ত করিয়া—মলন করিয়া চলিয়া যাই তেতে ? বর্ষের পর বর্ষ আসিল চলিয়া গেল, জ্বংথর, শোকের, যাজনার, দরিজভার পাসারা লইয়া, জ্বাবিজ্ঞভা, হীনভা, ভীপ্রভার উপঢৌকন লইয়া, ক্ত বেশে কভ ভাবে কভ বংশর আমাদের জাতীয় জীবনের উপর দিয়া হিন্দুগণকে দলিত—ব্নাণত — পীড়িত করিয়া চলিয়া গেল যাহা গেল তাহা জার আসিল না, যাহা লইয়া গেল তাহাভ ত ফিরাইয়া পাইলাম না। কিছা গৈ হ্রপনেয় কলকরেরখা রাখিয়া গিয়াছে এখনত ত তাহা বিধেতি হইল না। হিন্দুর্ব ভাগ্যের সেমসীলেপ বিন দিন ঘোরতর অসর-কৃষ্ণ হইয়া উঠিতেছে। চক্ত গ্রহণের ন্যায় এই স্ক্লায়তন কালিয়া লেখা ধীরে ই আনাদের নিকলক সৌভাগ্যশলীকে প্রাণ করিতেছে। চিরাক্র নার বুঝি স্কিকট।

वर्धित (भाष्य, शखरनेरतत कथा ভाविया, চমकिछ **इहेशा यथन बाडील भर्यात्माहनाश शत्र इंहेटलं हेल्हा** एश ज्यन्हें बहे इहिं क्या मत्न পड़ে। मनूमा पंर्वमात्न হুবী থাকিতে পারে নাকেন? কোটাখন হইলেও তৃষিত চাতকের ন্যায় ভবিষাৎ—আকাশে হথের জলদ-খণ্ড দেখিতে চঞ্চল হয় কেন ? বর্তুমানকে ধিকার দিয়া স্থপ্ৰমায় ভৰিষ্যৎ স্থা প্ৰতিমাকে আলিখন করিতে ছুটে কেন 🤊 আমাদের যাহা ছিল তাহাতে আমাদের পুর্ব পুরুষগণ সন্তুপ্ত ণাকিতে পারেন নাই কেন ? অন্ধকার-পূর্ণ দেশে, অরূগণের স্মাজে এ "কেনর" জ্যোভিলেখা কে দেখাইতে পারে ? একটি বংসর চলিয়া গেল, হ্রথের নহে, ছঃখের। মনোভঙ্গের কত বিষয় ক্রোড়ে করিয়া চলিয়। গেল ভেতাচ কি জ। নি কেন ভবিষ্যতের আতি मृष्टिभाड कतिरें अभागेत कणे कि इहे एक हा दिनान् |বভীবিকা আমাদের জন্য ভবিষ্যৎ-ক্রোড়ে শঞ্চিত আছে ভाइ। विभाजाहे कात्नन । ननागरजत आमत मरकात করিতে হয় ; সমান সৌধন্য দেখাইতে হয় কিন্তু ব। শাণথ দেখিতে ২ ছ:গ – কন্ত – যাতনা চাপিয়া হ্মধের আশায় ভারষাভের কোলে দৃষ্টি পাত করিতে ২ আমনা এখন চারিদিকেট অদ্ধকার দেখিতেতি। ভরসাধীন উৎসাধ্ধীন উদ্যোধীন হইয়া ঔনাসেয়ের অন্তম্ভলে পর্কিয়া আছি।

ইংরাজীতে একটা কথা প্রচলিত আছে সে History repeats itself । যাহা একবার ঘটিয়াছে তাছা আবার ঘটিয়াছে তাছা আবার ঘটিয়ার, একবার যে অবস্থায় লোকে পতিত হটয়াছিল টিক সেই অবস্থা হয়ত শতবর্ষ পরে আবার হইবে। ঘুরিয়া ২ ফিরিয়া ২ ঐতিহাসিক বিষয় আসিতেছে, যাইতেছে আবার আসিবে । ইহা প্রকৃত কি নাজানি না কিন্তু বুনিয়াদী ঘরের পক্ষে ভরসা বাকাবটে । কিন্তু আমাদের কোন্দিন আসিতেছে ! কালাগাইছে, যে দিনে হিন্দুর দেবদেবীকে চুর্প করিয়াছিল সেই দিন ! অথবা দিলীপর আতিরঙ্গুজীব যে দিন হিন্দুর গণকে পীড়ন করিয়াছিলেন সেই দিন ! অথবা দিলীপর আতিরঙ্গুজীব যে দিন হিন্দুর বাদী বৌদ্ধ অশোক যে দিন ভাততবর্ষের স্থাট হইয়াছিলেন সেই দিন ! তাই দাশজিত হইয়া ভবিষ্যতের দিকে ভাকাইতে হয় ৷ ভারতের দশদশা হইয়াছে এখন কোন্দা দিনি হিনিবে ভাহা কে জানে !

এসনবর্ষ! চিরদিনই তোমকে প্রভাদ্গমন করিয়া, আদর আপ্যায়িত করিয়া। গৃহে লইয়া আসিয়াছি।
চিরদরিচ্চের কল্পনার চক্ষে ভূমি কত হুখের চিত্র অলিত করিয়া আমাদের সম্মোহিত ফরিয়াছ। আর হিন্দুর মন আশায় ভরদায় ফুলিয়া উঠে না. আলে ২ আমরা দাগর-গর্ভে ডুবিতেছি। মনে হয় না যে আমরা কথনও হুখী হইব, মনে হয় না যে আমরা আবার গাল পুরিয়া ইাসিব, মনে হয় না যে আবার ভাই ভাই এক হইয়া, ঘরের পরের নিজের করিয়া। মিলিয়া সিশিয়া থাকিতে পারিব, মনে হয় না যে আবার ধর্মগতথান হইয়া ধর্মের সংসার পাতাইয়া ধর্মের দিবাল্যোতিতে জগৎ বিত্র করিব। বিলাসের প্রচিত চেউ আসিয়া আমাদের আঘাত করিতেছে, অহ্মুণতা লাম্পটেয়

নহাবিষে আমরা 'অর্জার হ ইর্লাছ, ছিল কছার শ্রন
করিয়া আর হংশের ঐবর্গের অপ্প দেখি না । এস
নাবর্ষ ! বা ভাকিলেও ভূমি আসিবে, না চাহিলেও
ভূমি ভোমার কার্যা অল্লে ২ গাণন করিতে থাকিবে।
পিনাত: যে বজ্ঞালিশি ভোমাকে দিয়াছেন ভূমি বজ্ঞানির মসী করিয়া বজ্ঞানির লেখনী করিয়া আমাদের
ভাগ্যে ভাহার প্রতিলেখ লিখিবেই । জানিনা একার
কোন কথা লিশিব্দ্ধ করিবার জন্য আনিয়াছ, কোন্
আননভির সূচনা করিতে নিষ্ক্ত হইয়াছ। বড় ভয় হয়
পাছে আত্মহারা হই, অ্তিশ্না হই, ভানহীন উল্লাদ
উচ্ছেশ্ল হইয়া উঠি।

অনাথের নাথ! দীনবন্ধু! ডাকার মত তোমাকে ডাকিতে পারি না তাই ভূমি আমাদের সাড়া দেও না, ভাই এত বৈ দুন ধনি ইমি ভানতে পাও না—কিন্তু তেমন করিয়া ডাকিবার শক্তি কে দিবে, সে ভাব ভাঙ্গি কে শিথাইবে, তুমি বৈ কৈ আর আমাদের আছে । আছু! তুমি বল দেও! বুদ্ধি দেও! দৈহাঁ দেও! সহিফুডা দেও! ডোমার আশীকা দি পাইয়া সেন আমরা সকল বিপদ্হইতে উত্তীর্ণ হইতে পারি।

হরিদ্বারে মহাকুন্তমেলা

রাশি চক্র খাদশবার পরিজ্ঞান করিলে সহাক্স্থ-বোগে মহাবিষুব সংক্রান্তিতে হরিখারে এই মহামেলা হইয়া থাকে। ১৮১২ শকালার শেষ দিনে এই মহা-শক্ষিণনী হইয়া গেল। এই মহাকুষ্কযোগে হরিবার-ক্রক্রকুণ্ডে স্নান করিবার জন্ম ভারতবর্ষের উত্তর পুনর্ব দক্ষিণ পশ্চিম ও মধ্য বিভাগ হইতে ধর্মপ্রাণ হিন্দু আবাল বৃদ্ধ বিভা সমবেত হইয়া ছিল। লোক সকলের রক্ষণাবেশন ও শান্তিরক্ষা করিবার জন্ম জিটিস গ্রন্থিনেট নিজোচিত ব্যবস্থা করিতে ক্রেটা করেন নাই। পথ, ঘাট, মঠ, মাঠ ও যাত্রী দিগের থাকিবার স্থানাদি সভিশ্যা পরিকার রাশা হইয়াছিল। অভি জনতা বশত: লোকের ঘাত প্রতিঘাত জনিত কাহার ও কোন প্রকার অহবিধা ও কট্না হয়, তক্ষ্মী, অভি ভল্র ব্যবস্থা করা হইরা ছিল। চে ব্যাগদি নিশারণের জন্য यासून मनानकात शासाकन, खाँचात् कान. धाकाव छाछि হয় নাই । লোকে ্রীড়িত হইলে তাহা দিগের **চিকিৎশার জনা, मधी • ज**ह চরচুতে হইয়া হারাইয়া কোলে, লোক সকলকে নিজ বাসহানে পৌতাইয়া मिनात कना गर्णी (यात्रा तानका वहेश। किल। खंडे मकन কার্য্যের জন্য বহুসংখ্যক পুলিস কর্মাচারী, ডাক্তার, মেথর নিষোজিত ছিল। মল মূত্র ভঃ।গের জন্য শভ শত টাটী বা পায়খান। প্রস্তুত করা হইয়াছিল । এই সকল টাটা যাহাতে সকৰ্বি। অতি পার্কার থাকে তজ্জন্য গ্রণ্মেণ্টের অভিশয় যত্ও দৃষ্টি ছিল। হরি-দার স্থানটা হিন্দুর চকে যেমন প্রিঞ্গবর্ণনেত বাছ্তঃ তাহাকে তাদৃশই নিশাল রাখিবার ব্যবস্থা করিয়া-**ছिल्लन। गृहच्चित्रित के माधु मध्यागी विद्यात** शाकियात স্থান ভিন্ন ভিন্ন দিকে নিরূপিত ছিল। কন্থল,• জালা-পুর, ছরিম্বার, গঙ্গার পরপার ও পক্ত তের উপরিভাগের কিয়সংশ পর্যন্তে তীর্থার্থীগণ কয়েক দিন নিজ निक निनाम निकाशन केतिया हित्तन। तम्म (मेमा खत হইতে অনেক ৰণিক ব্যবসাদার নানাবিধ সামগ্রীসভ্ আ। সিয়া দোকান খুলিয়াছিল। ॰ মিফালাণি তীর্ণাগভ ব্যক্তি গণের আহারাদির জন্য যথাযোগ্য জনায়াসলভ্য ছিল। সংক্রেপে বলিভে গেলে ভীর্থাগভগণের যাহাতে কোন রূপ কেশ না হয়, তাহার সমস্ত গ্রন্থাই উভম रहेशा हिल।

এই সময়ে • হরিদারে প্রাকৃতিকী অব্দ। নাজশীতোষ্ণ। দিবাভাগ উত্তাগযুক্ত ও রাত্রিকাল অভিশয়
মশীতল। চারি দিকের পর্বতমালা তরুগল্লাদিতে
মুশোভিত থাকায় এবং ভগবতী ভাগিরথী কোপ্রাত্র সংস্থাতো ও কোথাও ত্রিস্প্রোত। হইয়া নির্মাণ কল তরঙ্গে তর্তর সেপে প্রবাহিত হওয়ায় স্থানীয় দুশ্র অতি মনোহর বোদ্হইল। এত সাধু এত সলাসী, এত মহালা কেব কথন ও এক তে আর কোণাও দেখে নাই। এই মহানেলা সাধুদিনের মহাসালিলেনী বলিলেই হয়। খাদশ করি তে মুল্মিলার মহাসালিলেনী বলিলেই হয়। খাদশ করি তে মুল্মিলার কিব করে। আদশ করি তে মুল্মিলার কোলে এক এক বার ক্ষালের হইলা পাকেন। এই প্রার কোলে এক এক বার সামিল্র ও ইলা পাকেন। এই প্রশা করিবার ক্ষালে গ্রুক্ত মহারি মলা দর্শন করিবার ক্ষাল গ্রুক্ত হার জিলার হিলেগালের মাদ তিলোল আর উলাকে ও ইতেক। হিল্মিলার মাদ তিলোল করিছে হল, মাদ পাকতে উলাগে ক্ষাল জীবন সকল করিতে হল, তাবে এই সহাসহার্মিলায় সমাগ্র ভিন্ন জার উত্তম স্থাপা সংযোগ হওলা স্বাহিন।

এই भहारमलात उंशल एक विराधत ए। मध्यारका लग করিবার জন্ম মিরাট হইতে ও সাহারাণ পুর হটতে সমাগত গর্মভামগুলীর ৫ দিল্লী হইতে সমাগত ভারত-क्षयं भद्दामध्यात महाभिर्यभन ६ हैशाहिल । आर्ड्यक সভাতেই হুগোগ্য পণ্ডিত মণ্ডলীর শান্তীয় ব্যাখ্যান ও ৰ জ্তা হইয়।ছিল। কুমার পরিব্রাঙ্গক মহাশয়ও হৃদয়-আহিণী বক্তার পারা মিনাট সভা ও ভারত শম মহাসওলে ভোতৃ গরের তৃতি সাধন করিয়াছিলে। । প্রতি সভাতেই ব্যাখ্যান শক্তা শুনিবার জন্য কয়েক দিন সাধু সন্ধানী ও গৃহস্থগণের অতিশয় জনতা হইয়া ছিল। हिन्तूभग्रानिस्तामी औरोधान शामतीमानत छ मधानकी मुरल त तक् छा ७ छ। त २ रहेश हिला। मधा-नमीश्रण हिनेश्र शिख्ड गर्णत गहिल भाखा निहात कतिन बिला निष्ठाणन निभाहित, किन्नु कोन पिन्हे निहादत ভাগাসর হয় নাই। বস্তঃ পণ্ডিত গণের সহিত বিচার कर्तियात छे भर्य के ममर्थ गांकि छ। हा जिल्लात मर्था दक्र नारे। महाताका बात बात्रामीरमञ् छेदमार् ७ छेरमार्थ

बार्ड महारमनाम ताजा ताट्य न्दर्शत श्राजान चरशका 9 मधामी मान्मरणत अभाव आवल विद्यादना**य** •ইল।,আখাড়াবগরী মহাস্তগলের সাজ সজ্জা **এধান** श्रामान ताकामिरात करिकार्ट कमिक छैं। के समास्त्र । হাতী, ঘোড়া, উট, নাগারণ, দামামা, ভূরী ভেরী প্রস্তির ভূমুল ব্যাপারের ও খতেরক আখড়ায় সহজ্ঞ সহল্ল সাধু গুহুত্ব অভাগেতের অনির্ভ অগণান দুশনে भागात्मत इत्रश रूरमाह ७ हेल्लामम्क बहेल । नाना चारनंशिया, मझनी, अर्घाती, इकिंगार गणी. ठाएमती, लक्ष्म (भी । इंडी, भत्मा, क्षादिशी, कताती, অওঘড়, গুণড়, প্রড়, রুপড়, ভূগড় কুকড়, উপড়, ঘর बाडी अडबी, मननाया मधार्गी, माइलधी, नानक-পার্ছী, কবির পার্ছী, অবসুত, জ্রেলাচারী, হংসা, পরমহংসা, थाकी, कठाभाती, काभक:हो (याणी, आपि कछ त्थानीत कड महद्य गह्य महाभी (य भामिशा हित्सन छ।हा নলিতে পারিনা। দেখিয়া আণ জুড়াইল, হৃদয় শীতল হটল, চফু সফল ৩ সানৰ জন্ম পাবিত হইল ∤ এই মহা-गर्धि रमनात (म भिरक मृष्टिभाज भाग रमरे मिटकर (भन भर्या, छ।न, रेनताभा, उपमा।, ७ ७ एत रकामाता ছুটিভেছে দেশিতে পাই। এই খেলা আৰ ভরিয়া ८५ शित्क मः माद्वित कीना स्थला आत छान नारम ना स्रोटवत हुन। मान, निःच्यान दमन दकानास मनासन करता ।

क्ष (मार्थ लांन कतिनात नृत्वं किन्डे लक्ष लक याची माणिया धारा भीत इस दकान क्रीम सनाकीर्ग क्रिमा कृषिमाक्ति। ১०१३ ६ मिन क्रिमाग्ड दबल ६६स 'दकाल्यानि चन्छे। श घ छे। स वित्यत्र दहेर्प दसाक द्यायः है कतिका इतिकारत एशो का हैशा जिशाएक । शास्त्रश्चीत পাড়ী কুলাইয়া ভঠিতে না পারায় মালগাড়ী e পথাদি महेंशा पाइनात शाफ़ीयल भूश्र भूश्व (शाक त्यासाई **ভরিতে হইয়াছিল।** ধেল গণে লোকের অভিশয় কট प्रेतारक नामरक करेरा। क्रिकारत काल्या श्रीए। क्हेरल्ड हा हिर्मा गठ गठ ताक मतिमा गुरेस्ट है. न्तर्नात्रके काशादक छपारं याश्व पिर्धार्ह्म गा, बार डाक देलादकत छेणात याजातक गँडा।।।त ६हे एउर ६ अष्ठ क्रण गरिनक निमा अन-श्नाम (माम दमाम बाहातिल इत्याम भागक गाळी निज विक (५भ इटे.ज भारभो वाहित ६३(७३ भारतेन नाइ। नञ्च ७० ७१। छी छ। शित्रभीत कुणाक्ष छ ब्रिष्टिम भन्नीत्म एकेत भवानकात्र भीषामि किन्ते श्रा नारे नांगरण हे श्रा । जीर्यदातन कारल शरहाक गाळी (क गार्भागाकेत निकेष १ हे (क अक बान भूत्यात शक्यानि कविशा कागा कत जिल्हें कर्य कांतर के इहेत दिल, बनर अभावना । मरकाश्वित विन भभनाभम्बान नाना अञ्चल श्रीत श्रीत श्रीत कर्यान करिया काशरक्त विकिन कर गाँग गुरमात जगा कतिएक रहेगा 48 कागरखन विकित कहा कता द्वारकत निक निक केळानीन किया गाजी निरंधत हान कात्र छ শাইবার মনা তিনটা পথ গ্রণারিত হইগাছিল। মান कार्या है विशा नाइगत अना जात नह विश्व प्र নিরাণির ছিল। মৃঁংছার। কাপড়ের টিংকট ক্রম করিবা। किंद्रिक डार्शना (य देवान भाष गाहर आगिएड शाबिर इन, शर्पत्र मार्य नार्यो श्रकान खें इ " वेयर होन" वाष्ट्रक रहेशाखन । व्याः अर्क अन्द्रतारम निमारे माहति।

ছিল। সম্মানের ভীড় মতকণ না কমিধা যাইউ, ভড়কণ या बी भिरमत अना केहे अगरताम नात उँमून ०३ व ना । এই কপ প্রাণ। গ্রনলিস্ত ন। ই ইলে গঙ্গার ঘাটে কতশভ ने ते क. ह्या, नाती ७ इन्तन नाहिक (मृत्र व्यवन भाग-विननि इहेशा चान छा। किता किता कारात गोंगा नारे। भवर्गरारहेत मधावकारी विभूल विच विशास करें পোক দকল রক্ষিত হইয়াছে। প্রপার্থনভী উল্লোল भौग भिगत दिहिंग ध्वकामाती क्यांठाती मधारामान पाकिक, मञ्जूरभत कनका किमार्किक के ज्ञाप मरक क भागिहेटन उद्भ शन्हांबर्डी अन्देताम भात उंचाक रहे है। বিটিশ প্রহর্ম ও কথ্যসারী গণ অক্লান্ত পরিপ্রানে নিজ নিজ পারণশিতার পরিচয় দিয়াছেন। কিন্তু নিম্ন-শ্রেণীর পুলিশ কর্মতারীর কিছু কিছু অভ্যাচার লে!পঃ। বিশেণতঃ তুর্বল দায়ন্ত অনির প্রতি বল প্রটোল ক্ৰিতে দেখিলা নিতাভ হুলালত হুইলান। লোকণাখন ঠিক গণনা করিয়া উঠি:ত পারি নাই : কিন্তু প্রের निछ डित शातिभार्य मत्रव (तथा है। विशा हिमा के कारका দেখিয়াছি প্রতি মেকেতে ভিন্টী পথ দিয়া স্পান্ত अनुरा २० जन सामार्थी के मनल (तथा अधिकम कात्रा পুন্ররাত্তি ২টা হইতে সংজ্ঞান্তির দিন অপর ই রুটা अमृत्यु भगन कतियात् । अहे विमात सानार्थीत अस्ता। भाकि छ त्यानम लक्षा गिम खा अन्त भिया कन दावान या । तंत्र ना १३ व जाश १ इति वास्नि निम्मान ्रार बत भगाभम इहेड। वाक्षीला (मर्म विश्वधारतत প্রণে লবার খনেক বাসালীর কুন্তমান উপলক্ষে হার-बादत गामिनात छेरमार (प्रीया भारत ३) छ। साछ कातनाम । अङ्गाशानी पृत्र भूत ८०१म ५ ई।सास्त्र भुभाभक्त इर्यान गाउँ। शतितात भ्रति । तत् भूभ निकृत इन्साः (लाक नक्षात शामितात इन्न श्वापमा २ हैं।। ज ।

बालि हिन्दिन निनी हिन्दी स्मनी स्मान। खर्दा निव्यक्ति व बनारकत्त भर्मेश कृतिसा त्याक जर्मना वित्र अञ्चेशन कांत्रस्क इस ।

" হরিষারে কুশাবর্তে বিল্লকে নীলপকতে। কন্থ্লে সান মাত্তেণ পুনজ্জন্ম ন বিদাতে॥

লোকের অভিজনত। জন্ম নিং নিল্লেখন ও চণ্ডী (मनौत भन्मित्तत कुलाश का शांकाश मर्भागार्थी मिर्धत ্তাবেশ ভ নিগ্র অভিশয় কেশ্বর ইইয়াছিল। আমরী বে দিন সা চভাকে দশনি করিতে উঠিগাছিল।ম, সেই क्रिक ভইক্স-পুলিশ-এহরী দ্নত্য নিবারণ করিছে পিয়া म'नन्त मक ठडेरङ পড়িড ए मृष्ट्रिङ इस, ज्वरभार्स व्याग्डांग करता गांबी पिर्यंत मर्गां कर कर कि আ্ঘাত পাইয়াছিল। সঃনের দিনও কয়েক জন ट्यादकत के जिससे कार्या है लागिसाहिल **उ** गुरुहों नि ছইয়াছিল। শুনিলাস (বলিতে পারি না সভা কি সিখী।) কমেক জন নাকি প্রাণত্যাগর করিয়াছে। धनात जीर्थत भागमिरगत चरभका गनर्गराखेत कार्था गन कि कार्र के इरेटा, भवर्ग अपने या जा शास्त्र का भन्नात छेलात नाम है। त्नौरमञ्जू व वन कन्नन कारिया। অনেক ভলি হু এক। ও পথ নির্দ্ধাণ পুর্বক হিন্দুমাত্তেরই थना राष्ट्र अन्य इत्राहिन।

এবার হরিদারে স্নান করিতে জাসিয়া ভার একটা অলভ্য'ল।ভ হইল। কুমার শ্রীবুর্ত শ্রীক্ষণ্ডাসর পরি-द्धांकक महान्यात छत्यांगा मीका धन खीमन्यपृत म्याल नाग यागी जी महाता (जत मर्भान पाहेश। कृ हार्थ इडेनाम । डिनि मभन्न जनजात था छन्छी नियान रेमक्छ-ভূমিতে ত্ণাচ্ছাদিত ক্টীরে খাসন করিয়াছিলেন, ভাহার সহিত শত শত পরমহংদ অববৃত ভিন ভিন क्षेत्र आमन कतिया वाम कतिए छिएसन । जाहात হুদীর্ঘ কায়া, উদ্দল চকু, প্রায় বদন দশ নে এবং शृष्ठीत , ଓ ध्यमार्यभवृत् मञ्चायर । इत्या मन अति इश्व হইল। বহুদিনের পর তিনি ভাঁছার দিলেদ্শ বিখাতে হৃংযাগ্র শিষ্য কুমার পরিব্রাজককে পাই॥। অভিশয় चानमं श्रकाभ कतिरलंग अपः वङ्शाखरवङ। ध्रमाना স্থানিক ব'স্বাসী শিষ্য মৃত্তীর সহিত্তি।হার পরিচয় कर्तिसा मिटलन। क्यात शतिजाकरकत थालि धाइ ताश व्यातमा व छेशातमा रहेत त्य जिनि शिक्ताकृत्व भूता-

আনের নাম: শ্রীরীফ প্রান্ম) পরিভাগে করিন। করমান সন্দোলাপ্রমোচিত ওরদেশ নামে (জীক্ষ্ণানন্দ স্বানী) পারিচিত ও সম্ভাষত হয়েন । অবিখ্যাত পার্ত্তাকক नाम शेति । कुला का गामा कि त्या कित वृत्तिनात কিছু কাইবিদা হয় বলিয়া এতাদন পূক্বনাম পারত্যাপ করিতে পারেন নাই; কিন্তু এবার হুইতে গুরু আঞ্চা ব্দুপ্রভাষ বোদে পরিবত্তির নাম শিরোণ।ইছ ক্লিলেন। এখন হইতে গে কোন ব্যক্তি এই স্থানিত খনপুত শিষ্ঠকে পঞ্জালিলিখিনেন, আশা করি তাঁহার। নিজ্ঞীকুলিও শাস্থানা পলিয়া "কুমার পরিআক্সক শ্রীবর্ণ শ্রীকান ক্রানী " এই রূপ বলিবেন বা লাখে-ध्यम । मार्मम् अथिमार्क दशस्त्रतं, अभितार्क अधिनते প্রতিভাতি প্রকাশ পাইতেছে। কুমার পারবারক বেষন জান বিজ্ঞান ভিত্তির পক্ষাতী, ভাঁহার গুরুদেৰৰ তত্বপ্রক নামকবন কলিয়াছেন । এ নামে দেহের. জনক পিতৃদেবের, ও জ্ঞানের প্রাবর্ত্তক সদ্গুকুদেশের প্রদত্ত নামের উভয় ছায়।ই পরিলাকত হ'ইতেছে।

य। भी कोत्र मध्नी एक वा भत्। कराक विन शतिखा 🕸 🍍 মহাশায়ের সহিত্ত ভিন্ন ভিন্ন সময়ে গ্রম্ম করিয়াছিলার। यथनहें गाहे, उथनहें दिश्य कड कड (मार्ट, माछकात, गर्फात, माधू, मन्नामी, महास जागी, मः(यागी, की. পুক্ষ তাঁথাকে অন্বর্ত দশ্ন ও প্রণাম করিতেছে। ভাঁথার সহত, ভাঁহার সিদ্ধি, ভাঁহার সতুদার ভাব দুর্শন করির। শত শত শির তাঁহার চর্বে অবলুঠিত হইতেছে। धानः देश । अञ्चल कतिया चाम्ह्या इहेलाम ८व গিনি কাহারও বাটীতে গমন করেন না, কুঃহার⊕ নিকট একটা কপদিক খার্থনা করেন না ভাঁছার ভাত্রেম প্রভাহ অনুনে চারি সহজ্র সাগ্ধু সন্ধানী, গৃহস্থ, উদানী, ছ:খী, কাঙ্গাল, আগস্তুক, অভ্যাগত পুরী মালপুরা মোহন ভোগ, অলগ্জনাদি তৃত্তি পুৰব্ধ ভৌজন করিতেছে। ছই শেলা ছুই খাহর হইতে রাজি দশটা পর্যান্ত ভাঁহার অধ্যত্তের দার দ্রুক। সলিতে হয় না, কে দেন কোণা হইতে অৰ্থ ও সাম্ঞা আয়োজন করিয়া দিতেতে। তাঁহার জান-গর্ভীর প্রেমপূর্ণ বাণী, মিনি একবার ভাবণ করিয়াছেন, তিনিই প্রাণ মন খুলিয়া ভাঁহাকে ভক্তি না করিয়া থাকিতে পারেন না। ণত তাঁহার তপংশক্ষিণ তোঁহার ভগৰদ্ধকৈ, মথনই या है जबन है पिथि छै। हाज पतिभाति हा भारता वासा

ন। হয় ভগণদ্ভকন, সংকৃতিন, না হয় স্থাতিলাপ হৈতেছে, মৃহূর্ত মাত্র ভণার সময় অপণ্যয়িত হয়না। ইদি অবকাশ পাই তো খন্য স্ময় তাঁহার উপদেশাদির বিষয় বলিব।

শিক্ষুসহাদেশায় জুনা আপাড়া ও নিরপ্রনী আখাড়ার কিছু ধুন পান হছয়া ছিল। কাশ্মীরাণীশ আভ্গণ সহিত সান কারতে আগময়াছিলেন। এখানে মাহা কিছু দেখিলাস সভ কিছু হাশয়ে অভিত করিলাস, অনুকাশাভাবে ভাহার কিছুহ ভালরূপ করিয়া পাঠক সংগের সম্মুশে ধরিতে পারিলাম না, ইহাই বড় আক্ষেশ রহিল।

कानीमार्ग विश्व विजा है।

পুনাকের কাশাদানে আর ভ্যানক গোলদোগ উণস্থিত। তিন্দুর পরির তীল কেরে খোর অনাজি রাজত কারতেছে। ভাষণ দার্গা কার্যায় সমগ্র সকর বিকল্পিত হই হৈছে। সিউটিনির গর এমন প্রাধিন মহবরাসীর অনুত্ব আর কলন ও ত্তি নাই। ধন প্রাণ লইকা লোকে শব্যাপ্ত,—আতকে নিহারত,—উ কঠার আরুলিত হইয়া উঠিয়াছে। তীবন লুই গাটের ভবে দোকালগাট কার কার্বার সমগ্রই বন্ধ হইয়াছে, আতার ২ পোরা পর্লটন পাতারা বসিয়া গিয়াছে। বড় ২ রাজা লোক-সমাগ্র শৃত্ব তই গাড়াছে। কোলাহল নাই ক্রার্ব নাই, চারিনিক্ সীরব নিশ্লক। সমগ্র স্থান ক্রিয়াছার গাড়াইবাছে। ভ্রার প্রার ভ্রার ভ্রার ভ্রার ভ্রার ছিল। ভ্রার প্রার ভ্রার ভ্রার থিয়াছে।

আনেকেট অবশত আছেন, কাশীগামে জলের কল হইতেটে।

জানিনা কি অভ ৬ কণে ইংার কার্যা আরম্ভ ১ইয়াছে, ভাই বিশদের

উপর বিশদ্ বিশ্বের উপন বিল্ল আগিয়া ইহার কার্যা কেন্তে বাদা

আরাইতৈটি। অভাভ এপদ্ বিশ্বের কথা দ্যাপ্তারকেন আলোচনার

বিশ্ব নছে। যে বিশ্বে সম্প্রাস্থ্য বিশ্বের ক্যা ভাইার বিবরণ ধ্রাপ্তারকের

স্থিত দর্শের স্প্রাক্ত আগতা ক্রিতে বাদা।

कारबारारवाली, किना देश विधाय कतियात वर्ध नकुमा आष्ट्र के क्री ष्ट्रितः जन्मन भिन्निनिभिन्नाच ्यारुखंद्व गणा गण वृत्यितः कारतम नाहे, 👫 বেশ রাজ্যার রাজমন্দির গড়িকে। বিষয় লুমে গড়িয়া জাকারঃ এনট ঋন্চি টিকেট কার্বাকেরের উপ্রেপ্তি প্রিয়ালাঞ্জুব করিবেন। জনশং ভাইচ ছের ক্লিম প্রাকাশিত এই য়া গাড়ব। রাম্যানিক না ভালিবে গভালের নাই হহাই সিদ্ধান্তিত ∙ইল। আভবু চু∕কেনি ২ বাবু সভা বাৰ্মী দিংলন বে রান সাম্পর ভাষিয়া রাস বিপ্রশক্তি গগু খানে নভুনন, যাইবেছ পারে, (#नना देश व्यक्त मृद्धि नरः, त्रेत्रल (श्रविकारक क्रेंश, क्षार्टा क्रम) যাইবার যোনাই। শসুঙ্গা° অভাত র:ম ম'লেব নিশ্নাণ ক্রিৰাব**িভ্**ভ কিছু টাকা দিলেই চালবে: কিন্ত বোডে বি অক্সাঞ্চ অদিকাংশ মেস্ব পাওত দেৱ ব্যবস্থালই গংমতী দলেল যে তলেত। বাসমূতি অচল বিতাহ। নড়।ইবার যো নাই। সুভরাং ম!ক্র বঁ।চ'হবার ৄভ ভাগর চারিধারে কিছু ২ স্থান ভাড়িলা দেওয়া হউক। মন্দিরকে ব চিটিয়া ভাষার পার্ছ पश्च स्थान कल हिल्ला गाउँक। ইহাতে বিশেষ কিছু স্পতি ১ইবে না। যাদিকিকিং ক্তিহয়, ভ ভ পূরণের অভ িন্দুরা চীদা করিয়াটাকা ণিবার অভাও প্রস্তু আছেন। কিন্তু তীতাদের কথা রক্ষিত হটগুনা। ক্রমণঃ মন্দিরের চতুদ্ধিক খোদিত হটতে লাগিল, সিঁড়ি গ্রাস্থ প্রন্ করা হইব। লোকের আংশারজ্জু ক্রেমণ: ছিল ১ইডে লাগিল। গোকে ব্ঝিল, রাজু৷ শিব গ্যাদ, উকিল বীরেখর মিজ, বাবু সীভারাম এই कत्मक जरनत भवामार्भ गाकिरहें हे गताक जात्व मन्ति हुई कवित्व উদাত হইয়াছেন। আপাত্তঃ মন্দিবকে চুৰ না কৰিয়া ভুাহার চারিদিক্ খুঁ। ড়েয়া ফেলা হইবে। ভাগ ১ইল বধাকাল আসিলে জলদেশ জলে প্রিয়া মন্দির আমাণান আমানত পাড়িয়া যাইবে। ইতাই মন্দির ভাসিবার ষড়্শল্ল। লোকের মন ক্রনশঃ চঞ্চল—উদ্বোজ্ঞ — উত্তোজ ভ হইখা উঠিৰ বোডের মে শভোরা মালির হঙ্গে মত দিয়া ছিলেন, প্রকাশ বভ্তা রাম চন্ত্রজীর উপর বাঁহাবা ঠাট্টা বিজ্ঞা করিয়া ছিলেন তাঁদাদের 💗 🦥 লোকের আক্রোণায় তীবরণে জালয়। উঠিল। পাতা গণ জনশনত্ত অবলম্বন করিয়া মন্দিরের চ!রিধারে ১২ না দিয়া গাড়িয়া রঙিল, বি**লিডে** লাগিল, আমাদের কঠ সতো ছিল কিব পরে মন্দির ভাঙ্গিও। আৰ্থ থাকিতে মন্দির ভাঙ্গতে দিব না। এই রূপ উত্তেজনা ভায়িক ুশিকের ক্সায় ধীরে ২ সমগ্র সুক্রে ছড়।ইয়া গাড়বা। একে কাশীধাস ধর্ম প্রোধান স্থান, ভাষাতে এখানিকার ভাষিবানী হিন্দুস্থানীরা উক্ষণোশিক, জন্ম কোনের উত্তেজনাতেই অধীর হট্যা উঠে। আবার মনিশ ওক্ষের উত্তেখনা ও বিশক্ষ প্ৰেয় গ্ৰুমিটি স্চক কথাতে সংব লা ি নিয়ত আন্দোশিত হইতে লাগিণ, সুভরাং শাপার ক্রমঞাই ছয়ানক क्टेटक वाभिना किनिनाम (क्ष्य र माभिरहेष्ट्रिक चूनावेसा**कि**रनम, **प्राथ**कि योगि स्वाक ममूद्रक मन्तित छ। या ६६८१ ना आहे जान भी घ व्यामा ना स्वन्,

कता देनमान अध्यानः निक् अख्यान् करेका किंद्रिय । समझ मकन निरामार्थत कीवन नारम काम्लार्ड रुटका केंद्रिय । खेल्यान का करणा मिक्किमिलास्तराराखित এक स्वापत्तन रुटका किया । केंद्र्य माना करिता भी हिकाबाय वायक केलाइक किया काराता सक्त कामा करेत्र ना, खेल स्वया भिवाकिय, मास्त्रिक्षेत्रे, कारार्थित मास्त्रित कासा करेत्र ना, खेल स्वया स्वयाखितिका कारामित्र स्वयाख कित्र । किन्द्र (स स्वामा का का किया माना विश्व स्वया स्वयास स्वयास (स्वयास स्वयास का वायास वायास वायास का वायास वायास का वायास वायास वायास वायास वायास वायास का का का का का का का वायास वाया

🖫 मिन (तथा विभागतित मधाग (तोरम्स छोष्य ८७८० मध्य मधान **क**िक्षी कोवर के किन, कर्गारभन काधन ्यनका क्षाना गर्भ करीयोगरक नहीं ক্ষণিকে ছিলেন, যে সমধ হটি ক'ত কিন্তুনী রচন্দ্র সহরের গণিতে ই খুৰিলা বলিকে বাণিবেন, "ভাত হিন্দু এটি ১৫ । অধা ভোমাৰ য়াস মন্দির গ্**বর্গ**নেট চুব বেচুব করিবেনন, যাগ াহকুত্ত ওচ ব্দাকরন भाष्ट्रभव क्या नव कविषा (शह किएक ठव, विकि क्षिप् व्हेशा (माकान अस कितिरमन ना, निम द्यासारम ७ भग कोत्रतन । " यह व अब कथा द्यान क **ब्हेल, बाल फ**न्।स प्रत्ये शकाव २ विभू मान्यत को ५३८५ गानिक ६३०। नक र लाम बर्बन कर्यन कार्य कार्य हैं। विकट्टेंग अवना वसमुख भाष्य(तत्र 6) विकास भाषा १ का । विकास के अने ने का विकास करा क्राज्ञभागा'क। विशो हुनमात की नहा, गर्गाखीलारक शक्रांच कारल (कशिया) किता अञ्चल छ। फ्र.हेगा (काता। (था। भारत शकति रेटक हेडेक शकरत वुक्र:हेवा,(फरिया । ताम मान्यरतत (धाविक एसरम्ब रहेक विद्या भूताहेत। किया " विश्व ताम ठळा जीका अस" अहे तरत विश्वकाश्वत कालिएक मः। श्वा । (मह पारंग चन क्रम मामाशि की दिल्ली कामामा (क्रीपर किया) কে বাংক পিছাৰ বিধা কৰেকজন হিন্দুখানী পালব, পিক্ বাঙ্গালি ভৌগাৰ व्योग्टन, म्रोस्कृष्टिया कि कामामा त्याल्टक् हे चाहिम वाक तामकीत शक्तित क्षेत्राच व्यवः वर्षाति रेडेक् । नत्कृष् कतिवा स्वासीयन श्रीवर्ष कतिहा विष्या अपन्या अपन्य कार्य कार्य क्यां क्यां क्यां का विष्य का विष्य कार्य कार

পুলেই বালয়াভি, সাধারণ লোকে সাহাদিপতে সালির ভালের ও প্র পানী বাল্যা কুটিলেছিল, ভালাদের উপর স্থা যিক আক্রেন্স কান্তর্ क्य। अहे भा जादनन नमन बी शहरा करता शब्दम बाद मीलातार ह বাড়িলুট কবিলা কড জিল্ম গল গে আক্ষাল এটয়াছিল, ভাকা াশবশ্নীয়া ওপ্নস্তর লক্ষে শিব পাগাধের লাড়িভ ভুট্টিভ হয় । রা**কা** भित्रभागम गःवाम भाइषा भोज्जि bilविभित्म भाभातात निस्मान 📦 क!नहां हा मन, किन कारा नावार की के ना दहेश नाकात नाहि भाक्रियण कोत्साहिल। काराध्य बाद्धां प्राप्त मानुद्रशाल हिंधत कारकाल ছিল, জনতা অনেক অধ্যান্ত্রান করিয়া ভাষালের বাভি ক্রিক করিছে আ भाकात हिल्लाक आभि एवं भिष्क ए नि १ दरका (हिल्लाक आ) न्यूब किमिन पान काक्षिमा हृतिहा ताल घारहेन हिन्दर मुहेपाठ चादक कतिया 🕡 क्रमात्र कात क हिंगा किन्न स्थित करिया। क वाता (म मिदेहिनि कतिरक (क्र. है। बुब्र्:हेवात कल जानाता এह ध्याप वार्शित कविषाहिया। व्याप्त व है। काल अहे कूल विरक्षात हालया। इसमा १६ शरीत मरमा स्वाप १ है। াকুলু দেন পোর বাজ্যাবপ্লর উপায়িত। পুলিল পানারা কোনাছ পুরুলার ৬ ইয়াছে; ব্রিটিল বাজের নিয়ম কার্মা দেন কোপায় উাড়গ িছাছে। ভীষণ অরাজক হা প্র চাবে দকে বিরাজ করিতেতে ।

এট ব্যালার উপলক্ষে এক হাজার পোরা পর্ন আধিয়া সহয়ে - ক্রি রক্ষা কাবতেকে । চাাবটি কামান সহরের চালিদিকে রাশ্র - স্থাছে । বাহিব হটকে অস্বল্যী পোককে সহরে করেন করিছে দুর্গাহিটকেছে না। রাজ ক্রচানীগণ বিরুত ইট্যা পাছ্যাচেন।

ত্রত বাংলাবে কি ব্'কলাম ? ব্বিলাম সংখাবি জন্ত বিন্ধু গাপল।
বিশ্ব আলোভ লাগিলে হিন্দু মালে যালা ভইষা উঠেন। দেশভাল, বংক্
নিংঘাত ১৯তে দেশিলো ভিন্দুৰ কীণ কলাগণল এবিছলৈ বিজে বাভিত হয়। হিন্দু অনপ্ত গলগাল পু'ড় ১০ছে, দলিপ ১বিছলৈ বক্সাথারে ও কিন্তু মণ্ডিই দলিয়া বাইভেছে, হজার উপল অবার হিন্দুর দক্ষে
ত প্ত কেন্দু মড়ার উপল লাগাল লাকিলো কালের কল্যোড় বিনয় কালা বাল বাজনা গলজন কলালি আনাদের যালা কিছু আছে সমন্তই বেছা কেনল পথা টুকুকে লাগা লাগালিয়কে তৃপ্ত হুইছে দাও ব বিজে। আল কেনল দখেবি জন্ম লাগার হল্পী বালী ভোনাল পুল্ল কল্যালিছে আলা দেবল দখেবি জন্ম গলাল হ্লালা বালী ভোনাল পুল্ল কল্যালিছে আলা দাব। জন্ম দাও বিল্লু বিক্লে কভালার প্রাণ্ডির নালালা আলা দাব। জন্ম দাও বিল্লু বিক্লে কভালার প্রাণ্ডির নালালালা আলা দাব। জন্ম দাও বিল্লু বিক্লে কভালার বিল্লু কল্যালিছে আলা দাব। জন্ম দাও বিল্লু বিক্লেল্যাল তঃখী সন্তালের বিল্লু হালাইয়া গোলার জ্বান্সাজন হাল্য আধ্যম ক্রিয়া অন্যে পায়ন্ত বিল্লু হালাইয়া গোলার জ্বান্সাজন হাল্য আধ্যম ক্রিয়া অন্যে পায়ন্ত বিল্লু হালাইয়া গোলার জ্বান্সাজন হাল্য আধ্যম ক্রিয়া অন্যে পায়ন্ত বিল্লু হিন্তু বিল্লী গাও ব

धर्मधिनातत्कत (भन कर्या छ। १। १६४। (६ ज्यान
नमश निन्दित मः वाक्तिशाहे वान छ तत शक्ति समा गर
(छाडेनाडे म् : बनिखाडे मिंडे। हेनात , अर्थ क्यूम् एउन
সাহেবকে পাঠ।ইয়া দিয়াছেন। মৃদ্রি ভাঙ্গা ১ইবেন।
এই রূপ অসুসতি তিনি দিয়াছেন। মন্দিরের মতুগানি
থোঁড়। হইয়াছিল, তাহা পুন: প্রস্তুত কার্য়া দেওয়া
ছউবে। যাঁগালের অনুরদ শিতায় ॥ই বিজাট ঘটিয়াছিল,
है। हा निगरक भगक था है एक इहेगा एक। निज श्राम कर्माण-
भग अ मृत्कि शाहेरत। तामकीत मिनत दें। हिशा राज्य,
आस । भेरे गःनारम मग्दा मन्त्र आनत्मत हिस्लारल
ভাगिতেছে। गकल्ये मधान् देःतोष तात्वत खन गाणा
থাণ ভরিয়া গান করিতেছে। রাজ্য গণ ছুই হাত
कुलिया अनर्गमण्डेक कामीन्त्रात किंद्रिक्त । कामता
क्षारतत गरिक जनगरनत निकरिं शक्षातक्षक गवर्गरमा केत
শুভ কামনা করিতেছি।
and the second s

(वनिविद्यासारा टेड्ज गांगल जाग ७ वार्ग (भाः ১৮১২)। भूष्टि जिका।

🔊 দীননাণ পাতে রামূপুর হাট	01/0
" अक्त विहाती नाग व्याघ निन्तन, रमभाती	200
• भारामाहतन हरिहालाधात्रा शिष्ट	२५०
* মহিম চন্দ্ৰ ঘটক ৺ কাশীধাম	ndo
" तमनीरमाहन वद्य निनामभूत	210
" বিপিন বিহারী রয়ি গ্রা	20
" खरमण हस्य गुरुकि स् किशा	21
" यटळाचत मूर्यालागाश गितारे	31
" গঙ্গাদিনাণ মুখোপাধ্যায় বাঁকীপুর	4
 छाताञ्चनम्र वरम्माशास्त्रात्र देनमावासः 	840
 वःगीधत तारा मृणि भागान 	. 3/
व मधुमृतन नाम शाशांत भाषा	01
" ভারিণী কুগার ভট্টাচার্য্য পাণিরাম	014.
* यत्नाद्त द्वात तक्यात	31

३ ता देवणाव	1 2524 1
. • এ তারা প্রসর	মূখোপাশ্যা স
গত মানের মজুৰ তহবিল হইতে বায়	208193.
•	2241/
শ।কে থরচ	२।/
गास्त्र चंत्र ह	1>•
ছাণাই ধরচ	(*)
ভ। ড়া, চাকরের বেতন ইতা। हि	
रेठळ शर्यास हाळागारात बाड़ी रेंश्वम	J>•
বৃত্তি দক্ষিণা ও গত শ্রাবণ হইতে)	
থরচ।	•
গেট আয়	204/30
🕶 सरत्र समाती (म्बीत इति काकिनीता	. >•/
া মাদিক বৃত্তি।	•
" जेनान हस्स (याम 💌 कामीशाम	120
"कभल ध्या छात्र गिलहत्र	5 \
" इतिरभाइन दम जाम माहे हाछ	. 4
. अरतक क्रकामण । गर्मा अपूत " क्रोनक कार्या मर्खीरमन में हिहा है	. /•
" শ্যাসাচরণ চট্টোপাধ্যায় ঐ ." অরেন্দ্র কৃষ্ণ মিত্র দিনাক্সপুর	3/
শ্রী রাণাগোবিন্দ দত্ত প্রভৃতি শ্রীহট্ট	>1•
এক কালীন দান।	
" উমেশ চন্দ্র গঙ্গেশপাণ্যায় কোলা, ঢাকা	9,
" যাত্রামোহন দত ঠাণ্ডাচিক্রি চট্টগ্রাস	• •/•
" তারক ব্রহ্ম দেন গুপ্ত সাইকীয়া	8140
" হরিনাথ বস্তু রাজগাছী	e ·
শ খাস্ক ক্মার দাস শিল্চর	>0/
" इतिनाताशण (b) पूती काणीशात्र \	10
" गोलकर्श हर्ष्डे। शामात्र. थे.)!.J.
" काली बक्र करहे। शाशा त्र त्राप्त्र	1/•
", ह अ इमन अद्वीहारी, दशक्माव भी	-21/0

विवासिक श्रिक्ति "वातानती वर्षावक बुळानात" व्याख इत्या वाम ।

शुक्र (कंद्र नाम। **अभिष्ठभवम्गी**जा (শান্ধর ভাষ্য, আনন্দর্গিরিটীকা, রামামুক্ত গাষ্য, স্বামী-হত টাকা,মধুসুদন সরস্বতীর টাকা,কুমার জী জীকৃষ্ণ এসন পরিভাজই কৃত বসাসুবাদ ও 'গাঁতার্থ সন্দীপ-ৰী' নামক উপার্দ্ধেই ভাষাতাৎপর্য্য ব্যাথা মূহছিত। ৭১ ছক্তি ও ভক্ত (এর সংস্করণ) নিত্য কর্মেন্দু কোমুদী (২য় সংকরণ) 4. শ্বপ্ন তবু (২য় দংকরণ) ৰাম গীতা (মূল ও অনুবাদ) মনিরত্ন মালা (মূল ও অসুবাদ) (৩য় সংকরণ) ৴৽ আন্ধতন্ত্র (৩য় সংক্ষরণ) ... रदिनीरेमव (क्वलम् (२ म मःऋत् ।) नमानी পরিত্রাজকের দর্শাত ১ম২মুগুয়৪র্থ ভাগ (२ म भः क द्रव) ८० গীতা মাহাত্ম্য (মৃল ও অমুবাদ) একডাত্রত কাব্য

নীতির ছ	गांगा	•	97 .	•••	10
বক্তা	শ্ৰীকৃষ	। ध्रम	পরিত্রাজ	ক মহোদ	fW
कर्ठक ब्र	5)				1.
वाम श्री	দর 'স্থে	ব্ৰ (২য়	া সংস্করণ) (130
গে:ড্,পা	দীয় ভা	াগম (ব	াঙ্গাসুবাদ	সহ)	14.
গোঁগ সৰ	চর শ্ব (পাতঞ্চ	যোগ শা	জ্বের সংখ্	•
गांभा म	াহ)				10
धर्म अह	ারক (মাসিক	পত্ৰ)		
উठ्य का	গজে য	(ড়িত	•••	ৰাৰ্ষিক	୬।୰•
মধ্য ম	ঠ	A	***	•••	२१०
শাধার ণ	à	À	• • •	•••	>10/0
পক্ষ্ত	•	•••	•		V.
শিবলিঙ্গ	. જુ જ ાનાં	वेक्षि (२	ম্ব শংস্করণ)	3
শ্রীমতি ং	ও প্রস্কৃতি	े <u>ड</u> ेशांशा	ান (ধাঁহা	वर डीहा	ده) />٠
গীতাঞ্জ	g	••••	•••		1.
তন্ত ব		ii.	• • •		•
৺ খ্ৰাপ	ৰ্ণীর তে	্ট ছবি	,(कंराफ़	র উপর	
छ भन १	र्थ कि	'ত্ৰত —	২ খানির	অধিক	J•
1	•		গিবে না)		
মহাত্ম।	তৈলগ	স্বাসীর	क्टोंंग	4	10/20
बढ़े ह क	4	• • •	•	•	t.

किंठि निविवात भावत्रा काश्रक तन तत्मवोत मृद्धि । क्रिशान त्माक महिछ

शास्त्रकं शास्त्रहे व निष्ठा ।

বট আকারের মূলা (১০ ডাক মাজুল—/১০ মেটি—।৫০

বৈ অপের অব লেওরা মূলা (৮০০ মাজুল /০ মোট —।৫০

কিছু ছোট আকারের মূলা (১০০ মাজুল /০ মোট —।৫০

মুর্জি বীল কোবল পাচরুলা ৫ দিল্লা পাাকেট

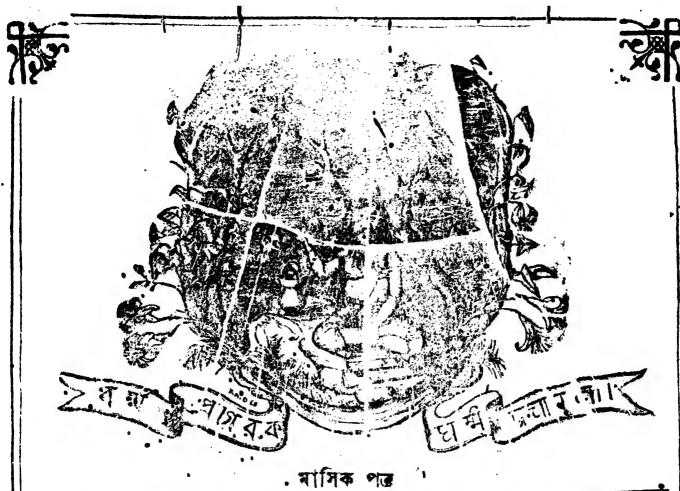
বভ অকোরের মূল্য (৮০ মাজুল —/১০ মোট —।১০

ছোট আকারের মূল্য (৮০ মাজুল /০ মোট —)১০

কিলুলিপি্ড ঠিকানার মূল্য (দি পাঠাইতে ভ্ইবে১)

गळांभाक

काली हुन्याञ्चक येखालटा लाख्या यात्र ।



"घर्सी विश्वर्क कात: प्रतिष्ठा ध्रमीय पाप नुद्ति, ध्रमीमव्यं प्रतिष्ठितं,

तसाइमा परमं बदात्।। " श्रृतिः

काभी-- जाब जनमे हैं जादा धर्म क्षातांत्रनी में जा रहेर ज का मिछ।

	and in		•	
বিষয় 🖣	स्हि।			त्रका
वाळवदामःहिला 1	***	•••	•	30
(क्यांच वनिरंत वन किन्नन	ভিনি (কেন্চিদার্গাসভানেন)	•••	•••	>8
5:4	(अत्रक्षां १६ किए त्रत्या भागात)	•••	490) 4
ভীৰ্থবাজ্ঞ।	(কুমার পরিবাজক জ্রিক্লানক বামী)	•••	•••	44
ভারত ও বোজন্দত	(প্রিবৃক পাঁচকড়ি রামু)	•••	****	. 40

১৪শ ভাগ। ২য় সংখ্যা। জৈতি নাস, সং১৮১৩।

वात्रावनी, वन्त्रावृत् बह्वालात मृद्धित ।





বক্তৃতা।

२य थ्य ।

क्यात की कृष्ण विमध शतिखालक महासरभत २ व **च्छ र कु**छ। भूषक अङ भिरम लकालि ३ ठेल । अगात বে করেকটি বক্তা সংগৃহীত হট্যাছে, সে সমস্তই মুভন। নিম্নলিখিত চালিটি বক্তা এপার সঞ্চলিভ स्रेमार्क । श्रवृत्त यार्ग, **जातरक ऐ**रमत, নিজনিকৈতন যাত্রা, আঁধারের মাণিক ধাৰার কার বস্তুত হা পাঠে ভক্ত ভক্তির অমুভ্যায় আলাদে निक्षात हरेतन जांद्रक कवि छेळ्यात्मत सहतीतीलास নিষয় হটবেন, দার্শনিক তীক্ষ্ণ তর্কান্তের প্রতিভা (मिथिसा निमुद्ध इनेतन । जाना होन खत्रना होन लोव भाषारमत भक्त नानी शाश कडेशा जानत्म भूनिकछ, इहेर्ना भूखरकत व्यक्तित ३म अन व्यर्भका क्यांत विश्वनिक क्षेतारक । ১১४ भृष्ठीय भूकक भूर्व क्षेतारक । म्मा ॥ व्याद्वे वाना । ए। क्षां एत लाश्य ना। ः भ थए व मुना दिन्नी इंदेशास्त्र अहे ऋषे भरन्दि प्रश्नाप कताम ২র বতের মূল্য ১ম গণ্ড অপেকা আকৃতি অকুণারে मुखा कता रहेत्राहि। नियनिथित नाम ७ हिकानात मृत्रा भाष्ट्रीहर्ष्ट्र भूखकं छश्यनाद द्यितिछ इवेदन ।

> জ্ঞী স্থাদেশ কবিরত্ন ধর্মামৃত প্রেস বারাণনী।

बहाजा देवनजी वाभीत कटोाधाक्।

गांधू (खर्छ महाजा रिक्न जी कामीरक की निष्ठ कारत जरिन के रिमालिस अर्थ का अर्थ

भणां शकी तक।

"কুলং প্রিতং জননা কৃতার্থা বসুক্রা পুনারতী চ তেন। অপার স্থিং প্রধ্যাগরেশ্বিন্, লীনং পরে ুকালি মসা চেতঃ॥"

১৪শ **ভাগ** .

" আকে এব জন্ধতোঁ। নিধ্যেতপাত্যাতি য**ে**। শ্রীকেণ-সময়শং সক্ষন্ত্রতাকি ৮ শ

ेक्षाल गाम टेक्सल गाम

शास्त्र । जुड़ा ।

(পृक्षालवा ७) •

প্রতিসংবহ্দরং গোলগণাঞ্চ প্রত্যয়নং তথা। কর্মনা জ্বাদেপ্তিক, চন্ত্রনার্জানি চৈপতি।

প্রক্রিক বর্ষে কোন বাল, নবাল্লার ও চাঙ্গাতি করিব। প্রতি ক্ষানে কিলা প্রতি বর্ষে দশুমার বিহিত।

এষামসম্ভবে কুর্যাদিস্তি বৈখানরীং বিজঃ। ছীনকলং ন কুর্বীত সভি থবে। ফলপ্রদম্॥

श्रृत्वाक क्रिण मांत्र कि विश्व वेश वीन क्रिश्व । भनि कि मांत्र में क्रिश्व वेश वीन क्रिश्व । भनि कि मांत्र विश्व वेश वीन क्रिश्व । भनि क्रिश्व वेश विश्व विश्व । भनि भाग विश्व विष्य विश्व विष

हिछात्मा काम्राट्ड मञ्चकत्नाद मुक्किकिकाद। यञ्चार्थः सञ्च मनवम्चामः कारकाश्रिमः चरुवद ह

भृष्ठ इहैर्ड वर्ष जिक्का कतिशा यक्त कतिरा गक्त काती हशास इस्रा यहक्त कता शास वर्ष मरकार्यसम् मान मा कदिरस सक्स किया काक्रशानि शास इहेर्ड क्या क्रिकेट होता वा ज्ञाहित व्यव होता वा ।

क्रिकेट वाल किताह कर्जा (शिक्क मान क्रिकेट शहर शहर होता क्रिकेट वाक कर्जा है।

क्रिकेट विकास किताह कर्जा का शिकाह कर्जा व्यवका तम्

क्रिकेट विकास कर्जा क्रिकेट कर्जा क्रिकेट क्

न श्रासात्रितामार्थभीत्रङ्ग गङ्ख्ङः । न विक्रम्ब अभव्यन महस्त्रामी है भना खत्रस्य।

সাধায় বিরোধী অর্থোপ্রজনে বিরক্ত থাকিবে । অযাজ্য যাজনাদি ও নৃত্যগীভাদি দ্বারা গর্পোপার্জন করিবে না । সধা সম্ভোধ অর্জন করিতে চেষ্টা করিবে।

রাজাত্তেশাসি সাজ্যেক্যং গীদলিজেৎ ধনং কুণা। দীস্ত হৈত্ক পাসও শকর্তীংশ্চ বজায়েৎ॥

ক্লুণায় নিতাস প ড়িত চটলে, রাজ। অন্তেনাসী ও যাজ করাইবার উপায়ুক্ত বাজির নিকট হইতে বন ভিজ্ঞা ক্রিবে । দান্তিক হেতুবাদপরায়ণ পাসক माखिक ७ विक्साधिक धक्रिकत त्लाक्रमत निक्छे इहेट कथन व किছू छिना कतित्व ना।

শুক্লান্থরণরো নীচ কেশ শাক্রানথ: শুচি:। न ভार्याप्तर्भारतश्चीशाटें सर्गामा न मः ऋजः ॥

শুক্র গ্রু পরিধান করিবে। কেশমাশ্রু নথ ইছাদের ক্রন্ত্রন করিবে। জ্রীর সম্মুখে এক বস্ত্র পরিধান করিয়া किया प्रधासमान देहेशा, कलाठ ८ शकने कतिरव ना ।

(क्षरन बिलारन वन किन्नि ।

(গভা ঘটনা দম্বলিত) " श्रीताम श्रमारम तरहे, म। वितादक गर्नव घटि। खात चौं। थि मिलि (मथ मार्टक, তিগিরে তিমিরহরা ॥ "

ৰা থাকিতেও আমি এক রূপ মাতৃহীন। এক রূপ কেন, অনেক সময় মনে হয় সভ্য সভ।ই বুঝি ম। नाहि। मा (शट्ड शत्रह तमन बट्टे किस वड़ अकट्टे। (हैं। शा अ। अ। (मन ना अगन कि मन्त्रमा कार्ष्ट्र था किया ब এক বার চোথের দেখা দেন না, তাই ভাবি---

" মাতা বর্তমানে, এ ছংখ সন্তানে, ग। ८वै८६ उटर कि कल वलना। কুপুত্র অনেক হয় সা, কুমাতা নয় কখন তো। त्राभ अमारमत्र करे आभागा, भरख शांकि शमान्छ।

मा (म अरक नारत है काएक बारमन ना अमन नश् কিন্তু যে সমণ সামিলে আমি বুবিতে পারি তখন কোন জাপেট গামেন না,। এক লোকের মা দেখিলাম কিন্তু গানার মার মাত মা কাহারও নয় । ছেলে ्रक्रांशित्य है भक्रवात मा कार्छ आभिशा कार्य करतन কিন্তু সংলার গার সকলই উপ্টো, আমি জাগিয়। থাকিতে তিনি প্ৰাক্তিও কাছে গাসিশেন না — দেখাও । নতুৰা সুষ্থি সৰখাতেই প্ৰত্যেকের বকপন্য কাৰ্ডি হইড।

मिटनन न। किन्नु भागरक शाहे वाभि शुगहिता (१८ स ह जिनि चार्गिस| चार्गातक *ए*कारल ভृलिस| नरसन #। অনেক সময় পুলিয়া অনেকটা আশা হয় ভরসা হর কোন দিন না কোন দিন দেখিতে পাটৰ, মনে মনে छानि अक निग कठा १ का शिशा मातक (मिथशा (क लिय (!) किन्न कड़े तम बामा (छ। बात्राशिक पूर्व इडेल ना মনের ইচ্ছ। মনেই মিশাইতে চলিল।ভাবিতে ভাবিতে चारंगक निन कार्षिश राजा। अकतिन इठार तक चानिश विनन, या वागिसार्टन। आमि हमकिस। छेठिस जाव-লাম, তবে কি আমি এখন ও জাগিয়া আছি ৷ কিন্তু ব্যস্ততাবশত: আর তথন সে ভাবন। না ভাবিয়া ছুটিয়া ৰাহিল হইয়া পড়িলাস, গথে অনেকেরট মুখে [সাহারা মাকে, দেখিয়া কিরিয়া আসিতেত্ত] মায়ের আগমন-ৰাৰ্ত্তা শুনিয়া হৃদয় নাচিয়া উঠিল, বেংগ দেছিতে नागिनाम। किय़ रक्षण शास व्याभित भारत वाड़ी रङ গিয়। উপস্থিত হইলাম, কিন্তু সার কাছে গিয়। দেখি आयात नत आभाहे प्रदेशाः कड कथाहे बलिव भटन कतिशा शिशाहिलांग अर्थन (ग क्षा पृत्त चालाम् या (मिथिट शिया ছिलाभ छ। हा । इहेल नां, (मिथलाभ মার কেবল কতক ভালি সাজ সভ্জ। রহিয়াছে, ভাবি-लाम, त्माक अत्ना कि अहे दम्भियाहे फितिया रणल, माज (पिशाहे जूलियाशिन, हेशाबत अर पूर्त जामाहे তবে সার। তখন সে বাটীর,লোক সকলকে জিল্পাসা कतिलाम के माहा (मिथाराज अलाम छ। हा एका (मिथाराज পাইতেছিনা, এত কেবল সাজ গোজ দেখিতেছি। डोहाता क्रत्रतत प्राप्त भिष्ठा निल्दलन त्य व्यक्तक - (हम्छ। कतिशां ७ डाइर्रता मारक (मथाइनात (कान ६

^{*} সমুখি অবস্থায় বৃহি ति জিনে যেব কিয়ানী থাকাদ এবং আন বিশাস মনের বানজাৰশতঃ জীৰাঝার প্রম্যঝার স্থিত মিল্ল ভইয়া থাকে, এট স্বস্থা এই সাৰস্থায় একরণে অপুৰৰ স্থানীৰ সঞ্জাৰ ৩ গা; কিন্তু অবিদায় আবিৰণ বিশাসনি থাকাক বরমান্ধার স্বরুগ ব্লক্ষ ইণ্লীয়ি হয় না

किशांत्र कति किशांति लगांति स्वा श्री किशां कि शांति । अहेति (शांति । अहेति । किशांति । अशांति । अशांति

" (बर्ग मिर्ल हरक ध्ला, मङ्गणितत खक्कुछला। चरत्र ना हिनिन द्काछा, युला, रभनाधृया ८क छात्रिया॥" (ताम ध्रमाप)

उभन छिन्नान छोत्क नित्नन—
 "तम तक मन तक छातन छोता,
 रामन छोता एक मन छोता छोता।
 मेरिसन जा के से हता छोता देत मन,
 च्यूमारन छात कि को का नित ।
 नील शीठ मिठ व्यापि वर्ग,
 कि काश कि छात का मा।
 स्ना भना काश लागा।
 च्य एक वि व्यापात शांशत हल ।
 यूक्ष छाता वाला।
 यूक्ष छाता वाला।
 यूक्ष छाता वाला।
 यूक्ष कि व्यापात शांसा हल ।
 यूक्ष कि व्यापात शांसा हल ।
 यूक्ष कि व्यापात हल ।
 यूक्ष क

ভার আদি অন্ত মধ্য নাই, নান। মুর্তি নানা ভাতন ॥°

আমি বার্ক হইয়া তথন জিল্পাসা করিলাম কৈ কেনি স্থানেই তে। মাকে দেখিলাম না ? তিনি-ললিলেন স্বিত্তই তে। মা গতিয়াছেন কিন্তু কুণেরের রাজসিক স্বজে [মায়িক নাম, রূপ] মায়ের গাঁ ঢাকিয়া গিয়াছে, নন্দীর মত একমনে ভক্তি ভাবে কমল কুলুমে (সাত্তিক ভাবে) না সাজাইলে সে হেমবরণ চর প্রভা (অন্তিভাতি প্রিয়রূপ) ফুটিয়া উঠিবে লা। ... ভাবিলাম তবে মায়ের কোন্বাড়ীতে যাই। সাধক তথন ভগবিথাকোর অনুবাদ মাত্র করিয়া বলিলেন—

> ন তদ্ভাষয়তে সূর্যঃ: ন শশাকোন পাণকঃ। যদ্গতা ন নিবর্ত্তি তদ্ধাম পর্মধাস্॥

শুনিয়া মনে হইল কি ভুলই করিয়াছি ! এ তো গুলকারে হাতড়াইতে ছৈ তাকাইতে ২ চোক ফাটিয়া গেল, কিন্তু দেখার স্তথ মিটিল না যাহা দেখিতে আসিলাম তাহা তো দেখা হইল না! এডুদিন ভুলে যাহা আলো ভাবিতেছিলাম তাহা তো তবে অন্ধকার! সীধক আবার বলিলেন—

দিনি স্থাসহজ্ঞ ভবেদ্যুগপছ্থিতা:। যদি ভা: সদৃশী সা স্থাদ্যক্ষ মহাস্থা:॥

करे कथा । धान भरकनात स्काहेश फिलि, त्य याना हेकू हिल जाहा छ छित्र। ताल । मके हे। मुर्रशत निक्कि जाकाहेत्ज भाति नी, अत्यात भत्मा मुर्राहे कर्तात काथ छ त्रा प्रिथि । भाहिलाम ना, जिल्ल यात भाकि (म्था १६० ना, क क्रिय (छ। यह क्रम्ल मतिक ना!!!

সাধক তখন আশস্ত কৰিয়া বলিলেন এই জনাই ভগৰান অৰ্জ্লিকে বলিয়াজিলেন—

^{*} কুবেৰ । দেখাৰ নয়নে । কি শোভা হয়েছে (বজা চলন আয়াজি জ্বা) বাংসা চননে । যে গলে হয় মেক্সিল, সাধ্যমৰ দাধন গদ, সাজুৰে কিবে ঐ গ্রীপদ শুক্ত ভূষণে ।

न । भार भकारमा क्रिके भरतरेशन च b क्ष्मा ।

मिनाः मगामि ८० চফুঃ পশ্য মে গোগবৈশ্বরম্ ॥ সাধন রাজেরে হবিজের স্থাম পদান। জানিবৈশ মহামারার মারা পুরাব নিজ্ক পথ দিয়া মায়ের বাড়ী या ७ या वास ना - - ० ० मिन भारतत भरक दमया हत ना. मा कर्रा पाकिरल छ (७८ल मूट्यत एचरित जकला गार्ड ভাবিয়া কাঁদিয়া উঠে: গস্তরে ন্ জাগিয়া মোহমলিন कि शक्त ना कहेर्द (कनल नाकित काशिएल (नि०-प्राथत्ति भाकिरस) भारक (मशिर्फ भा हेरव मा -- काँ मि-राज्ये काल कारिया मानेत्व। भाषकमञ्जान हिर्दार्गके মাব কোলে জাগিয়। পেল। কবিভেছেন কেবল কভক खरना जनान्न, शरु। प'छड माकात निताकात्र कहेगा क्रिनि कतिया भारक, भारताय सक्रकात रमध्ये रम्भ् शायना छ।हे निताकान नरल। दम आकात त्य कि প্রকার ভা এ বিকারযুক্ত টোধে বৃঝা যায় না। যাছার। किंदुरे (पिथिट्ड भाष ना जामाता दक्तम नाहित्त জাগিয়া আছে পশ্চানে জালোক রাখিয়া দেখিতে চাতিতেচে, সন্মাথে যে সাপনার ডাগায় [স্কংকার] " (कारलात काएक (कामल धीमारत" व्हेशार्फ छाई। ভাবিল না। ভাই কাঁটায় পড়িয়া বায় তাই ভাহারা ^{क्र}ेटाञ्चलकटल कान्। "। मामक शार्ठकः। ज कथात अहे थार । हे हे छि ≁ता चाल । माकात निवाकीरत तर भीत तक्या अवे भारतके द्विसा अकेटनन व्यत्भात कार्छ अ भक्त कथा (करल कथांत कथा। भागन जाख्त कथा সাণার্থের স্মতেশ একরাল "দিল্লীক। লড়ভু" বলিরাই (नाम ५३ छ। हे जाल, जाल (नेनें। कथा । काज नाहे তা • ঃ ঃ স্—

च वृद्धि (छपर स्रवासम्बद्धानाः कर्द्धमञ्जनाय।

শকেষ্য বলিবে বল বিরুগ তিনিও ও স্ব) ভূষি সীবিবে চিন্তে কি চিন্তাধণি [মে যে চিন্তার সভীত জগজিন্তাধণি]

তিনি সাকার কি নিরাকার, ও সন কেবা ভত্ত

জানে ভার, সমস্ত জগদাধার, কেবল এই শুনি (ভিনি) । গাই---

পরিপ্রাক্ষর বলে চাও যদি কেউ মাকে দেখিছে।
তবে নিজের গরের উণ্টো কপাট হবে খুলিতে।
মারের যে পূর্ণ বিকাশ রংমহলের উপর তলাজে।

"বাজিস মাকে ভালেশ পাশে, মা যেরে ভোর ঘরে
ব'সে দেশেও দেশিস্না। ও জোর চোমে আঙ্গল
দিয়ে দেশাই, জর দেশ্বি লা। ওরে ভুই যে মামের কোলে বসে ফিরে ভাকানা। প্রসাদ বলে সাভ্লাবে
আমি ভব্ব করি মারে। সেটা চাজরে কি ভাঙ্গ্র

पुर्श र

ত্রপট্সংসারের একসাত্র বিভীসিকা। প্র কিছু উলোগ, cbफी, जानमा, बेर्बन पतन भारतान मनसङ् প্রাপ্ত উল্কে পার্রে । পাইবার জনা। সমুসত অসাধা मामन कतिहर एक । शिवि कृति । स्टब्स मागरबद्ध ভলম্পূৰ্শ কৰিছেচেন, কেবল গ্রন্থাক দুৰে বাপিবার कता। '' '५३ फू: भी ७ ड ' है बात नास मधार मती अखि-.भ-लाख अजुमा भभाग क चात नाहे; भहा लाख ना हहें(स এখন গালি দেয় ন।। মুদ্র এত আশ্লয়ার ব্যাপার ठठेडु ता गर्प केंब्रिक आभाता ग्राचिक रेंका विलिशा ना अर्थान करना किन्नु कृत्म कि ; काशादिक क्रांबी विलिएक भारत १।क-कार्शिक । कृषि, व्या'स ८५म । सम ्याक अक अगरत ना तक समस्य छः वित कालान পাট্যাত জংগা চারাছি ; পাবস্ত সাধারণতঃ জংখ श्वार्थाल छ। हा नला अंकि कठिन । तम तम्स छ। थ गहिंद्य ादकाव थाका प्रश्न काशास्क नरम कार्न मा, कथात (मान कृत्यी एकण्। शाक्त तमाय माहे, ভাষাদের কেমন করিষ। বুঝাইক ছঃখ কি । যাহা ছউলে তৃংগ নিজকে 'ছ:খী,মনে কর, ইয়ত আসি তে**স**ন টি চটাল সহা প্ৰতী হই, আশার, ভৌনার হৃতের

উপার্শনকে অন্যে নাক্ষারজনক বলিয়া জলগ । ১৩ । পারিয়া কাঁপিয়া ফেলে। ভিত্রে মথন প্রেল । এই পাবে।ধনী শীতকালকে স্ববের---বিলংজার সুমন্ত তাল্যা। কেন্টা হয়, মুখন গাল্লার সাঞ্জি সকল বহিন্দ্রী ইয় गरन करत, मृक्ष्मी पतिछ जीश्रमभागरम वन"हन्छ इस, ভপন খার বস্ত্রাচছাদনের জনা উরিয় হউ/তেহয় না। **চাবল্বুক্ড়ী চালের ভাত খাইয়া, গুড়ুক টানিয়া আম** গাছের জগায় মহাস্থা 'নন্তা যায়, কার লক্ষণাত 🧣%(.फन'नड काळ) म-भगास भसन कतिसा व्यानसास উक्षम' ऋक २ हेस। झितः शीखास ना शिक इटसन । किन्न सक्तां क मनो दक मांगा बना। यात्रा हम जाशनि अवशाह निक्रात खार्थन। कदतन, धार्थन ठामात नाम जुन मा'निया तृह्धी हात्सत छा हु वाहेगा, राष्ट्रक व्हानिया अहे रेनमान मारमत रतीरमु वारमत मीजनहाशांस গিয়া শয়ন কৰ্মন, অংপনাক, ছাথ দূর হউবে, আপনি নিদিত হইবেন। ভাষা হইলে হয়ভাভনি আলুহভ্যা कता गर्क मान करतन अनः अमन छीयन हिक्टिमा मृत्त नित्का करतन। यात्रः ठामात शतक छ्ये च्या স্থাবে কারণ, তাহা ধনীর ভাষণ দুঃধ । ভবে কি बिनि याहारक लाटक अञ्ज्ञी इस काहाहै १ ३३ । পৌতমের ন্যায়সূত্রে আছে যে '' বাগনা লক্ষণং দু:খ!মতি " [১অ, ১আ, ২১স] চুঃখের লকণই बागा। १६७ वनः श्रद्धि जनः धनानिम भानीत जनः भागितिक (हस्टे। नाभिक अथना क्रम्म इटेटल मृथ्य ह्या । चामि गाहा हाहे, डाहा मिन ना लाडे, जलना जेलिंड नक्ष क्या खित भाष मि किছू नामा किया निमम् चाउँ ভবেই আমি দুঃখিত হট, সন্মাহত হট । শিশু জল कामा महेशा (यांगरक हांग्र, श्वास्त्रि मार्क्ड मकन ला। पुँठ नमरम ८५१, नर्लातहरा अलग छाता मुहे এক খানি পাত। চ্বাইয়া ভোজন করিবারও এক ২ ৰার চেক্টা করে; কিন্তু ইমি ভাহার পিতা, বালকের ভ'नमार ভাবিয়া ভাছাকে এই মুকল কাগা হইতে আজিনিব্রত করু; কিন্তু দে তাহ। বুঝে না, সনে ১ অভিশয় দু: শিক্ত হয়। শেষে গুনের বেগ্না সামল।ইতে

প্রতিষ্ঠ প্রায়ুতে একটা মেন ভড়িছেগ প্রকাহত ইইটে थातक, चात्वश बनः छ त्रीकान छ छ दक्षास मन भए 🕏 চঞ্চল পাকে, অংশার সাম্থ্রী পাইবার জ্ঞা আহাজ্ঞান শূতি হইয়া আম্রা কাষ্য করিতে থাকি। মন, " ঝুদি. খার্তি মেন তদাকারাকারিত হইয়া যায়, তথন যদি কোন অন্তুত্ত অজেয়°ব্যাপার সংঘটিত হট্যা আম:-দের আশাপণে কণ্টক হইয়া দাঁড়ায়, আর যদি বুঝিতে পারি যে শতচেষ্ট। করিলেও কার্য। সিদ্ধি হটনে না ; তাহা হইলেই মে সকল আলুশক্তি আমাদের স্নায়ু-মগুলকে প্রাক করিয়া ছিল, যে চেফার জন্ম ষ্ঠার। উৎকণ্ঠার ঘোরে আস্ত্রার। ইট্যাছিলাস, ভাষারা দেন স্তান্তিত হ্ইয়া যায়। যাখারা বাহিরের কাৰ্য্যে শতমুখী হট্য়া প্ৰদাবিত হট্য়াছিল ভাহারা হঠাৎ প্রতিক্রত্ম হওয়াতে শ্রীরেডেই প্রাব্যিত হইয়া থাকে। শরীর এবং মন্ কিন্তু এই সংখ্যাইত বেগকে ম্লাপ্রে স্থারন করিতে পারে না । স্বাভাবিক নিয়ম এই যে শক্তি শক্তিদারাই স্তান্তিক এবং গ্রাভূত হট্য়া থাকে । তত্যাং এই কাৰ্যাশক্তিকে আক্সস করিছে হইতে, সাল্লার সার এক স্বতন্ত্র শক্তি এযুক্ত করিতে ইইবে। প্রথম চেফীয়ে এবং উদ্যমে শ্রীরের অকা শক্তি লাগ এবং হীন হইয়াছিল, হঠাৎ এক নূতন बनः निलतीम भारत छेन्द्रावनाश एग आशाम हेक् করিতে ইয় তাহাতে আরও যেন সন ও লায়ুস্ওলী এলাইয়া পড়ে। এই বাধাগ্রস্ত এবং শক্তিহীন অৰক্ষাই গুলে। প্ৰেৰাণী বাঙ্গালী বাৰু ছুটী লইয়া ৰাটী আদিবেন। অনেক দিনের পরে দেশে ফিরিতেছেন, ভাই তথাকার নানাবিধ নৃত্ন সামগ্রী সকল ক্রয়_ করিতেছেন, স্বৰগহনাও দুই এক খানা এক্সড করিতে দিয়াছেন, স্বর্ণকারের ব্যুষ্টীতে এতিদিন যাভায়াত করিতেছেন, এবং একথানি ছটার প্রথাস্ত

করিলাছেন, বউবার ইপারীদ করিলা বড় সাহেবের निकड़े डेटा शाठा हैसा, निसाइटन, माइट्र आर्थना সঙ্ধ করিয়াছেন। আহা কিছু আবন্ধক তাহা স্কলি শ' এহ করা হইয়াছে, উৎক গৈয়, আবেশে বাবু এখন ৰাইবার দিন গণিতেছেন, জ্রাম অবসরের দিনও নিকট হইল, বাব বন্ধু বান্ধবের দহিত দাক্ষাৎ করিয়াও तिनास सहसा आमिलन ; अगन मभरस यान छाहात खुत ए। अवः जालार्तं वर्ल रम जिम्म रकाम क्रारम र (मरम गाहेट भातित्वन ना, जाहा इहेटल त्वाम इस त्मन তাঁহার হৃদয় ভাঙ্গিয়া যায়, দু:থে হতাশে শরীর যেন অসাড় নিজ্পল হইয়া পড়ে, চকু ফাটিয়া অঞ্চৰিন্দু পড়িতে থাকে.। এই বাণিত অবস্থাই দৃঃখ। সেচছা এবং প্রবৃত্তির নিপরীত যাগে ভাছাই দু:খ। অর্থাৎ স্বেচ্ছা এবং প্রবৃত্তির বেগ অপ্রতিহত থাকিলে লোকে হুখী हत । छ्ण कीनरात महकानका, मृथ्य नाधिक ध्वरः বিরুদ্ধবিদ্ধা । তাই বলিয়াছিলাম যাহাতে লোকে। অহণী হয় তাহাই দুংখ।

দিয়া, সহজে বিনা বাধায় যহিয়া সাগরে গিয়া পড়িত,
ভাহা হইলে উহা বেগবতী হইত কি না ! তাহা হইলে
উচা গভীর খাদ বাহিয়া গ্রাম. নগর পল্লী সকলকে
সঞ্জীবন প্রদান করিয়া, সেহ-স্লিগ্ধ করিয়া উত্তাল
তরঙ্গে ছুটিতে পারিত,কি না ! সনে হয় পারিত না ।
শক্তি বাধা না পাইলে সঞ্চিত হয় না, আবার সঞ্চিত
শক্তি বাজীত বেগবান অন্ত কিছুই নাই। স্নতরাং গতি,
বাধিত শক্তিতেই জ্লিয়া থাকে । অর্থাৎ যে শক্তি
সংবদ্ধ; রুদ্ধ, সংপিই অথবা গ্রংথিত তাহাই প্রবল প্রকাশশালিনী । এবং প্রবলতা না থাকিলে শক্তি
ভার্যাহীন ভাগু। তবেই বলি না কেন হংখ না পাইলে
শক্তি প্রকাশিতা হয়েন না। বিন্দু ২ জল পর্বতপঞ্জরে সঞ্চিত হ্রা গীরে ২ পাথর-চাপা বক্ষ বিদীর্ণ
ক্রিয়া রুষত স্তেখারে গলিয়া পড়িতেলাগিল, তাহারা

উপলথণ্ডের উপর পড়িয়। উলটি পালটি থাইতে লাগিল, তুংখে যেন শুড়াইয়া যাইতে লাগিল; শেমে পরামর্শ করিয়া দশলনে এক ইয়া প্রশ্বর রাশির উপর আছাড় থাইয়া পড়িল। কত বাগা বিপত্তি উত্তার্গ হইয়া একট্ সমতল কেত্রে অনায়াসে বহিয়া যাইতে পাইল, আবার বাধা, আবার বস্তুর ভূমি, কত শ্বানে বিপ্রামন্ত্রণ নিশ্বাণ করিয়া দির ইয়া বাগিত শক্তি পুনং সক্ষয় করিল, এত পরিপ্রাম চেন্টা, উদাস, চিন্তা, বাথা, উৎকণ্ঠা কাটাইয়া, তোমার আমার নায়ে তুমিত ভাঙ্গালগণকে স্লিশ্বভা বিলাইয়া, নিশ্বল পানীয় দান করিয়া, সঞ্জীবিত করিয়া, তুংখে, কন্টে তরাঙ্গা তবে কি তুংখই নদী সকলের উপান্ধার আদি কারণ ?

তোমার আগার কুদ্র জীবনেও কি এই মহা-ভয়ের উপকারিত। দেখা দেয় না ! দেয় বৈ कি । সে कीनन कीननहें नरह गांहा छु:त्थत-मातिरसात व्याम-পরীক্ষায় নির্মানীকৃত না হইরাছে। সে সমুষ্য মুষ্যই नाइ (य मना स्थात त्कार्ड निन्छ - निष्ठि थारक। त्म वृक्षि वृक्षिष्टे नाष्ट्र याहा कालारिक (भवार क्रमानिक ना इटेशार्छ। (यमन ननीजन वाधा शाहेशा, अशासी पक्ष হইয়া গভীরতা প্রাপ্ত হয়, তেমনি মলুদ্য প্রুক্তি ছঃখ रेनना प्रतिख्लात विषय वांगा शाहेशा, खगालीवक हहेशा গভীরতা প্রাপ্ত হয়। গভীর নদী পৃতদলিলা, গভীর প্রকৃতি পুণা পরিষলযুক্তা। মনুষা চিরস্থী হইলে छिएम भाष्टीन, निर्माद्याता इग्न । ननी मभलल एक (क পে ছিলে ছড়।ইয়া পড়ে, স্থানে অস্থানে ঢলিয়৷ যায়, (भाष्ट्रीय-भाष्ट्रीत इस माखा। (म थारन भाष्ट्रीतका, नाहे, ध्यनाली नम्न कार्या नाहे, त्रश नाहे. अवारमाश नाहे रमथारन छेएमण गांधन इशंना, रम थारन नाम कतिरल সমুষাত্ব হারাইতে হয়, সে দেশ য্বন দেশ, নরকজ্ঞানে উহা সর্বথ। পরিত্যাগ করিবে। ছু:খ্যামাদের উদ্দেশ্য व्याहेमा (एम, गःगारतत सगात्। अलोक्छा (पथाहेमा

महान् विभाल धाका ७ जनएउत भएमा पूर्वि ७ इन्निड করে। সংগারে কত বাধা পাও, কত ব্যথাপাও, যাতনায় মুখের জ উঠিতে থাকে, দশদিক্ শূন্য দেখ, তবুও रयन भरन इस एक वृद्धि कारनत कारक हूलिर विलएउए 'যে গাহা খুঁজিতেছ ভাহা এই অনতিদূরেই অবস্থিত। क्रः रथत विताष्ठे ज्ञालाश यथन श्रव्यक्ति वामन विलीम পুড়িয়া থাক হইয়া যায় তথন কে যেন স্বপ্নের ঘোরে नुयाहेश। (नग्न रय व्यामात मी उल मानत मक्रम वहे দৃষ্টির ভিতরে আসিয়াতে। বীরহৃ, মহত্তু, আজ্ঞারি বৈরাগ্য, সাহ্য, উদ্যয় এবং ভ্রমা কোথায় পাইতাম यनि मः गारत इःथ ना शांकिङ, यनि दलारक इःस्थत कङ्क-স্চি বিশ্বনে উনাৰ উদ্ভাত না হইত। যদি বৃঝি আ।মর। ছংগী• তবেই ভিরেশাণিও স্থের উস। ফুট ২ रहेशाटक । व्यागारम्स ब्रुश्न्थत छेशमाल्नत कालान नाहे । যাতনাদায়ক অমুপান সংগ্ৰহ হইয়াছে, এখন ব্ঝিতে **इहेर्न, थार्ग**२ नागिक इहेगा, मर्ग्य २ जानकि পाहेगा অসুভব করিতে হইবে জামরা ছুঃখী—চিরত্রুঃখী—মহা-ছু:খী। ভীর অনুভৃতি হইলেই প্রবাহ আদিবে । সে टकांगित वार्ण भव छ। गिशा याहरव, कीवनणी छकान विहरत, महामागरतत मी जल छाल पूःचनातमः हिन्तू-क्त श तुन्धार्थ हरे ता। जत तकन मृत्यतक ७॥ कति, কেন দৃংথী দেখিলে সরিয়া দাঁড়াই । এস দৃংখ। ভারতের क्रिया (प ९, (छात्रात छ। छ्नाय (लाटक (गन अधित---উন্মন্ত হইয়া উঠে। এস তুমি, সর্ব্ব মঙ্গলবিধাতা, সর্ব্ব সম্পর্ণাতা ! ভারতের গুছে ২ আসিয়া দেখা দেও ১ ताली, महाताला, ननाव, छेजीत (छार्ट, वर्, धनी निधनी সকলকে তোমার তড়িংখাকি দার। বিকম্পিত করিয়া **८म ७ । जा जागां** ज्ञां निष्णं म जां जित्क छेगाम (म ७, **पेंट्ड म**न। (म कु छेना कडा (मंड ।

তীর্থযারা,।

🜓 হরিষার-কুন্তমেলার বিবরশ গত বারের '' দর্ম-প্রভারকে " মাতাবর জীযুক্ত তারপ্রিসন্ধ মুখ্রোপাধ্যায় মহাশয়ের পত্তে পাঠক বর্গ বিদিত ১ইয়াছেন। কুম্ব-যোগের সানের দিন মা *ভাগীরথীর বিশোষ করণা দেখা গিয়াছিল। দিবাভাগে তপন তাপে বালুকীনয়° ह्रिकातरक्त क्रमांने क्निकाइडन्ड ७ वाशु भछन জালামালাপূর্ণ বোধ হইত । . র্রানের দিন প্রারিপুর জনতায় ভক্ত গণের অতিশয় ক্লেশ হইবে জানিয়াই ম: মে দিন অতি প্রত্যুষ হইতে সূর্য্যান্ত কাল পর্যান্ত আকাশ-মগুল অত্যন্ত মেঘাছে ম করিয়া রাখিয়াছিলেন। সানাগী গণের প্রতি মায়ের এরপ দয়া না ছইছল কত লোক যে শৰ্দি গৰিতে প্ৰাণ ত্যাগ করিত, তাছা বলা সায়. না । অভি জনতাপুর্ণ তীর্থে শান্তিরক্ষা করিবার জন্ম নাজকীয় সন্থাবস্থার ত্রুটি হয় নাই বটে, কিন্তু মেচ্ছ ও মুশলমান প্রাহরী গণ গন্ধাতীরে প্রাহরী থাকায় স্থান। বাঁ-গণ অস্পৃত্য স্পূৰ্ণ বশত: পুতশরীরে নিজ নিবাসে माइटि शारत नारे। गवर्गरमणे हिन्तू और कें कृ मू शवर-कारल (करल हिन्दू धहतीत वायका कतिरलहे जाल হইত। স্থান করিয়া ফিরিবার সময় যাত্রীদিগের 🗯 ওয়েতে বড় কম্ট হইয়। ছিল, হরি দার হইতে নিয়সিত रेननिक शाफ़ी राजी हर २०० , त्य्यां मिशान (हुँग हिमान ছিল, এতঘাতীত প্রায় ১৫ দিন সকল টেনেই অভি-तिक याजीत छो ५ इहेगाहिल।

श्रगारकण।

হরিছারে ঝান ও প্রীপ্তরু চরণারবিন্দ সন্দর্শন করিয়া প্রাচীন তপোস্থা হৃদীকেশ দশনে গাতা করিলাম। হরিদার হইতে হৃদীকেশ অন্যুন ১২ ক্রোশ হৃইদে। সং স্বানিব্যাহারী বর্গ সহিত নানা প্রস্কুষ্ণালাপ করিতে ২ এই পথ টুকু পদরক্ষে দুইদিনে গ্রুন করিলাম। পথে পাহাড়, বন ও অনেক গুলি নদী অতি অরতর বেগ্রুক্র করিতে হয়ঁ। দুইটি নদী অতি অরতর বেগ্রুক্র করিতে হয়ঁ। দুইটি নদী অতি অরতর বেগ্রুক্র

भका नकार्षे के श्रष्ठ जन कल कन कहा है। है नाहि छ ३ ছুটিয়াছে। বনে বনকুকুট ও মধুরের এক শুনিচে পার্ধা হার্বন জুলির মনে। হর সৌরভ ভুর , ভুর করিয়া চারি দিকে ভড়াইয়া পড়িয়াছে 👙 শব্দ পথে मक्की गृतिशिरिणय भन्मित छ रणया अया भरिषत भरिष २ कर्राक खारन गाळी पिरात शाकितात छान । मञानाना আছে। স্নাকেশ্ সরিদ্রা ভাগীরণীর ক্টভূমি। এখানে বছু শত সাধু শক্তে কুটীর নিস্মান করিয়া একান্তে नाम कतिया भारकन। १। १ हि मञ्जालय भाका वण्डः সাধুসন্ধাসী গণের ভিক্ষার কোন রূপ অন্ত্রিধা হয় না। আসরা চল্ডেশর সহাণেবের নিকট একটি কুটীরে 🚁 खिंडि कतिसीहिलाम, सिथलाम स्थारनंड अक्छन मान् श्रहाङ् भवाभिक श्रहाशिक माभूमधामीतक मामहत केतुमताल (ভाजन किएकाइन । क्षीरकम मन्दितत স্মীপে, "ক্ষ্লিয়া বাবা" (ইনি কৌণীন ভু এক্সানি কপ্ল ব্যবহার করেন) নামক একস্থন প্র্যাহণ্য ভাবস্থিতি করিয়া থাকেন। তাঁহার ন্যায় শিষ্টাচারী, মুক্ত মধুর ভাষী ও বিবেক বিচারব।ন্ পুরুষ অভি অন্ত দুক্ত হয়। ভাঁহার খভান্ত অন্তুরোণে কয়েক দণ্টা তাঁহার ধর্মণালায় অনুসর। বিভাম করিলাম । ভিনি অভিময় সহ আমাদিগকে পুরী, মোহন ভোগ আদি ভোজন করাইলেন। তথাপরে ভাঁহার সহিত আনেক मना वालाय इंडेल । अहि भारत शातिक में गंडात दुवल অংকোলনকারী শ্রীমান সামীজীর সহিত সাক্ষাৎ ও সদ্যুকিপুর্ব দল্লাপ হটল। গোরকার জন্য বিলাতে মহাং আন্দোলন করিবার নিমিত্ত ভিনি স্বয়ং তথায় সাইবার ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন । কম্লিয়া বাবা डाँहारक भाग्र छोत्व कार्या कतिहाउ छेशाम कतिहान। ক্ষাটেক শের ম'ন্দ্রটী ছতি প্রাচীন ও রমনীয়। স্বান্টিতে গমন ও কিয়ৎকণ বিশ্রাম কৰিলে প্রাণ সন क्षृष्ठिशासास र भाषा ठळ अना शमानी नियुग्छि मिनित मध्य शिक्तिक प्रभाग क्षेत्र मोजल इहेल ;

LELLE KILLING TATES

" জানামি ধর্মা নচ মে এর্জিঃ জানামাণয়াং ন চ মে নির্ভিঃ জয়: জ্মীকেশ। জাদি স্থিতেন যথা নিষুক্রোস্মি তথা করোমি ঃ "

ক্ষীকেশ পুনের গেষন বিজন ক্পোষন ছিল, এখন
শাধানিত শ পাহারের ব্যবদা থাকার অনেক রক্ষের
সাধ্র বিপুল সমাগমে স্থানটি কিছু জনাকীর হইরা
উঠিয়াছে। তথাচ পাক্রতিক শোলা কেই ক্ষেত্র শক্ষির
ভাকাইলে স্থান মধ্যে ক্থবদ ক্রিবিশের ভীত্র শক্ষির
সকার হইরা পাকে, সংশেহ নাই।

७ हिला नन

লমীকেশ হুইছে হছমন ব্যোধা পর্যান্ত ভুঞাগট্ট ভংগোৰন নামে প্ৰিদ্ধ। এই স্থান টুকুর এত প্রমানক্ষ-कत मत्नाहत मुखा कात कमनव तकावा । किया माहे । বন্পক্ত, ৬জাবালুকাষ্টা শৈক ১ ছমির স্থা চারিশী, অভিনে প্ৰিমী ভাৱধুনীৰ কল কল নিনালে কৰ্তৃত্ত প্রিপুর্ণ হয়, প্রাণ মন নাচিয়ার উঠে। যে দিকে তাকাই ट्रम्हे 'बर्कडे जातन क्रम्काल खाकाडेशा शाकिएक डेल्हा হয় - কান্ত বন মধ্যে গলার জীবের পর্কৃটিয়ে সাধ্ মহাজা: এণ নিবাস করিয়া পাকেন। সেপানে বিযাদ, र्नम्। (प्रम, किमा, शक्छा, क्नेका नाडे-चारक ्कन अञ्चात कल कश का.ाल, था की लिल मिलास्त्र हिल्लान जात जाएक शक्तरकत छेळ्ल भूलगुक्त (मोबा द्यपञ्चीत कांग्रा विक्रम परनत कुछभगांगरमालिस शख পল্লৰ শোভিত ডুক্ত রাজির বিকাশমধী ছায়া। কুটিব্র-निनाभी मन्नाभी (यांधी शर्वत अडे शतिक आनाममा-ক্ষেত্র দেখিলে পাসাল অদমেও ভ্রাবং প্রেমের উচ্ছাস ৰহিতে থাকে। প্ৰিমধে। শত্ৰুত্ম গুৰ্গনী না**রায়ণের** মান্দন,---(দখিতে অভিতৰ্গর।, এ ভানটী পরিশ্রাস প্রিকের প্রতিত্র কিশ্রাম ভূমি। এই তপ্রেম অভিক্রম कतिया (कणातनाथ नजती नातायन, शक्षाकी, यसूरमंकी आति मूर्तम छीर्थ मर्भ त्न. या हैए इस ।

नह्मने द्यांना।

ক্ষিত্ত আছে, রামাকুল লক্ষণ ভীর্থগাতা কালে এই পানে বোলা রাখিয়া তপতা করিয়ীছিলেন। ভণোৰন হইতে কেদার নাথের পার্বিতাপথ ধরিতে হইলে পার্বিতী ভাগীরথীর খরতর প্রশৃহিত প্রবল দারা পার হইতে হয় । এ স্থান নৌকায় পার ইও্যা গাঞু मा । बहै क्या बाक मिन शर्या खा भन्नात छ अरा करहे अपूर् দারুপ্তস্থে অভিশয় সুল রজ্মুরাজি রচিত সেই নিমিত ছিল ; লোকে ভাহারই উপর দিয়া গঙ্গাপার হইত, দেছর স্ণাম্বলে গ্র্মন করিলে সেতৃ অতিশাঁয় ছলিত, নিম্নে ভ্রগভীর গঙ্গার দিকে তাকাইলে শরীর কঁ।পিয়া উটিত, মস্ত্ৰণ বিস্থিত হইত 🐈 🔞ই কল্ এই স্থানটি পার গামী • গণের পক্তে অতিশয় দুর্গম ছিল। অনেকে সহেন পুর্বেক তাহার উপর দিয়া মৃষ্ট্রে পারিত না। লো মহিষাদির পক্ষে পদ পার গতি নিরভিশয় ক্লেশকর ছিল, ভাহাদিগকে রজ্জুবন্ধ করিয়া পর পার হইতে वसवान् (लाटक श्रवत (तर्श काकर्षण कतिक, छटन ভাহার। পার প্রাপ্ত ইউ ; গঙ্গার দুর্মি ব।বা প্রবল বেগে সম্ভারণ কোন কার্যাকারী হয় না, কভ পশু কভ সমুষা দেট প্রবল গারায় যে প্রাণ পরিভাগে করিত 🕹 ভাগার দীমা নাই । কিন্তু এক্লে যে সকল আশকা भिष्णि। एक विभागा भूगायत भिन शमाप सुन्तून अभालात नारम धनर्गदमन्त्रे दुधने चारन इलीन्द्रमङ् निकान कतिया नियारक्रम । रमकृष्टित रेमर्भा श्राम ३५० व्यक्त । un कर्ण भन्न प्राप्त श्री जिल्ला स्थाप कि: भक्क किर के खार ति উলর পিয়া চলিয়া যাইটেটে । এই সেতুর বিনিগাত। भगात्रा (म (लाटकत किताश काभी ही का बहेश। (हन ভাগ বলিতে পারি ন। ভাগার পুণ্টাভি কণা চিল্প-পণ শত মুখে কীর্ত্তন করিছেছেন। আমরা মখন লছ্মন **ब्ला**लास शिक्षां कियान , कैथन (कलात नाथ अ। कि माड़िनात পপ,উন্মুক্ত হয় ন।ই। রাজকীয় পুহরীগণ ভীর্থার্থী গণকে শার অগ্রনর হুইতে দিতেছে ।। তথায় খাসরা এক

রাতি বাদ করিলায় ও জেব ঘাটে সানে করিয়া এবং লক্ষণ (লছ্মন) জীর হাতি মৃত্তি দেশন করিয়া জ্বীকেশে ও জ্বীকেশ হইতে হরিখারে ওক্সামী মহারাজের আশ্রীম পুনরাগত হইলাম,।

कालागुशी।

• হরিদার হইতে রেল পথে রুর্কি আ দিল ম। তথায় কয়েকজন বাঙ্গালী বিষয় কার্য্যোপলকে বাস করিয়া থাকেন। রুর্কিরু কলেজ ও জুলের লহর আদি দেখিলাম। বে ভানে নদীর উপর সেতু করিয়া প্রবল বেগে গঙ্গার নহর চলিয়াছে, সেই দৃশুটি দেখিছে অতি স্থানর। নদীর উপর নদী দেখিয়া মনে বড় উল্লাস रहेल। **अहे शक्षात नहत हतियात हहे** एक वाहित हहेगा নদীর নিম্ন তল দিয়া প্রবাহিত হুইয়া আবার কাণপুরে আসিয়া ভাগীরণী সহ সন্মিলিত হুইয়াছে । রুর্কি হইতে রেল পণে জলন্ত্ররে আসিয়া নামিল।ম। জলন্তর रहेरछ **এका नाहरन ट्रॅमियात** भूत ७ ७५। हहेरङ পাহাড়ে ২ জ্বালামুগীর পথে চলিলাম। প্রথমে একটি উতুঙ্গ শৃঙ্গ মুন্নয় পাহাড় ও ডাহার পর এতংনেয় পাহাড় অতিক্রম করিয়া ভাণামুখী আরোচণ করিতে হয় । পাছাড়ে চড়াই ৬ উভরাই (উঠিতে ও নামিতে) যে ক্লেশ ভাহ। অবণনীয় । পুথ পার্শকী অগভার শৈলতল-ভূমির দিকে তাকাইলে প্রাণ শুকাইয়। যাগ। শুনিতে পাই গোয়ান অখ্যান সহিত কত লোক এই গভীর খড়ে পড়িয়া গ্রাণ ত্যাগ कतिशाद्य। श्राथ द्रग दग चारन कला गरा ना कल अवाह गारे, (गरे २ कार्न शाराकी भुगाचा (लारक भिभानाक প্রিক গণের জন্য জলস্ত্রের ব্যবস্থ। করিয়াছেন । ৫।৬ কোেশ অন্তৰ এক এক "পড়াও", এই সকল স্থানে भाकान **७ পথিক मिश्ति पाकितात आन** जोट्ड । কোণাও ২ বা এচ জোশ অন্তরও বিল্লাম স্থান ও थर्माना वाट्य। भाषाद्वर भवर्गाने " धर्मानाना,"

"পালমপুর, ন" "ডালহোসা," "পাঠানকোট "পর্যান্ত পে হাণীব পথ প্রস্তু কার্যা দিয়াছেন, সেই পথ দিয়াই যানাদে গম্ন করে, কিন্তু পাহাড়ী গণ প্রায়ই প্রাচীন পাকদন্তীর দুর্গম্পথ দিয়াই যাত্যান্ত করেয়া থাকে, তাহাতে একটু স্থান সকল নিকট হয় । তুলিনে সামরা জালামুণী পাহাড়ে প্রেটিনি । জালাজী একটি ফুদ্র গণ্ডগ্রাম, মা দাক্ষায়ণীর জিহ্বাণ্ণীয় ।

মার মন্দিরটি অভি জন্দর মন্তারাদি থচিত ও সন্দিরের উর্কাংশ সহারাজা রণজিৎসিংহের প্রদত্ত স্বর্ণা-स्हाननगंधक। शामरतत मसूशवर्छी (न स्यारल मा जाला-দেবীর অগ্রিশিখা স্থির ধীর গম্ভীর ভাবে ধিকি ধিকি জিলিতেছে। চারিদিকে নীল আভা, সধ্য ভাগে জ্লন্ত भिशा भी थि शाहर एक । त्यारक त्म है थारन शूक्ल, পেড়া, বাতামা আদি দান কডিডেছে। কিয়দংশ দগ্ধ इडेशा एशत्न ज्यानिके ध्यान नहेशा थात्क। मन्दित्त বাস কোনে হিংলাল শিখালক লক্করিয়া প্রবল ভাবে জুলিভেছে। লোকে ঘটি বা্বাটীতে ছগ্ধ দ্বা মাত্র ঐ শিখা তম্প্যে আশিয়া পড়ে ও চুগ্ধাদি পান कतिएक शास्त्र ; किश्विष्वताभग शाकित्व त्वारक **अ**मान লইয়া খাদে। মন্দির মধ্যেই হোমকুও, তাহার ভিতর এক্টি প্রবল ও মার কয়েক্টী সামান্ত ং শিখা ত্বলিভেছে। cलारक (महे शारन हतूनां कि करता। गन्नित गर्भा रकांन मगरत १ है, कथन २ है, कथन व वा २४।२० हि जाना गाला शकाम शाय । मन्तितथा ही द्वत वर्षि गए । गर्भा २ भिथा (पथा यात्र। शाहार एत 'बात जन्दे छेशत কুও হাছে, সেটি গোরক বা রুজ কুও নামে প্রসিদ্ধ। সেগানে একটি জলকুণ্ডের পার্শ্বে শিখা জুলিতেছে । 💌 পর পার্যন্ত জলকুণ্ডে ধূপ জালিয়া ধরিব। সাতে ভয়ানক ক্তালামালা প্রচণ্ড ধ্বনিষ্ হ প্রকাশিত হয়। এই कूरधत, वाहिता, २ जात ७ करशक स्थारन मर्गा २ मिथा क्रिक्ता थारक। रकर रकर वरलन, अहे. भारा एक भीर

গন্ধকের খনি আছে, এ সকল শিখা ভাষারই গাস মাতা। যে যাহাই বলুক, আমি বলি এ সমস্ট মহা-মাধার গছুত বিভাত। গন্ধকের একটি দীপ শলাকা জ্।লিলে ঘর প্রবাদ্ধ যা হয়, কিন্তু এতগুলি আচও গন্ধকের শিখা যে মন্দরে অনাদি কাল হউডে জুলিভেছে, (দিখানে জুগন্ধি নাট কেন ? অ'গকে প্রজুরাদি দক্ষ হট্যা চুৰ্ক ১ইয়া যায়, কিন্তু কম কাল হইল যে প্ৰসংৱের शा निशा शाह । जाला माला भाक भाक करिया क लि-তেতে, সে ুসকল পাণর চুর্ণক রা ভলা হয় না কেন । এই জালং মালা নিকাণ করিবার জন্য আরেংজিব নহর কাটিয়া জল খানিয়া মন্দির পরিপুর্ণ করিয়াছিল, শিশা ঢालिया कृत्ता भारत अनतः क कतियाहिल, किन्छ देक दम শিখানিবিল কই। পাহাড়ের উপর হুইতে জলধারা আদিয়া মা'র ভর্নের যে কুণ্ডে প্ডিডেছে, ভাহার নাম मुर्गाकुछ । . ज्ञल घाटिनी छल, छाला ७ छेलाएमा। পাহাড়ের উপরি ভাগে উন্মত্ত ভৈরব, অসিকেশ্বর মহাদেব অজ্নের তপক্ষা সাম ও সাধু দিগের থাকিবার অনেক কুটার নির্মিত আছে। জ্বালাজী স্থানটি অতি त्रभीतः । এখানে পাগু। मध्नौ উপদ্রে নহে, यथा माना দানেই পরিতৃপ্ত হয়। আসরা এখানে তিরাতি কাম করিলাম । জলন্ধর হইতে গাতে। করিয়া জালাজি পোঁছিবার কিঞ্চিন্ন পথে চিন্ত। পুরিণী নামক ভার একটি দেবী স্থান আছে, উহ: "ছিন্নসন্তার" স্থান বলিয়া थिगिक।

কাংড়া উপভ্যকা।

জ্বালাজী হইতে মা দাক্ষায়ণীর ক্রনণীঠ দর্শনার্থ কাঙ্ডা নামক স্থানে পাহাড়ী পথে যাত্রা করিলাম । জ্বালাজী হইতে কাংড়া ১২ ক্রোশ ন্যবধান। অতি প্রভাষে যাত্রা করিয়া সন্ধার প্রাক্ কালে পৌঁ ছিলাম। কাংড়ার পথ বড় ভ্রীমণ দৃশ্য, পথের একদিকে অগভীর থড়া, অপর দিকে পভনোনাথ উভ্নি শোলশৃক, বামে বা দকিণে যে দিকে দৃষ্টি পড়ে, সেই দিকেই ভয়াবছ

विभाग । ताम इस । का फा छ। छ। अ। अ। का का ल । शास्त्र व हो नाभिन्न इंडेशार्ट्स काः कार्यां अपनि मार्थि, উহা একণে ইংরাজাধিকত, তন্মধ্যে পাহাড়ী রাজানকর বন্দী সাছেন । শৈল শিগরে কাংড়া ক্লুদ্র সহরটি দেখিতে খাত জন্দর বলিয়া বেল হইল। এই থান হইতে " লাগল " পাহাড় অভি নিকচ, ভথায় " ভাগলু নালু " মহাদেব আছেন। ভাষার পরেই বরকান্ পাষ্ট্। এই পাৰ ংটিৰ সভাভেগী উত্সশ্সমাল। শুভাতিশুভা ভুষার রাশিতে আন্ডালিত। বর্ফ গলিয়া প্রবল বেগে জালধার। প্রবাহিত ইইয়া কাড়ার চারিদিক দিয়া কল क्ल तरन (मोड़िर १ छ। अहे शाहाड़ित निह्न ভাকাইলে বোধ হয় যেন, ঠেকান রুফার্যর বিরাট পুরুষ শুল জটাজুটু মণ্ডিত মন্ত্রেক অকাগ্যাণি করিয়াছেন ও তাঁহার প্রেমাশ্র দার। সংবেধে বহিতেছে । কাংড়া-উপত্যক। ভূমি সাঠি শীসাঁবতী। দেখিলে, লক্ষীকে চির-विशिष्णभाग विलिशा त्वाभ दश ।

মায়ের স্তন্সীঠ প্রিঞাকার প্রস্তরময় স্থবিশাল . মন্দির মধ্যে অবস্থিত। মন্দির খাঙ্গন অভি বিস্তীর্ণ ও মর্মাদি নান। প্রস্তর খচিত । এখানেও মন্দিরের উর্নাংশ স্বর্ণার্ভ। রণজিৎ দিংহের এখানেও প্রিট্র কীর্ত্তির পরিচয়। মায়ের প্রাঞ্চল ১ ভী, মহাদেব, বিষ্ণু আদির মন্দির, ইবনকুও, ধর্মসভা আদি আছে। এস্থানে किय़९ काल थाकित्ल मश्न भाखित मक्षात रहा। जुलि।-জীতে মাধ্যের জিহল। ও কাংড়াতে মাধ্যের স্তন; জু।ল।-জীতে "থাইবার"ও কাংড়াতে "থাওয়াইবার" অঙ্গ পড়িয়াছে। আমর। কুৎপিপামার্ত কুদ্র জীব, আমাদের বেনু সায়ের স্তনপীঠটি অণিকতর মনোহর বলিয়া বোধ হইল । বস্তুতঃ কাংড়ার ন্যায় শান্তিখদ স্থান অতি অল্লই আছে ৷ তথায় একদিন থাকিয়া মায়ের যথাসাধ্য পূজা করিল।ম। এখানকু।র পাণ্ডারা জুলাজী অপেকাও ভাল। খৃতি অর্মে সস্তুষ্ট। এখানে ম। "বজে-यती" नारम विथाज। जानारनवी व वरक्षमती रननीत

শরনসভ্যা গতি উৎকৃষ্ট। কাশীতে বিশ্বনাথের আরতি যেমন স্বর সহ গীত হয়, এখানেও মার শ্রনাথি গালকে শ্রা রচনা কালে পাগ্রাগণ স্ক্রের স্তবাদি পাঁঠ করে, শ্রনিল শ্রাণু, মন জুড়াইয়া গায় আমরা কাংড়া হইতে পাঠানকোটের পথে চলিলাম অর্থাৎ শ্রনাথ হইতে পাঠান কোটে রলওয়ে গোগে কাম্ছন্দরে আদিলাম তথ্য় শুরু ক্রানকের "স্বোবরে স্বাক্ষালবং "দরবার সাহেব" আদি দেখিয়া জলস্করে প্রাগত হইলাম। ইতি।

ভারত ও মোক্ষ্লর।

সকলেই জানেন ভারত ও গোঞ্চল্লর, এই চুট্ট নাম একত্রে থাকিবারই • যোগী। ভারতের, ভাষ',• ভারতের নীভি, ভারীভের রীভি, ভারতের ধ্য ভারতের অধিবাসী, ভারতের মাটী, মোক্ষমুলরের ৰড়ই খিয়; এবং বিদেশীয় পণ্ডিক মণ্ডলিক মধ্যে মোক্ষমূলরও ভারতের বড়ই আপিনার লেঃক। ইংরাজী মত--শিক্ষার সংস্কার বাদ দিয়া, বিদেশীয়, বিভিন্ন খিশাক্রি একজন লোক, ভারতবর্ষ যিনি ক্রেড দেখেন নাই, এমন বাক্তির নিকট হইছে এই ভদঃ-প্তিভ জাতি, ও দেশ এত অনুরাগ আকর্ষণ করি ইহা ৰাস্ত্ৰিকই অশাশ্চৰ্যমেল শ তিনি ভারতকে যে চক্ষে দেখিয়া পাকেন, একজন খৃষ্টান বিদেশীর নিকট তত খানি আশা বাস্ত্রিকই কল্পার ভাতীত। খৃষ্ট-পশাই গাঁহার মতে ধার শর্মী জগৎ এই ছয় হাজার नश्मत एके इडेशाएड, रेनामक कारल (वाकिमकल अग्नि, বায়ু উষা, খাদির উপাদক ছিল, ক্রমে পরকাল ও একেশবের তও লাভ করে, ইংরাজ, হিন্দু জামান, ত্রীক, একই মহান সাহা জাতির বিভিন্ন শাখাবলি ; সংস্কৃত, ত্ৰীক, লাটিনাদি ভাষা, একই মৌলিক ভাষা-প্রাসূত, ও পরম্পর ভগিনী সমন্দ্র যুক্ত, বৈঞ্চিক কালে জাতিভেদ, জ্গান্তরাদির কোনও বিখাস ছিল না :== এরপ তও সমুদায় ভাষা বিজ্ঞানের মাহাযো মাঁহারা व्याविकात कतिशास्त्र विलाग पृष्ट्भात्रणा, . डीहारमञ নি কট হইতে এত গঁহাকুভূতির আশা করা কথন ও

মাইতনা, যদি মোগুন্লর দেবপ্রস্তির লোক না **एडे(जन) मकल (मर्लंडे , (मर्व व्यक्ति** इ প্রাকৃতির লোক আছেল। দেবপ্রাকৃতির যে কেইট্ ভারত বর্ষ দেখিয়াতেন, সকলেই একবাকো ভারতের अत्नक खेर्णत कथाई बिल्हार्टन । वाँकी मकरलाई কেবল দোষই দেখেন। পুরেবিক্তি দংজার গুলি চসমা अज्ञाश रहेशा याहारमत आछा निक पृष्टित हति मानदर् রিঞ্জি করিয়াছে ভাহার। যে সকল বন্তুকেই বিরূপ **८मभिटत हेटा बाम्हर्या नटर। मणुना जाक ! हम्मत एहाल ख** कि বেদকে চাষার গান বলে ? জাবার এছেন মহাজ্ঞাণের লিখিত পুস্তক পড়িয়া সিভিল্স।ভিন পরীকে। ঠীর্ন हरेता व (पर्ण तोक्यूक्म रहेता आमिट रहा। टीराही ভারভবর্ষে বাদকে Moral exile িনীতি রাজ্য হইতে নিকাদন] ও ভারতবাদীকে নিম্ন স্থোনীর প্রাণী— मिला छ धारण ग भूग छ। न कतिया पारकन, हेहारणत অম দুর করিবার জন্ম খেলকম্লর [১] ভারত বর্ণ কি भिका (भग ? [२] शिन्सूत । । अभिक्षेत्र, [७] म॰ऋड ভাষায় মানবের প্রয়োজনীয়তা [৪] আগতি [৫] (कन छ व् [भ] रेनिम क (मन छ। [भ] (तम छ (नगांच, --ा हे करा है। अपूला नाल का कति साहित्यन : (था ल मिक्सातामीन इहेशा श्रामण है जिनि द्वरत अख्यात, वङ् अधारमाम्हे (मिथ्राहिन् এবং আ্যা "আপ্রতিত" বলিয়া নিদেশ করিয়াছেন, কিন্তু সেই সকল **प्रद्वल**ा बाम भिरल, १७भि माद्या याहा बिसाएइन क्सजन हिन्दू ग्राङ्ग १ जन । हार्क ८५ विशा शास्त्र १ ভাঁহার মেই বক্তা গুলি একবার ২০১৪ চেঁকীদের शहित्क प्रति । मैं। शात्व क्ष अवकाश मात्रे काशातित कार कुछ अवकी खल भारत छेका व इहेल : गक्स खात विन्धात जास जानुवाम (महसा (भवना, कातन गौहारानत कना कह शानक जीशासित ७७ भागि है ताकी छोन সম্পূর্ণ আশা করা যায়। মোক মুগ্র সংগ্রন্থবিং বিলেশীয় अधिकामत क्या कृष्य क तिश विवाद एक्या-- 'वालापन हे। हेन, 'तुकराजान (कती, क्रकर्ड, (छिम् किरायहे, कानम् बाविषेन् ५ त्यरहेन् महार्कनकी, बातग्राप्तन् मुहेत, शिटलाश, ८०र.न्स, है।तनात, केंडिकााम, अमिलिह, ভয়ারেণ, উইলকিন্স, উইল্সন, এবং অন্যান্য পণ্ডিত বর্ণাচা পণ্ডিত স্থলীর বাহিরে অতি অল্লই श्रीविष्ठि । जारमंदिक श्रीवर्गा, तेषु, श्रोजुष्या, अवः

হিতোপদেশ ব্যতীত শংস্কৃত সাহিত্যে আর কি আছে ? শোক্ষম্পর, ভারতেকে ভূলোক-স্থর্গ, ভারতবাসীর মন অভানত জান করিয়া থাকেন—

"If I were to look over the whole world to find out the country most richly endowed with all the wealth, power and beauty that nature can bestow, — in some parts "a very paradise" on earth— I should point to India. If I were asked under what sky the human mind has fully developed some of its choicest gitts, has most deeply pendered on the greatest problems of life, and has found solutions of some of them, which will deserve the attention even of those who have studied Plato and Kant— I should point to India."

हिन्द्रारक मिणापानी वलाग जिनि विक्रमञ्जूल বলিতেছেন:- " Are a' these 253 millions of human beings to be set down as liars, because some hundreds, say, eyen some thousands of Indians, when they are brought to an English court of law con Suspecion of Enving committed a theft or murder do not speak the truth, the whole truth, and nothing but the truth ? "-डी हात भातना, अक्रुड हिन्दू आया मधलएड मिरन, সভ্যতালোকিত সহতে পাওঁয়া যায় না। প্রকৃত হিন্দু, সরল সভাবাদী দয়ালু, মানবোচিত বছগুণ সম্পন্ম । **जाहात्क (कार्टे लहेश) (शत्म (म जात (म जन** 'থাকেনা। তিনি নানা প্রমাণ দারা ভারতবাসীয় मञानिष्ठी (मधाहेशा, कड कड भाक्षीश वहन छेसान করিয়া শেষে বলিভেছের "I do wish it to 📅 understood and accepted as a fact, that the damaging charge of untruth fulness, throught against the people is utterly unfounded with regard to ancient times. It is not only not true, but the very opposite of truth. " আয়ত ও পদ্ধে লিখিতে ছেনঃ -- " The self within was drawn towards the Highest self, it found its true self in the Highest self and the ononess of the subjective with the objective welf was underlying all reality, as the dim drawn of religion—as the pure light of philosophy." [5]4 Sehopen-haner হটতে ত্লিলাকেন:- 'In the nhole world there is no study so beneficial and so elevating as that of the Upanishads. It has been the soluce of my life—it will be the, soluce of iny death."

ताम मिलत नाणात উপल (क रम ममन निर्मित निर्मित निर्मित काणानामी कार्ताक हहेगाहिल, जागाल नता ज्ञान कर्माहिल, जागाल नता क्रमाहिल, जागाता मासता रमाणक हहेगाहिल, जागाता मासता रमाणक हहेगारह। निर्मात हिलटिल हा याशाता रहेला जागाम जाणाम लुठे करिसाहिल धामाणिक हेगारह जागार जागाम क्रमाहिल धामाणिक हेगारह जागाता रक्षा रक्षा रक्षा रक्षा मामकी ना जी शाखात है स्थारह।

কানীনিবাসী কুমার প্রীযুক্ত সামী প্রীক্ষানক্ষ
পরিপ্রাক্ত মহাশ্য (শীক্ষা প্রসংগ্রহণ নাম)

 প্রাণাম্বী ইইতে প্রভাগেগন কালে জলদ্ধর গছরে
আগমন করেন এবং অত ভানের বাসালি ও গ্রাপ্ত
খানীর লোকের খারা বিশেষ জ্পুক্ত ইইয়া ছাউনীর

 কালীবাটীর প্রাস্থনে ভুই দির্স ও সহরের পর্যাওায়

 একদিন পর্ম বিষয়নী বক্তা করিয়া যে কি পরিমাণ
আনক্ষ বিভরণ করিয়াছেন ভাহা সাধান্ত,পত্তে শেণা
আসাধান কল্পুর বাসীগণ ভাহার উপ্রেশপূর্ণ পর্যাক্ষা

 অবনে আগনাকে কুতার্থ জ্ঞান করিয়াছেন। ইতি

খমুগত

अश्विमान वर्ष ।

বিগত হরিণারের কৃত্তমেলায় যে ভারত ধর্ম মণ্ডলের অধিবেশন হ্ট্যাছিল, ততুপলক্ষে দার্বস্থের মহারাজ নিম্নলিভিত ধর্ম এচারক পণ্ডিতগণকে সম্মান-পদক দান করিয়াছেন—

rianjes"	
भैयुक्त भश्चित्र सम्मित्भात (पर भर्मा	अथूता
শ পণ্ডিত উ:কৃষ্ণ শান্ত্ৰী	জলস্কর
 (शात्राणि अधूनम्बाठाशाञ्जी 	त्रुक्ता व व
 গোসামি পাওত রযুণর) ময়ালু বেদান্ত ভ্নণ 	क्रम्त्रवना
🧸 পাণ্ডত গোণিশরাম শাস্ত্রী	वरतनी
🕶 পণ্ডিত অলিক। দৰ্বাসি	ভাগলপুর
" প তি ভ দেবী সহায় শৰ্মা	কলিক।ভ।
🍨 পণ্ডিত রাম্মী লাল শর্মা	নোহতক
ত প্রতি গ্রিপারী লাল শান্তী	অমুভসর

" शिख्क (शाक्ल अमाम भवा)	ক ানপুর
" পণ্ডিত বুলাকী হান দান্ত্ৰী	৵৺য়ভ৸য়
"পণ্ডিত বন্ধালী দক শাল্লী	অয়ুদ্সর
🖷 পণ্ডিত মে। হন লাল শগাঁ	क्राभन्नी
🤲 পিতিত কামিলাল কথা।	শত্রভগর
" পণ্ডিত কাশীনাপ শ্স্ত্রী	भिन्नी
"ুপণ্ডিভ মূরলী ধর - আমি।	क्षत्रिय नश्त
वर्षे शिख्य अभिष्ठ स्वति (१५१ छो।	โคสิโ"
" পাওত গোঁদীনাথ শন্ম।	नारशेत्र
[*] পণ্ডিত অসাদত শৃশ্যা	नरत्रनी
৺ পণ্ডিত রাম সহাধ পেড়া পর্ডি	রি ওয়াড়ী
^ল পাণ্ডিভ ভাগীরপুর্কী শর্মী	fa en । जो
'' পাওত ভোগা লালকী শর্মা	ভরতপুর
" পণ্ডিভ भएन द्रभाष्ट्रन भावतीसं वि	
" পণ্ডিউ গেণারাম ক্যোভিবিদ	- পটিয়ালয়
" পश्चित । भन हस्त । नमार्गन ,	विषय
Andrew A. Come in contraction and the	- 6-6 Cm

আমরা ভ্রিণা আহলাদিত হটলাম নিম্নলিথিত ভানের ধর্মণত। সম্হের উৎসণ নিশিলে সম্পন্ন হটনা গিয়াছে। যথা সন্পাস, গিলাজগঞ্জ, বহরমপুর, জামাল-পুর, মিরাট, আজল শাসন।

वाउड़ा नामिनाआत्म की युकं तानानमात्र वस् महानेतात डेन्याण जकि छनाड महातिनी मधा मृत्यानिक इदेशाक । देश छग्रशाम वर्षे । आणा कित्र महागन मछात काथा निक कोग्रान व्यक्तिमनिक कित्रक कियो कित्रिन ।

শ্রীযুক্ত আবক্ষ গঙ্গোপাণ্যায় মহাপানের থাকি ভক্তির নামক এক পানি পুস্তক আমনা উপহার আবে হইয়াছি । ইউনোপীয় নবা দশনের সমুফ্ত রশ্মিতে লোকের মন দিন ই নিশুক্ত হইনা উঠিতেছে এ ছুর্দিনে ভক্তির শীতল সমারণ প্রবাহত হইতে দেখিলে মহেবড় আহলাদ হয়। প্রাণক্ষ্ণ বারু পুস্তক থানিতে ভক্তির স্থানে চলিতও লিখিয়াছেন। এই রূপ ভক্তি কথামত-পূর্ণ পুস্তক যতই প্রাণাভিছ ইবে ভঙ্ট পর্ম গাহিত্যের প্রতি হইবে।

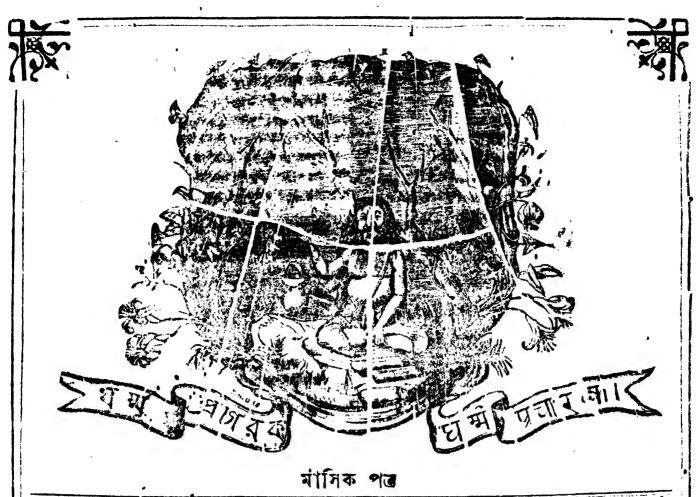
	आंगरभ"	শক্তা	১ ম পণ্ড (ক্রীকুদ	। श्राम्	ণ ি ৱা ত্ৰ য	
							10.
	1	कामश्री	দির স্থোচ	ः २श	अंश्यान	11 ,	13.
ডাকমাশুল	म्ह यूला	গৌড় প	निय जा	্ম (ব	সাত্ৰাদ	শ হ }	14.
		গোগ সং	कत्रम (ध	াতপ্ত	যোগ শ	ত্রের সংস্থ	<u> </u>
টাকা,রামা ত্ত ভাগ	गा, यांगी-				•••		100
লীর টীকা,কুমার 🖻	ो हैं। कुरू	्रभाग्नं, शह	বিক (ম	সিক 🕫	াত্র)		
ানুবাদ ও 'গীভার্থ	मन्में। भ-	উৰ্য কা	शरक गृहि	15	•••	বার্ষিক	414.
তাৎপৰ্য্য ব্যাখ্যা স	হিত। ৭.	মধাম	ঠ	A	***	• • •	शर्-
রেণ) …	11/0	সাধারণ	D	(A)	•••	* ***	310/0
२ श मः ऋद्रग)	h.	পঞ্চামূত্র	•	4.	.:.		11.
)	4.	শিবলি জ	शृजनिति!	ने (२ श	সংস্করণ)	3.
वाम) · · ·	10"	গীগতি ও	হ্মতী ট	: <u> </u>	ন (ধাঁহা	ৰ ই টাহা ৫	0) /3
্বাদ) (৩য় শংক্ষর	1) /.				***		1.
•••	150	তন্ত্ৰ	42	•••	n		•
भ्रमःऋत्व)	13.	৺ সর্গ	ित टक्षा	ভবি ৷	্ৰাড়ে	त छेशंब	,
• •••	e.	अभित क	त्भ डिंज	5 - a	भागित"	ग्रांथ क	
২য়৩য়৪র্থ ভাগ		लहेरल उ	गक्या छ	र लाहि	(त ना)		
(২য় সংক্ষ	ब्र १ ।	भग सा है	ত্রলগ য	गीत प	हिल्ला	F	10/30
•	150	गहें।		4.4			
***		বকুড়া	২য় খ ও (ी क र	3 सगब		
•••	, ,,	थातु जाय	ነ কুড়				1.
	ভ্রা যার। ভাকমাশুল ভাকা,রামাশুজ ভাগ ভার টাকা,কুমার ভ্রী থাকুবাদ ও 'গাঁভার্থ ভাৎপর্য ব্যাখ্যা মা রেণ) ২য় সংক্ষরণ) । বাদ) বাদ) থাকুবাদ (৩য় সংক্ষর য় সংক্ষরণ) ১য় সংক্ষরণ	ভাকমাশুল সহ মুলা তীকা, রামান্টল ভাষা, স্বামী- তীর টীকা, কুমার শ্রী শ্রীকৃষ্ণ শুরুবাদ ও 'গীতার্থ সন্দীপ- তাৎপর্য ব্যাখ্যা সহিত। ৭ রেণ)	ভ্রা যার। ভাকমাশুল সহ মুলা তীকা, নামান্তল ভাষা, স্বামী- তীর টীকা, কুমার শ্রী-ক্রিফ্র লাহ্রাদ ও 'গীতার্থ সন্দীপ- ভাৎপর্যা ব্যাখ্যা সহিত। ৭ হা সংকরণ) মামানণ পঞ্চান্তল মামানণ স্থান্তল মামানণ স্থান্তল স্থ	ভ্রা যার। ভাকমাশুল কর মুলা ভাকমাশুল ভাষা, স্বামী- ভার টাকা, কুমার জ্রী প্রিক্ষণ লিকা, রামান্তল ভাষা, স্বামী- ভার টাকা, কুমার জ্রী প্রিক্ষণ লিকাল ও গাঁতার্থ সন্দাপ- ভারপার ব্যাখ্যা সহিত। ৭ ২র সংকরণ) ২০ ২র সংকরণ সংকরণ স্থা	মহোদৰ কর্ত্ত হক্ত । ভাষমাশুল দহ মুলা ভাষমাশুল দহ মুলা লীকা, রামাশুল ভাষা, স্বামীলীর টীকা, কুমার প্রীপ্রিক্ষণ লাহ্বাদ ও 'গীভার্থ সন্দীপ- ভাহপর্যা ব্যাখ্যা সহিত। ৭ হা সংক্ষরণ) নাদ) নাদ) হা মংক্ষরণ) মাদারণ ঐ শামারণ ঐ ঐ সাদারণ আ য়াদ্বাদ) সাদারণ ঐ সাদারণ সাদার	ভাষা যায়। ভাষা যায়। ভাষা গায় । ভাষা গায় । ভাষা গায় লাল লাল হা মুলা তিকা, বামান্তর ভাষা, স্বামী- তীর টীকা, কুমান লি প্রিক্রিফ প্রামান প্রিলিজ পরার বালা সহিত। ৭ ভাহপুর্যা ব্যালা সহিত। ৭ হা সংস্করণ) তা প্রামান ক্রেলা প্রমান ক্রেলা প্রামান ক্রেলা প্রমান ক্র	সংক্ষান । মান্ত লিখা করিক কন্ত) মান্ত লিখা করিক কন্ত) মান্ত লাখন করিক কন্ত লাখন কন্ত লাখন করিক কন্ত লাখন কন্ত

िठि निविवात भावतमा काशक द्वनाम नोत गुर्जि । अनाम द्वाक गरिक

श्राक शाक कि व विश्वा ।

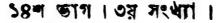
 প্রের জন (৮৪য়া মৃগা।১/১০ মাসুল /১০ মোট---> किं इंडिंग अकारतव वृतः ४०० माखन १० व्यक्ति-१०० के चर्न व वन रम बना मृगा १०० नाचन १० साछ-१/०-वृद्धि होन (कर्ग भाइतका र प्रिका भारकहे वक व्याकारतत मना ८० माञ्चन-/>० (नामे---)>० खांके चाकारतत अला do माञ्च, / माके -do-निय्नतिथिक किंकानाय मृत्यानि शाक्षेत्रिक क्वेरक।

> मञ्जाभाक काभी वर्षामुख गञ्जानरा शाख्या यात्र ।



"धर्मी विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा, घर्मी य पापं नुद्ति. धर्मी सर्वे प्रतिष्ठितं, तसाहस्रे परमं वटति॥ " स्र्तिः

কাশী—ভারতবর্ষীয় আগ্য ধর্ম প্রচারিণী সভা হইতে প্রকাশিত।



वावाष्ट्र मान, नः ১৮১৩।

বারাণসী, ধর্মায়ত বস্তালয়ে যুদ্ধিত।





নিধলিখিত পুস্তকাদি "বারাণদী ধশামৃত যন্ত্রানিয়ে" শ্রোপ্ত হওয়া খায়।

পুস্তকের নাম। ডাকমাশুল সহ যুগ্য <u>শুমধ্যবদ্গীতা</u> (শান্ধর ভাষ্য, আনন্দগিমিনকা, রামামুক্ত ভাষ্য, স্বামী-কৃত ট্রাকা,মধুদুদন সরস্থতীর টাকা,কুমার শ্রীশ্রীকৃষ শ্রেদর পরিভ্রাজক কৃত বঙ্গাসুবাদ ও 'গীতার্থ সন্দীপ-নী' নামক উপাদেয় ভাষাতাৎপর্য্য ব্যাখ্যা সহিত। १ ভক্তি ও ভক্ত (৩য় সংকরণ) निठा कर्षान्द्र (कीगूनी (२ म मः ऋत्र) ষাপ্ন ভাষা (২য় সংস্করণ) রাম গীতা (মূল ও অমুবাদ) মনিরত্বমালা (মূল ও অনুবাদ) (৩য় সংক্ষরণ) ৴৽ শাদ্ধতত্ত্ব (৩য় সংক্ষরণ) 🕠 ছেরের্নামের কেবলম্ (২য় সংক্ষরণ) 15. ./0 পরিব্রাজকের দঙ্গীত ১ম২র৩য়৪র্থ ভাগ (२य मःऋज्ञन) ८० গীতা মাহাত্য (মূল ও অমুবাদ) अकटांबंड कारा ৰীভিবছ মালা

বক্তা ১ম খণ্ড (শ্রীকৃষ্ণ,প্রসৃদ্ধ পরিব্রাঞ্জ	F
মহোণয় কর্তৃক ক্বন্ত)	10/0
অনপূর্ণাদির স্তোত্ত (২য় সংক্ষরণ)	13.
গৌড় পালীয় আগম (বঙ্গাসুবাদ সহ)	10-
যোগ মকরন্দ (পাতপ্তল যোগ শাস্ত্রের সংখ	5 4
वर्गाभा मह)	10/0
ধর্ম্ম প্রচারক (মাদিক পত্র)	
	٠١٩٠ -
मंधाम धे छे	२।०'•
मांभात्र भ के	210.
পঞ্চামৃত · · · · '	11.
শিবলিঙ্গ-পূজনবিধি (২য় সংস্করণ)	3/
শ্ৰীমতি ও হুমতী উপাখ্যান (বাঁহা ৫২ ভাঁহা	٥٥) ١٥٠
গীডাঞ্জলি	1.
তন্ত্ৰতত্ত্ব · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•
৺ অন্নপূর্ণার ছেটে ছবি ('কাণ্ডের উপর	,
স্থন্দর রূপে চিত্রিত—৫ খানির অধিক	J.
লইলে ডাক্মাশুল লাগিবে না,)	
মহাত্ম। তৈলঙ্গ স্বামীর ফটোগ্রাফ	10/30
यहेठक • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	1.
বক্তা ২য় খণ্ড (🕮 কৃষ্ণ প্রদ্র 🐪	
পরিবাদক কৃত)	

ि कि निश्वितात कांगक (मयदम्योत मृद्धि ७ ध्यनाम क्लाक मांब्ड

थां के भारक हो विश्वा ।

ৰড় আকারের ম্লা ।১০ ডাক মাহ্লল—/১০ মোট—এ০

বৈ গুণের জল দেওরা মূলা ।১০ মাহ্লল /১০ মোট—১০

কৈছু ছোট আকারের মূলা ।১০ মাহ্লল /০ মোট—১০

বৈ গুণের জল দেওরা মূলা ।১০ মাহ্লল /০ মোট—1/১০

কুর্নি হীল কেবল পাচরজা ৫ দিখা পাাকেট

বড় আকারের মূলা ১০ মাহ্লল—/১০ মোট—১১০

ভোট আকারের মূলা ১০ মাহ্লল /০ মোট—১১০

কিছালিখিত ঠিকানার মূল্যাদি পাঠাইতে ছইবে।

যন্ত্রাধ্যক

काणी धर्माम् ७ यद्यालदत्र माध्या यात्र ।

धंषा थि हा त्रा

"কুলং পবিত্রং জননী কৃতার্থা বস্ক্ষরা পুশাবতী, চ তেন। অপার সমিং সুথসাগরে, আিনং পরে ব্রহ্মণি যুসা চেতঃ॥"

১৪শ ভাগ ০য় সংখ্যা

" এক এব স্কন্ধরো নিধনেহপ্যনুষাতি যঃ। শ্রীরেণ্সমন্ধাশং সক্ষন্যভূগভভি ॥ শ

শ্কিমি। ১৮১৩ • আষাত মাস

गाळवका-मः हिठा।

(পুর্বাহেপতি)

ন দংশীয়ং এপালেও নুক্সাদ প্রিয়ং বদেও।
নাহিত নাতৃহং ইচৰ ন স্কেনং স্থান্থ্যী ।
সাহাতে আনদংশার উপস্থিত হয়, তেমন কার্য করিবে না। সহসা কঠোর কথা বলিবে না। অহিত-জনক এবং মিণ্যা কথা বলিবে না। চৌর্যুত্তি অব-শ্বন করিবে না এবং স্ক্রোর হইবে না।

দাক্ষাংণী ব্ৰহ্মসূত্ৰী বেণুমান্ গক্মগুলুং।
কুৰ্য্যাৎ প্ৰদাক্ষণং দেব মৃদ্যোবিপ্সবনস্পতীন্।
ক্বৰ্কগুল, সঞ্জোপনীত, দণ্ড এবং ক্মগুলু দার্শ ক্রিবে। প্রতিদিন দেবতা নিম্মাণ করিবার জন্ম যে
মৃত্তিকা,গো, বিপ্ল, এবং ধনস্পতি, ইহাদিগকে প্রদক্ষিণ

क्विंद्ररा

নতু মেংকেনীচছারা বর্ত্যান্ত ।
ন প্রত্যক্রিরি গো সোম সন্ধ্যাপ্ত ব্রী বিজন্মনঃ।
নদীতটাহিত ছায়ামর পথ গোশালা, কল ও তথ্য
সংগ্যান যাত্র ভাগে করিবে না। সূর্যা, অগ্নি,গো, চন্দ্রমা,
কল, স্ত্রী, এবং বিজ ইংগদৈর সন্মুখে এবং সন্ধ্যাক।লে
সলম্ব্র ভাগে করিবে না।

(नक्ष्मकार्क्ः न न्याः छीः नह मार्कोमधूनाः।

নচ মূত্রং পুরীষং বা নাশুচী রাভ্তারকাঃ।

সূর্য, মৃত্র, পুরীষ, উলঙ্গ ও কৃত্তমৈপুনা স্ত্রী ইহালের দিকে দৃষ্টিপাত করিবে না। অভন্ধদেহে রাই ও ভারকার দিকেও দৃষ্টিপাত করিবে না।

" আয়ং মে বজ্র" ইতোবং সহাং মন্ত্রমূদীরয়ন্।
বর্ষতাপ্রাহতে। গচ্ছেৎ অপেৎ প্রভাক্শিরা নৃচ।
হৃতির সময় কোথাও যাইবার প্রয়োজন হইবে
মৃত্তকে হজুনা দিয়া " আয়ং মে বজ্র" ইত্যাদি মন্ত্র জপ করিতে করিতেই চলিয়া মাইবে, ইহাতে ইতি-জনিত বাগা হইবে না । পশ্চিম শিরা ইইয়া শয়ন করিবে।

সিবনাসক্ শরুন্ মৃত্রেকাংজপার ন নিংক্ষিণেং। পানে প্রকাপয়েলায়ে নিংক্ষিভিন্ত্র্রেছ। শ্লেষা, রক্ত, মৃত্র ও বীহা জলমদো কলাচ নিক্ষেপ করিবেনা। গলিকে উল্পেন্ত পদ্বারা ভাষাকে স্পৃশি করিবেনা।

জলং পিৰেলাজনিনা শ্যানং ন প্ৰবাদয়েই। নাকৈঃ জীড়েল গ্যাকৈ ব্যাধিতৈকী। ন সংবিশেই। লাজনিপুটে জলপান করিবে না। অকঃরণে নিদ্রিত ব্যক্তিকে জাগাইবে না। দ্যুতক্রীড়া করিবে না। ব্যোগীর সহিত এক শ্যায় শন্ত করিবে না।

বিরুদ্ধং বর্জাং কর্মা প্রেতধ্যং নদীজরম্।
কেশভক্ষ ভূদাপার কপালেয় চ সংস্থিতিম্।
দেশ ক্লাদি নিরুদ্ধ আচার বহুলন করিবে। শবদাহের ধূম, আন্তাধ্ কারবে না। নদীতে সন্তরণ ক্রিবে
না। কেশ, ভল্লা ভূষ, কয়লা ও খাপ্রার মধ্যে বাস্বে

क्त्रभः।

'কামার নিজ্য।

নয়ন মন-রঞ্জন কত পদার্থ জগতে সঙ্জিত রহিয়াছে. সন্মাথে কত হাশোভন বিচিত্র সামগ্রী পুঞ্জীকৃত হইয়। রহিয়াছে, এ সমস্ত পাইয়াও মন ত তৃপ্ত হয় না। ইহা অংপক: গাৰুও কি যেন কামনার সামগ্রী সে খুঁজিয়া বেড়ায় ৷ ইহা অপেক মন খেন আরও কি চায় ং আবার ষাহাকে সম্মুখে দেখিতে পাই না, মন বৃদ্ধির অভীত স্থানে যাছার তব্বার্তা লুকায়িত, তেমন জিনিষকে পাইগাও ত মন তৃপ্ত হইতে চাছে না। যাছাকে আমি আমার বলিয়া আয়ত করিতে পারি, যাহাকে शाहेत्न भनः शांग जानत्म छेरमूल हहेशा ये ७ ५ व স্ত্রেক্তার বলিয়। সাক্ষ্য দেয়, তেমন জিনিদকে পাইবার ভিনাই আমার অন্তরাত্মা লালায়িত। যাহাকে আমার किनिष विलया जानत्म जालियन कतिएक भाति, जामात মাজে সজ্জিত হট্যা আথার ভাবে " আমার " হট্যা गाहा बाबात कार्छ जीरम, जाहारक लहेशाहे जानि জুড়াইতে চাই । আমার হৃদয় গাঁহার মোহন মূর্তি ধারণা করিতে পারে, আমার কৃদ্র প্রকৃতি যাঁহাকে "निक्च " विलग्न। भिष्ठात कतिएक भारत, जामि ভাঁহারই চাকুচরণ-রশোর ভিখারী।

জানে আমি পাণী তাণী নরাংম। এই পাণীর দেবতা ইইয়া এই অগতির গতি ইইয়া এই অনাথের নাথ ইইয়া যিনি দেখা দেন, আমি তাঁহাকে চাই । সাধকের হৃদয়মণিদর যিনি আলো করেন, আমি তাঁহাকে

লাইয়া কি করিব ? সাধকের মাহা সাধের ধন, আমার মত অসাধকের জন্য ভাহাকে কি দারণা করিতে পারে ? গ্রুণ প্রজ্বাদের স্থান্য মিনি সম্পত্তি, আমার এ ক্ষুদ্ধ সদয় তাঁহাকে কি স্পর্শ করিতে পারে ? উপাদেয় রাজ-অম আমার মত ন্যাদিরাস্তের উদরে পরিপাক পাইবে কেন ? প্রতরাং প্রদ প্রস্থানের ঈশ্বকে আমি চাহি না। কিননা যে সদয় আমার নাই। জানীর ঈশ্বর—যোগীর ঈশ্বর—যোগীর ঈশ্বর—যোগকের ঈশ্বরকে আমি চাহি না,আমার আমার ঈশ্বরকে চাই। আমার প্রিয়তম সংস্ক্রীকে "আমার" ভাবে অমুর্গ্রিত করিয়া লাইতে চাই।

আপনার ২ ভাবে জগতের সকলেই আপ্নার জিন্মকে ভাল বাসে । পরের চক্ষ্ লইয়া কেহ ञाशनात किनिमृत्क जाले, नात्म न।। भरतत कृषय लहेसः क्रिक् वाभगात किनिमक अन्तर्भ (मध्य भा । आभ-নার চকে গাংহা ভালবাদার সাম্গ্রী, পরের চকে ভাত্য মুণিত হউক, 'পুচৰ হউক, তাহাতে কিছুই আদিয়া যার না । কুৎ্যিত ক্লাকার পুরুষ্পরের চকে স্থিত ছইতে পারে কিন্তু ভাছার মতীন্ত্রীর পক্ষে মে ভালবাসার জিনিয—সেহ আদর সায়। মমতার অনন্ত এতাবল । गडी (म इत्या-पर्ण पिया डाहात পভিকে प्रयं, मह क्रमश थानि लहेशा यनि जूनि प्रिथिए, जाहा इहेरन দেই বিকট কদাকার পুরুষে অপুনর, মাধু ই দেখিতে পাইতে। সভরাং নিজম লইয়াই ভালবাধা। সদ্তাব-ভাৰিত হইয়া মাহার আমার অধিকারে আমে, আমার जामिक (कन्नाजियूकी इहेशा (महे विटक अल्पादन ছুটিয়া থাকে। এই মদ্ভাবের শহিত মাহার সংব্রু নাই, জগতের লোক ভাহাকে এফ মুখে স্থলর—উত্ম— छेशारमञ्जलिता आगात जानगरमात गहिल लाहात (कान भण्णर्क ६) करक शास्त्र ना । ध हे " वामान ভাবের " মহিত ভগণানের মত খানি সম্বন্ধ, জিনি তত খানি ভাষার ঘনিষ্ঠ। " খামার ?' বলিয়া ভালবাসার जिनियदक यान भूरता अधिकात वैविष्ठ न। शाहेलाम

ভবে তৃপ্লি পাইব কেন ? ভাই "তোমার" ঈশরের कार्ड गाइँ हिं आभि ७ म भारे। जागात वाभिष्य गाँहात চরণতলে গিয়া বিআম করিতে পালে, সেই প্রাণ-मथात कथा गीलशा लाउ! आभात मतरभत काहिनी याँहात मतनारत (भो हिस्ड भारत, रमडे निशृष्ठ छन्-বাৰ্ত্ত। বুঝাইয়া দাও ! দ্বংখে শোকে মন্ত্ৰণায় পীড়িত হট্যা বাষ্প্রদর্গন লোচনে ঘাঁহার দিকে তাকাইলো যিনি প্রগতি হরা মা হইয়া দৌড়িয়া আমেন, তাঁহার চরণবেপুর সাহত গামার গামির যাহাতে মিলিত চইতে পারে, ভাহার উপায় বলিয়া দাও ! জানি তিনি ত্রিজগতের মা, কিন্তু তাহাতে আমার কি ? তাঁহার সে ৰ্যাপক মৃত্তিকে নিজন্ম বলিয়া আমার এ ক্ষুত্র প্রকৃতি ধারণা ক্রিতে পারিবে কেন্ঁ ? জিজগতের মা যদি আমার মা হইয়া দেশা দেজ, তবেই ত আমার ভরমা। জ্ঞান্থ যদি আমার জ্লয়নাথ চইলা অবভীৰ্ হন্ ভবেইত ছঃগী জীব তৃপ হইতে পারে । জামার কুধায় यिनि अम्पूर्णा, त्रारण गिनि चान। देवसानाथ, कामनाश गिनि কল্পজন, তাঁহাকে লইয়াই আমার কথা । ভোমার 🟲 मजाः भिवः चन्मतः " सहेशा चामात चामा भिष्टित ना ।

পদার্থ যত কণ মোলিক, ততক্ষণ তাহা ব্যাপক।
পদার্থ থি জিলু হুটুলে আর তাহার ব্যাপকতা থাকে না।
প্রকাণ্ড এক খানি বস্ত্র যত ক্ষণ পর্যান্ত মোলিকাবন্ধায়—
অপণ্ডিতাবস্থায় থাকে, ততক্ষণ তাহার ব্যাপকতা থাকে
অর্থাৎ নিক্র ২ প্রয়োজনাতুসারে গেই বস্ত্র হুইতে কেহ বা জামা, কেহ বা পাজামা, কেহ বা উন্ধায় প্রস্তুত করিতে পারে, কিন্তু মখনই তাহা খণ্ডিত হুইবে অর্থাৎ কিলিকে পারে, কিন্তু মখনই তাহা খণ্ডিত হুইবে অর্থাৎ কিলিকে আনা আদি প্রস্তুত হুইবে, তথন সেই গণ্ডিত মার্ত্রি হুইতে ব্যাপকতা চলিয়া যাইবে। তোমার গায়ের ক্রামা আমার গায়ে ফুইবে না, আমার পাজামা তোমার ক্রপ্রস্তুত হুইবে না। ক্রিন্তু তাহাদের মোলকাবন্ধায়—বস্ত্রাক্রমায় বেছালুসারে নিক্র মনোমত জ্বামা আদি প্রস্তুত

করিছত পারিভাম। জামা আদির মৌলিকাবস্থা—বস্তু रमभन जारन एक त्थारमा कन भिष्ठा है एक शासी, का भा जा भ ভেমন পারে না। স্তরাং ভোগার গায়ের জামা বেমন আমার গায়ে হয় না, তেমনই মৌলকাশন্ত। পরব্রহ্ম হইতৈ খণ্ডিত সন্তাণ তুল্ল-তোমার মনোমত ঈশ্ব " আমার ' পকে উপযুক্ত, হইনে কেন ? ুমোলিকা-বশ্বাচ্যত জামা আদি যেমন প্রত্যেক শরীরে ভিন্ন-২, নেই রূপ পরবেক্ষাত্র সভাগ বেক্স— উপাস্য দেশতা প্রতেক হৃদয়ে ভিগ্ন । পরবৃদ্ধ ইতে নিজ্য মনোম্ভ छेलागर (पवटारक खुक्कत माहारगर जागता गांध्या লইতে পারি, কেননা তিনি ব্যাপক। স্বভ্রাং মাতা <u>প্রিয় তম</u> সামীয়, তাগকে তোমার মনোম্ভ ''আমার '' ভাবিয়া বুকে রাখিয়া জুড়;ইতে পারিব কেন ? তোমার "নিজসকে" আখার "স্ব" বলিয়া এইণ করিতে পারিব কেন 🕴 যাহা তোমার শান্তিলালক, তাহাতে আমিও যে শান্তি পাইব এমন কোন কথ। নাই। যে ঔষধে তোমার ব্যাধির শান্তি হয়, ভামার তাহাতে কিছুই না হইতে পারে ৷ ভূমি হয় ত জ্ঞান্ িজ্ঞান, কর্মা, তীর্থের কন্ত কথাই বলিলে, কিন্তু আমার হৃদয় তাহাতে যদি না মানে, তবে আমি তাহা লইয়া কি করিব। আমার জিনিষ খামাকে দিলে আমি তৃত্ত इहेटक शाति हेहाहै जागात जस्तत जागा।

সংশার যদি আমার ভালবানার জিনিদ দিতে পারিত, তাহা হইলে ডাহাকে গ্লইয়াই তুপ্ত হইজে পারিজাম। কিন্তু গারিগতনশীল সংমারে ভালবামার জিনিম পাত্রা অমন্তব। কেননা আমার ভালবামার বিচিত্র গতি। আমার মনং প্রাণ তিল মাত্র খির ন্ছে। বায়ুমন্তল মেনন থাবিত বিগুলির ইইভেছে, আমার মনং প্রাণ মেই রূপে তাবিক্ত মৃত্যুক্তি পরিবর্তিত হইতেছে। এই মাত্র মাহার পিপান্ত আমি, গ্রই মাত্র মাহা পাইবার জন্য বাক্ল আমি, হয় ত পর মৃত্যুক্তি আমি আর তাহার দিকে ফিরিয়াও চাহি না। মুহুর্তমণ্যে

আমার' যে শিপাদা—দে ব্যাকুলতা কোণায় ইলিয়া শাধ্য মুহূর সংশাসকলের দে ভাব কোণায় ডু!বয়। যায়। এই মাত্র যাহার থাকাজনী হইয়া বাজারে ক্রয় করি-ৰার জনা ভোমাকে পাঠাইলাম, ভূমি ভাহ। আনিতে ন। আনিতে আমার মন হয়ভূ বদ্লাইয়া গেল, ভাছার मित्क आरक्षण कतिरक्त भार हेळा हहेला।। भागा যাত্তিক প্রিয়ত্ত্য বলিয়া বুকে রাশিয়া মোর্ছাগ कतिरुक्ति, कला इस छ छाशास्त्र केलिमर्श ভाविषा দুরে নিকেপ করিছেছি। মদ্যন্যাহার মিলন-প্রভ্যাশায় ভানত্দের মধুর স্বপ্নে উৎফুল্ল হট্য। উঠিলাম, কল্য ভাগাকে প্রাথ ইইয়া স্থের ঘোর কাটিয়া গিয়া সেই সম্ভাবিত প্রিয়তম বস্তুকে জীর্ণ কন্ধাল বোধে পরিত্যাগ করিলাম। স্তরাং সংশার আমার মনোমত জিমিষ -বিশতে পারে কৈ ! সংযার যেমন পরিবর্ত্তনশীল,—চঞ্চল, च्यामात मगढ (गई ताथ ५ भना । ७ भना शमार्थ ७ भना भन्दक इथि पिटल श्रातित्व (कन १ भथन छेल्टा है । अल, ভখন ও খারে মনসূত্রপাতে মিলন অসম্ভব। পদার্থরয় একতা ছিল ইইলেই মিলন শস্তব। শহিরের কি কথনও भिलन इरेट जारत। चित्रत भन ६ मःगारतत यनि मभमृजপाত भिलगरे हरेए পातिल मा, जरन मः मातरक ''আমার জিনিষ" ভাবিয়া মনোমত করিয়া লইতে পারিব কেন ? যেগানে অন্তিরতা নাই, চ্ঞলতার ছায়া মাজ गाँহাকে व्यान कतिरक शास्त्र भा, शतिन्द्रितत কলঙ্ক দেখানে বিশু মাত্র ভিষ্ঠিতে পারে না, গেই घठकल भाग भूकासित चाआयाकाल मन त्य पिन नुकाशिक इन्टेर्न, भारति का हात मगल व्यक्तिक। विनस्हे इंडर्टन । हुनल का हक्ष्लक। (कार्या म हिला। माहेरन । (गई নিশচলুভার সাগরে নিষয় হ**ইয়। মন স্যাহিত**,হুইয়া ঘাইবে । মন তখন মনের মাতুষের সভিত এমনই मिलालिक इनेशा माहिता तम भात कानांत कथन ६ निरुद्धन **इहेर्य ना । किंत श्रवित्रह्म हेड हालवामात लक्षा गःमात** कामगामात व कृष्यम् । जिल्ला कि कि कि लाखिना ।

काहे मः गात वाभात विकल्प इहेवात खेशयूक नटह । ভালবাদা নহিলে জীৰ তথী হইতে পারে না। পরকে ভाল वानिसाद की । छूजी इहेट हास। छूजतार निटकत হুখের সামগ্রীকে জীৰ পরের উপরই ন্যুম্ করিয়া ताथिशाटक। शहतत मुशारशका कतिशा के कीव वशहक বঁ।চিয়া রহিয়াছে। স্ত্রী স্বামীর উপর নিজের হুখের ভার ष्रीशाहिया वाहिया बहियातक, खाशी स्तीत खेलत छ त्थन বোঝা অর্পণ করিয়া বাঁছিয়া রহিয়াছে। মুখ্র জীব পরের शास्त्र निका प्रथाना कार्य निवा निका रहे (कन र गार्। की गरनज कतलका, (महे छ्थ-ङभारक शतरकः গত করিতে আমরা লালাগিত কেন ! নিচের মূলাবান্ मुम्लाख्यक निर्वात अधिकारत ना ताशिया चामता शरतन উপর নির্ভর করিতে চাই এবড় আশ্চর্যা এছেলিকা। যাহা আমার শান্তির—জুপির—আনতদর আধার ভাহায়তই সামরে খনায়াসল্ভা হয় ততই ত সামার পক্ষে মঙ্গল। । শ্যাশায়ী—কৃষ্ণার্ত্ত—পীড়িতের পিয়রে मित क्रमंपूर्व कलम विमामान शादक, खाहा इहेटा करमत कना छ। हारक हिन्दा कतिए छैं हम न। । छर अब कलम यनि সামরা শিয়রে রাখিতে জানিতাম ভাষা হইলে ছঃমের ক্ষাঘাতে আমর। ক্থনই প্রীড়ত হুইভাম না। বাস্তবিক ञ्च्यक्र भारा किंदू ममख है या भारत । दाविना वर्ष ज्याश्वत त्यादत भारतत छेभात छभ ७:भू ज्यामुक्य-हाभा है मा ফোল। তাই তথ প্রাপ্তি ও হংখ নিবৃত্তি সমুদ্ধে আসা-भिन्ता भत्रम्था (शक्ते इकेटक इस ।

সামার অথবর জিনিস আমার ভালবাসার জিনিমতামার আপনার হইতেও আপনার জিনিম আমার
সহিত নিতানিয়ত বিদাসান। আশার আমার ত্থেদায়ক
শক্রে হইতেও পরম শক্রে আমারই ভিতরে বিদামান
রহিয়াছে। বিদ্যা ও আবিদ্যা আমার ভিতরে বিদামার
কিইয়াই ত আমি। অবিদ্যা আমার শক্রে, বিদ্যা আমার
মিক্র । সুংখ্যুল আবিদ্যাকে আমার ভিতর হইতে
উৎপাটিত করিতে পারিলে আমি চুংগ্রের হাত হইতে

পরিতােণ পাই । সুথম্বরূপ আস্থাম্বরূপিণী বিদ্যাবে পাইলে আমি নিভ্য হুঃখর অধিকারী হই। ছুভরাং হুখ ছু:খ সমস্ত আমাতে। স্তর। যাতা আমার আয়তের মধ্যে ভাহার জন্য প্রমুখাপেকী হই কৈন ৷ আমার च्च न। सि, वानम, वायात निक्त घटतरे तरिताटक, শেট গুছের দার খুলিতে জানিন। বলিয়াই বাহিরে সুণ থাত্যাশায় ইতত্ততঃ ধাবিত হই । আমার অন্তরে অপুর্বেরত্বের দিবা শোভার ভরপুর হইলেও বাহিটার त नुरस्यत्व सालावित रहे, यामात यस्तर्भाष्ठ मण हस নি-ড়ান স্থার ধারা অধিরত প্রবাহিত হইলেও ভাহার আমানে বঞ্জি হইর! বাহা স্থেয় মরু মরী-চিকার দৌড়িধা যাই । যিনি আমার নিজ হইতেও নিজ, আপনার চইতেও অঃপুনার, অথচ পর্মস্থ্যর, कं शिक्षक काल वाजिए के करण कित्र से नी से केला है है नी, কিস্তুয়াতা আমার পর চটতেও পর, যাতার সচিত আমার দূর হইতেও দূরতের স্পাক, আমার ভালবাসা कानारक लानेशाने हात्रकार्थ ननेएक हाश । माना आभात প্রকৃত নিজস ভাছাকে ছাড়িয়া, পরের চরণে স্থাসরা ,ভালসাসার পুষ্পাঞ্জলি ঢালিতে চাই, নিজকে পর ভাবিয়া প্রকে নিজম্ব ভাবিয়া আলিঙ্গন করিতে চাই। ष(इ) ! विङ्खना !

স্বরের সিড়ি।

সংগ্রিন। কি সিঁড়ি, আছে ? লক্ষ্ যোজন পথ
ভানিক্রণ করিবার জনা অতি উচ্চ, অভি দৃঢ় এবং
অহস্তে অপ্রশস্ত সোপাণাবলৈ নিশ্মিত রহিয়াছে। সে
সোপাণ ভোণী অভি স্তরারোহ, উঠিবার চেইটা করিলে
কোমর ভালিয়া যায়, আন্ত পঞ্জর ধনিয়া যায়়। অতি
করে, বিশেষ যত্তে এবং বিস্তর পরিজ্ঞামে যদি কেহ
কিছু দূর উঠিতে সমর্থ হয়ত বিশ্রাম আশায় এ দিক্ ও
দিক্ ভাকাইলে মাথা ঘুরিয়া আবার ধরাতলে পড়িয়া
যায়। শুনিয়াছি স্ক্লি সিঁড়ে গাহিয়। য়র্বের উঠা মসুষ্য

শক্তির অভীত। এমনত প্রবাদ শুনা যায় যে প্রথম চুই চারি সোপান গতিক্রম করিবার উদ্যম করিবে শাচাৎ হইতে কোটা ২ মন্ত্র্য করে ভাইনের গিলাম করিয়া পাকে, কত লোকে হার্মিয়া পাকে— বিদ্ধেপের ইাস্থি হাঁসিয়া ভাগাকে সাধু সঙ্কল্ল ভইতে প্রভিনিত্রভ করিতে চেন্টা করে, কত ভীত্র এবং অসল বাঙ্গাক্তি ভাহার কর্ণকৃহরে প্রবেশ করে। অনেক বীর্ধনী এবং রাজেন্দ্র সদর্গে এবং সপদ্ধার সহিত এই সিভিতে উঠিতে চেন্টা করিয়াছেন, কিন্তু কাহাকেও কথনও সকলকাম হইতে শুনা যায় নাই।

আবার শুনা যায় স্বর্গ না কি অতি সনোরম স্থান। তথায় অন্ধকার নাই, উত্তাপ নাই, তীত্র জ্যোতি: এতা নাই, শীভ নাই, ঞীজ নাই, বর্ষাণারে সকল প্লাবিভ হয় না, তড়ি৯টায় সঘন গজ্ঞান কিছুকম্পিত ও की करा ना भागातक करते, गार्गारक शक्या, भारातक উনাৰত। কৰো তাহার কিছুই তথায় নাই, আছে কেবল भानम, एथं जर भाष्टि। जमन मरनावत् शनिक श्वा-ষয় স্থানে যাইতে হইলে 🧓 কণ্ট কেন স্থ[°]ার করিতে হয় 😲 নন্ধন কাননের পথে এতা বিষ্যাল্লনী কেন, পারিজাত গৌরভের দারে পুতিগন্ধ কেন, মারের কোলের কাছে মৃত্যে ভীষণ আলিগণ কেন ? তে।মা-দের কাছেই সংবাদ পাইলাম যে, স্বৰ্গ শাস্তি নিকেজন্ আমার এত জালা এত যন্ত্রণা, এই সৰ স্থানেলী জ্বয় শোষক ভাষনার বুশ্চিকদংশন তথায় পঁতাভাল कल पित्र। जुड़ाहेशा गाहेत् । जीनि निक्तिस दहेन ; ব্যথাহীন হইব, জুখা হইব তথায় যাটলে আনার चानरमत चात्र श्रीतरभव हहेरत्ना । शतस्त्र भर्ष 🧟 বিপদ্ভারে। সংসারী জীবের পীড়িত, মণিত, তুল্লন थान (म प्रतीम भरण निमाहाता हहेशा शास्त्व । जाहे काउत्त कर्ण किछाना कांतर उ हैछ। करत रय नीन है।न আমাদের অমূল্য নিধি দেখাইয়া কেন উহা উত্তস तिति मुक्त नुकाहेशः तादिल । यादा तिथल प्रामात

শশহাত বৃদ্ধ ফুলিয়া উঠে যাহ। পাইব মনে করিলে ক্ষীণ শরীরে অযুত ছন্তীর বল আসিয়া জুটে, যাহার বিষয় আলোচনা করিলে শুক্ষ হৃদয়ে আহ্লাদের লহরী বাহ্রা যায়, ভাছাকে এমন করিয়া দৃষ্টির বাহিরে রাখিলে কেন, এত তঃখ এবং বিপত্তির বেড়া, দিয়া রাখিলে কেন গুএই লক্ষ যোদান বিস্তৃত তুর্বাস সোপান-শ্রেণী, সংসার তঃখদাব দগ্ধ, শিশিল শরীর আমি কেমন করিয়া অতিক্রা করিব গুলি সর্ব আমার পরিত্রাশের জ্বা নির্দিত হৃষ্যা থাকে ভবে বলিয়া দেও কি উপায়ে আমি তথায় যাইতে পারিব, কি করিলে, কাহার কাচে কি গুপ্ত বিদ্যা শিক্ষা করিলে আমার সকল তঃখের অবসান হইবে, আমি সহকে হুথে সদানন্দময় নিক্তনে পত্তিতে পারিব।

কত লোকের কত কণা শুনিব কাহার কণায় বা निमान कतित ! जातात अरमरक तिल्ला शास्त्रम दग यर्श नात्म (कान भूषक यज्ञ धारमण नाहे, छथाय ষাইবার চর্গম পস্থাও নহে। স্বর্গ অবস্থা বিশেষ মাতে। পৰিত্ৰ কৰ্মে পৰিত্ৰ ব্যৱসায়ে পুণাময় ভাৰনায় চিতের (म अकरे। धमान करना, (कभन (यन निन्ठिस, निष्म, निकामग्र कार इंग ; आर्ग दक्मन त्यन क्रनिर्मित्रीग উৎফুল্ল । एस, गरन इस रमन क्नान जनस्र, नीजन, জগাণ সনোৰরে ভূৰিতেছি। এ নিমজ্জনেনিশ্বাস তাব-(ताथ नाई, कर्छ नाई, अग्र नाई; भी उनकात छेपत नीजनजा गामिया गम्रत २ थात्म कतिराहः, अहे স্বচ্দতা এবং সদায়খের অমুভূতিই স্বর্গ । মুত্রাং यर्गाश क्या कना।; क्या यूत्र कि ध्रवि कना। । এবর্তি শিক্ষা এবং সংসঙ্গ বারা প্রেক্ষুটিত হয়। মানি-লংম সর্গ অবস্থা বিশেষের নাম মাতে। কিন্তু স্বর্গ লাভের পন্থা অতি কটোর কুচ্চ তপস্থা মাধ্যা কেন छ। हा हे शत नित्छि ।

স্বর্গের সিঁড়ি বাহিয়া উঠিতে হইলে কর্মা, প্রার্তি, সংসঙ্গ এবং শিক্ষা এই কয়টি বিষয়ের সমাক্ পরিচয়

नहेर्छ हहेरा। शतिहरू ०हेरल व्या शहरन क गिँछ ছুরারোহ কি না ! সর্গার্ভ হেওক কর্মা ভাগাই যাহ। षाता मञ्चा नितारपण, निभिष्ठ । निष्म, निर्लिश स्टेर्ड शास्त ; . (य'नानहास्त्र कथन । शाश्रमम् छेटक श्रीमम् উচ্ছাসময় চিন্তা প্রশাহ মনুষা মন্তিক্কে আলোড়িভ করিতে না পারে; যে বিষয় ব্যাপারে সানববৃদ্ধি-কাম কোণাদি ষড় রিপুদার। উৎক্ষিপ্ত না হয়: সাহা ৰ্ষ্টিতে চিত্ত আশান্ধত ও ভয় বিহলল হট্য়া সংস্কৃত্ व्यवः खिछ न। इस । क्यां छाहाहे, याहा प्राता मःस्कात वादः भूनीक स्मु ७ विनम्हे हहा। यापि गरू हे दकन भूगा कर्षा कति ना, भृतीं ज्ञिल कृषे प्रांति मगरा। २ (मर्ग) मित्रा विस्थित गांगीयक करकेत कात्रण बहेर्द । यक है কেন সংচিতায় ও স্দালাপে সময় অভিবাহিত कतिनात (७ छ। , कंत्र, किन्छ तरू माः राज क्वत ए छिटे এমন সময়ে অস্ময়ে শ্রনে স্বপনে কোণা হটতে शारणत भुष्णिकं जामिया। दर्जामारक निकल कतिया जुलित । अर्थ प्रेनामश सान, शार्थत वाजाम रम रमर প্রবাহিত হইতে পায় না, ভূমি পাপের অঙ্গরাগ করিয়া। কেমনে সে পথে চলিতে গাহস কর গ অভ্যাব সর্বপ্রাদ कर्षा जाहा है, यम्बाता भग्नमा जत्कवारत शाश मना जनः পাপ প্রবুদি শূন্য হইতে পারে। কিন্তু কর্মা করিতে হটলে কর্ম্মে প্রবৃত্তি রুচি থাকা আবশাক। সঞ্চৰভঃই পাপ কর্মো, বিলাস নিত্রমে, অপ্রিন্তা চিন্তায় কেমন अकित गरनाशांतिक। बार्छ। मञुरम् त अबै तक माःरमत শরীর মেন ভাপন। হইতেই সেই দিকে দৌডিয়া গায়। कार्यरे পार्भत चाभाज-मतारत हति रहेए अतुन्ति-Cक किताहेश। मिकि माधन शूर्व श्रुत्वात रेखतनी मृर्छित 🗗 ভি কেহ সহজে দৃষ্টিপাত করে না । তবেই হৃদয়ে পৰিক্ৰাকাজ্ঞ্যা জন্মান অতি কঠোর এবং দ্রুদ্চর তপ্রদারণ-माभा विषय निला इहेरन । (य (म (म (म था किया (यमन शीन कर्या है कतिनात है है। कक् क्ना, यखकन পর্যান্ত ভাহার ঐ কর্মে একটা প্রবৃত্তি না হইবে, ভাহার

মনমুদ্ধকর কিছু যতক্ষণ প্রান্ত উহ।তে না দেখিতে পাইবে, ভতকণ দেই,কণ্ম করিতে দে কিছুতেই বদ্ধ-পরিকর হইবে না। মেণরের কার্য্যে মেথরের দৃষ্টিতে এমন কিছু মনোহর ব্যাপার আছে যীহার জন্য সে विना भाषाबट्ड जवः विना पाकरवर्रम छेहा निर्द्वाह করিয়া থাকে। বালক যত দিন পর্যান্ত বিদ্যার আস্বাদ ना शहित उडिएन डाहारक मातिया, धतिया (स्था श्रा भिथाहेरल शहेरत । रमहे शकात मसूना गठ किन পুণা কণ্যের মছত্ব না বৃঝিবে, সংর্থার নন্দন-বন কুত্ম পরাগণাহী সমীর সংস্পার্শের লিয়ত। যত দিন না পাপ **(मट्ट चलू ७**न कतिर्छ शातिरन, छंछ दिन 'रकानगर्छ है थुना कर्ष्य भरनारयात्र मिरन न। । इन्डताः पूनानान **इहेट इहेटल शूर्गात शतिह्या, आत्माक । शूर्गात विमय** कानिएक- १ हेरल माधू मञ्जालत रमना कतिए इहरन । কেননা তাঁহার। পুলাসটোর পুলার।জ্ঞার প্রজা, সে **८**मरभत मः नाम लाईएक एडरल, भाग महरलत ताग्रास्त निकरे गक्त उद्यासूत्रज्ञान कताहै निर्मेश । उर्वह त्या গেল সাধুসঙ্গই সকলেরই যুলভিত্তি। কিন্তু সাধু সঙ্গ ্করে কে ? ধর্ম করা, সাধু সন্গানী আমার যদি ভাল न। लार्ग, मछाकाछित रम्या रमिय णात्रियमि मायुगंगरक বৰ্ষর ৰলিয়া বুঝিতে শিক্ষা করি, ধর্ম কর্ম কুসংস্কার बिल्हा कानि, डांशानिशतक (मिशता (म मकल कथात প্রসঙ্গ উঠিলে পুশার ও অবজ্ঞার হাঁদি হাদিয়া দশগোলন षृत्त भनाइया गाहे; ভाष्ट्रा इटेल ८०२२ कतिया जागात পুণ্যকর্ষে প্রবৃত্তি হটবে । এতথ্যতীত আমি তেমন माधू लाहे (कालाय: मिनि अर्थनामी, मिनि लिनिज कार-आही, घिनि পर्णत मध्यान कारनन, यिनि मतल, रूफ, কিভেন্তির, ভেজসী এবং করুণাময় এমন মহাপুরুয়ের मझ (काथाग्र गांडेरल शाहेत ; रकहे वा छाँ। हात गमाहात बिलाइ शारत ? जात 9 अकि (शाल जारह । माधुगञ्जरे এক মহাতপ্রা। মিনি অনিচলিত্ চিত্তে এই তথ্রা ক্রিতে গাহ্দী, তিনি কর্মের দূর বগাহ ভীষণ সাগরেও

বিশ্ব লাই, ধরা কর্ম শাক্ষ কি কুচু তাহাই জানি না; তাহার উপর ক্ষ, সন্ত্রণাদি, তুশ্চর তপজার নাদা বিশ্ব। পক্ষান্তরে যদি বা অনিচ্ছায়ও দশজনের কথায় একেটু সাধুতার অমুকরণ করিতে ভারাসর ইই,ত অল্লি কোটী ২ নরকণ্ঠে আমাকৈ কত বিদ্ধেপের কথাই শুনাইবে। কাথেই সংসারে থাকিয়া, অপার্থিব' সেই সর্গরিবার আশায় কর্ম গোধের পথে, অগ্রসর ইইতে প্রায় পাওয়া একপ্রকার নাভূলের কার্যা।

এখন শিক্ষার কথা বুঝা আবশ্যক। লিখিতে, প'ড়ভে विटिज शांतिरल नमं (मरम्बत मम्बे। मःवाम तांशिरल আধুনিকের চকে শিক্ষিত শদবাচ্য হওয়া যায়। কিন্ত ধর্মা কর্মোর শিক্ষা ভাহাই, যদ্ধারা সদস্থ বিবেচনা শক্তি তীক্ষ হয়, পাপ পুণেরৈ সৃক্ষ্ম পার্থক্য বৃদ্ধি গোচর হয়, নিজের প্রবৃত্তির গতি দেখিয়া সানসিক ভাবী অবস্থা স্থির করা যায় । স্থাকারের বিদ্যুমেখন অলঙ্কার প্রস্তুত করায় প্রকাশ পায়, ভান্যান্য ব্যবসা-सामकोनी गर्ग निक्ष २ कर्षात भातिभाष्टेर (मथाहेरछ পারিলে যোগ্য বলিয়া বিষেচিত হয়, তেমনি স্বর্থিামী নিরক্ষর হউন, বিষয় কম্মে মহামূর্থ হউন কিন্তু সাধন মার্গে উপযুক্ত হইলেই তিনি হু[শক্তি । শিক্ষার প্রধান উদ্দেশ্যত চরিজ্বান হওয়া, বাজ্বনে সভাপ্রিয় হওয়া, তেজসী, স্বাধীন এবং প্ৰিত্ত হওয়া। কিন্তু এই मकल मानत पृष् यानलयन ना लंहेरल खरर्भत मिं फ़ित अगम तमाणारम हत्तम ताथिएक भातिरम मा। अर्जारताङ्ग विमात देहा है 'क '' थ'। मगी गुणी (लगजी लहेगा নেছিবযুক্ত অক্ষর বিন্যাস করায় আসাদের শেষন বংছা-দুরী, সাদক ভেমনি মঙশীতা চরিতাশেলে বলীয়ান্ হইয়া যত জর্মের মিশ্ড়তে উঠিশার শ্যবস্থা করিতে পারেন ভক্ই ভাঁহার বাহাদৃতী। ভবেই বুঝিতে হইবে সাধন। ছগতের শিক্ষা এক অপুর্বে স্বতন্ত্র সাস্থী । সংবৃদ্ধি

ইংরে বর্ধ-পরিচয়, শম, দম ইছার বা।করণ, শাচার এবং নিষ্ঠা ইছার অল্বন্ধার, জান ও ভক্তি ইহার বৈদিক প্রকরণ। জগতের যত প্রকারের গুপ্তা এবং প্রশাস্ত বিদ্যা আছে সক্ষাপেক্ষা ইছাই কঠিন এবং গ্রংসাধ্য । এ বিদ্যার প্রধান উপকরণ যে ইছাকে সাড়জারবং গোপন করিয়া রাখিবে। ধীর এবং সহিষ্ণু ছইয়া বিনা বাক্রের্যে ক্লয়ের গুপ্ত মন্দিরে এ বিদ্যার সাধ্না করিতে ছইবে।

স্বর্গের শিড়িকে উচিনার আয়োজনই ও এক রহৎ ৰাাপার। না জানি উঠিতে হইলে কতই অপরিজ্ঞাত -বিতে হয়। কিন্তু শুনাযায় যে विवय यञ्जन। 🖍 স্মার ভত কফ গোণ হয় किंदू केंद्र केंद्रि ্টবতী হওয়া বায়, ভর না। স্বৰ্গদানের যত -পুরের পবিত্র পবন সঞ্চালনে পাপদেহ যভট পুত कहेता छेट्ठे, ७७वे अर्गाटती १ मनाशाम माना बिना বোধ হয় । পকান্তরে সংগারের বিকট শব্দ যতক্ষণ কণ্লোচর হয়, যতকণ জগতের মোহ্ময়, পাপ্ময়, कुन वाङ्गाभ भनीतरक त्वमना भूगं जवः ध्रवत कतिएक থাকে ততক্ষণ স্থারোহণ অতি ছ:সাম্ ব্যাপার ৰলিয়া বোদ হয়। ভতক্ষণ মনে হয় বুঝি সর্বোর সিঁড়ি খদীম আকাশের কোল প্রয়ন্ত বিস্তৃত, কোটী ২ की गम अक्यान, श्रमा-दृतिक श्रेशा (ठ छ। कतिरम अ পরিশ্রম সার্থিক ছইবে না। সংসারী আমরা আমাদের চক্ষে স্বর্গের পথ বাঙ্বিক লক্ষ্যোজন বিস্তৃত। অভি कृष्णं व्यक्ति कर्रात क्रम्हत जलम्हातन कतिएक २ महत्य २ नतको वन व्यं ७ वाहिल कतिया लटव (म भत्र-भने लाभ कता याय। (रा धशुनर्व, ठाय कात, मनात्रक्षन পতিত পাৰন সংগ্ৰ চিত্ৰ আন্ধিত আছে, ভাহার मामिमा शासि जाजारमत नाश जमम औरवत शरक (भ इतातामा कडेरन जाकारक चात गरम्बर कि १० भत्रक्ष क्रमां के मभर्भन छुन (समकल नार्शात मकल कार्या है अक्टा ना अक्टा महत्र धनायाम माना छेणाय चातिक्रूक

হইতেছে । উনবিংশ শতাকীর প্রভাবে কর্ম ভূমি ভারতশর্ষেও সিদ্ধি সাধ্নির ও সহজ পছা বাহির इरेगार्छ। जमन कर्धात जभका भाग विद्या कथिछ, উৎ চট আগ্রেদ্যেম আগ্রহত্যা বালয়া অকাশিত আছার নিদ্রা, ভয়, মৈথুন সকল পাশবস্থান্তই ভোমার বজায়থাকুক, ভূমি বিলাসী ছও, শত পুত্রকন্যার পিতা হও, উচ্চাঙ্গের স্ত্রৈণ হও, কোন ক্ষাত নাই , হৈ ঈশ্র আমি মহাপাণী বালয়া একটু চোথের অল ফেল, আর ভোমার মহা-মহাপাপ এক মৃত্তেই বিমো-िछ इहेशा गोहेरन। कारगड़े अर्ग जिंगन कान **धारम**ण नहरू भरनतं व्यवस्थायाज । देश्तारकत व्यादेन व्यापालकः र्काम निर्देश (कामा, कहें लिए, कवाव दकाक्षा ककातानि ভোজন কর; রেদমী, প্রশ্মী, কোমল মসুণ পোষাক পরিচ্ছদ পরিধান কর' জীপুর কন্যা শইয়া ভাগে मःगात याळा निक्दाङ् कर्त, भाग मार्था २ ८म कारलत চার্বিত চবর্ণ শ্রা কথা মুদ্রিত করিয়া, ভক্ষালয়ে উপাসনা কার্য়া, "মহর্ষি " খেতাব গ্রহণ করু, কেই একটি কথাও বলিবে না। এমন দিনে স্বৰ্গ সহজ লভা एहेरव ना (कन !

পরস্ত হিন্দু বৃদ্ধিতে শত এছি সম্পন্ধ, আতি সংস্কার সমন্তিত মান্য জীবনকে ধন্য করিতে হইলে শাস্ত, দাশু, তিদিবনিবাসী ইইতে হইলে মহাতপক্ষা করিতে হইবে। কন্ট না পাইলে, তথ নাই, মেন্তিত অসাধারণ কন্ট পাইয়াছে। বাত অসাধারণ জেত প্রাগাচ আনন্দ ভোগ করিয়াছে। স্থানন্দ অমূল্য, অপূর্বে, অমাধারণ। ভূমি স্থানিকা অমূল্য, অপূর্বে, অমাধারণ। ভূমি স্থানিকা ভিথানী, তোমাকে অসহা, তীত্র, মল্যস্পাদী সন্ত্রণা ভেগা করিতে হইবে, বিষম পরিশ্রেম করিতে হইবে, বিষম পরিশ্রেম করিতে হইবে। তবে সে তথে তথী হইবে। ক্রম্বান স্থানির স্থানের ক্রান্ত ক্রমে ধনা ক্রিবে, তোমার ভৈলে পাপ ভ্রমাহ করেবে বে দোখবে সেই বিশিদ্ধ, স্থান গুরু, পরস্থাক পরম দেবভা।

বালা,সরস্বতী।

আসি যখন ৮ হারমারে গিয়াছিলাস এবং তথায় যে স্থানে নিবাস করিয়াছিলাম, সেই গৃহেরই ুএক প্রান্তে চন্দ্র ভাগা নদী ভট নিবাসী একটি ব্রাহ্মণ পণ্ডিত সন্ত্রীক স্থানার্থ আন্যায়। বাস করিয়াছিলেন, সঙ্গে সরস্বতী নালী গাঁগার একটা মর্থ বর্ষীয়া রূপবতী কন্যা ছিল । পালিক্সী জানবান ও অতি সংসঙ্গ প্রেয়, তাঁহার স্থিত সদালাপ করিয়া ও কন্যাটির বিচিত্র সংস্কার দেখিয়া অতিশয় খ্রীতি লাভ করিলাম । কন্যাটীকে আমার শিশুগাৰ্গী ৰলিয়া বৌণ হইল ৷ পণ্ডিভুজী ৰাটীতে সাধু দেব। করেন, তাই অনেক অবধূত, পরমহংস, পরিব্রাজকাদি শুভাগমন প্রবিক তাঁহার গৃহ পবিত্র করিয়া থাকেন। সরস্তী ত।হাদের নিকট বসিয়া, ভাঁহাদের সভার্ভা জাবণ করিয়া জন্মান্তরীয় সংস্কার বশতঃ ত রঞ্জানের প্রাতভালাভ করিয়াছে। সরস্কীর প্রকৃতি-তে চাপল্য নাই; গান্ধীয়া ও সাধ্যাই সরস্বতীর মুখের শোভা। ভাহার গুটিকতক সংস্কার ও দারণার কথা ভর্প্তানাম্বরাগী পাঁঠক বর্গকে আমার হরিশ্বার যাজার উপহার স্বরূপ প্রদান করিভেছি।

রাত্রি ৮টার সময় যথন নীলাকাশ কুটিয়া হাঁসিতে
কটি কৃটি হইয়া চল্র কিরণ মালা চা'রাদকে ছুটাছুটি
করিতেছিল পুত্তিজ্ঞা গ্রীল্লাভিশয় প্রান্ত বিসন্তা বালা
সরস্তীকে জোড়ে লইয়া চাদের উপর শয়ন করিয়াছেন ও আমি সেই প্রদীর্ঘ ছাদে পাদ চারণা করিতেছিলাম। পাওতজা সাধু সম্ভাষণে আমাকে সংস্থার
দিবা বৃদ্ধির পারচয় দিলেন, খামি আশ্রেয়া বোদে সেই
খানে বসিয়া সরস্তীকে ভাদের ও সেহ পূর্বক সম্ভাষণ
করিলাম। সরস্তী আমার দিকে ভাকাইয়া কর যোড়ে
নিমা নারায়ণায়, বলিয়া উঠিয়া বসিল। আমি
ভাহাকে সম্বেছে জোড়ে আসিতে সংস্কৃত করিলাম,
সরস্তী ক্রম ইনিস্থা বহুদিন পার্চিতবহ আসিয়া
জোড়ে বসিল। পাঠক। তহুপরে বাত্রালাপ শুর্ন—

আমি । সরস্বতি ! তুম সো গ্রীপি ? [সরস্বতি ! তুমি কি ঘুয়।ইফাছিলে] ?

সরস্বতী। সঁয় নহা সোহী হুঁ, বুদ্ধি সো জাতী হায়;
মঁয় সদৈব জাগাঁ রহতী হুঁ, "আমি" (আছা)
ঘুমাই না, বৃদ্ধির ব্যাপার নিরত হইলেই জীব
আপনাকে নির্দ্ধিক মনে করে, উহা বৃদ্ধির
সংস্কার মাতা, "আমি" সদাই জাতত থাকি]।
আমি। এ সরস্বতি! তেরা অবস্থা ক্যাহ্যায় (তোমার
বয়স কত?)

সর। মেরী অবস্থানা কভী বাড়্ডী হ্যায় য়া ঘাট্ডী
হ্যায়, মঁয় নিভ্যকাল একরম বিদ্যমান্ হুঁ।
(আমার বয়স কখন কমেও না, বাড়েও না, আমি
(আসুঃ) চিরদিন এক ভাবে বিরাজমান থাকি)।

আমি। সরস্বতি ! ভৃষ্ছার্। থিতা কৌন হঁয়ায় ?. (ভোষার পিতাকে ?)

সর। ন কই মেরা পিডা হ্যায়,ন সেরী কই মাভা হ্যায়, ন মঁয় জনম্বী হুঁ,ন মঁয় মরতী হুঁ। ("জামার" পিতাও নাই, মাতাও নাই, "আমি" জিমিও না, আমি মারও না)।

আমি। ভূম কিস্কী লড়কী হোণ (ভূমি কাহার কন্যাণ)
সর। ন শঁয় লড়কী হুঁ, য়া লড়কা হুঁ, মঁয় চেডন কুঞা হুঁ। (" আ!ম " কন্যাও নাহি, পুত্ৰ ও নহি, আমি চৈডন্য স্ক্রপ)

আমি। তুম ক্যা থাতী হো ? [তুমি কি খাও]

সর। ন মঁয় খাতী হুঁ, য়া পীতী হুঁ, ন মঁয় চলতী হুঁ,

য়া বৈচ্ তা হুঁ [" আমি " ভোজনত করি না,
পানত করিনা "আমি" চলিত না, বাসত না]।
আমি, মরস্বতি ! চারো তর জোকুছ দেখ শড়তা হ্যায়,

য়ে স্ব্ক্য হ্যায় ? (চারি দিকে যে স্ক্র পদার্থ
দ্ফ হইভেছে, এ স্মস্ত কি ?)

সর। সব্জড় ইরায় (গমস্ট মায়া,সমস্ট অপদার্জড়) আমি। সরস্তি। ভলা, মুঝে য়হ তে, বাতাও, আগর স্বই জড় হাঁয়ে, ভো ভূম কৌন্ হো ! (ভাল, বল তে',যদি শকলই জড় হইল,ভূবে ভূমি কি!)

সর। মান সব্দে আলগু, বিকার সে রহিত চেডনের।
হাঁ। (আনি " সমস্ত হইতে সভস্ত নিধিকোর
কৈটতন্য স্থরপ)

আমি। য়ে ধ্রিত্রী, ষ্ঠা চন্দ্র সালি লে কর অন্গিস্তি
, 'চীর্জে শ্ন্যপর কা। মধ্যে চছরী ভ্ট হাঁায় পিথিবী
সূঠা, চন্দ্র সাদি অগণা পদার্থ শ্না মণ্ডলে
কেমন করিয়া স্থিতি করিতেছে ?

সর। জ্যানে সূত মেঁমণি গ্র্থে জাতে হ্যায়, ওয়েসাহী চেতন আত্মারণে সূত মেঁমারা জগৎ
ভাগিত হোতা হ্যায়। (মেমন সূত্রে মণি মালা
গ্রিত থাকে, তদ্ধে চৈতন্যরূপ আত্মাতে
ভাবৎ সংমার প্রতিভাসিত হইতেছে)

আমি। য়হ জড় জগৎ ক। স্বরূপ ক্যা হায়ি ? [এ জগৎ স্বরূপতঃ কি ? ব

সর। স্বরূপ কর্কে জগৎ কুছ হাায় নহি,কেবল সায়া

যে য়হ দেখ্ পড়ভা হাায়। জাাসা কুণ্ডল করকে
কই পদার্থ নহি হাায়, সোনেহী মেঁ কুণ্ডলকা
ভান হোতা হাায়, ওয়েয়াহী চেতন রূপ আত্মাসে
নাম আইর রূপ করকে জগৎ ভাসিত হোতা
হাায়। (য়রুণতঃ জগৎ কিছুই নহে, কেবল
মায়া বশতঃ ইহা স্তাবৎ দৃষ্ট হইয়া থাকে।

যেমন কুণ্ডল বলিয়া কোন স্বত্ত্র পদার্থ নাই,
স্বর্ণেতেই কুণ্ডল ভাম হইয়া থাকে, তক্ষণ চৈতন্য
স্করপ আলাতে এই নাম ওর্ণময় জগৎ

আ মি। তুম্ সাদী করোগী [তুমি বিবাহ করিবে !]
সর। ময় স্ত্রী য়া পুরুষ নহি তুঁ, সাদীকেঁট করুঙ্গী !
(তামি স্ত্রীও নহি পুরুষও নই, তবে ধিনাহ
করিব (কন !)।

অতংশর স্রস্থতীকে সাক্ষাৎ দেবী স্রস্তীর

অংশাবতার বোধে মনে ২' ভক্তি করিলাম ও গীতার একটি শ্লোক শিখাইয়া দিয়া তাহাকে বিশ্রাম করিতে বলিলাম। পৈতিভলী বলিলেন " আজ্ মেরী সরস্বতী ভী ধন্য হুই, কেঁউ কি আপ য়্যাসে মহাত্মাকে মুখার-বিক্ষ্ সে হরিদার কেতে মেঁ গীতাজীকা পঠন প্রারম্ভ উস্কা হুয়া"।

> দীনাতিদীন শ্রী**ন্সিক্ষানদ**।

মন বল দেখি

ুঈশর মাকার কি নিরাকার !

আ।মি বহু দিবস হই তে, এ বিষয়ের ভত্ত্ব নিরূপণ করিতে,উদাত হইয়াছি, কিন্তু তাহা এ জড় বৃদ্ধিতে কুল।ইয়া উঠেনা; হুতরীং অবশেষে মানাকে সাাকুল হইতে হয়, তথ্ন মেন আহি অকুল মাগুরে ভাসমান হইতে থাকি, এবং বহু বিধ শাস্ত্রের পথান্তু সরণ করিজে আমার এর্ডি কমে ; পুনরায় কিয়ৎ দিবস অভীত इटेरम रम शत्रुखि नित्रुखि इस । अटे ऋरण रनाम इस. বস্তু জন্মান্তর বাদানুবাদে কেপেণ করিয়াছি । আর খনপ্ক কৃট তকে কাল হরণ করিতে গেলে, কালও নিকটণভী হইবে, ভাহা হইলেই যে আশা ভরমার 'गुरल क्ठांताचां इहेरव, छाहार७ मस्मर्शक ! अङ्गव কেহ জান তে। বলিয়া দাও্ঈখর সাকার কি নিরাকার 🕽 यर कारल विमानसात भुखक शांठ कतिजाम, जरकारल শিক্ষক মহাশয় বলিয়া দিক্তেন যে ঈশ্ব নিরাকার চৈতন্য সর্প, ভাঁহাকে কেহ দেখিতে পায়না, তিনি সকল স্থানেই আছেন, আমরা যাহা করি তিনি তাহা দেখিতে পান, আসরা যাহা মনে ভাবি ভিনি ভাহা জানিতে পারেন, তিনিই সকল জীবের আহার দাতা ও নকা কর্ত্তা, অর্থাৎ তিনিই ধাতা, হন্তা এবং নিয়ন্তা। किन्न जिनि निजाकां ते वे कि श्रकारत, जिनि कि धकारत है वा मिथ्लू शान, कि दीकारत है वा जानिए शारतन, कि ध्वकारत है वा जिनि चीहात रहन, जात कि

मनाञ्च बारक, रकनहें वा जिनि स्ति १ अ भक्त विषय শিক্ষক মহাশয়কে জিজ্ঞাসা করিতেও ভয় হইত। হতরাং ঈশ্বর সাকার কি নিরাকার, এ বিষ্টোর সন্দেহ তথন আমার হৃদয় হইতে একেবারে তিরোহিত হয় नाहे, ज्ञाह तव एक हा यान कान एका निवास माठ, जेथात সাকার কি নিরাকার ? সাধু, মহাত্রা, যোগী, অসুভবী ! ভুমি মাহা বলিবে তাহ। অমাকে বলিব না, কারণ তাই। হইলে পুনরায় পোর তর্ক লালে আমাকে জড়ীভূত করিবে, ভূমি যাহ। বুলিবে তাহ। অতি গোপনে হৃদয়ের সদ্যে গাঁ। থিয়া রাখিব, অভএব তুমি বল, ঈ্পর সাকার कि निताकात। निताकात इहें एवं कि जाकात शाका সম্ভবে না ৭ তাঁহাতে যদি আকারের বীজ না গাকিত, जिनिहे यपि अञ्चाकाताकार्तिञ्चा हरेएजन, जाँदा इहेट है येपि बाकान नामि निर्माठ ना इहेड; उदन আকারাবলি কোথা হইতে আদিল । দেই জগৎ পাতা निधान। कथन कान् जात्व काशा अवस्थि करतन, (कान मगर्ग (कान काकात भात्र कतिग्राहिस्सन धवः কোন সময়েট বা কোন আকার ধারণ করিয়া অবনীতে অবতীৰ্ণ হইবেন, ভাহ। তি'ন ভিন্ন কোন মানব প্রাকৃতির স্বির করিবার সাধ্য নাই। তবে মিনি ভাঁহার ভক্ত তিনিই তাঁহার অপার মহিমা বর্ণনে সক্ষম, কেন न। ভক্তাধীন গোবিন্দ, ভক্তকেই সমস্ত বিষয় অবগত করান। জগৎ পাতার নিরাকার আকারের মধ্যে দাকার पर्भन कता कि नाहा खालित भाता मण्णापन इहेटि পারে ? এবং নিরাকার বিধাতার যে আকার ধারণ कता अमञ्जय नरह, हेहा (क निश्वाम कतिरव १ रम रमाना-কার একটি ক্ষুদ্র বীজ হইতে রুক্ষ উৎপন্ন হইলে পর ভাহাতে কুসম কলিকা প্রকাশিত হইয়া মন হরণ করে, এবং কুস্ম কলিকা মকল গে বহু মৃলের উৎপাদক হয় ভখন কি এক বিশ্ববীঞ্ বিধাভা বহু মূৰ্ত্তি ধারণ করিয়া war গণের সাধ পূর্ণ করিতে পারের না ? সার যখন खिनि "अरकारः वस्माम्" अक रहेशा वस्ट्टेर हेन्द्रा

করিষাছিলেন,তখন কি ভিনি আকার ধারণ করেন ন।ই ? আরও বলি, মে আগার এই ইইটি টকু, দংসারের गर्धा रकान वल्लाक निजाकात छ। त मर्भन कतिर उरह ? কিতি, অপ, তেজ মরুং, ব্যোম, এই পঞ্ভুতায়াক পৃথীর মধ্যে কোনটা নিৰাকার গ্যদ্যপি স্বীকার কর যে কোন বস্তুই নিরাকার নগ্লকল বস্তুই সাক্ার, ভাহ। रहेल जागात लेखत कि श्वकारत निताकात हरेलान. তিনি ত সকল বস্তুতেই বিদ্যমান আছেন, ভাঁহার সৃষ্ট অসংখ্য বস্তুতে অসংখ্য ঝাকার রূপে এবং ব্রহ্মাণ্ডের এত্যেক পরমাণুতে পরমাণু রূপে বিদ্যমান আছেন, ष्यांत मनाशि मकल वस्तर के देवा थ। किर्ना, काहा कहेरल णांगि (रा गक्स वञ्चरक द्वेशन त्यार्थ উপमान। कतित् তাহাতে কি জগৎপাতার বাদকরা ভোমার নিকট অসম্ভণ হইতে পারে ? এখন বুঝিয়া লও, ঈশ্র সাকার কি নিরাকার। আমি দেখিতেছি দাকার নিরাকারে ও নিরাকার সাকারে বিরাজ করিতেছেন।

বাউলে হুর ! তাল গড খ্যামটা !

"কেমনে বলিবে বল কিরপে তিনি [ও মন্]।
তুমি পারিবে চিন্তে কি চিন্তামণি [সে যে চিন্তার
অতীত জগচ্চিন্তামণি]। তিনি সাকার কি নিরাকার,
ও মন, কেবা তত্ত জানে তার, মনন্ত জগদাধার, কেবল
এই শুনি [তিনি] ॥ গহন বিজ্ঞা কনে, যোগে— বিসয়া
একান্ত মনে, পায় না সমাধি ধ্যানে, ঋষি কি মুনি
[তাঁরে] ॥ প্রেমময় বরুণামিয়ৄ, হরি—অনাথের নাথ
দীনবন্ধু, মাঁর প্রেমে পাগল শন্তু, তিশ্লে পাণি । কুবাসনা
পরিহর, ও মন্, প্রেমের হার গলায় পর, হইবে হৃদ্রে
সেরপ উদয় আপনি [দেখ্বে] ॥

পরিব্রাজকের স্ক্রীত।

ধন্মে পিনব।
জলন্দর শহর ও বস্তী।
কুমার পরিবাজক শীশ্রীকৃষ্ণানন্দ স্থামীজী মহোদয়

कलक्कत का। किन मिट घुड़े मिन छान ए छल्टि शूर्न वक्का कतित्स शत रूपा इहेटक ७ क्या मृत्रवर्शी गहरतत क्या ग्राम छेश्राम जिनात क्रमा ग्राम ६ मञ्जास-বর্গ কর্ত্ক আছুত ছয়েন। সহরে ৩ দিন ও সহর হইতে Cकार्रंभकं मृतवर्खी बखी गामक शास्त्र : जिन शति-ব্রান্তবের, স্লধান্যী বক্তৃভায় লোক মণ্ডলী বহু দিনের সম্প্রসদয় শীতল করিয়াছিল। মু'ত্র পুলার শান্ত্রীয়ন্ত। শোক্তিকতা ও অভ্যাবশাক্তা প্রচর্শন এবং শগব্দুক্তির উচ্ছোসে এই চারিদিন পঞাব বঁনবাদী বর্গ হত্মগুৰং বিষোঠিত হইয়াছিলেন। পঞ্জাবী শিক্তিত গ্র্যাল্ল-পণ পরিত্রাজক মহোদয়কে যথোচিত স্থকাবর ক'বয়া ছিলেন। ক্যাণ্ট্ ন্থেণ্ট হইতে প্রভাহ সহরে যে চেরিয়ট গাড়ীতে পরিব্রাজক মহাশয় সহচর বর্গ সহ মাইভেন, উাহার পশচাক্তে চাম্র সালন কু অত্তেই ইংরাজি বানা **ইউ**, ছুই পাখ হুইতে নকা সাংগণ ও দিতল্ভ ৰাতায়ন ছাইতে পুত্ৰতিলা গণ পুজাঞ্জি বৰ্ষণ পুৰবক ভগৰদ্ভণ-ষাংগাতিঃ কুমারের সভানার্চনা করিয়াভিলেন। क्रभुत्रवारा राज ए जागाना किल्या छान छहे । কে লাইয়া যাইবার জন্য হাঙিশয় মত্ত ইয়াছিল, কিন্তু व्यवकामा शद अयुक्त शक्तिहाकक गाउँ कि शास्त्र गाउँ। প্রাব প্রদেশে কোন বাজালীকে ইতি পুরে ভার এরপ স্থাতিত হউতে দেখা যায় । ই। জলরর সাসী গণের আক।জা, থার একবার যেন কুমার পরিভালিক ध्व व्यक्ति छ । भग कर्ता । है क

জী হরি দাস বস্তা।

কলিকাতা।

৪টা জোত হইতে চারি দিবস ^ব চালদা বাগান সাধারণ হরি সভার নবম সাজহমরিক উৎসব সমারোহ পুরুক স্থাপার ইইয়া গিয়াছে। এই উপলক্ষে ধর্মাচার্য জীযুক্ত পণ্ডিক অপিকাচরণ বিদ্যারত্ব ও জীযুক্ত পণ্ডিত নীলকাও গোলামী মহাশ্য জীসভাগ্যত পণ্ডি ও ভ্লালৈত ব্যাথ্যা ক্রিয়াছিলেন, জীস্থান্যায়ণের পূজা, খাট প্রের

নাম সঙ্কীর্ত্তন, ত্রাহ্মণ নৈফ্রব সেবা এবং হান্ধ হাতুর দিগকে হান্ধ বস্ত্র দানকরা হইয়াছিল। সম্পাদক শ্রীযুক্ত নবক্ষা কর এবং দম্মোৎসাহী শ্রীযুক্ত কালীকৃষ্ণ কর মহাশয় দয়কে তাহাদিগের যত্রপূর্ণ এতদ্বাসভার বহন জনা, আমরা শক্তশং সাধুবাদ প্রাদান করি। ইতি

भारताताता ।

্তি ও বিশাখ হইতে ১৫ জৈঠ পগন্তে জখ্বনকার হিনিভজি প্রদায়নী সভার অফীন বাহিক সহাণিবেশন হইয়া গিয়াছে । এই উৎসব কালে জিসমারায়ণের মোড়শোপচারে পুলা, প্রজাহ অপরাহে জিসমারায়ণের কার, হরিনাস স্ফিনি, কয়েক দিন জিসমারাবছের ব্যাখ্যা ইইয়াছিল। ইহা ভিম অ্যাণ্ডক জালাল পত্তিত দির্গের বিদায়, জালাণ হৈছালন ও দীন দরিদ্রেদিপকে আম বিত্রণ হইয়াছিল।

ङ्गीनतीनहास भट्टेनहारी। जिल्लाशाहारा

শিষ্কাসনাত্ৰ শ্ৰাৱ'কনী সভা কউক আস্তিভি इडेश कुमार शतिखालक जीपुल है केशन क सामी खन-ন্ধর হউকে এখানে সমাগত ইউয়াছিলেন। তিনি এখানে ু২ দিন মাত্র অবংশ্বতি করেন এবং যুক্তি,জ্ঞান ও ভক্তি পূর্ব ৭ টা মধুর বক্তৃতা করেন। বক্তৃতা ৩ টা বাঙ্গালা ভাষায় এবং হিন্দু তানী ও পঞ্জানী গণের অমুব্রোধে অপর bisिही विका जामाय इटेग्राफिल। यमगा तथा, आधान ममां, जार्रा भावा, इस भौता, बुक्ति व ७कि, श्राप्त মধুরাশয়-পূর্ণ ব্যাঞ্চান রাশি শিস্লা নিবামী গণকে खनसूभू उश्वत जानक मान कतिशास्त्र । महानकी मल তাহার সভীত্র সংখ্তিপূর্ণ মৃতী পুলাদির অমুকূল ৰক্তা ধাৰণে স্বাস্থ্যত ও চমকিত হইয়াছে। বলিতে कि, भिन्नता भागाए विन्तु गत्मात जेत्रभ ने मान्यूल আন্দোলন আর কখনও হয় নাই। সামীজীর বক্তার भाषू(ये) अथानकात कि वालाली हेक शक्षांनी गकरनाई মুশ্ধ হইয়া ভাঁহার বিয়োগ 'গৈধুগা \কেশ অনুভৰ করিছে-

(इन । क्षशास्त्र अस्तिक द्वाभिक आरहन, छ। हात्रा সকলেই পরিব্রাক্ত মহাশয়ের উপচেশ শুনিবার জন্য चारिम रहेए वाजी गाहेबात व व्यवाम भाहेएक न। मकटल हे निक्तित श्रीत क्टाल ताखि ৮ है । के है। পথান্ত একাথ্ৰ চিত্তে সভায় উপন্থিত থাকিতেন। श्वाभिकोत एक ममागरम शक्कारी मिर्गत " मनाजन धर्मा मछ।" व नात्रामी विश्वत "भगाउन धन्त्र तकिनी मछात्र" अकड़े निर्मात प्रतिष्ठेडा क कि । प कामीशास शति-আৰু ক মহাপায়ের অভিষ্ঠিত বৈদ্যালয়ের পুষ্টিবদ্ধ-নাধ এখান হইতে যথা সাধ্য অর্থ সংগ্রহ পূর্বক সম্বরেই পাঠাইবার শাসনা আছে। ইভি

> बीडेल्थन नाथ हाद्वाशाशाय।. वातागभी।

১৯ এ হইতে ১২ জোষ্ঠ পর্যান্ত হরিনাম প্রাদায়িনী সম্ভার বিতীয় বার্ষিক উৎসব অতিসমারোহ, পুর্বাক मन्भव रहेशा (शन । अडे उर्देमत्य अध्यूनी, विश्वनाथानित भुका, टबम भार्घ, शिखक विमाग, श्रीयूक मीन नाथ टनमास ৰাগীশ মহাশয় কর্তৃক জীমস্তাণৰতের ব্যাখ্যা, জীযুক্ত অমথমাৰ তৰ্কভূষণ কৰ্ত্তক "ধশারাজ্য " বিষয়িণী, বক্তৃতা এবং নগর সংকীর্তন হইয়াছিল। আর হইয়া-ছিল, সম্পাদক জীযুক্ত মথুরানাথ সজ্মদার সহাশয় কর্তৃক সভার বার্ষ্টিক বিবরণ ও যুগদর্ম ও যুগাবভার विषयक ध्यवस्त भाष्ठ अवः " मशुरत्न ममाभरम् " क्मात শ্ৰীশ্ৰীকৃষ্ণানন্দ স্বামিনী পরিত্রান্তক কর্তৃক " ভাগেষধ " বৰ্ষামী জ্ঞানগৰ্ভ ও ভক্তিরস মাথা বক্তত।।

द्यम विद्वासित्यत कांग वाग मार देवमार्थ ६ देवाछ ३२२४। মৃষ্টি ভিকার ভায়।

> रेकार्छ टेनमाथ

बिक्रमान्डल नात्र मतात्रहत् देगमनिः इ " क्रान्यू प्रक लालानाचात्र शिर्हे. 210 " গৌরহুম্বর দেন ফুতেপুর দুমকা >61

े वा हे रेक्माथ " कानीहस्य छ्ट्रीहाश्य विनमाछिया Jama. " इतिमाग वान्नाभाषाम् वाताम् इ 40 " लामा भिजलक्षत्राम मुगकः 2/0 '' রাথালীদাস সেন জামালপুর " দুর্গাদাস চক্রবর্তী পালর। কেন্দুয়া 3, ।" विस्मस्त्रनाथ माम्रामकान्का রামগোপালপুর 340 '' হরিদাস সরকার ভেরিয়াফেকি পুর্ণিয়া " जागानाथ विचाम लाकनाथपूत्र " হরিমোহন সেন শিলচর 8 ''বিপিন বিহারি রায় গ্যা " প্রসমকুসার দাস কাছাড় " দীননাথ পাত্র রামপুরহাট SE0 30 81. " কালীপদ্র পাল জীফল। ঐ ''মহেন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্তীদূর্ল ভপুর বীরভূম ৪৮/• " रतनान माम खख धूर्वा " কালীত্রদ্ম চট্টোপাধ্যায় গদাইপুর 1/0 '' वनघाली यूर्याशासास (मन् प्रमानु र ५४० " त्रभी त्याहन वद्य मिनास पूत्र b100 " আমাচরণ চক্রবর্তী ভালাইপুর নদিয়া ৭১ "বক্সি রামদাস গোলা হাজারিবাগ" 301000 " (गाविकारस स्त भामपूत वतीमान OHO " ভূবন সোহন দেন আমিনপুর ঢাকু৷ " अग्रहस्त बल्लाभाषाग् वतीमान 201 ण कानीशास्त्रत काह्य । । देठव गाहात 280/6 ঞ্জীতারকব্রহ্ম সেনগুপ্ত সালিখা 201 " कर्गवसू मङ्ममात नाताशगर्भ अ 200 '' বিখেশন সেনগুপ্ত পাটুরাথালী বাথরগঞ্জ 10 " यथुमृतन नाम द्रशासामा । " প্রসন্মার পায়ন্তা চাকলা ২৪ পং " नगैनहत्त ए इविश्व औरहे

4

	टेव नाथ	देवार्छ			देवभाव	भ देकार्छ
' যামিনী মোহন খেবে কৌশ্ৰাটী ঢাক।	1	3110	'' काकनीशागीश प्रः वरत्रञ्ज	নী }		
'কুফাচরণধর ' 🗃 ০ট্ট		3/0	বৃদ্ধি চৈতা ভ	देवभाष)		3.1
देक्तामहस्त्र रेमक व यञ्जाच माहा			" वमी कुमात सिख नः ১२२	७७		
চৌধুনী ভাঙ্গা পাড়া	•	9	काञ्चन रहेट्ड ३५ ৯१ टेड	তা ভাক ⁾	261	
'तामञ्चलत (म (नव्दरकाना मग्नमनिंग्ह		31		>1	-811-0	3964/0
কুষ্ণনাথ মুখোপাণ্যায় কুণ্ডলা বীরভূম	:	3.8	, বার			
यक्रनाथ भटकाशानाम हित्रकाछीं कातन	भूत	shdo	शांगिक मिना वैरा	;	2	২ ৭ ॥ •
(याशीखनाथ विधान किनकाछ।		10	ছাত্র বৃত্তি		331	٠ 843 ٠
कालीहरू ভট्টाहादा विनमाष्ट्रिश		4	নিম্নভোগার কণ্ডারি		b1	301
নবিনকৃষ্ণ ভট্টাচার্য্য ভেক্সপুর		21	ম।হল		340.	4.
अक कालीत मान श्राधि।	1		কুল্ল ব্যগ্ন		331a	2013.
	বৈশাখ	देकार्छ	জমা ,		6001	>40
কালীচরণ সেন গোহালী	3/0		ছাতোৰাস খনত		•	oodsa
কালীচরণ পাল ্রিঞ্ট	10		हाना है, अत्र ह			3/
ভূতনাথ হালদার শি পুর	21			b -	30.10	२७७।d३g
चटतस्किरणात माम ाया	20	4	(পালাগ			
मर्ट्स बाताश्य करकाः शास्तात्र भूर्विशा	21	*{ 6 6	छ भ	əj	īБ	
গোৰিক্চন্দ্ৰ সৰু খ্যানপুৰ ৰৱীশাল	9	,	.मारु रेगमाथ ১৮४४	भाष रे	1=11=1	sada
भागाहत्व गृथाभाषाम् उनानीभूत		3	रेठिय भाषात्र के के के अन्य	मार देव	(डजा ने उत
मात्रमाञ्चनती (पर्वी - काम्नीधाम	•	.21	माह देकां छ			
भागम्या (मयी 🗳		>110				>0>14
मामानामान तामपूत्रकाठ			2727120	मजूग ७	ह गोल ह	124430
, নাগিক রুন্তি।					>:	56287°
बेयुक बात जाना थीन में भारत है				ভারাপ্রদা	मृ यू थ।०	11 शहा श्र
जर धान ७ ८ म है	80	501		লেখা	4374 1	



"चर्ची विश्वस्य करातः प्रतिष्ठा, घर्मीया पापं मुद्ति, घर्मी सव्वं प्रतिष्ठितं, तसादमा परमं वटंति॥" स्तिः

কাশী—ভারতবর্ষীয় আগ্য ধর্ম প্রচারিণী সভা হইতে প্রকাশিত।

বিষয়	न्त्रीह ।			98
যাঞ্ৰলাদংকিতা	(স্পাদ্ক)		***	.94
कीनन क सदग	***	•••	•••	చా-
र खुन ने न	(শ্রীয়ক ভিক্ষক শ্রীয়জেরর ব্রহ্মচারী)	•••		8.2
অপুসন্ধান	(প্রীয়ঞ্জামণনাগ কারাভীর্থ)	•••	. • •	3.5
বেদ্বিদ্যাশর	(बी बाक्कानक वामी)	•••	•••	ខិង

১৪শ ভাগ। **৪**থ সংখ্যা। জাবণ মাদ, শং ১৮১৩।

वाताननी, वर्षापृष्ठ बळालस्य मृद्धिष्ठ।





শিশ্বিণিত পৃস্তকাদি "বারাণদী ধর্মামৃত যন্ত্রালয়ে" প্রাপ্ত হওয়া যায়।

. পুততের নাম। ডাকমাশুল সহ মূল্য **এমন্তগ**বলগীতা (শাঙ্কর ভাষ্য,আনন্দগিরিটীকা,রামামুক্ত ভাষ্য,স্বামী-কুঠ টাকা, মধুসূদন সরস্বতীর টাকা, কুমার এইীকৃষ্ণ প্রসন্ন পরিব্রাজক কৃত বঙ্গাসুবাদ ও 'গীতার্থ সন্দীপ-ৰী' নামক উপাদেয় ভাষাতাৎপৰ্য্য ব্যাখ্যা সহিত। ৭、 ভক্তি ও ভক্ত (৩য় সংস্করণ) निजा कर्ष्यन्त्र (क्यिमी (२ म नः ऋत्र) चश्च जब (२ म मः कर्म) **J** • রাম গীতা (মূল ও অসুবাদ) মনিরত্ব মালা (মূল ও অসুবাদ) (৩য় সংকরণ) ৴৽ আৰ্ডৰ (৩য় সংস্করণ) रदिनीटेमव (लवलम् (२म्र मःस्वत्) मद्रामी পরিব্রাক্তকের সঙ্গীত ১ম২য়এয়৪র্থ ভাগ (২য় সংকরণ) ৶৽ পীতা মাহাত্ম্য (মূল ও অমুবাদ) একভাত্তত কাব্য ৰীভিন্ত মালা

ſ	বক্তা ১ম খণ্ড (জীকু	ক প্রসন্ন পরিত্রাক্ত	
	मर्शिमग्र कर्ज्क कुछ)	•••	100
	वाम प्रशिव त्राव । २	য় সংস্করণ)	13.
	(गोड़ शीनीय यागम (বঙ্গাসুবাদ সহ)	100
	যোগ মকরন্দ (পাতঞ্চ	ল যোগ শান্তের সংস্থ	ভ
	ব্যাখ্যা সহ)	•••	100
	धर्म थाठातक (गानिक	পত্ৰ)	
ľ	উর্বম কাগজে মুদ্রিত	••• वार्षिक	010
	मधाम के के	•••	२।०
	माधातन के के	••• • •••	210/0
	পঞ্চায়ত •••	•	1/-
	निवित्र-ं शृक्षनिविध (२	(য় সংস্করণ)	3,
	শ্রীমতি ও স্বমতী উপাথ	্যান (বাঁহা ৫২ ভাঁহা ৫	ه د / (د
	গীত্ৰপ্ৰিল …	•••	1-
	তন্ত্ৰতৰ · · · ·	•••	•
	 अंबप्नीत हाउँ इदि 	.(. কাডে র উপর	
	इन्त कर्भ हिजिड-	৫ थानित्र अधिक	J.
	नहेत्न जाक्याचन ना		
	महाजा देखलक सामीत	ফটোআফ	10/30
	बढ़ेडक	•••	
	वक्छ। २ म थ छ (और	ষ্ণে প্ৰদৰ	
	পরিব্রাজক কৃত)		1.

চিটি লিখিবার কাগল দেবদেবীর মূর্তি ও প্রণাম সোক সাহত

थालाक भारकरहे । मिला।

কড় আকারের ব্লা 1>০ ডাক মাহল—/>০ বোট—া

বংগর কল দেওরা মূলা ।

কু ছোট আকারের ব্লা ১/০ মাহল /০ মোট—।

কু ছোট আকারের ব্লা ১/০ মাহল /০ মোট—।

কু বংগর কল দেওরা মূলা ।

কু আকারের মূলা ১০ মাহল /০ মোট—।

কু আকারের মূলা ১০ মাহল—/>০ মোট—১০

কোট আকারের মূলা ১০ মাহল—/>০ মোট—১০

কোট আকারের মূলা ১০ মাহল /০ মোট—১০

কিন্তুলিখিত কিকানার মূল্যাদি পাঠাইতে ক্ইবে।

কুলাধ্যক্ষ

काणी वर्षायुक व्यानदा भावता वात्र।

🗗 नट्या अश्वर् वाष्ट्रियात ।

भन्ता श्रा श्रा तिक।

"কুলং প্রিত্তং জননী কৃতাপা বস্থার পুণারতী চুতেন। তাপার সন্থিৎ সুথসাগরে আন্, লানং পরে ত্রাণ নস্য চেতঃ॥"

১৪শ ভাগ ভূপ দংগ্যা

'' এক এৰ হ'ছদ্ধানা নিধনেহপানুষাতি যঃ। শত্নীৱেণ সুমন্নাশং দৰ্কমন্যতু গভ্ভতি॥"

्रा हैका ১৮১८ अतिश मान

মাজ্জনক্ষ্যা-দংহিতা। (পূৰ্শামুর্ভি)

লাচকীত প্রস্তীঃ গাং নার্নাবেন বিশেৎক্তিং। ন রাজ্ঞতিগুহুীয়া লুক্তে।জ্যান্ত বাঁতনাঃ॥

কলপান নিরভ গাভীকে উভাকে করিবে না, কুপণ দিয়া কোণাও এবেশ করিবে না এবং গুরু ও শাস্ত্র বিরুদ্ধ-পথচারী রাজার দান গ্রহণ করিবে না।

থাতি গ্রহে স্থানিচাক্ত জাজিবেশ্যা নবানিপা। ছুন্টাদশন্ত্রং পুর্ববাং পুর্ববাংশতে ধথাক্তমং॥

कभावे, देवलकात, मुध्कित, द्रमा। म ताका काहे भीठ करावत परा आहरण व्यथम घरणका विकीरम स किलीमारणका कृषीरम काहे क्रथ लगांत्रसम्म प्रमास्त्र क्रिकिट्सारणका कृषीरम काहे क्रथ लगांत्रसम्म प्रमास्त

श्रमाशामाभ्रमाकना आनि तथाः अन्ति नाः इत्यामिति (कार्ति ना श्रभ्याः आविष्ण्य ॥ विषायाश्रम वा खेसम स्मन्न श्रात्र कति छ इहेल आविषी भृतिभा वा खन्तानक्ष युक्त श्रमा जिल्ला श्रातः इत्यानकक्ष युक्त आविषी प्रश्नोट कात्व।

देशीय भागक त्याविशाः भक्तेकाआभशाश्वा। जनारम् इत्याक प्रदेशक प्रदेशका विधिःवाह अ পোষসামীয় রোহিশ নকতে অগব। অন্ট্রী ভিণিতে আমের বহিভাগে জলাশয় স্থীপে বিদি পুশংক বেলেংশর্ম করা করিয়।

আহং প্রেচেন্নন্যায়ঃ শিষ্যহিনি গুরু বস্যু।
উপাকর্মনি চোংস্থা সশাখা জোজিয়ে ভনা ।
শিষ্য, ঋত্বিক গুরু ও বজুর মরন উপাত্তি হুইলো
বা সরিলে বেদের নিজ বঃ পরকীয় শাখার প্রেনারম্ব বা উংস্থা কালের ভিন দিন অন্যায় করিবে।

সন্ধার্গজ্ঞিত নিধাত সুকল্পোন্তা নিপাছনে।

সমাপাৰেদং ছানিশমার্থাক মধীভা চ**॥**

সন্ধাগণ্ডন বজুগাত, স্থানিকলা ব। উদ্ধাণাত হউলো, বেলাধান্য মুগাণ্ড হউক জনবা আরণ্ডক শেষট্ ইইয়া যাউক, একদিৰ রাত্র গ্নধায় কবেবে।

প্রক্ষা চঙ্গল্পামন্থা। বাহস্ক্কে।

अर्गिक्षियू एकावा आक्रिकः व्यक्ति प्रशाहन

অমাবশ্যা, পূর্ণিনা, চহুদ্দশী, জাইনী, চন্দ্র বা সূর্য্য জাহণ, ঝাহুসালিকালো এবং যদি আছোল। ভোজন ধা দান এহণ করিয়া থাক, ভবে এক দিবা রাত্রি বা জানগার করিবে।

পশুমতুক নকুল সাজ্জার খাতিমুধিকৈঃ। কুডেস্তরেরহোরতে: শক্রপাতে তথ্যেছুয়ে । শৈক্রোপ্ত গর্দ ভালুক, সামবীগার্ত নিংম্বনে ।
আমেধাশব শুদ্রাস্থ্য শ্রাশান পতিজান্তিকে ॥
দেশে শুচাবাসনি চ নিছাৎ স্থানিত সপ্লে ।
ভুক্রার্মপাণি রস্তোন্তর র্মান্তেতি নাক্ষতে ॥
পাংশুনর্ষে দিশাং লাহে পদ্মানীহার ভীতিরু ।
ধানত পৃতি গদ্ধে চ শিষ্টে চ গৃহে মাগতে ॥ ,
খরোক্রিয়ান হস্তাশ্চ নৌরক্ষে রিণ রোহণে ।
সপ্ততিংশদ্মধ্যায়ানেতাং স্তাৎকালিকান্ বিহুং ॥

अक्षात्रम वा अक्षेत्राशमात्र गमत्र यति शठन शाठन भीत वाकि गरनत मर्था निशा शल, ८७क, ८नछेत, कुकृत, भार्क्कात, मर्भ हिला यात्र जात देख्य ध्व के ज वा निम्न करत् उरवं धक चरहाताज चनशाम कतिरव । यनि कुकृत, मुगाल, गर्फ छ, ८ भार एक त । गांगरवाप वः भीत ध्रानि याकाहात आर्डनाम अम्बि (भाष्ट्रत हम्, कि:व। मनि শুদ্র অন্তার, শাশান, আর পণ্ডিত ব্যক্তি নিকটবর্তী इत, अथवा चान ७ (मह यनि अभिविद्य था दि, वातचात বিচ্যুদ্দিকাশ মেঘ গৰ্জন হয় বা ভোজনাত্তে আৰ্দ্ৰহন্ত वा समग्री प्रकाशमान शास्त्र, गिन गर्फ निभिट्ड चिन-ना अवादि इस यनि धूनि वृष्टि ना निग्नाइ इस, यनि প্রাতঃ সন্ত্রায় নীহার পাতের আশহা হয় কেই গৈডিভেছে বা প্রথম আসিতেছে, অপবা কোন ভত্ত अञ्चाभन मिन एक समागल स्टेशा शास्त्र मात गर्ड मिन शक्त छे हु, ताथ रखी, अध, त्नीका चामिछ भारताहन कतिया गाइटङ एयं. अहे २१ व्याभारत अन-भाः स कतिहन ।

क्षेत्रा ना १

कीरन ए नज्रा।

গনুষা বাঁচিতে চায় কেন ? কি হথে কি আশ।
ভরণায 'গে।হিত হইয়া সামুষ এ কর্মাকেত্রে দীর্ঘ
ভীবা ১ইতে চায়, একথার সহত্তর কেহ স্পাই ভাষায়
বলিভে পারে গা। ছঃখ ছর্বিপৃত্তির ব্যাঘাতে সনঃ

था। चित्रल भौनीनभौन हहे छ छ , चन्नान देनता एक त নিবিড় কালিমান্ত পে অন্তরান্ধা ডুবিরা রহিয়াছে. ছশ্চিন্তার ভীত্র র্শ্চিক দংশনে অন্তর্ত্তন কুরিয়া ২ খাইতেছে, তথাপি মামুষ বাঁচিবার জন্ম লালায়িত ! সংগার সংগ্রামের ভীষণ ঝটিকার ঘূর্ণাবর্ত নিপতিত ভূণের স্থায় এ জীবন তরণি প্রতি নিয়ত বিঘূর্ণিভ ত্ইতৈছে, কর্ম্যাশির ঘর্ষ্য চক্রে অবিশ্রাপ্ত মনুষ্য-कीवन भिष्ठे भिष्ठ इहेटउए. निजाम नाहे. विधान नाहे, क्रांचरकत अध्य कित हहेगांत्र त्या नाहे, त्करत চাঞ্চাগ্র পরিবর্ত্তন জনকে ছার্ডুরু থাইতে হইতেছে, তথাপি মনুষা প্রাণে বাঁচিবার সাধ ৷ আশ্চর্যা প্রতে-লিকা ! প্রতি পলে প্রতি মুহূর্তে পরিণর্জনের তীত্তঃ श्रीत की व की वेन एक C काशा में अगा के का का का कि सा गारेटाह, बाख्य गारे, जंगलयन नारे, इड़ २ कड़ २ कतिया प्रकृत छोत्रिया काल श्वनाह ममूबा कीननत्क काथात है। निता नहेता गहिए एक, कछ कक्र धाखरतत উপর দিয়া কভ শবকলাল পুরিত মাশান ভূমির উপর मिया कछ कृशिको दिव किनिविनिया (अछ शिवत, কত জ্বন্ত অঙ্গার স্তৃথের উপর দিয়া ভিতর দিয়া प्रभिवाद्या अमृत्वे ठक्क (कमाकर्षन भूक्तक कीयनत्क रुष्ट्र कतिशा है। निशा नहेशा घारे एक एक. अख याख्ना এত लाञ्चना महा कतिशाक मनमा मःगारक चि िभीम हरेट ठारा हितनिन मारूग माराशि शांत-নেষ্ঠিত হইরাও মন্দ্য জীবনের ভিখারী ! তপ্ততৈল भून किहार हित निम काहा कि मारकत भन्न इहे शह कतिया। भागम वीहियात यामना दक्न करत, अक्षात छेखत दक्ष मिरल शास्त्र ना।

মন্দার জীবন একটি কঠোর তপকা। এমন তপক্ত। বৃথি খার হয় না। আর্যা ঋষি যে তপকা করিতেন, আমাদের মত সংসারী জীবের জীবন তপক্তা তাহাকেও হারাইয়া দিয়াছে। কুচ্ছু সাধনাই ত তপক্তা, গভীর কটের ব্রদে নিমশ্ব হইয়া কোন

উদ্দেশ্য সাধন করিবার ৫১টাই ত তপ্রা। ইহাট यि जिल्लात नक्ष इत्र, छारा इहेटल आभारतत मह मःगात्री जीव चटलका उलवी गात (क चार्र ह ! धनकन সম্পত্তিরূপ ত্থ্যয়ী-বিকার আশায় আমরা কিনা করি ? আমেরা সাগর ভেঁচিয়া মাণিক উঠাইতে চাই শত বজ্ঞাঘাত সভা করিয়াও আমর। অর্থোপর্টেন করিতে मालाशिक इहै। मंगारतत अभत मुधा कितरनंत यन। यदल में पृष्टिया आभवा गर्नामाई छ शक्कशा। आध्वा এই তপ্রারে বিনিম্নে চাই সংগারের কণিক হল। ভাষ্য ঋষি ভগ্ন্যার বিনিম্যে চাহিত্নে নিত্য খির অথ । অত্রাং ভাহার উদ্দেশ্য অথের ভুলনায় ভাঁহার তপদ্যার কন্ট লঘুতর, অত্তুর উছোর তথ্যা তেওটা शक्त कर का नाइ। किन्द्र वामता द्य स्था विधाती, ভাছার ভুলনায় আমাদের তপদ্যার কট অনেক শুরুতর, স্তরাং এমন কঠোর তর্পারা আর হইতে शास्त्र ना, जारे शृत्नि विवाहि, वार्या अवि वारभका আমর। কঠোর, তাপদ। এক জন স্মাট এক জন ककीतरक निवाहित्तन भागनि त्वभ जागी भूक्ष्य, আপনার মন্ত ত্যাগী পুরুষ দেখিতে পাওয়া যায় না। हैहाट क की त हैं। निशा विनातन, वाशि छा। भी भूक्ष নহি, স্থাপনিই প্রকৃত ত্যাগী পুরুষ। লাপনার ত্যাগ-শক্তির কাছে আমরাও পরাজিত। সম্রাট বিশ্বিত **इहेत्र। विनादन हेरात छार्ल्या कि ? जागात गड शत्र**म ভোগী পুরুষকে আগনি ত্যাগী বলিলেন কিরপে ! क्कीत विकासन, बाबता बब्दा गण्यकि खक्र शहर বার জন্য সামান্য ভূচ্ছ সংসার প্রথকে ভাগে করিয়াভি বটে, কিন্তু ইচা কৃত্তে ভাগে, কিন্তু গাপনি গ্ৰুকা বেকা-भारीक जुष्क त्वार्थ छा। ग कतिशा माभाग माना छ थ রত হইয়াছেন, ক্ষতরাং মাপনার ত্যাগ বড়। আপনি কুন্ত্র সম্পতির জন্য মহান্ সম্পত্তিকে ত্যাগ করিয়াছেন, স্নতরাং আপনার ভাগে শক্তির কাছে আমাদের ভ্যাগ শক্তি পরাজিত। ক্কিরের ভাবে বুঝিতে হয়, সংসারী

জীবের জীবন তপস্যাই প্রকৃত কঠে।র ্কেননা ইহা বর্তমান ও উত্তরকালে চারি, দিকেই কফঁময় । আর্ঘা ক্ষির তীত্র তথস্যা তওটা কঠোর নহে, কেননা ভাহার প্রিণামে হুথ আছে।

ভোগ कारत ह शतिशास याहा (करतह पुःशमरा সেই জীবনের ধেমে কি জানি কেন জগৎ মুগ্ধ। জীবন কীৰন করিয়া লগেৎ পাগল ! পশু পক্ষী তরু লতা, • াহাড়পৰ্বত নদ নদী এহ নককু চেতন অচেতন गकत्तरे की गत्नत कना नाना ग्रिल । मकरमरे विकि. भीत इहेट होत, ध्वःम ८कइ होट्स्ना । मकत्नहे অবিনশ্বর ইইতে চায়, অমর ইইতে চায় । বুঝি না জীবনে কি অমৃত আছে, কি কুহক আছে; তাই তাহার টানে अगर मारजाताता। कि भनी कि नति छ. कि সমাট কি ভিগারী সকলেই সমান ভাবে জীবনকে. ভালবাদে। কুষ্ঠ রোগে যাহার দকাঙ্গ গলিয়া গিয়াছে, তীত্র যন্ত্রপার সন্মত্রন্থি गাহার ধনিয়া যাইতেছে, আ-জীবন অন্তর্নিহিত অগ্নিরাশির ছালা সালায় দেঁ পুড়িয়া খাক্ হইভেছে ভাষার পক্ষেও জীবন যেমন স্পৃহনীয়, কলকণ্ঠী কামিনীর ভূজপাশে জড়িত নিলানী যুৱারও कीयन (उपनहें म्लूहनीय़, कीयतन भिक्छ। कंगरक पुनाहेशा ताथिशाएक कीवरनत माधुती कशब्दक अन्त. कतिया ताथिसाटल, जिथानीत की वें कृषित हहेए जाक तारकपरतत विलाम भिन्नत . शर्यास कीवरनत मर्स्तक ममान चारिपछा। धनकन पूर्व मम्बिमाली नगतीएड कीवानत मीलिया रामन প্রজ্লিত হট্যা থাকে কীবনের উপকরণ রাশি যেমন প্রতিভাত হইয়। পাকে গোর গছন কাননের নিবিভ নীরবভাব মধ্যেও সেই क्रभागमान ভारत की भी भक्ति क वि शाहेशा भारक । জীবাকে পাইবার জনা জীবনের ক্ষেত্রকে পরিসর कतिवात काना कीवरात वानुषान तालिक वाड़ा हैवात काना कीव कागद अवितल (हस्टें। शताश्य: अत्यादक ভাড়াইবার জন্য জগতে চির দিল সংগ্রাম চলিয়া

শাসিতৈছে । সরণের ঘোর বিভীবিকাময়ী মৃতির দিকে জগৎ সভয় চকিত নেত্রে তাকাইয়া থাকে । সবলের বিষাক্ত স্পশে হুভেদা অস্তরময় প্রাচীর দিয়া জগৎ অটুকাইয়া বাংখতে চায়। মরণকে দূরে রাখিয়া জীবনকে সাদরে সম্মেহে আলিম্বান কবিরার জনাজগৎ বাস্তা

• किन्त्र नान्त्रनिक है कि ग्रहा बक करशत किनिय! अष्ट्रा ताका नार्क्षान्त्रहे कि अट्टे शैषता (क कार्य। কে বলিতে পারে ! মুজু গাম হইতে মদি কেছ ফিলিয়। আলায়া বলিত মৃত্যুর ভয়ানকত্বের সাক্ষ্য ভাষা হটলে সে এত কথামাণের উপর আর কোন কপা চলিত নী। কিন্তু কেবল খনুসানের উপর নির্ভর করিয়া মৃহ্যুর একটা বিকট সূর্ত্তি জগতের সম্মুখে যদি .ধরা হইয়া থাকে, ভ সে সমুসান সে যুক্তি কডট। টেক্গই, কভটা অগওনীয়, তাহা একবার দেখা চাই। আকৃতিক তত্ত্বড়ই দূরবগাই। পরিবর্তন শীল বুদ্ধির উপর প্রাকুতিক তত্ত্বের সিদ্ধান্তভিতি স্থাপন করা আর ৰালুক।ন্তুপের উপর মট্টালিক। নির্মাণ করা একই কথাু। আজ ভোমার কল্লনা অপরিপুষ্ট চিন্তা দে खबुटक द्य ভारत न्याथा। कितल, कला (परिहार्क ুভাছার পরিণ্ত্ন হট্যা ঘাইতেতে, গুডরাং ভোমার অপরিপুটি চিন্তার উপর সন্মিতির উপর বিখাস কি ? निष्मित भनरक अवर अश्वत्य एकानजरण वृत्राहि। ह शाहितलके त्रा (महे नुनान किनिष्ठते। भूमी मञ्जा हरें। দীঙাইবে এমন কথা কেহা শ্পণ করিয়া বলিতে পারেন না। মুগু সম্বের প্রেট ক্লা। আজ মুগু-ভল্ল স্মন্তের মে রূপ চিন্তা, যে রূপ দাবল প্রসাহিত হটটেছতে, কল্য শে তাহার পারবর্ত্তন হইবে না ে বলিল : প্রভার : মৃত্যু সম্বন্ধে যে যুক্তি লইয়া ভূমি একটা বিভীষ্ণ চিত্ৰ भाषा करिशाह, काराडे (म क्रिक, ভार्टा दे पा काराहे। সতা, একণ ভূমি শক্ষার বৃক ফুলাইয়া **মলি**লেও आशि गाबिएक शासि हैक १

এখন মূত্য কর একটু বিচার করা যাক্। আর্থ্য শাস্ত্র বলেন, আহার (লিঙ্গ শরীরের) সহিত দেহে-िस्सरशत म॰ ८४। ८र्गत नाम कमा, आत स्मरका स्टरशत मण्यक **হইতে বিচ্যুতির নাম মৃত্যু**াস্থতরাং লোজা কথায়। আলার অবস্থান্তর প্রাপ্তি ছাড়। মুতুর আর কিছুই নছে। মাত্লার ভৌতিক দেহ অবস্থায় স্থিতির নাম জন্ম, আলে তদ্বিচাতির নাম মূজ্। মূল্কালে আলা এক খনস্থা হইতে অবস্থান্তরে মায় মাত্র, একটা প্রিক্তন হয় মাজে। শাস্ত্র দৃষ্টান্ত দিয়াছেন, 'যেমন কীর্ণ বস্ত্র পরিত্যাগ করিয়। পুক্ষ নৃত্ন বস্ত্র গ্রহণ করেন, সেই রূপ পুরাতন দেহ পরিত্যাগ করিয়া আছা। নৃতন দেছ ধরিণ করেন। হতেরং বঞ্জুব এছেণের নায়ে ভাজােৰ দেহান্তর এইণের নাম মুদ্য। জাত্তব পরিবর্জন ছাড়। অবস্থান্তৰ প্ৰাপ্তি চাড়া মূত্ৰ কাৰ কিছুই নিৰে। এই পরিবর্ত্তনকৈ মানুষ এত ভয় করে কেন গুরে পরিবর্ত্তন যে পরিণাম-বাদ হৈ ডি তত্ত্বের মূল নীভি, প্রাকৃতিক शनार्थत व्यक्ति जन् भत्रमानुरङ ८ए शतिन। म ८तथा বিক্ষড়িভ, দেই সভাব সূত্রে চির অভ্যস্ত চির পরিচিক্ত নিয়াসের উপৰ মান্ধের জাক ভয় কেন ৭ বাল্যাৰস্থা श्रुतिविक्ति अहेसा मधन स्योजनातचात छेन्छ्य इस् আবার সৌবনাবভা পরিবর্তিত ইইয়া মধন সুদ্ধাবভার উৎপত্তি হয়, জ্বন মে অবস্থা পরিবর্তনকৈ ত মানুষ ভग करत ना। विलिक स्थितनावच्छास सतिसा यास, सूना র্জাবস্থায় মরিষা যাষ্ট্রক এ মুজ্যুকে জ কেছ ভূষ করে না। সেই রূপ রুজ (বন্ধ) মরিয়া গিয়া আয়া যদি কোন নুশন খাবখা প্রাপ্ত কা ভাষার জন্য ভয় হটবে বেন । দেই ছাড়া মাঁহাবা আল্লার স্বজন্ত কল্কিছ श्रीकात करेवरा ना, गाँकार्म ता माक रामर के सवन्म इंडेस्स हे মৰ ফুরাইয়া গেল, মরণকে উল্লারা ভয় করিছে পারেন, কিন্তু আসুবাদী হিন্দু আস্থান স্কুত্ত ক্সিডের বিখাস-শীল হিন্দু সর্গতে ভয় করিতে পা**হরন না ।** হাঁ**হার** দৃষ্টি শক্তি বিরাট ত্রসাওকে খ্যাপিয়া থাকে, ভাছার

চক্ষে সুৰ্য্য দেমন কথনও অস্ত যান না, এক স্থানে অস্ত याहेरल अभा कारन मुधा रागन छ निछ इहेरछ हन, খেই রূপ আছা-চকু হিচ্দুর চকে আলা এব দৈহে এক भारत शास्त्र इहेरल अंगायात अगुर्व र अगु শোনিতে উদিত হইতেছেন । সুর্যোর উদ্যা শস্ত শেষন বাপোর, আত্মার দেহ ধারণ ও দেহ পরিভাগে রূপ কীৰন সরণও তেমনই একটা ব্যাপার সাত্র, স্বভরং আন্তিকের পক্ষেত্ত কোন ভয়ের কারণ নাই । মুঞ্র भात भाभीत नतक गंजुना एकाश कहेगा भारक, भूतान कहे क्रभ अक्रो जात कथा विषय शास्त्रमा क्रिय वाय-विकरे छाराएउ छ कान भए।त कात्रण नारे। আমরা মনুষা হইয়া মথন কৰিয়া '৩, তখন পাপাংশ ও भुगारम छे इसाई आगाश्तत कार्छ । गित शाभाभा किंछू भाख मा लाकिल, काँठा टबेरल (मन्टा टबेशा জিমিতাম, যদি পুণাংশ কিছু মাত্ৰা থাকিত, তাহা ছটলে পশুপক্ষী ভাষাগাদি নীচ যোনিতে জ'গাতাম। ভাতরাং পাপ ও পুনুগার অংশ লইয়া মথন জান্ময়াছি, ত্থন প্রক্ষে এই পাপ ও পুনের ফল ভোগ আমা-निगरक कतिए हे इहेर्त । वर्डगान कोवरन रयगन श्रृंत-জ্ঞার পাপ পুণার ফল ভোগ করিতেছি, স্থাগামী, **■শোওত সেই রূপ পাপ পুণ্যের ফল** ভোগ করিব। ইহ জীবনে যেমন হুথ ছুঃখ ভোগ করিতেছি, পর की बरन ७ एक मन है अब यू: भ (छा भ कतिन। हे ९ की नरन শেমন কামিনী কাঞ্ন লইয়া ভগ ভোগ করিভেছি, আগামী জীবনে সেই রূপ রস্কা তিলোক্স। পারিজাত लहेशा चानम (छान कतिन। चानात हेह कीनान (तान শোক ছঃথ ছালা মন্ত্রণায় দেখন পুড়িধা মরিতেছি, णागामी की बरन मिट ऋश कुछी शाक दबी तरनत छः ग যদ্রণায় জলিয়া সরিব। ইছ জীবনের জুংখ যাত্না শেমন আমাদের সহা হট্যা যাইতেছে, তেমনই भत की गरनत कुः भकको, अ महत इहेश माहरत । देह की बरनत प्रःथ कुछ मैका कतिवात क्रमा द्यमन चारारतत

অমুভ্ৰ শক্তি ভত্তথযোগী রূপে এস্ভ ছইয়াছে, পর জীবনেও সেই রূপ হউবে। সমুদ্র হউয়া বিঠার রুদ্ অনুভৰ করিতে গেলে দারণ কৈষ্ট হইতে পারে বটে, কিন্তু বিষ্ঠার কটি চইয়া বিষ্ঠার বস আস্থাত করিলে ভাহাতে দুখে হইবে কেন : লভরা: মুগুকে ভর क्तिए इहेरव रकन १ वर्डभान कोवरन धमन कि , अध्यत দাগরে ভাদিভেছি, যে পর জীবনে ভাহা ঘটিবেনা বলিয়া ভীত হইবার কারণ আছে। ছুখ চারিদিকেই ত আমাদিগকে ঘিরিয়া রহিয়াছে, বিষাদের প্রেত युर्खि চারিদিকেই ভ নৃত্য করিভেছে । যখন যে मूः খ খাসে, তখনই তাহা তীব্রাতিতীব্র বলিয়া বোধ হয়। তোমার এক মাত্র পুত্র মরিয়া গিয়াছে, ভোমার এক খাত কীৰনের প্রবভাবা কালের ব্জাহাতে চুর্ণ চইফা গিখাছে ভোষার সাধের ধন ভোষার বক্ষে শুলাঘাত ক্রিয়া কে ইর্ণ ক্রিয়া লাইখঃ গিয়াচে, ভূমি য়ে যাভি-भाग पुष्टिक, वल दर्भाय दकाभात द्रम गाङ्ग द्रम कर्छ শত সহজ্ঞ বৌধৰ নরকের সংক্ষা অংশেক্ গুরুত্র কিনা ? তোমার স্দয় রাজ্যের অধিষ্ঠাতী দেবত। আংশের অংশিনী স্ত্রী আজ হয়ত মারা পিয়াছে, তোমার হৃদয়োদ্যানের ফুটন্ত ফুল কালহন্তীর পদ-তলে হয়ত বিম্দ্রিত হইয়াছে, তোমার প্রেমের পুরুলী বোহাণের সামগ্রীকে গুরন্ত দল্রাতে ছিনাইয়া লইয়া গিয়াছে, যে মুখপানার দিকে ভাকাইতে কোমার দাব-দ্ধাহ্দয় মরুকেতে শীতল কলা ভোকেনতী প্রশহিত হইজ, আজ সেই শাশান তলবিলুঠিত মুখণানিকে বুকে রাখিয়া মর্মের গঞ্জলে ভূমি ভূমি তল সিক্ত कतिरछक्, वन (पश्चित्रतरकत दकान् कस्टे (डामात. अ ম্মা বেদনার স্থান হটতে পারে ? ভাই বলিভৈছি धः थ व्यागारमत , शरक दकान नृजन किनिय नश, हेहा স্থামাদের সম্পূর্ণ পরিচিত। এই জানা শুনা চেনা প্রণার্থের সহিত প্রক্রোকে যাদি আসাদের দেখা সাক্ষাৎ হয়, তবে তাহার জন্য ভয় কিয়ের ? *

मुक्त नागत मामता जृतिशा अस्थारि । अक ভিলাক সময় আমর। মুকু। ছড়। নই। কল্য যে আমি বিল্যান ভিলাম, অলে সে আমি ভার নাই । ८म णाम-मतिशा भंगा छ । कानात जाए ८म कामि বৰ্তমান লাছি, লাগামী কলা আ লামি থাকিব না। অভবা: মৃত্যুত আলাব 'মৃত্যু হইতেছে, বিষ্ণ কাল দর্প আমাকে মৃত্যুত্ঃ গ্রাস করিতেছে। মৃত্যু क्षण भणागत गरक्षत ध्वकात धेनत धामना थेरत र व्यावन कतिएक । जामात शक्षानः भक्ति वर्ष वसम হইরাছে, যদি আমার প্রমানুর উদ্ধৃসংখ্যা পরিমাণ लक्षाण वर्ष इत, छ। इहिटन कान ज्ञानत जागातक व्यक्तिक शिनिया (किनियाद्य । अहे ज्ञर काहादिक वा निकि, काहारक वा वार्कक, काहारक वा शूर्वकरण 'স্বৃহ্য আস করিভেছে । হৃতরাং একটু ২ করিয়া কণে২ মুছু। ভাষাদিগকে কবলিত করিতেছে। অভএৰ মৃহ্যুর कामण् गामना गर्यताहै ज नव कतिराउदि । जरव स्था काग एक त अव जा (कन १ (य मृहार्ट जामता মাতৃণভ হইতে ভূমিও চইয়াতি, সেই মৃহুর্বেই মুহু আসীদিগকে গিলিতে আরম্ভ করিরাছে, প্রভরাং মৃত্যুর मृत्थ आभता गर्यमाचेल तहिशाहि, मृजू यनि वाल्डविक है । খামাদের ভারের জিনিস হয় তাহা হইলে মৃত্যু আসা-निगटक आफ थानि गिलिया दल्लिट्ल क कामता कट्य গাঁত্কাইয়া উঠি না কেন • আম!দের এত থানি বয়স 5 निशा निशास्त्र, व्यन्त की बत्त व्यक्त का का वाहि हरेन नाः कि बेहात क्या छ छात्र कांगात्नत अखताका শুক্রিলা উচে না। ছত্রা॰ মুত্রে জ্ঞা ক্লাকাবের স্থানশভঃই হইয়া থাকে। মুছাকে ভয় করিবার তেখন तकान कातण भूँ किया भा अया या है एक हम। त्या मूझ । अनि । हे जागारनत मरम २ त्रवितारक, अमनी 6 त-गणी वित-शतिविष्ठ शिशियातक छत्र कतिए इहेरन, हेहा तक्हे चाण्डर्गात कथा । आक मूह्र्रार्वत खरत्व गाशत निरुक्त कांनारलत विरुद्धन गाँदे, अक गिरमस्वत

জ্ঞান মাছার বিরহ মন্ত্রণা ভাষণিপাকে সহা করিছে হালা, এমন চির দিনের সাথী চিরাভাল্প থ্রিগ নাল্পন্ত কলিছেবে, উচা নড়ই বিচিত্র কথা। জগচের চল্লে মৃত্যু বিরাজ করিছেছে, ফলে ফুলে পল্লবে, মৃত্যুর স্থমা জাগিয়া উঠিতেছে, গুঙি মৃত্র মুগ্র বিজয় কুন্দুভ জগড়ে ঘোনিভ করিয়া কালের খনন্ত ক্রোড়ে বিদীন চইছেছে, শুঙরা মৃত্রুর মুগ্রা সভিত্র জগভের এছ ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক থাকিলেও মৃত্যুরাজ্য একটা অপরিচিত, কি জানি, কিন্তুত-কিমাকারময় বলিয়া জগৎ তথায় যাইতে ভীত হয় কেনং

धाँहोता विलग्न। भारकृत, भंतीरतत ध्वःन इटेटल है সৰ ফুরাইয়া যোগ, মৃত্যুর পর বিশ্ব জ্বসাতে আর সামাদের চিহু মাত্র থাকে না, জাছাদের মতেও ত মুভূকে ভয় করিবার কোন কারণ দেখিতে পাই না। মূত্র পর আমার যদি একবারেই অভিছবিলোপ इहेशा यात्र, खाहा इहेरन क चामि, यात्र द समा शहर भूमिक कठत राजुशात नाग व्वताल निक्रकि शावे। जावा **इहेटल कात कामाटक मःमाटत पून**ांद्र इंडेगा वात ३ ্ছঃথ যন্ত্রণা জ ভোগ করিতে হয় না। সংসারে পুনরা-বুক্রেনামই ভ বন্ধন। বার ২ জন্ম পরি এছ করার নামট ত ৰদ্ধন শৃথাল। এই ৰদ্ধন হটাছে যদি আহি जान शाहे, छाहा हहेत्सहेड याभि मुक्ति श्रद्धत अपि-কারী হটলাম। আয়াশাস্ত্র টিচাকেই ত "মুক্তি" বলিয়া-एक्स । किस वाखिनिक है बनि एको हिक भंती दिवत ध्वः म इकेटल, " णागात" ध्वःग इठेठ, छाटा इकेटल चात কোন ভাৰমা ছিল না। যে দিন আমার মনোময় भारीत थ्वं छ इहेगा गाहित्य, त्य मिच जागात ज कुछ णांका जनस शतमाजात पुनिसा गाहित्त, त्य निन । कृष्ट वृत्वम अभव गांगरतत खेम्बक वरक विनीम इहेशा याहित तमहे मिनहे चामात शक्ष मृण्। घछानिष्ट्रित चाकाण द्यमन चढेका हरेगा दश्रत, चनच चाकारण मिणिता यात्र, ८म हे ऋश क्षामात भतीत ७ चाछः कत्राग, किहन जाजा मतीतानि निनमें इवेशा (भटन (ग निन व्यवश्व शतभाषात मलास निमस इहेगा महित्य तमहे भिने है जागात अंद्राक्ष पूजा । (य निन जागात है सिसा आग मतिया गारेत् त्य फिन आमात जुलितानि বিলুপ্ত ছইয়। মনোপ্রাণের মহিত আলার সমস্ত সমৃত্র शिषिया गाइत्व त्य मिन मतीत हित मित्नतं अध्य ঘুচিয়া গাইবে, পেই দিনই বৃঝিৰ আমার প্রাকৃত मत्रग बहेता एक । एक ग्रुहा इहेरन मः गारत का गिता আর পুনরার জনিডে বাষ্রিতে হয় না, যে মৃত্যু इरेटन भतिरतस्त्रिया मनः शारशत नावारमा चाणारक ভবঘুরে মাজিয়া খার কণ্ম কেতে ঘুরিতে ইয় না. বে মৃত্যু হইলে আয়েকি, মায়। ,মমতার বিরহ যন্ত্ৰণায় আৰু অন্তৰ্কাল ছলিয়া পুড়িয়া মরিতে इस ना, एकमन अ्कृत किशांति नसं ८कं १ त्य प्रकृत शहिवात जन्म (यांगी (यांग मनाविरंक मध इहेगा গিয়াছেন, জ্ঞানী জ্ঞান নীরে ভাসিয়াছেন, ভেমন মৃত্যুর কালান লগতে নয় কে ? মৃত্যুই ত অমৃত ধান, মৃত্যুই ভ অমর মশিরে। মৃত্যুই অগতে থাকর পদার্থ। মূহার মঙ্গলময়ী মৃতি আর্য্য শাস্ত্র জগতে ध्यथाम् चिक्क कतिशास्त्र । त्ननारस्त चरेबज नान মৃত্যুণামে অগ্ৰাসর হইবার জন্যই জীবকে গভীর তত্ত্ত কথায় ইঙ্গিত করিয়াছেন, বেদান্ত শাস্ত্র ভাড়। মূত্রে भौजि चात गारे। Cवनारक्षेत कांसा क्रांका प्रशुत ভाষा আর নাই। বেদান্তের ভাব ছাড়। মুখুয়ে ভেষন ভাব चात्र ८ त्रांथा उपतिच्क् हे इस ना है।

মুহ্যর জন্য বাজবিকই তওটা উদ্বিয় কটবার কারণ নাই। ভৌতিকে দেহের মূহ্য কালে ইন্দ্রিয়াদি সংম্চিছ্তি হইয়া যায়, অনুষ্ঠি শক্তি অভিন্ত হইয়া যায় হৃতরাং বাহিরের পোঁকে মনে করিলেও মুমুর্ মরণের তীত্র যন্ত্রণা অনুভব,করিতে পায় না। যোর হৃত্তিকালে ইন্দ্রিয়ের ক্রিয়া রহিত হওয়ার বেমন

ত্ৰপ হংখ কিছুই অনুভূত হয় না, মনণ কালেও প্ৰেই রূপ হয় না, ইহাই ভ বিধাতায় বিচিত্র লীলা। भ १ अन प्रकृतिहरू (चात करें इहेटल ७ **७१**६। यथन অফুচুত হয় না, তখন কক ছেওয়া না ছওয়া একই কথা। স্তরাং মুগ্র ক'বত ক্ষেত্র যে একটা ভয়, তাহা স্মূলক। কিন্তু ইহার উপর হার একটা ভগ ছাছে। খাণ্য মুঞ্র কিয়ৎকাল পুর্বের যদি মনে হয়, ছায়। এই খিয় সংসারকে ছাড়িয়া কোথায় ্যাইভেছি, যাহা-निगरक " वाशनात " येनिया अर्जीनन जान वाशिया আসিগাছি, ও আমার অভাবে তাহাদের কি দশা হইবে, এই গাছ পালা ঘর ত্যার বিষয় আশায় কত करके रेज्यात कतियाहि, जह ममछ आगत मार्भत गम्भाछि कि इहेरन, रक रखांग कतिरन, हेडाकि इख्रेंब-নায় মুসুষুর চিত্ত যদি ব্যাকুল ইয় ভাহ। ছইলে বাস্ত-ৰিকই দে ভয় সাংঘ।তিক সে কটের আর তুলন। নাই। ধারুতত: মায়া মমতার কফটই মুহাকালে ভয়ের সামঞী। ইহ। ছাড়া মৃত্যুতে আর ভারে অংশ কিছুই गारे। आरे हेकू कांग्रे हिट्छ शाहित्स हे ब्र्डात विकीय । इ আনি কিছুই থাকে না । সংসারী জীবের থকে সায়। মমতা থাকা অবতাবিতাকীয়। সাধা মসভা না পাকিলে সংসার জীর্ণ কক্ষাল বলিয়া বোধ হইও। সায়া সমতাই । সংসারের ছংখময় অংশকে আরুত করিয়া সধুর করিয়া वाचितारह। गाता मग्छ। हे भागातत विकृष्टे मृर्विदेक चर्त्रत वत्रीय कतिया छेशासम्य कित्या ज्लियार छ । বৈদাস্তিক যায়া মমভার মস্তকে পদাম্বাভ ক্রিভে পারেন, কিন্তু সংসারী জীব সায়। সমভার আশ্রয় लहेर्फ गांसा। (ग अञारित मृत्ज कांगना गांसः गूग-छात्व शाहेशाहि, त्महे ख चात्तत नामहे गाँत हे€ সংসারের মারা মুম্ভার বস্ধন আমাদিগকে পরিহার कतिएक हा, क जाहात का ना भाषात्म क इं. थे वा अध **रहे** (व ८कन ? माता भगकात मुक्ष इ 9ताहै। (यमन कामा-रनत याचाविक नर्जागक, माता ममखीत शतिकात है।

শেষ ক্ষিপ সহত্বাধ্য করিয়া লইতে পারিলে আর ভ কোন হালা যস্ত্রণ ভোগ করিছে হয় না ৷ পাকভীয় লভা যাদ প্রস্তারের তল্পেশ (ভদ করিয়া গভার ভাবে বন্ধ মূল হুল, ত গে গাঢ় গংবন্ধ শিকড়কে উঠান বড় गर्भ कथा नरह, किन्छ रगरे लचा कालूकान्छरभत छेभत वक्षगृत सहेल छाहारक छिल्छ।हेर ज तभी तना পাইতে হয় না। সেই রূপ স্থা সম্ভাকে সংস্থারের গভীর গভে বজ্রবুং দৃড় কাপে ভ্রোথিক না করিয়া মদি তাহাকে ৰালুকানয় কুণের উপর ভাষা ভাষা রূপে बमाहेश: ताथि, छ।इ॰ इहेल काशकाल छ।हात्क खेलभाष्टिम कतिएक कात (कार कृश्य क्या ना । कथाएँ। मुक्ती**स** विशा वृकान बाहेट्ड (इ. यथन ८कान मिछिल-सास्त्राहर देवतात नुक्त भाक्त छहे । कारभन তথ্য ঠাখাকে ব্যবাদ কবিব সঞ্জন্য একটি ম্নোমভ ৰাংলার আ শ্রা লইতে হয়। কত পছক্ষাই ঘর কলার আগ্ৰাৰ ভাষাকে কিনিতে হয়। গাড়ি গোড়া পছল করিয়া রাখিতে হয়। মনোহর উদ্যান্টি পছক করিয়া পুষ্পরক্ষে দাজাইতে গুজাইতে হয়। খিয়ত্ম চাকর वाक्त यान्यामा भाषिति भियादेशा श्रु।हेशा कार्याप-যোগী করিয়া লইতে হয়। হাংঘাকে একটি রীভিমন্ত সংসার পাতাইতে হয়। কিছু দিন বালে সাহেবের कार्याकाल कृताहेशा यथन विलाज याहेवात आर्शाकन হয়, তথন সাহেব ঘর কলার সমস্ত জিভিয় পত্র সিকি-মূল্যে নিলামে বিজী করিমাতিনি বাড়ি যাইবার জন্য প্রস্তুত হন । তাহার সাংধর জুড়ি গাড়ি তাহার थाएरतत (घाछ। जिनि अञ्चान तपरन तिपास कतिसा (मन्। कुछ यद्भ (य मभन्छ किनिय वाष्ट्रिशा २ मः अर्थ क तिशाहित्सन, मार्टन नियम क्रमास रम खितिरक श्विकाश क्विशा गान । एम ख्वित पिटक अर्थवात क्तरकथ छ करतम न।। अहे भूत्रच किनिम पतिल्हार्य अंदिहर्गत विन्तु भाख कर्षे हरा सा । (काना मादिन कानिएकन गठ मिन डाशास्य कार्या क्लाख धाकिएक

হটনে, তভদিনই ঐ সমস্ত জিনিষ্পত্তের সহিত ভাঁছার সম্বন্ধ । কাহ্য কাল ফ্রাইলেই সমস্ত সম্বন্ধ মিটিয়া माहित । शक्ताः के नमन्त्र किनित्मत उपत उँवित माग्रा মনতা ছিল বটে, কিন্তু ভাহার সহিত ভাঁহার পুরেবাক চিন্তা শৰ্কাট সূক্ষভাবে বিশ্বাড়ত থাকিত। কাথেই ত।হার মায়া মমত। ভতটা বন্ধ ল হইবার অবকাশ পায় নাই । তাই সে গুলি পরিত্যাগ করিশার সময় তাঁহার ভতটা হুংথের উদ্রেক হয় না । স্যালিষ্ট্রেট গাহেবের মন্ত সংসারী জীব আমরাতি এ কর্মাকেতে কত্ম করিতে আসিগ্রছি। কত্মকাল ফুরাইলেই আমা-দিগকে সমানে প্রায়ান করিতে হইবে। আমাদের যদি মুনে থাকে যতদিন সংসারে কথা করিব ভতদিনই শংসারের জিনিক পাত্রের সহিত্ত আমানের সক্ষয় কর্মা काल जूताहरकहे समक्ष मस्त्र मिछि॥ साहरता अहे छिछ। অন্তঃসলিল। ফল্ডননীর মত আমাদের অন্তরে জাগরক থাকিলে মায়। মম্ভ বদ্ধমূল হটজে পায় ন।। ভাহা হইলে মরণ কালে গর ছয়ার জ্রী পুজ্ পরিষার পরি-छा। कतिएक रहेर्य बलिया अनुष्कित विजीमिकाय ভীত হটতে হয় না । পুর্বেষাক্ত চিন্তার বালুকাসয় জ্ঞাপে মাধা মমতার ভিত্তি যদি রটনা করিতে পারি, **ভাষা १हेल गतनकाल मि ভिত्তिक वेलवेलासमान** कतिए जात (नेन (नेश शाहिए इस न।। मात्रा ममजात এন্দ্রগালিক প্রলোভনের হাত এড়াইবার ক্ষমত। काशत का है। आगक्तित त्यार्ग छाव आलियन कति-वात कना (यथन वामता वास, (जभन हे आर्याकन इहे एन ভাহাকে পরিহার করিবার জনাও আমাদের স্বর্দ। श्रप्त ७ भाका ठारे। मःमाती कोषभारत्वत्र है ज अन्ताम টুকু প্রয়োজনীয়। এই অভ্যাস টুকু থাকি দেই আর प्रशृष्ट्य काँ शिएक इश ना, मृश्मारत्तेत कान कामाह তाहा इहेटल बात बागामिशस्य स्थान करिएक भारत 711

कमा, मर्भन।

আ। দিরহিত চৈতন্য ধাতু ওঁকারাপক আত্মা, काल, निक् । शक महावृक (किंछि वर्ग, ८६ छ, मज़र (बाम) क्या भार्थ (रङ्ख । ब किशासन (गार्ग भाष् **८कारत धारिक हहेगा श्री गर । श्री माल गागाना गिल्ल** यन्त्राञ्चनारत श्राच विश्वात कतित्व, मन चालि-त्रव्ह रेहिन्द्रा गानु व्याचात्र मनीत्र अक्टी ख्राया शनार्थ (इ.स्. छ दकारल मगग्न शाहेगा भर मः अक ८०७: कर्श जानिया। मिलिङ इंडेरन डांशास्त्र चीय २ ७ मिनिड मामानाविष्ट्रिव धर्माञ्चमारत हे सिर्मामि व्यवद्वारानारमाणी चान निर्माण कार्या ममाधा कतिया, ८६कोत थाउँ व कतिरण, निवृत्तित दश्जू काशामिरशत्रे मामानगाविष्टम ধর্মাকুদারে মাড় গর্ম হইতে বহির্গত ইওনান্তর প্রথমত: भक्ष कतिया कर्य धत्रे हरेता मात्र क्वाचुगाती ই।ব্রেয় গঠিত মণব। ইব্রিয়ে ঘটিত কার্যোর তারতম্যা-यूनारत, विक्रिय नगरश विक्रिय व्यक्त केथि अलावनीय चिष्ठित्रीय ভাবে ভाবभगीत कार्या अल्लानन कितिया, ভাবধাতী, कर्जी विभाजी मान्त्री माश्रिकी, (बमगाछ। গায়ত্রী, শক্তি রূপ। ত্রহ্মাণীর " একোহং বহুস্তাম্ " अहे मून मार्थक क्यात श्राम कन बालाक भनार्थ षার। প্রতিপদ করিতেছে।

এই লং সংজ্ঞক চেতঃ মন একটা দ্বোলাপাপ।
শারীদের কর্তা, অথবা ইন্দ্রিয় কার্য্যের কারণীভূত।
আত্যেক জীব লেহে গকই ভাবে ইন্দ্রিয় কার্য্যের
কারণীভূত হইরা ইন্দ্রিয় গঠিত এবং ইন্দ্রিয় ঘটিত
কার্য্যের তারতম্যাত্মশারে বিভিন্ন সময়ে বিভিন্ন প্রকার
কারণার কার্য্য জীব লেহে করিয়া বিভিন্ন প্রকার
দৃষ্ট ইরা থাকিলেও, ইন্দ্রিয় কার্য্য হইতে ক্লেণেক
সময়ের জন্য নির্দ্রি হইলেই খীর ভাবে অবজ্ঞান হেতু
ধর্মাধর্ম পায়বেক্ষণ করিতেও সক্ষম হইয়া থাকে ।
ইন্দ্রিয় কার্য্য নাংগ্রা থাকিংই যে সনের কার্য্য
হয় না, ইহা অনুত্রক বলিয়া লোধ হয়। পঞ্জ ইন্দ্রিয়

ভূতার্থ। স্পার্শন শক্তি বারা ইহার কার্যা সর্শাদন एरेश। थाटक । भन नामान्यार्व किन्न भन्यान्त्रनाटत यङ्धाञ् (কিভি, খণ, ভেজ, মরুৎ, ঝোম এবং খাড়া।) গঠিত লিঙ্গ, পুরুষ ও বাগা অগ্নি সোম, অথবা মনুষা দিগের रमस्य नागुणिक करु काखा कतिया वैक्सिंग कार्यात কারণীভূত হইয়া পুরুষ কর্মের চিন্ত। কার্য্য করিয়া थार्क। या रहजू मनः भःरवाश कतिरल है हे स्ति । कीरी করনে সমর্থ হইরা থাকে । পরস্ভোতিক পদার্থ আেঠ বালু অমি দোম, উদ্ধেতু দাকাৎ ভোগ সক্ষে बाग्र शिष्ठ करु, यथन (य शूक्रस (य छार्च व्यवसान करत मरनत विश्व। कार्या । ८० शुक्राय रमहे ভार्तिहे इहेगा থাকে। বাগু শগ্নি সোম, তদ্ধেতু বাগু, পিঠ কফ, তুপা-ন্তর যোগে দ্বিত হইয়। ইত্রিয় বৃদ্ধি অদংগ্রিনী ক্রু ২ আয়ু পুঞ্জের স্পাশন শক্তি কার্যেশর গভি রোধ করিড: বুদ্ধি বিখাজের করিণ হওয়া ৰণতঃ, পুরুষ কর্তৃক সদস্ৎ कार्या मण्यापरमञ्ज कार्या किस्ता यम भागामाग्रीकन यत्त्रज्ञ याना इरेशा कतिशा बांदक । कांगि देनथा ब यात् विधन ७ ज्ञामि की वित्र मन हे लिता है। ने बहेरण • জ্ঞান নিহিত পঞ্চৰ চিন্ত। অথবা পাপ পুলোর চ্ছা। कार्यात दकान गुजात इत मा। त्यहे बाकात मर्द्यतिसा लाश इटेरल क मत्मत श्रीय किस्ता ween ततान कारहास , रम ना। मन, वाधु, व्याम त्याम कटेक हुवागु शिष्ठ कर, **७ मः नरमत क्रम कारणत मान्कृत भादार्था, रम्रह** বিরাজ্যান থাকিয়া পঞ্তত্ত্বিটিতে অন্ত জ্ঞান চিত্রা कार्या निर्मिश्व इहेग्रा अनुस्य ভाবে ভাব সাগরে ভারত রাঙ্গোপরি নিশ্চণ নির্বাত অদীপের ন্যায় হটলে, আজা ভাবস্থীর ভাব দর্শন করিয়া ভোলা হইয়া সূত্রগ্রহ हरेट जुलारत । चात वह मन, वाग्नू चांग्र, दशाम, काकार ভোগ সম্বন্ধে বায়ু শিত কফ এবং কাল গুণান্তৰ নোগে ৰিরুদ্ধ হইয়া স্নায়ু সকলের স্পার্শনি শক্তি উদ্ভব है छिर ग्र क्षित ल्यां न कतिया छान हीन कतित्य, यागु **लिख करकत्रहे धर्माञ्ज्ञाता नितागयः १८एडू .प्रारंक**

च्युकि है छन्ता एत, अवः कातरणत एएकु शाहेता पूल्य कर्ष्य करलात धानका चिक्र छंग्रहत दम्यातः महत्त गर्म रे. ৰায়ু পিত কফ হইতে নিচাত হয়। মনের এই ধাণার ভার হর দেখার অবহা অহীৰ ভায়ক্ষর। কর্মা পাশে, বন্ধ कौरवत अहे श्रामा अवषा हदे(छ प्रेक्षात भावता मढ़रे ছুর্ল । ,এই ভমঙ্কর অনত্যে ক্রিয়ার্থ সংযোগ (অর্থাৎ , ই স্ক্রির কার্যের অভিযোগ, অবোগ, মিণ্যাযোগ) প্রজা-शताम, (व्यर्थाः वाहितिक, मानगिक जायः भातीतिक कर्णात चिराम, क्यामा, भिर्मासमान) जनः नित्राम, (অৰ্থ: ং কালিক বিপৰ্য্য়া) হইতে উৎপন্ন হৈছু অভাত भूतम्य-निर्मिष्ठे छेनाम अवः चकीश वृक्तित छेटलाक बाता क्कार्य (मार्थित क्या कर्णत (यांग क्रिसा (मार्थित क्या क्तिया श्राप्त इकि कतिरव ; अवः मरनत्र गरिष्ठ हैल्जि-্য়ের অমুপভাপের নিমিত্ত এবং উপভপ্ত ইন্দ্রিয়ের প্রকৃত ভাবে যত্ন করিবে; গাহাতে প্রকৃতি বিকৃত হইয়া বুদ্ধি বিশাতের কারণ ন। হয়। মন আহার, আচার এবং চেন্টা থানা বানু পিত কফের অথবা বানু অনি, সোমের विक्र इ खड़ाव इहेटड निकृष्टि शाहरत, मीचीम् मह भीक দৌশুর্যা স্বাস্থ্য, ভাষে জিয় সম্পাদন করে, এবং সেই পুরুষকে ধর্ম, অর্থ কামনা উত্তয় রূপে আচরণ ক্রাই্য়া ्हेरकाल गरः शत कारलत मञ्जल छात्री करत । भात वाश, शिक्त करफत महिक विकृति धाथ शाकित्म, পুরুষের দারা উক্তার্থ সকুলের বিপরীত ভাব আচরণ कताग्र, जवर तमरे भर्या अर्थ कमना, वितम्ब क्राप्त चाठ-রিত হইলে, ও বিরুদ্ধ দাভু হইলে, কুপিত বায়ু পিত क्छ। नि कर्तृक यन क्कानच। शांख इहेगा नाना विभ थकारतत य ७ ७ हेळानि मुक्तान करत । अख्र ६ ४ वािक , गांद्वहे किना-किनी, मात्रा-मात्री, वका-नकी, यका-यकी, हती हामाती ना कतिहा खीर खाउँ हित महिल योश अवस्था भर्यारमाहना कतियाँ जाशन छ ९-পত্তির সৃষ্ঠিত কর্ম চিন্তা করিবে, এবং ক্থিত আহার আচার চেন্টা সর্ল আতা গুণের অবিক্লন্ধ ব্যবহার

আরা দেশ কাল মন ও ইন্দ্রিয়ার্থ সংযোগ থার। উত্তম রূপ বিবেচনা করতঃ সংবজ্যেভাবে সম্পাদন করিছে। ইহাতে একু কালিন আরোগ্য এবং ইন্দ্রিয় জয় লাভ করিতে সক্ষম হওয়া যায়।

ত্রাহ হা শঃ।

শ্রীয়ক রাজা প্যারীমোহন মুথোপাধ্যায় ও শ্রীরুক্ত রাজা শশিশেশংরগর রায় বাহাছরের সাধু যত্ন ও চেন্টায় কলিকাতায় "ধল্ম মণ্ডলী" গঠিত হইবার উদাম হইতেছে। কলির কালদণ্ড বিতাড়িত বর্তমান ভারতের হিতাপী বন্ধু হাঁহারাই, যাঁহারা মলাহন ধলাকে শক্র রাখিতে প্রমন্ধ করিবেন। এই রূপে ভারতব্যীয় আর্য্য ধর্ম প্রচারিণী সভার অর্হৎ কার্য ক্ষেত্র পশ্চিতিমানর প্রদেশেও পপ্তাবে "ভারত ধর্ম মহামতিল "ও বলদেশে "ধর্ম মণ্ডলী " আদি আরা সম্প্রদারিত হটলাম। ভারান ক্লেন্ডের রাজা বরের লাধু উদাম ও ভ্রত্তর উদ্দেশ্য সাধ্যের সহায়তা করেন।

ञनुगक्षान ।

কুলাদশিকুত্র রোণ্যথও হারাইলে তাহার অক্ত আমর। কতই অনুসন্ধান করিয়া থাকি; যদি ভাহা প্রাপ্ত না হই তাহা হইলে মনো মধ্যে কতই পরিভাপ হয়, কিন্তু একবার ভাবিনা যে এই সামাল্য ধনে কতকাল পর্যন্ত শান্তি লাভ করিছে সমর্থ হইব। কিন্তু হার্য গাহা অল্রভেদী হিমালয় শুক্ত পরিমিত প্রবর্গাদ হইতে ও বহুমূল্য, অনন্ত নভোমওপ হইতে অনন্ত অধিক কি রক্ষাকর সমুদ্রের যিনি স্প্তি কর্ত্তা, ইাহাকে পাইলে বালা যর্প্রণাময় সংসারে ভ অনন্ত শান্তি লাভ করিছে পারি, ইাহাকে পাইলে হুলয়ে অনির্বচনীয় আনন্দামুভ্র করিতে পারি, গাঁহাকে পাইলে হুলয়ে অনির্বচনীয় আনন্দামুভ্র করিতে পারি, গাঁহাকে পারি, কই। দিনাতে একবার ও তো ভাহাকে অনুসন্ধান করি না । গাণ হইতে

चामि कछ पृत वितक हहेगाहि, भर्माभाश कामात कड দূর মতি হইণ, দিনাতে এক বারও তো ছাছ। খমু-गक्षान कतिन।। यथन निष्ध करशात विज्ञामर् इस, यथन चारमाम (कामार्व चात व्यांक (गाठत रहा ना, करें, कथन ७ (७) भाषनाटक भाषनि जिल्लामा कति ना, (य आभात जीवन दावाइ अक जिमिक पूत आधानत कड़ेल, কিন্তু মতুৰ্য নামের কন্ত দূর উপসূক্ত হইলাম, মন কন্ত দুর নিম্মান হইল, সম্মুখে ভীষণতম ভব সমুদ্র পার ছইতে হইবে, তাঁহার জন্ম কি সক্ষ করিশাম, যে নরকের বর্ণনা পুস্তকে পাড়লে ভীষণ ভীতিতে চফু ম্পন্দাহীন হয়, শবা শরীর কাঁপিয়া উঠে, কণ্য হরু। कुक्र कतिया छ तो, जारा रहेत्क तका शाहिकात कि छेलाय कातनाम ।

 (क् कार्यानक शूक्तम । चीकात कतिमाभ एम पूर्णि বিষয় কংশা অভি হুডভুগ, কিন্তা যে চভুগভাগ কল निकाकांक बालिया केंगरकाश कांत्ररक शातिरव, त्य **७ वृत्रका कक मूत्र भागक कतिरण ? " या रणांक बग** गाधनी ততুভ্তাং সা চাতুরী চাতুরী"। হে বিশব্: আনি 🛊 স্বীভার করিলাম যে ভূসি নানা ভাত্রে ব্যুৎপদ্ কিছ খে विनात बाता আপনার চরিত্রকে প্রিত্র করিছে। করিয়া, তোমার অনুসন্ধানে বহির্গত হইমাছিলেন, लाता गात्र, त्य विमाति बाता कालगात हिन्दक, त्य 🖲 क्रम्यामश्र श्वरम्यद्वति थिशः णायामः क्रिकं कित्रकं शाताः गात (म विनाधि (कामात कल्नुत तारशीत हरेगाहि, काहा कि निभारस जक बात्त अध्याक्षान करा। अधू-मकान कतिरम काश व्यवणाई शाहरत शाहित्य। किछ এ অনুসন্ধান, পুরেব। জ হাত রোপা খভের অনুসন্ধানের আরি অনুস্কান নহে, ইহার অনুস্কান সন আহাণ এক कतिन्ती चन्त्रकान । बहे चन्त्रकारन अन्यति र्धनाद्वर्ग भाषा बाका ठाइ। व्याहे अनुमद्गारनश माना है अक निन শিশু প্রদে ভগণান্কে লাভ করিয়াভিলেন। এই অনু-गक्षात्मत्र बनीष्ट्रक रहेगाहै कक मिन छग्राम् बाङ्गाम-रक **एक मध्या दिल्ला निशाहित्यन अहे दिय**नार्दश

श्रेटन है भाभ मकन कार्य इंडेटक आभागक पृत्त रानादेश यात्र, जाना मञ्जनायत्र भः नात्व चाकिता**ङ** শাস্তি সাভ করিতে পার। যাঁয়, পাপ জলদ মালা **णश्यक रहेरगहे काम्य गर्भागग्रस स्तिमः भात्रमीय** শশপর উদয় হন, ভবিমল্লি কেম্দী পান করিয়া মানস **८८का**रतत थिलामा भिन्निंगी गास ।

(र मग्रामा । करन करन न काम अरन जन्म करे ভূমি বিরাজমনে, আমাদের চক্ষুর ফক্ষুথে আপাবরণ বুলিতেছে, ত।ই ভোমাকে দেখিতে পাইতেচি না । बाला । मरमात नार्च विष्ठतम कतिसा जामहा आख হইয়াছি। হাদরে কিছুমাতে শক্তিনাই সেই জন্ম তোমাকে অনুসন্ধানত করিতে পারিনা, আছো ! पामारमत प्रस्ता अमर्श भक्ति मधात कत, रा महि দারা শক্তিমান হটয়। শিশু প্রত্ব গহন বলে তেমিরে অনুসন্ধান করিতে করিতে ভীবণ ব্যান্তাদিকে দেখিয়া " আমার পদ্ম পলাশ লোচন হরি আসিলে "ুৰলিয়া আলিক্সন করিতে যাইয়াছিলেন, যে শক্তি দুরো মহান্তা। देठ छन्। दम्ब निर्मीय भगता शिक्यां शांखा । ब कननी दक কালাইয়া নগলীপ ধাসকে গভীর পোকে নিম্ভিত खारि। तम्हे भक्ति भागारमत क्रम्रास मक्षालिख कतिसाँ णाशात्क गैंडम कत, তार। हरेंद्य मिन्दशरे णागता তোমাকে অনুসন্ধান করিয়া লাভ করিছে পারিব এবং कारा रहेरम ठकू रहेरक भाभावतग व्याभाव मतिया याहेटच । ७ चन ट्रामात मिना पृक्ति (मधिशा ध्याम कतिया विभव —,

ত্মাদিদেব: পুরুষ: পুরাণস্ত্মক্তবিশ্বস্থার: নিধান্ত্র (वक्) (म (वत्राक्ष शतक गाम प्राक्तिक निष्यमस्य कर्म मृ।।

> ৰায়ুৰ্যমোথ্যিকুলঃ শুশাক্ষঃ প্রকাপভিত্তঃ প্রপিতামহ-চ। नभानभाष्य रहे भर्ञ क्रयः यूनण्ड क्राहिण नत्मानमर्थ ।

्रतम निम्रालश्च.।

আমর। লানি গৎকার্যো বিশ্ব অনেক, লানি আহ্বর-অকৃতি কলির করাল কলি দতে বিভাড়িত হইয়। रयम व देवनिक धना मन्निक व्हेर्य, किछ हैवा व कानि चमानि भूक्र देवत नारम निर्मत कृतिया मानुष्ठीरन श्रव्य হটলে ছোহা অনিক হয় না, এই জন্মই কালের বিশ্রীজ ব্রেতি অর্থসর হইতে সাহস ও সংকল্প করিয়াভি। কাল সর্কোপরি এবল চইলেও কাল বছ বাধ। নিল্ল জাল বিভার করিলেও মতিলপুশার নামের বিজয় নিশান यतियारे यादारक (यम विमाह भून: बाहात दर्ग गादारक क्रांच बाक्य का जित्र काताल भूगतक्रामग्र रग, गावाएक विनुष बाग (खोछ ब प्रार्ख कपा काल पुन: बाहाति ह इतः महाटक वैर्गालाम भाषात म्याविभि भूनः श्राफ्के। हत्तः 'फक्तिना भारतात नार्य मरित्रतः भारम द्रम निमालित मः चा-পিত হইল। কুড়াৰণা মহাত্মাণণ অশিক্ষিত অচভুৱ মনীমা সম্পন্ন পুরুষণণ অনেকেই স্লাশয়ক। সহ সহ।-য়ত। ও সহামুভাবকতা করিছে অগ্নয় চইলেন। শক্ত ২ নং গৃহত্ব বৰ্গ কিতা মৃতি ভিক্ষা দানে ও স্থান্য (कर-दकर अक कालीन ना भागिक बुक्ति गारन विला-गरशत केविकि करहा भूष्ण क्ष क्षेत्रार्टन, चाठायां १०० भगीती कि जम्हाभना भूतिक विम्हाणी नर्नाक भिका मान করিতেছেন, আজ বালাণী বালকের মুখে বেদ গান ভূমিয়া কড লোকে ভবিষাতের প্রভাক।ক্রিতে ছেন ইহা দেখিয়া শুনিয়া মনেং কত আহলাৰ হইভেছে निराठ शांति ना । यत्र (मणीश नेनाइन भक्तावनाची नगः वाभनाता रिभक्त कार्या महत्त्व र गुप्ता नाग कतिशां अकि विषय आजा गांधक (कालन कता हैशा शिकु (लारका शतिएकाय माभर्तत एकाम नानकाई कतिएक शांतिएस ना, जाक (महे अनकाश निरमाहरनत छिछ मिन ९ (ग गिन करे इंटेएडएड, हैंग (मिशा भागनारमत व काञ्लातमत मीमा नाहे । जगवान् जातालीम कार्या का कि कित महाश थाकन।

तम विभागित्स व्यक्तिं। जना प्रत्यंत माण क्रिक्ति क्रिक्षिण किर्मान व्यक्तिः। ज्ञान विश्वास्त व्यक्तिः। तम् मक्ति वृद्धिमान व्यक्तिः। तम् मक्ति व्यक्तिः। तम् मक्ति व्यक्तिः। तम् मक्ति व्यक्तिः। तम् मक्ति व्यक्तिः। विश्वासः। विश्वासः।

ভাবে এক কথা বেল বিলালেয়ের মৃষ্টি ভিক্লা সংগ্রহ করিবার জনা কড় লোকে মৃদ্ধিত " নপ্লল ঘট " লিপি ও ভিক্লালিপি ভাকে চাহিয়া লইয়া গিয়াছেল, কিন্তু ধর্ম প্রচারকে প্রভিন্ন মাদে ২ যে সভাজাগণের নাম মৃদ্ধিত হয়, ভাভারা ভিন্ন মন্যে একটি কপর্মকও এপানে পাচান না, অপচ প্রভিন্ন মনের গল্লীতে এই রূপে অর্প সংস্থীত হয়, কিন্তু সংস্থীত ধন যে কি হয় কোণায় যায়, ভাভাভগবানই কানেন । আশাক্রি এই ভিক্লার টাকা কেছ সেন অপশাবহার না করেন।

गृहस्य भग ! मकरलाई निया कृतिया "मक्त पढे" गृहा ६ तका कहान । ८०० विमारक आवश कितिया मा प्रश्न पुणी । नाम कित्या कानीरक राजक जाकान गर्शन रामवार्थ कर किया में हिंदि । जिस्ता काना कहान व निया के वक्ष मर्वारक वाणिरक पृष्टि शांक । मन ककान व निया के वक्ष मर्वारक वाणिरक पृष्टि शांक । मन कहान व निया के विमारक मास्य के मास्य क

দীনাতিশীন **এ**শ্লীকৃষ্ণান্দ্ৰ।

श्राप्त्र १९मृत

১। গভ মাসে বারাণনী বালরঞ্জনী সভার
মহামহোৎসব হইরা পোল। কুমার পরিত্রাক্তক মন্ত্রাণার
এই উৎসবে "জীবনের সার্থকতা " বিষয়ে একটি
মমোহারিণী বস্কুতা করিয়াছিলেন। সভার অভিশর
লনতা বশতঃ জনেক লোকে স্থানাভাবে ফিরিয়া
ঘাইতে বাধ্য হইরাছিল। বালক বর্গকে সং-শিক্ষাগানই এই সভার মুখ্য উদ্দেশ্য।

২। ৫ই হইতে ৭ই আষাত পর্যন্ত সাঁওতাল প্রগণার ফতেপুর হ্রিসভার বার্ষিক উৎসব হইরা গিয়াছে। এই উৎসবে প্রীনন্তাগ্রতব্যাধ্যা, প্রিত্তালকের স্কীত ও ২৪ অহর হ্রিসন্থীর্ত্তন হইয়াছিল। এই স্বারোহপূর্ণ উৎপরে লোকের অভিসর উৎসাহ বৃদ্ধি হইয়াছে।

बि कीर्खिटस (मन छछ।

০। ১৭ ই হইছে ২২ এ আষাত পর্যন্ত মহন্দ্র বাজায়-কাইজুলী (বীর্জুল) হরিসভার ৫ম বার্ষিক উৎসব সম্পন্ন হইনা সিয়াছে। এই উপলক্ষে প্রাম্য দেবতার পূজা, পাজব্যাঝ্যা, সংকীর্জন ও বস্তুতা ইইনাছিল। নিকটবর্তী প্রাম্ম সমূহ হইতে বস্তুজন-সমাগ্রম সভা লোকাকীর্শ ইয়াছিল। আজাম্পন্ন পণ্ডিত শ্রীবৃক্ত অম্বিকা চরণ বিদ্যারত্ব মহাশার দিন সভালেশপূর্ণ বস্তুজা ও ব্যাঝ্যান দ্যারা লোক সমূহকে পর্মানন্দ্র লাম করিনাছেন। বিদ্যানত্ব মহাশার্ম শংসায়-সমৃত্র লিব্রিন্তিন। বিদ্যানত্ব মহাশার্ম শংসায়-সমৃত্র লিব্রিন্তিন। বিদ্যানত্ব মহাশ্রম শংসায়-সমৃত্র লিব্রিন্তিন। বিদ্যানত্ব মহাশ্রম শংসায়-সমৃত্র লিব্রিন্তিন। বিদ্যানত্ব মহাশ্রম শংসায়-সমৃত্র লিব্রিন্তিন।

. औ लाहकड़ी नम्माता

(यमविमार्गामस्त्रत भाषाकृ भारमत्र	পায় ও ব্যয়।
যুষ্টি ভিকার মূল্য	•
জী কালীকুমার রায় 🕲 পুর, ঢাকা	1.0
" रेक्नाम ठळ ७वा भाषेत्र	3110
" কেদার নাথ গোস্বামী ৰড়া 🗐 রা	मश्रुत ১२,
व त्रमभीरमादम रङ् मिनाक भूत	vhe .
"देवक्छ नाथ मख गाहेवाड़ीता	210
" ममिक्षन यूर्याभाशात्र पृयुत्तह	• 8.40
" শ্রীনাথ শর্মন: সরকার দিনছাটা	8
" তারাপ্রসম বন্দ্যোপাধ্যায় গৈদাব	
" গোপাল দাস বহু সালিখ!	J.
" ৰারকা নাথ গুপু মাহিগ ঞ রঙ্গপু	ā •
" कानी अन्न हरिशानामा मनाहे भूत	100
" इति गांग गतकात (छतिया छित्री	31
" वनग्राति नात निःश नावलमङ्	810
" নলিন চন্দ্র রার মোক্তার দিরাক	গঞ্জ ১, •
" দীন নাথ পাত্র রামপুরহাট	84.1.
" काली हस्त छहे।हाया विनयाङीया	>•/
 कानीबाटमत देवणाथ माहात गृष्टि 	ভিকার মূল্য ১৭/০
औ हरतन्त क्याब माधान भीवभूव	
·	· 944ele
वक कालीन मानवा	9 1
बी बीनकर्श्व हरहि। भाषात्र भनाहे प्	₹. <i>dc</i>
	লা পাহাড় ১১
" थित्र नाथ तात्र (ठोष्त्री थे	37
" काली मान वटन्यांभांभात्र ले	2,
" माथन नान त्याय 🔄	3/

' এক কন ভ্রাহ্মণ ফি	মল। পাহাড়	301	"সহেত্র নাথ বলৈদীপিয়ায় সিমল পাহাড়	3/
ি শ্ৰীন্থি বস্থ	ओ	٤,	''ঈশ্ব চন্দ্র নৃথোপ।ধ্যায় ঐ	>/
' কুচিল গোহন দাস	A	3,	''গোপাল ক্রেমল্লিক ঐ	3 \
' রাম গভিন্তৈমত্ত্র	ğ	>/	" क्यूम हत्त यूर्थाभाषाय 🗳 💮	3/
'ক, খ, গ,	Ā	10	'' ছর্গাচরণ মুখোপাধ্যায় ঢাকা	ી જ
' এ, বি, সি,	À	8\	' বিশিন বিহারী বায় গয়া	20
'कृषः लाम (चाष	<u>ं</u>	31	ং যত্নাথ সহায় ছাপর।	201
' দাহ কুমার চট্টোপাধায়	<u>ই</u>	110	>=8/	100
' (मरवस्त नाष (घाम	હો	•	মাসিক রতি †	
' (क्षात गांध अञ्	্ই	ğ o	🕑 লক্ষ প্রদানী বৃত্তি, কাকিনীয়ার মহারাজার	
' নুঙা লাল দত	<u> </u>	110	প্রণত মাহ লৈচ্চ	301
'कार्गा है लाल एउ	ঐ	; •	. '' नीरतचत स्रवाशाधाय मिमला পाठाकृ	a
' অভিয় চরণ মুখোপাংগায়	ক্র	>/	्रम्कीम । े तासः । । । । ।	10
'হারান চন্দ্র শহ .	.	51	'শ্ৰীল আৰু মহানাজা দরভাঙ্গা	₹°,
🏝 त्मालाल गुरमानानास	ف	3/	-	
' अ ङ्ग हत्रन हट्छे। शामा स	ঐ	110		૭ ૯
रेकलाम हन्द्र भूरवाशामास	ঐ	3/	• বাৎপত্তিক খান।	
भट्टस नाथ ग्रवालानास	ঐ	21	'' विश्वताल जरमाभाषाय मिमना भाराष्	3/
' উপেন্দ্র নাথ বন্দ্যোশাধ্যা	अ 🖆 🕟	3/	" (गांठे कात ३)	۶4d()
' नाताश प ठख्त ७ छ	a	38	वाग्र ।	
' অবিনাশ চক্ত চড়োপাধ্যা	ય જ	31	''আচার্যা গণের দক্ষিণা, ছাত্রে বৃত্তি	AGE
' যতু নাথ হার	E.	201	" इ रिश है अवह	6912
• के. शक्त नाथ ठ८के । ≅ः धारा	D.	301		30
· कृष्य हस्त हर्ष्ट्राशामास	ब	3/	,	eds.
'হৃদয় নাথ খোষ	B	3	116-91 7-740 	- 1/4
" (वनीभाषव (धाष	À	3/	(गांठे नाश	9812
''আদিতা প্রকাশ বন্দ্যোপাধ	प्राप्त औ	a \	বাকী	380
'' যতু নাথ দিংছ	ঐ	3	শ্রীতারা প্রসন্ন মুখোপা	
^ল সনাতন ধর্ম সভা	5	23/	(तथाभाकः।	



"षक्षीं विश्वक जगतः प्रतिष्ठा. घर्मोष.पापं नुद्ति, धर्मो सब्दे प्रतिष्ठितं, तक्सादक्षे परभं वटति॥ ' श्रृतिः,

কাশী—ভারতবর্ষীয় আহা ধর্ম প্রচারিণী সভা হইতে প্রকাশিত।

বিষয়	णूहि।			ু নৃঞ্চা
যাক্তৰৰাসংক্ৰিড়া	(সম্পাদক)			6.8
	(a) b ()	•••	•••	
कम्। अत	(শ্রীযুক্ত পাঁচকড়ি বনেয়াগাগায়)	•••		3 :
একনাথ মহারাজ-চরিত	(टीयक माननाथ शक्ताकाकाराय)	•••	. 2-0	\$ 10
कांगलय कांगायां खंडा	(প্রিরাক্ত এক্ষান্দ ধারী)		. 100	a ::-



58শ ভাগ। ৫ন সংখ্যা। ভাজ মাদ, শঃ১৮১৩।

বারাণদী, ধন্মায়ত যন্ত্রালয়ে মৃত্তিত।



কুমার-পরিত্রাজক

শ্রীযুক্ত শ্রীকৃঞ্নিন্দ স্বামী কৃত বঙ্গাহ্বাদ ও ''নীতার্থ সন্দীপনী' নামক স্বালিত, স্বমধুর ও স্ববিস্তৃত ব্যাখ্যা সহু'

এমদ্রগবৃদ্গীতা

(२ श म् रक्त न)

কংস্কৃত মূল, শাহর ভাষ্য ও ঞ্চিরস্থামী ক্রত টীকা সহিত প্রকাশিত হইরাছে।

প্রথম সংস্করণাপেকা দ্বিভীয় সংস্করণ উত্তম কাগকে ও উত্তম অকরে বৃদ্ধিত হইয়া উত্তম ক্রপে বাঁধাই হইয়াছে। কুক্লংকল, রণভূমি, বেদবাাস, শকরাচার্যা ও প্রথম স্বামীর এবং ভগবানের বিরাট মূর্ত্তির চিল্ল অভিস্থানর ক্রপে অভিজ্ঞানের ক্রিটি মূর্ত্তির চিল্ল অভিস্থানর ক্রপে অভিজ্ঞানি আছিত আছে, সঙ্গে ২ ° গীতার্থ সন্দীপনী শব্যাখ্যাতার ও একটি চিল্ল সন্ধিবেশিত হইয়াছে।

'গীভার্থ স্থলীপনী 'পুণাত্মা পঠিক বর্গের হাদরে যে গীভার কত গুহাতি গুহু তত্ত্ব প্রকাশিত কর্মিয় দিয়াছে, তাহা বঙ্গভাষাবিৎ পাঠক আত্রেই বিদিত আছেন। ১ম সংস্করণ অপেকা ২র সংস্করণে ''গীভার্থ-সন্দীপনী 'অনেক স্থানে আরও উত্তল, আরও স্কুপাই, আরও স্থগম আরও স্বিস্তৃত্ব করিয়া দেওয়া হট্যাছে।

ুম সংস্করণ ভাগ ব পোন না গাকিলেও তাক বার সহিত মুগ্য ছিল ৭ সাত টাকা। ২য় সংস্করণে সংস্কৃত ভাষা ও চীকা তিন্ট কমিশুছে বটে, কিছু আর সর্বা বিধায়ে উত্তম ইইরাছে; কিন্তু মূল্য ইইরাছে গাও এবং ডাক বার, কেজিটারি ও গ্যাকিং বার ॥ আট জাগে মাত্র। বিদেশীয় প্রাহক গণের পক্ষে একুনে বাগিবে ১ পাচ টাকা মাত্র।

এ পুত্তক ন্নমূল্যে বা বিনা মূল্যে কাছাকেও দিবার অধিকার জ্ঞানাদিগের নাই। কেননা পরিপ্রাক্ত মহাশর ইছার অভাবিকার

তাঁহার যোগা শ্রমে প্রতিষ্ঠিত মাটিয়োগেশরীর সেবার্থ উৎসর্গ করির।
দিরাছেন। অভএব কেহ ন্যন মূল্যে বাহিনামূল্যে পাইবার জয় আমায় বা পরিবালক মহাশয়কে যেন পত্র না লেখেন।

গীতার , গ্রহণ: ভিলাষীগণ আমার নামে ম্ল্যাদি পাঠাইবেন। অগ্রিম ম্ল্য না পাইলে পুত্তক প্রেরিভ হয় না। পরিচিত স্থানে ভ্যাসু-পেএবেল ভাকেও প্রেরিভ হইয়া থাকে।

ধৰ্মামূচ যৱালয় « কাদী; ২৫এ প্ৰাবণ শঃ ১৮১৩ জ্রী চারাপ্রাসর মুখোপাধ্যার ক্ষবৈভনিক পরিদর্শক।

সাধু মহাত্মাদিগের ফটোগ্রাফ্।

নিম লিখিত প্ৰশিদ্ধ সাধু মহাসা দিগের ফটোগ্রাফ্ .(প্ৰতিকৃতি) আমার নিকট নিম্নলিখিত ঠিকানায় শাপ্ত হ্রমা যায়।

্ মহাত্মা তৈলেপী স্বামীর ফটোগ্রাজ্ [কার্ড সাইজ] ।/১০ ভাকরানন্দ স্বামীর ঐ ঐ ৷/১০

শ্রীকৃষ্ণানন্দ স্বামীর (ভারতবর্ষের প্রসিদ্ধ ধর্মবক্তা চির-কুমার শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রগদ পরিব্রালক মহাশয়ের) ফটোগ্রাফ্ (ডার্ড গাইজ্) ।/>>
শ্রীকৃষ্ণানন্দ স্বামীর বড় আকারের কটোগ্রাফ্ ॥/>>

উপর্যক্ত প্রত্যেক ফটোর সহিত এক খানি ভ লমপুর্ণার ছোট ছবি উপহার দেওয়া ঘাইবে। শ্রীরাধিকানাথ বলেয়াপাধ্যায়।

> ধর্মামৃত যন্ত্রালয় ৺ কাশীধাম ১

वृद्धा कर्गनटक विश्वट्रमवात् ।

भगः প্রচারক।

"কুলং পবিত্রং জননী কৃতাথা বস্ত্ররা পুণাবতী, চ তেন। জপার সন্থিং স্থ্যাগরে স্থিন্, লীনং পরে ক্রন্ধণি যদা চেতঃ॥

>8ण काग

" এক এব শুজ্দ্ধশ্যে। নিধনেহপ্যসূথাতি য:। শরীরেণ মমন্নাশং সক্ষমন্ত্রগচ্ছতি॥" শক্রো ১৮১৩ ভাতে মাস

दग मःथा

याख्यवद्या-मः हिला।

(পুৰ্বান্তৱন্তি)

দেশভিকি লোককা চাঁগ্য ব্যক্তিং ভাষাং প্রজিষাং।
নাজামেল কাবিন্ মৃত্ জী নিনাব্যক্তিনালি চা।
নাজামেল কাবিন্ মৃত্ জী কাকা, আচাইন্রাকা। ও পরজী ইইালের ভাষা এবং ককে, বিহা মৃত্ নিহিবন ও
পাত্রমল ইহালিগকে উল্লেখন করিবেনা।

বিপ্রাহি ক্তিয়াসানো নাবভেরা: কলাচন।,
ভাতৃভ্যো: শ্রেমাকাজের কলিং মন্যাণ স্পৃদেশং॥
ভাতৃভ্যো: শ্রেমাকাজের কলিং মন্যাণ স্পৃদেশং॥
ভাতৃভ্যা: কলিংল না। মুহ্য কাল শ্রাপ্ত ইন্তিভিত্র
ভাক্তিকা করিবে। কাহাকেও মন্যাণীড়ক হুঃখ দিবে
মা।

দ্রাত্তক্টি বিশ্মৃত পালান্তা সি সমূৎসংকৎ। আংভিশা হাদিত: সম্যুগ্ নিতামাচারমাচরেৎ॥

উটিছটে মল, মৃত্র ও পাদ প্রকালণ-জল দূরে নিক্ষেপ করিবে। আইতি ও স্মৃতি কথিত আটাররালি নিতঃ নিয়মিত রূপে অমুষ্ঠান করিবে।

গোব্ৰাম্মণানসাল্লানি নাচ্চিটো ন পদা স্পূদেৎ :
ন নিস্পাতাড়নে কুৰ্য্যাৎ হুতং শিষ্যক ভাড়মেৎ "

গো, তাক্ষণ, অমি, ও আন ইহাদিগকৈ অভ্যা-ব্যায় কিহা পদ যাত্তা স্পাৰ্শ কলিবে না । কাহারও নিশা ব। তাড়না কলিবে না। কেবল পুত্ৰ ও শিষ্ট্রের, তাড়না কলিবে।

কর্মণা মনসা বাচা যত্নাকর্মণ সমাচরেছ।

অস্বর্গাং লোকবিদিনীং গর্মাসপ্যাচরেরজু ।

কর্মা, মন ও বাক্য ছারা যত্ন পুর্বক ধর্মাচন্দ্র।

করিবে। যাহাতে স্বর্গ লাভ হয় না, ও যাহাঁ লোকবিক্লজ, তেমন ধর্মের আচরণ করিবে না।

মাতৃপিত্তিথি জাতৃ জামি সম্মন্ধ মাতৃলৈ:।

র্দ্ধ বালাতৃরাচায়্য বৈদ্যসংগ্রিতবাদ্ধবৈ:।

ক্ষিক্ পুলো'হতাপতা ভাষ্যাদাস সনাভিভি:।
বিবাদং বর্জয়িহাতৃ সর্বান্ লোকান্ জনাৎ গৃছী।।

মাতা, পিতা, অতিথি, জাতা, সধ্বা স্ত্রী, সম্মী,
মাজন, র্দ্ধ, বালক, আত্রা, আচাহা, বৈদ্য, আজিত
বাদ্ধব, গ্রিক্, পুরোহিত, পুল্ল, ভার্যা ও সহোদর
ইহাদের সহিত বিবাদ যে গৃহত্ম প্রিবর্জন করের,
ভান সর্বলোক্জ্যী হন।

পথ শিতানসুদ্ধ তান স্নায়াৎ প্রবারিষু। স্নায়ান্দী দেবথাত হল প্রস্তবংশযু । অনোর জলাশয়ে পথ শিতাকৃতি মৃতিকা না উঠাইয়া সান করিবে না। নদী, দেবখাত (পুক্রাদি) হুদ ও ঝরণার জলে সান করিতে হইলে উক্ত নিয়স মানিবার প্রয়োজন নাই।

পরশ্যাসনোদ্যান গৃহ্যানানি বজারে। অগ্রিহোত্রবিহীন্স্য নাম্মৃদ্যাদ্নাপদি॥

আপৎকাল ভিন্ন খন্য স্ময়ে অনুয়তি ব্যতিরেকে অন্যের শ্যা আসন উদ্যান, গৃহ ও যান কলাচ উপ-ভোগ করিবে না। এবং অগ্নিহোত্রবিহীন ব্যক্তির অন্ন বিপত্তি কাল ভিন্ন ভোজন করিবে না।

ক্রমশ:।

জगास्त ।

ু সাশ্চাতঃ বিজ্ঞান দশ্নাদি আমদানী হইবার পুর্মের ভারতবর্ষের হিন্দু সাত্রেই পরলোকে কেবল বিখাদী ছিলেন। ছই একজন চাৰ্লাক-শিষ্য, এবং नाखिक रेनग्रांगिक প्रतालारकत चाखिइ विषया मन्मिशन হইয়া^{*} রথ। বাগজাল বিভাৱ করিয়া নিজ ধৃ**ন্ট**ভা अतः भाषिका (प्रशाहेक । भत्रमु उरकारमत मगारमत ভিত্তি এই পারলোকিক বিশ্বাদের উপরই স্থাপিত ! ছিল—স্বতঃ শিদ্ধির ভায়ে সকলেই অবনত মস্তকে •ইহার অস্থিত্ব স্বীকার করিত। সমাজের শাসন-ব্যবস্থাও এই বিখাদের পরিমাণে নির্ণীত ছিল। সে সরল विश्वारमत निम्बात नाहे.; शाम्हाळा अळाक्रवारमत थानल थानारह हिन्दूत । रकामल धारः मरस्र थाकृष्ठि বক্র এবং উগ্ল হইয়াছে। এখন দকল কথার প্রামাণ প্রাণে চাই; প্রত্যেক আচার ব্যবহারের উপকারিতা এবং উপদোগিতা জনে ২ সকলকেই বুঝাইয়া দিতে হইকে; নতেৎ উচ্ছখল, উদাম শিকিত হিন্দুযুবক लक्षीकरत तम्भ पुराहेश। मित्रन। त्य महाखरातात्क खेल जेवः मक्षित हहेग्रा भागकार्गा हहेर्छ जेवः मभारकत ऋिविऋक वांवरात रहेरा थाजिनिद्वर इहेज, यादात धना दिन्सू गांधु, भाख जवः निर्धा-

নাম্ছিল; গেই মহাভীচি-চিত্র শিক্ষিত হিন্দুৰ দৃষ্টির সম্মুথ হইতে অপ্যারিত করা হইয়াছে। কাণেই আর তেমন বিহয়-বিনম্র ভাব দেখিতে পাওয়া যায় না। এবং আধুনিক শাস্ত্রব্যাথ্যাত। আচার্য্যগণ সমাজ-রক্ষার উদ্দেশে জন্মান্তরের উপর পুন: বিশ্বাস সংস্থাপনের আশায় যুক্তি বিচারের অবতারণা করিতেছেন। পরস্ক প্রক্রাদের বারা আমাদের বুদ্ধি অত্যন্ত বিকৃত হইয়াছে, এখন আর Apriori reasoning (অর্থাৎ অথমেই কারণ নির্দেশ করিয়া কার্য্যফলের অন্তিত্ मिकाल कता यात्र (य युक्ति वाता) कतिरल व्यामारमत विचाम इस ना ; अथन मकल विमस्हे याख्यत बाता 'পরীকা-করিয়া, দেখাইয়া, গুনাইয়া বুঝাইয়া দিলে তবে বিখাপ হইবে। কিন্তু জ্মান্তরের কণা মস্তের মারা পরীক্ষিত এবং নিদ্ধান্তিত হঁওয়া কঠিন প্রতরাং আমাদেরও গ্যেষ বাটার উপার বিখাস করা কটিন হইরা পঢ়িতেছে। সম্প্রতি প্রাণিতত্ত্বের (Biology) এবং মনস্বৈরের (Psychology) অনেক গুলি মৃত্য वारित वातिक्रक बहेशाएक अने (महे सभा बेहेर्सार्यन निष्ठाननिष् পণ্ডিতগণের মধ্যে আবার জন্মান্তর লইয়া বিবাদ বিক্ঞা ভারত্ত হুইয়াছে। ভাষরা দেই সকল জর্কনিচার কিছু ২ অসুবাদ করিয়া পাশ্চাত্য বিজ্ঞান-প্রিয় শিক্ষিত গণকে উপহার দিব বাসন। ক্রিয়াছি। এই প্রবন্ধে ভাহার স্থুল ২ সিদ্ধান্তগুলিই সন্নিৰেশিত र्हेल।

ধর্মালকগণের প্রবঞ্চনার কথা সাত্র। কিন্তু বর্তুমান শারীরতত্ত্বিদ্গণের নিকট শুনা গিয়াছে যে জীব-शांट्यात है, निर्भाव ह जुनाने (Mammalia) , अञ्चल १५१त रुष्टि की नानु मिला भरतत बाता है इहेगा भारक । माइधार्द कुछ २ जीताबु (Spermatosa) माञ्चरध्त (ovum) স্হিত্সংযুক্ত হট্যা জ্বায়ু কোটারে স্নায়ুমুখ অবল্দন कतिशा मछान एष्टि कतिशा थाएक । जहे छुडेहिडे मङीकै। वृहर अगुगा अथना हिन्द्रभतीति कीनरमत रग मकल किया इहेगा शांदक, . श्रुक्ष की तां (sperm) वाता अ रमहे मकल कार्या इस । छहाता आहात करत नियाम ज्यांभ करत, डेहारमत शक्ति आएछ ; अथह आकारत, উচারা ভীরাতিতার গণুণীক্ষণ वाता এতই কুদ্র। অতএন বুঝা গেল যে জরায়ুকটাতে চূর্ণ এবং হরিদার সমানেশার ন্যায় ছই তরল পদার্থের मःशिभारत की तश्र है इहेल हा ; क्यापाच कुहेति महल मञ्जान कीष्ठां । आलिन्नरन भूत्वा १ पति १ हेन । उत्तरे স্থীকার করিতে হউবে যে তঞ্ছ আদি পদার্থ-ভিন নাায় সমুষা কাৰ কেবল মাত্র কড় শক্তি নহে। অবস্থা-विरमरम, श्वारनत थरन जन कृष्यकीन मछानिक, সংব্দিভ এবং সংপুষ্ট হইয়াতে। মন্ত্ৰ্যাকাৰ হইবার পুর্নেই জীবস্তি হইয়াছে। জন বিকাশের পুর্নেই ৰটণীজনিহিত বৃক্ষণজিৱ নায় জীবাণু মাতৃশাল-ख्याहिक तत्राखाकत्क प्रतीष्ठक, भारमल अनः भागमन कतिया (मधा व्यवना निर्मित कि (म की नाकात केंद्रपहि ष्प्रनामि, ष्प्रनेष्ठ, ष्पर्धिस । करिय भयन हेहा सभाक् প্রমাণিত হট্যাড়ে যে বুক্লতা, পাতা, পশু পকী আাদি ভাবের জ্ঞাস সকল জাবিতা পদার্থট জীবাণ্র (Protoplasm) দশ্মিলনে—সমষ্টিতে উৎপন্ন হটয়া थारक; जीरवत महाराजा वाखील ब्यांगी एक इंडरज **८**मथा यात्र ना । ८कवल कंष्रभार्थित भगादात मजीन, मळान, गठल किहु हे छेरलन हरता भगञ्जन । धनः যথন পৃথিবী রাজ্পীয় ফুটন্ত জলপূর্ণ ছিল, তথনও

শেই ছানির প্রচণ্ড উত্তাপের সংখ্যাও স্কীব প্রপ্র বাস করিত ; নে আজ ওকাটী ২ বংসার তইয়া বোল, কত যুগ-মুগান্তর উল্টাইয়া গেল । স্ত্রাং বলিতে পারা যায় যে, যে অপুসর সামগ্রী সারা কীটাণ্ মঞ্জীবিত, তাতা কটি শ্রীর হইতে সম্পূর্ণ স্থানীন, অথবা যে জীবাণুর প্রাণশক্তি সারা মনুষ্টেশ্রের উৎপত্তি তাহা উহার অধীন নতে, অনেকাংশে স্বাধীন।

অতঃপর Heredity পৈত্রিকত্বের কথা বুবিতে হইবে। যে শক্তি দারা পুঁত্র পিছপেতামহের আকার, প্রকৃতি রোগাদি গ্রহণ করিয়া থাকে ভাষাই Heredity ভাগৰা গৈতিকতা পিতা মতের ভানেক শেংস প্রণ আমিরা পাইয়া থাকি। অনেক চিকিইসক বলেন মে ভিন চারি পুরুষ উদ্ধে যে রোগ বা হ<u>্</u>ত প্রকাশিত ছিল তাহাদের আবর্ত্তি প্রথেশীতে অথবা थारशोज-शूर् विकशिष्ठ इटेर्ड (मधा भाग । धिरा, পিতামহ মে গুণ পাইলেন না। মে মকল রোগ ভোগ कतिरलन ना; हर्छ। ९ अवः निमाकात्रत्। बारणेख एमह সকলের অধিকারী হইল। ইহার প্রকৃত কারণ খুঁ জিয়া ভির করা কটিন। কৈবল মাত্র নিকীব পদার্থ সকলের • সংগিতাণে এমনটি হউতে পারে না। তাই বিখ্যাত সনস্তত্ত্বিৎ হার্ট কেন্দ্রার (Herbert spencer বলেন যে "Two factors must be recognised at work during the development of any organism, a combination of internal forces that expend themselves in working out a structure in equilibrium with the forces to which ancestral organisms were exposed;" अर्थांट कीन शक्ति कना भूटेंकि भाक আবশ্রক। প্রথমতঃ জীবাণুর সংমিশ্রণ, দিজীয়তঃ খাহ্যস্তরীণ এমন গুটিকতক শক্তি আবিশাক যাহারা দেহোৎপত্তি করিবার সময়ে পৈতৃকদতাকে সামঞ্জ ভাবে রাথিতে পারে। প্রাচীন পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণ ৪ वित्वित्य वर्षार्यात् [वाध्निक कोवान्त वानि-

লন্] । এবং পৈতিকে সতার সহায়তায় ভীৰস্থি হইয়া খাকে। অভ্যাং বুঝিতে হইবে বে পৈতিকত্মকটি ভিশ্বসাম্প্রী। রাসায়ন শাল্রে আছে গৈ ছুইটি আভি-शक्तिक शनादर्धत मःद्यादेश दय द्याशक्ति वशना दनौतिक माम्यो • छेर्भम हहेद जाहाट छेर्भानक साठि-भनिटकत अन शाकिटलंड शौकिएं भारत । भत्रस्र দেহুক্তপতি ব্যাপারে যে ছই কীবাগুর সন্মিল্নে क्त । शृष्टि हा छ। हारा न मर्था दाया रा रा त्रामाश्रमिक क्रिक्ष हरा हैहात, टकान धाराण माहै। खेडाता नतामधी इंडेटल भारत त्महत्तका अवः मःवर्कतनत জন্ম নানা প্রকারে রাসায়নিক ব্যাপার ঘটিয়া থাকে ৰটে। কাষ্টে বলিতে হইবে জীকাগুগণ পিতৃসতা-বাই। কেননা আবিহ্নত এবং স্ক্রিলন-স্মাদৃত কোন कर्णातकात्नत त्कान घठेना बाता हेहात व्यनायाचा হইতে পারে না এবং জীবলোক ব্যতীত অন্য কোন ঘটনায় এমন আশ্চর্য স্থালনকাণ্ডও - (मशा गांश नाहै। शक्षम श्रुक्षा ८ग छन ना नानहात প্রকাশিত ছেল, ভাহা কোন মহাশক্তির কুপায় ঘঠ বংশধর পাইলেন, যুক্তি কোশলের সারা ইহার ছির সিদ্ধান্ত করা মলুমারুদির আয়াকাণীন নতে। অভএব ্ঞ্থন ইহা এক প্রকার সিদ্ধান্ত বলিয়া স্বীকার করা স্থে ন্য স্থীত্ব এবং গুংল্ব 'এলাইখা - মিশাইয়া একটি লেছ নিঝিত হয়; অথবা গুইটি সকাব, সচল, সজান थागीत कित-चालिकत्व अकि एनस्यष्टि । अतः পৈতৃকত্ব রাদায়নিক শক্তি নহে, ইহা এখন কিছু যাই। ज्यम । त्रांगा गांवे ; - हे । चशुन्त - चगन्छ्छ।

এখন বিখ্যাত ফরাণী পণ্ডিত লা-মার্কের (Lauparck) "অবস্থাবাদ" বিষয়ের একটু আসোচনা আবিশ্যক। "The infinite delicate variations in the world of organic beings are owing to the intense irritability and susceptibility to molecular changes of protoplasm, and the consequent action

of the envoirement upon it. Natural selection evoked some unknown forces vaguely of the nature of will. " অতি সামান্য কারণেও যদি পারমাণ্য ব্যবন্থা সঞ্জালত হইয়া যায় তাহা হইলে জীবাণুগণের 🗷 পরিবত্তন সম্ভবে। পারিপাশিক অবস্থাবশেষের ওণে की वर्षाट्य मानित भाकित (will force) नाम (कान हिवर्षनभीन भक्ति धकाभिक इत्र । मामाना छात्म অথব: শৈত্যে অথবা তড়িৎ শক্তির যৎসামান্য সংশ্ৰ-সারণে পারমাণ্য জগতে একট। বিরাট বিবর্তন ঘটিয়া থাকে। প্রতি পলে ২ বিখের অ্নস্ত পরমাণু বিভারে धानम कार्ण इहेटजरछ। अतः कीवानुभन (Protoplasm) এই পরমাণুর গোলমাল বড়ই অফুভব করিয়া থাকে। छहाटनत अकर्षे छन्छ---शाला की नानु कश्चित हरेंगा পড়ে। পুরেরই প্রতিপন ফরিরাছি যে সৃষ্ট জগভের यांवर कोवरमा करे अरे कोवां पुगरंगत मः स्यांग, मः भिव्यारंग जावः मणाहारत छिश्यम रहेशांरह । की नाम (Protoplasm), আর কিছুই নহে কেবল ("The elementary form of living matter, the basis of life both in animals and plants. ") কীৰস্ত পদাৰ্থেৰ আদি-কারণ –পুরাত্ন বিধাতা জন্ত এবং পাদপ্রাণের • আণিয়ের সৃষ্টি কর।। স্করণে জীবাণ্র পরিবর্মে বুহং প্রাণীর ও পরেবর্ত্তন ভাবশান্তারী । ভার্গত জল বায়ুর, অপব ভানীয় কোন বিশেষ কারণেয়ে প্রাণীর পরিবত্তন হয় ভাষা কেবল রাসায়নিক ক্রিংধফণ্ট गरह, की वाधुवरवत विकात भावत । जनर जहे शांति-পা'ম্ক বিবভ্রের জন্য মান্সিক শক্তির (will power) क्कृ कि बणना भारतभूष्टि हरा । मृतञ्ज निहात, वर्ग-निहात, অসুস্থতি, স্মৃতিশক্তি আদি কেমন ক্রিয়। भातिभाधिक भागर्य मञ्जाटक धर्क छिठ रहेगा शास्त्र, काष्ट्रा मन ४ एवत बारलाठा दिससा । व्यामारतत 👊 कुछ थनस्य मकल कथात विचात विवतन कप्रश्न । আপাতভ: মানিয়া প্রগ্রাইক যে মনের বিকাশ

বাহ্যাবস্থা বাছিয়া লইবার 'গুণে হয় । তাপতেকের महित्या (कान तामार्शन श्राम्थ-मिक क्रग বিকাশ হয় না, পরস্তু পরিমাণ্য সঞ্চালনে কীবাণুগণের निकात कना। धारे कीनावृग्याक मननी बनैः (अध्याय क वितिशा गत्न हस । छेहाता गरिमील, कीवनभातप-रमाधा ্কার্যাপট্; এবং যতদুর পরীক্ষিত হট্যাছে এই সকল किया बद्धा उ हेष्ट्राम्ता इयना। छत्रहे मिक्कीस कता गाइँटि शास्त स्म व्यवहात मङ्गाट कौनानत বিক্ষতি জন্য বৃহ্ৎপ্লাণীর মনের উৎপত্তি ৷ কেননা ইং। ছির সিদ্ধান্ত যে জীবাশুগণের সমষ্টিতে মতুস্যাত্মার रुष्टि—मञूषारमरहत छेटलि । धनः यमि भातमानन পরিবর্তনে জীবাণ্গণ খাঘাত প্রাপ্ত হয় এবং ক্লেশ নাধ করে, ভাষা হটলে সমষ্টি-শক্তিতেও সেই ক্লেশ্য-मुख्य मुक्ताविक कहेत्य। कार्यन वाष्ट्रित थुन मंग्रिटिक আকিবেট। এই কেশাকুভব সমন্তি মতুসালে। এবং মনুদ্য শরীরে সংক্রামিত হটলে, সাহাতে এই সন্ত্রণ বিদু'রত হয় ভাহাবই কনা মনুষ্য (১ফী। করিবে। এই চেটা (Natural selection) হইতেই মনংশক্তির বিশাশ। কেননা পুঁলিয়া প্রকৃতির অনুকৃল অবস্থা। भावेत्म बबेत्लावे ऋषित अतः श्रद्धित श्रयकृत्व बहेत्त । কালেই বলিতে হয় যে কীবাণু মনঃ সম্প্রিতে রুহ্থ व्यानीत हेल्लात निकास।

ইহা এখন প্রশিগম হলল দে নিকীন পদার্থ সংযোগ জন। রাসায়নিক জিয়ার ফল সন্তুলাদেহ এবং সক্ষালো নহে। জীবাণুর সংযালনে এক কলে কিক উপায়ে জীবস্ত্তি। সভরাং পঞ্চে পঞ্চ মিশিলে দে জীবাজা বিলীন হইবে ইহা মতা মিদ্ধান্ত নহে। এবং মেদ্দুন্যাপূর্বশারীর-জিয়া হইতে মনুষ্যের ইচ্চাশক্তি যে স্থাপীন—সভস্ত তাহা প্রমাণ করিতে পারিলে আমাদের বিচাগ্য বিষয়ের সংশিক্ষান্তে অনেকট। অপ্রস্ব হইতে পারিব। সামাদের দেশের স্কোলের বৃদ্ধণ ব্যাড়্ফুকণ ব্যাপার বড়ই বিশ্বাস করিতেন। ইদানীং থিওসফীর,

কল্যাণে ' Mesmerism ' ' Hypnotism ' আদি বৰ্ণার अत्नरक ठरक (प्रथिशार्छन, • अवः एक इ एक इ निर्देश है উহাতে পটু। এই মেণ্মেরিজ্গলার। প্রমাণ ভইয়াতে বে "our normal consciousness as representing only a fragment of the activity going on in our brains. No known form of human consciousness manifests or comes near to manifesting the total self; and consequently, that the empirical or superficial consciousness, with which we habitually identify ourselves, can only 'discover, indirectly and inferentially, by experiment and artifice, the extent of our intellectual being. We know not what fraction of ourselves it may be which till now we have taken for the whole." (Prof. Myers) व्यागारमत अहे माभातग अनः व्यक्तिक क्रिया बाता আমরা যে লেখতে শুনিতে, বুঝিতে পারি, মে অবুভৃতিজ্ঞান সামাদের আছে, তাহা আমাদের মন্ত্রিকাম্বত এক পুর্ণজ্ঞানের অংশ মাত্র। এই মে ধুতি---" म्युकि-मंकि मानी, छ्ण-मास्त्रिनिनाम-रेनचंत (जागी जागारात माधातर्ग अकाशिक वाभिव्छान हेरा शूर्गा-সার কতটুকু খংশ তাহ। বলা যায় না ! খনেক রোগী প্রীকা করিয়া, অনেককে মেস্মেরাইজ করিয়া-ইউরোপের প্রধান ১ প্রক্রিক এই সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছেন। তাঁগারা বলেন বে আমাদের মান্তক্ষের कुरें छित चार्छ : धकि मःकृति अ वर चल्ति প্রকাশিত। বেমন দুইটি মানুষ একঘরে শয়ন করিয়া আছে, একজন গাড় নিম্রাভিভূত এবং অপর জন জাগ্রত ও জিগাশীল। নিদ্রিত বাজির যুম ভাঙ্গিলে সে উঠিয়া, সজাগ বন্ধকে বিভাগ দিবার জন্ম ঘুন্ পাড়াইতে পারে। তেমনি আমাদের সংক্ষিত স্তর বিকশিত এবং প্রফুল্লিত হইতে পারে, এবং অপরটি সংপুটিত হইয়া যায়। উৎকট বোগ শান্তির পরে অনেককে নৃতন মাথুষু হইতে দেখা গিয়াছে 🔒 নৃতন

ধৃতি নৃত্ন, আ'ত সবই নুধন। ফরাসীস পাওিত De Puysegur প্রথম আধুনিক বৈজ্ঞানিক নিয়মে এই আছতভের আলোচনা আরম্ভ করেন। তাঁহার **(मधारमांभ अवः 'छोठात विठारत** ণরাজিত ইইয়া षात्नक विष्ठ जन्द थाहीन পुछि हैशत जालाहना আরম্ভ করিয়াছেন। কেরল উপরোলিখিত তত্ত্ ে প্রকাশিত হ্য নাই। আর একটি মান্সিক অদুত-ব্যাপার উব্যাটিত হট্যাতে। উহার নাম Teleputhy किलिशादि । The direct action of mind upon mind at a distance without the agency of the recognised organs of sense is a fact in Nature. প্রভাবিক মধ্যস্থ বিষয় স্তাতি একটি মনের উপর দূর্ভিত আর একটি মনের ক্রিয়া হইতে দেখা যায়। পরীক্ষা করিয়া দেখান হটরাছে যে একজন , বন্ধুর প্রতিমৃত্তি বিদেশস্থ অন্যবন্ধার চিন্তাসম্মুখে প্রতিভাত করা যায়। পুত্রের মৃত্যুর কিঞ্মাত্রপূর্বের দূরভিতা মাতার যেন চক্ষের সম্মুখে মুভ্যুসন্ত্রণা-চঞ্চল কাতরভামাথান व्यक्तिविश्व इहेग्राष्ट्र। बहे इहे च्राल हे नम् अवः गांडा পরীক্ষার এবং পুত্রের মৃগ্যর কোন সংবাদই জানেন ना । फ्ताभीभ विश्वां भनञ्जविष् ताहेक्द्रे मारहव M. Ribot] মার্কিল প্রোফেদর জেম্দ, [Professor James of Harvard] अनः निलाट्डत ट्याटकमत পিজউইক [Professor Sidgwick of Cambridge] ইহার বিশেষ অত্যক্ষান এবং আলোচন। আরম্ভ করিয়াছেন। ভার পর আরও একটি মানসিক অদুভ ব্যাপার জানা গিয়াছে ৷ উহাকে "Automatic phenomenon of the mind " ৰলে। উহা চিতের নিরবলম্ব এবং স্বায়ন্ত্র कार्यामांक । यादा अकवात हिट्ट चक्षित हरेगाइ. ভাছ। আবার প্রকাশিত হইবে । যাহা মনুষ্ বিশেষের অভাত, কিন্তু বন্ধুর অপব। পরিজন বর্ণের জানা পাকায় প্রাপম 'মসুমাবিশেদের চিত্ত হইতে केन्द्रुष्ठ, इहेशां शाटक । अवः याहा काहात्र काना নাই, কোন বস্তুৰ জানে ,না, বহুদিনের মুঙ 🕏 অঞাত কোন ব্যক্তি জানিত হঠাৎ সনঃশক্তির শারা শেই সকল ব্যাপার বিকশিত হয়। এই তিন প্রকারের (Automatic action) নিরবলম্ব আছে। পদ। र्यहत्व आमत्रा कानिए পातिसाहि त्य কোন পারমাণৰ বিষয় মধ্যস্থ না থাকিলে ক্রিয়ার বিকাশ অসম্ভব । জড় এবং শক্তি অঙ্গাজীভাবে রহিয়াছে। যাহা শক্তি জিয়া, তাহা জড়মগ্রস্থ পার-চালিত এবং প্রস্কৃটিত ক্রিয়া । পরস্ক উপরে মেস-रगतिष्रम्, टिनिलाथि, अटिंगारिक क्रियानित त्य বিবৃতি দিলাম তাহা কোন কড়মধ্য দারা বিকশিত হয় না-উহারা নিরবল্ঘ্রবং প্রতন্ত্র। তাই মনঃশাক্ত अना गरनत , छेलत क्रिया कितरक एक व्यानिस्ट क ভाषाहेर्छ है, हाँ भावेरछ है, यादा है छ। उपगुक्त प তাহাকে নাটাইতৈছে। মানসিক ক্রিয়ার ক্ষুত্তি এড়-শক্তি বারা হয় না। তাই প্রোফেণর মায়াস (Professor Myers] ৰলিভেছেন যে 'The study of cases of this type has gradually convinced me that the least improbable hypothesis lies in the supposition that some influence on the minds of men on earth. is occasionally exercised by the surviving personalities of men departed." এই সকল দেখিয়া ভানিয়া ভাহার ধারণা হইগাছে মে মুত এবং পরলোকগভ वाक्तिंग कौविक जवः श्रुथिवीवागीगानक भागत छेशत বিশেষ ক্রিয়া করিয়া পাকে। নহিলে অন্য কোন উপায়ে এই সকল ব্যাপার বুঝান যায় না। বড় ২ বিজ্ঞ পণ্ডিভে এই সকল পরীকা করিয়া দেখিয়াতেন, ভাঁছারাই এই সৰ নূতৰ তত্ত্ব জগতে ব্যাখ্যা ও প্ৰচারিত করিয়াছেন। ভবেই স্বীকার করিতে হইবে মে জ্লান্ডির আছে, পরলোক ভাচে, এবং জীবাল্ল। অজভু, অপার্থিৰ, षा अ अ अ - गर्नी ती । कात्र । भार्थ-विमात (य क्काटनत भूँ ट्रेलि यागामित चार्छ छाहा दात्र अहे नकत माल्ल्ड আবিষ্ণত ব্যাপার বুঝান এবং নির্দেশ করা যায় না। বিশেষত: ই রাজী তর্ক বিচারে a posteriori বিচার व्यानम् । वर्षाः मभ साम् मातम् । मभावस्या मभ श्राकात भार्पत भर्तीका कतिया बक्छ। भिक्षारक छेभनी उ হ্ভয়া যায় যাহার দারা। পাশ্চাত্য জগতে যত কিছু षानिकात छेष्ट्रानमा इवेशाएक शवा अहे छेपपछि বিধি দারা। এড়ভবের যত্টুকু আমরা জানি, খে সকল শক্তির গতি এবং পরিণতি গণমায় নির্দ্ধারিত করিতে পারি দে দুকল কোন দিরাপ্ত স্বারায় নবা বিঙ্গত যানসিক ব্যাপার বুঝান যায় না। এবুং জন্মান্তর, व्याजा केळाडित विषय शाहीने अविश्व नाका किया গিয়াছেন, ভাছা আহ্ন কবিলে এই সকল ব্যাপারের मन्द्र मामञ्जमा द्या । जन्दानीन एक भाउत्योगात জনাত্র অসীকার করিলে গ্রান্তরও নাই। কারণ ৰত্তমান বিশ্বতত্ত্বে ইহা প্ৰদান দিদ্ধাস্ত য়ে স্বাভাবিক কোন ক্রেয়াই সভন্তে ঘঁটনা নহে, সকল পরিদৃশ্যমান বাপার গুলিই একটা বিরাট বিশ্বপ্রথার (universal system) আংশিক প্রক্রণ মাত্র। স্বতরাং মানসিক **क**हे मकल बााभाव शालाक जकला छाड़िया भिरत हठेत ना, इंडानिशक विশ्र थात महिल भिलाहेगा त्रिमाहेशा व्याहेशा मिटल इटेटव।

যদি স্বীকার কর যে মেদমেরিজম দতা, টেলিপাথি
সভা, ফ্রোরেন্ডায়েন্দ দতা, অটোম্যাটিক ক্রিয়া দতা,
জীবাণু স্থালিঙ্গনে প্রাণিস্প্তি দতা, ভাষা হইলে স্বীকার
করিভেই হইবে যে জন্মান্তর আছে। স্বীকার করিতে
ইইবে শে এই চমৎকার বিরাট মন্ত্রমাজীব ক্রিয়া
জলবুদ্দের নায়ে " ফুটিল আর নিভিল "ব্যাপার
নহে শেইছা পরম্পরাগৃত, নিয়মাদীন এবং স্নাতন।
ভধু ভাহাই নহে, পরলোকগত আআ। ইহলোকের
প্রাণীর উপর কার্য্য করে—ক্রিয়া স্থাপ্তি হয় না।
পরিশেষে আমরা একটা পুরাতন কথার আলোচনা
করিব। ইহাবিখ্যাত, গ্রীক পত্তিত সক্রেতীস(Socrates)

এবং তাহার প্রিয় শিদ্য প্লেটে: [Plato] মহেলান্যের " Doctrine of Reminisconce " অর্থাৎ সংস্কার ঠন। ঠাহারা বলিতেন যে স্বতঃসিদ্ধিস্থান, সংগীত অনুস্থৃতি-শক্তি রূপ এবং মাধুর্ব্যাগুভবরুতি সকল পুরুর জন্ম-সংক্ষাধ্যক । সে কালে লোকে ক্য়ান্তর •সানিত कारमञ्ज डीशामित अर्थणा मकरले व्यवस्य मन्तरक স্বীকার করিয়াছিল। কিন্তু পরে পা**শ্চান্ট্য জগতে** कड़ हु अधातिले घडेल, (लार्कां क्रेनाख़रतत कथा कुलिल । जावः देशाँ एतत कथा । म्लाटल शाँगिशा উড়াইয়া দিল। সম্প্রতি জগদ্বিখ্যাত জীবতত্ত্ব বাদীগণের শিরোমণি প্রধান পণ্ডিক ওয়ালেম্(Professor Wallace) প্লেটোর এই সংস্কার ভত্ত গ্রাহ্ম করিয়াছেন । তিনি त्रानं ता "These sudden increments of facultymathematical, musical, and the like, which were without apparent heriditary cause, indicate some access of energy out side the order of purely terrene evolution, " এই হঠাৎ প্রাপ্ত রভি সকল কোন অপার্থিব শক্তি ছার। উদ্ভূত হট্যা থাকে। কারণ পৈত্রিকত্ব [Heredity] দারা ইহার কারণ নির্দেশ করা যায় না । প্লেটো আরও একটা কথা বলিয়া গিয়াছিলেন, যাহা এড্দিন অনাদৃত ছিল। আবার সভ্য এবং প্রকৃত বলিয়া নির্দ্ধারিত হুইয়াছে[®]। ভাঁহার ব্যাখ্যাত * close connection of psychosis and neurosis or to every observable thought or emotion of man there core quends some change or movement in the material substance of the brate." অর্থাৎ মান্দিক পরিগর্তনাতু্যায়ী সন্তিক্ষের তরল लप्तार्थित পরिवर्छनं इहेशा शांटक । यगन ३ भरनत উন্নতি অথবা অবনতি হইবে সাস্তক্ষের গঠনপ্রণালী তদনুরূপ ক্ষীত অথবা কুঞ্চিত ইইতে থাকিবে। খনা-কথায় বলিতে ইইলে বলিব যে সানসিক শক্তি মস্তিককে পরিচালিত করে। যেমন স্থায়ক ভয় বীণায় সংগীত করিতে অক্ষম, তেয়নি মন বিহুত

মন্ত্রিক লইয়া কার্য্য করিতে অপটু। মন কর্ত্তা, মন্তিক 🖯 ত । হারা পরলোকের জার্থ সদাই চিন্তিত, এবং শাধু 🗷 করণ এবং, খনুছ্ভিনিচয় কথা। 'র্ভরাং মন সাধীন, 'এবং যে নিয়মে জড় জগং পরিচালিত হয়, যে নিয়মে নিজীব প্লাথের উৎপাত, ভিতিও পরিণতি হইয়া খাকে ; সেই নিয়ম প্রণালীতে মন শাসিত এবং সংপুষ্ট হয় ন।। স্কুতরাং এন্টে! মনোময় জগৎ অনুমিত ক্রিয়া মনের স্বাদীন অস্তিই স্বীকার করিলে উপপত্তি-विभिष्ठ दकान दलाव घटने ना। छ। हे 'आधुनिक, हिन्छा-भौल, बिड्य शाक्षांजा भाक्षित्र मेरित २ मरनत कतः আগ্রার অন্তিত্ব স্বীকার কবিতেছেন। এখনও প্রাণী-বিজ্ঞান এবং মনোবিজ্ঞান শৈশবাবস্থায় রহিয়াছে। কত কথা জানিবার, কত 'বষয় বৃত্তিবার, কত ব্যাপার দে—িবার আছে । কিন্তু যতটুকু জান। গিয়াছে ভাষাতেই পরলোকে বিখাদ করা যাইতে পারে।

আমরা এতক্ষণ মাধুনিক প্রাণীতত্ত্বের এবং মনস্ত-ত্ত্বে অনেক ওলি বিষয়ের স্কুল আলোচনা করিলাম। এবং গঙ্টুকু ব্বিষাছি, ভাছাতে ক্ষমান্তরে বিখাগী। हहेत्त रेक्छ। निक जनरिक जननम हहेर कहेरन अभन বেশে হয় নঃ। কেননা বড় ২ বিজ্ঞান-প্রক, মাঁহাদের ক্রণায় পাশ্চাত্র-কগ্র পার্চাল্ড হইতেছে, ভাহার। ছাল্লে ২ পরলোকের অফ্রি স্বীকার করিতেছেন। জেপ্তোল মানের ^{বৰ} Nineteenth century ?' নামক বিলাতী বিখাতে মাদিক পত্রিকায় প্রোফেদর মানার্দ "Science and Future (ite " भौतिक बक अमीर्ग প্রবন্ধ লিখিয়াছেন। ভাঁখার লিখিত অনেক উক্তি আমাদের এই ক্ষুদ্র প্রবান্ধ সন্মিশেত করিয়াছি, এবং ভাঁছারই দিদ্ধান্ত অবল্যন করিয়া ক্রান্তরের আলোচনায় প্রতুত্তীয়াছি। "ধর্ম প্রচানকের " অঙ্গে এত পাশ্চাত্য বাদ বিভণ্ডা, কড়াইভাষ না ; সদি ইহা দৃড় ধরিণা না থাকিত त्म इःताकीत (माइ। हे नाः निर्म निक्कि विमानिर्विक হিন্দু মূবক গণের আসন টলে না ! বাঁছারা প্রকৃত হিন্দু,

সংপ্রধানন্দ্রী। ভাঁহারা পার্ণকে পরিভাগে করিছে চেষ্টা করেন, নরকের ভীষণ চিত্রে চিস্তিত ও ভীক হয়েন। তাঁহার। সামাজিক সকল সদ্তুণ রাশি ভারা সমলফুত। পরস্থ যাঁহাদের চিত্তপাশ্চাতা বিদ্যা প্ৰভায় প্ৰছলিত হইয়াছে, যাঁহারা শিক্ষিত, অন্ধাৰ্মাস শূন্য, স্বাধীনচিত্ত, ভাঁহারা সংস্কৃত বচন প্রমাণ দিলে ভ वृद्धिरन ना। छ।शारमत्र अन्य निलाछी कथा ठाइ।

একনাধ-মহারাজ-চরিত।

চারি শত বংসর পূর্বের, পৈঠন বা প্রতিষ্ঠান-পুরী नायक , क्यांत अक कन-अक्रिकी खांकान बाग कतिएक । ইহার নাম ভাতুদাক। ইনি ভক্তিমান্ ও স্লাচারসম্পন্ন ছিলেন । ইনি খ্যাভ্যাপ্স ছিলেন না, কিন্তু একটা ঘটনাতে অনেকেব কাছে পরিচিত হয়েন। একদ। বিছয় আমের মুদলমান রাজা পার্বরপুর হটটে ৰিঠোবা দেৰের মূর্ত্তিটী উঠাইয়া লইলে পর, ভাতুদাক ভাঁহার স্থিধানে গমন কর্ত অনুময় বিনয় সহ অনেক तुत्राहिया है गृद्धि शनतानयन कत्तक छाहा निर्दिश्व স্থানে স্থাপিত করেন। চ'হার পুদ্র চলপাতি স্ক্রবিঞ্ ও বিফ্ছক ছিলেন। চক্রপাণির প্রক্র স্থানে। নারাধন। केशिके अंकगालित शिक्ता फिल्मगा किन्न अकगालित শৈশব অবস্থায় ইহার স্বৰ্গ গ্রন্থ হওণতে ভাহার আভিপালনের ভার চলপা'গুলে এছণ করিছে হইয়ান ष्टिल । ১৯৭० लकारक [১८४৮ वृत्तीरक] अकराय. পৈটনে জন্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন। একনাথের প্রকৃতি অতি শান্ত ছিল। বাল্যাবস্বাতেই ইহা প্রকাশ পাইয়া-ছিল। বালক সভাবতঃ ক্রীড়াপরভন্ত। কিন্তু একনাথ कथन ७ (थला कतिएकन ना । औं शिक्त (भांभरल (नाध इडेक (यम कि अक क्षात्रात् विस्तार विक्रिक आङ्ग। ভিনি মধ্যে ২ গোদাবরীতীয়ে গমন করত, কোন স্থানে প্রস্তুর খণ্ড স্থাপন করিয়া তাহাকে পুলা করিছেন।

পুষ্পের অভাবে, কুদ্র ২ প্রিস্তর খণ্ড লইয়া তদ্ধারা ভাঁহার স্থাপিত দেশতাকে পুলা করিতেন, এবং সম্পষ্ট भारक माल छ। तान कतिराजन। कथन माधू हारिनागरक অফুকরণ করিয়া কণ্কতা করিতেন, এবং কোন প্রকার বাদ্য মন্ত্রের গভাবে কুলী বাজাইতেন। এই প্রকারে হাঁহার শৈশৰ অবস্থা অভিবাহিত ইইল । इक्षानि विस्तरमा करितनम (म. अकनाभरक दिन्छा-ভাগে কৰাৰ আৰম্ভক : তিনি নিজে এ কাৰ্য্যের ভার গ্রহণ করিলেন। একনাথের পারণাশক্তি এত প্রবল তিল যে একবার মাহা শিক্ষা কবিতেন ভাহা কথন तिखुक इकेंद्रका मा । (ल्या धेष्ट्रण किन्द्र स्वीमत क्रेट्स, 5 ক্লেগ্রাণির উভে। হুইন লে ১.২.র লেন্ড্রিটেক জেল বিং কিটা কলিছে অধায়ন কঁবৰে, এই অভিন্নুহৈ তিনি গছাকে ছং খংসর সম্পেন্ত উপ্রীত্তিকে। পরে এক জন ख्हानालन व्यवालरकत कार्ड तकनावरक शिटिश किलान। এकमान अकाश किल्ह (नम अभागन ,कतिएक লাগিলেন। ভাঁহার অসামান্য বুকির প্রভাবে একনাথ শীঘ্র বেদবিদ্যায় পরিস্মিতি হাত করিলেন। অব্যয়ন-কালে, সাৰকাশ মতে তিনি কথা ও পুরাণ ভাবণ বুতান্ত অবগত হইয়াছিলেন। মাধুপণের জীবনীপাঠ ভাঁহার একটা বিশেষ কার্যা ছিল। তিনি মহাজন मिरांत कार्य। कलांश मचर्क चार्लाठना कतिर्द्धन अवः ভাঁছাদের অসুকরণ করিবার জন্ম মত্নবান্ হইতেন। ব্রঙ্গান লাভ ভাঁহার অন্তঃকরণের একটা প্রবল আকজ্ঞা হইয়া উঠিল। ভিনি তজ্জ্য বড় ২ অধ্যাপক মহাশয়দের সহিত আলাপ কবিভেন, তৎ সহত্যে নানা অকার অর করিতেন এবং জটিল বিষয় সকল বুরা, ইয়া লইতেন। এক ২ গময়ে জিনি এ প্রকার প্রশ্ন করিতেন হয়, অব্যাপক মহাশ্যদের তাহা, মীমাংমা করিংগ দেওয়া কঠিন হইয়া উঠিত। কিন্তু সকল বিসংয়ই তিনি এমন ধীর্তাব একাশ ক্রিডেন সে কেই কথন

ভাঁহার প্রতি অণস্তট হইত না। প্রভাঙ, সকলেই তাঁহার সদ্পুৰের প্রশংসা করিত। তাঁহার 💁 প্রকার -শহিষ্ণুত। ছিল যে, তাঁছার দীম-বয়ক্ষ কোন ব্যক্তি হাঁহান্দে বিদ্রূপ করিলে কিন্তা হাঁহার প্রতি কোন धकात कर्षेत्राका धाराशिकातल जिनि चित ভार থাকিতেন। বয়োরদ্ধ ব্যক্তি গণের প্রতি তিনি ছক্তি প্রকাশ করিতেন। তিনি ভাঁহার পিতৃমেহের একান্ত গর্গত ছিলেন, এবং তুলোর পিভামহীর দেবা করিতেন। মধ্যে ১ ভিনি প্রামের বাঁহিরে কোন নিজ্ন স্থানে ব্যিষ্যাধ্য হড়েব আলোচনা কলিকেন ৷ কি ্উপায়ে ভগবান্তে লাভ করিবেন এছ চেয়ে ইহিচকে

अकरा अक्रमाथ आगष्ठ अक्रेडी भिव-मन्दित विश्वा नेयत मधस्त्र किन्छ। कतिरहाइने, जगन मगर्ग को हे रेनव বাণীটী শুনিতে পাইলেন—"(দ্বগড়ে জনানন প্র নামে এক জন মহাপ্রুষ আছেন, ভাঁহাকে গুরু ক্রপে বরণ করিলে ভোষার অভীষ্ট সিদ্ধ হটবে। এই বাক্য छलि खान्या अकनाथ हमकिया छिटिलन । कापा হইতে এই আনেশ-বাণী আগিল ভাষা ভির করিতে কারিতেন । এই প্রকারে, তিনি অনেক পৌরাণিক পারিলেন সা । পুরাণ পাঠে দৈববাণীর কথা অবগভ ছিলেন । ইহাকে ঈশরের আদেশ ঝলিয়া সির ক্বি-লেন। দৈৰবাণীটা পাছে বিন্মুত হন, এই বিবেচনা করিয়া তাহা লিখিয়া রাখিলেন, এবং বারফার ভাষা উচ্চারণ করিতে লাগিলেন। দেবগড়ে মাইবার জন্ম তিনি উংস্থক হইলেন কিন্তু গৃহ ত্যাগ করা ভাঁহার পক্ষে কম্টকর হুইয়া উঠিল। তীহার পিঞামহ ও পিতা-মহীর রন্ধাবস্থা ও লৈখাশশা এবং ভাঁহার প্রতি ভাঁহন দের স্নেহ ও সমতার বিষয় যত চিন্তা করিছে। লাগি-লোন তও ব্যাকুল ছইয়া উঠিলেন। কিন্তু পাথিব বস্তুব নশ্রতা এবং একাণাটের অতুল আনন্দ পণ্যসম করিয়া ভিনি গৃহ ভাগে করা উচিত বিশেচ্ন। করিলেন। এক দিন প্রভাতে ডিট্রিয়া প্রতিষ্ঠান পুরী ত্যাপ করত

দেবগড় অভিদ্রথ যাত্রা ক্রিলেন । এই সময়ে তাঁহার নায়:ক্রম আঠ বৎসর মাত্র ইইয়াছিল। কেবল এক জন পৌরাণিক ব্যতীত তাঁথার অভিপ্রাপ্ত কেইই অবগত ছিল না। বালকের পক্ষে পদত্রজে গমন করা । সহজ ব্যাপার নহে । একনাথেরও কন্টের এক শেষ ইইয়াছিল। তিনি দিবদে ভ্রমণ করিতেন এবং রাত্তিতে কোন রক্ষের তলে শ্রম করিয়া থাকিতেন। ফল মূল থাইয়া তিনি ক্ষুধা নিবারণ করিতেন। নিজের ক্লেশের প্রতি তিনি দৃষ্টিপাত করিতেন না। জনাদ্দন পদ্বের দর্শন-লাভই ভাঁহার লক্ষ্য ছিল। কত দিনে এবং কি প্রকারে সেই সাধুর দর্শম পাইবেন এই চিন্তাই তাঁহাকে ব্যাকুল করিয়া ভূলিয়াভিল। পৈঠন হইতে দেবগড় ভিন্ন এই পথ ঘতিক্রম করিলেম।

এ দিকে ১ ক্রপাণি ও তাঁহার স্ত্রী একনাথকে দেখিতে না পাইয়া অতিশয় ব্যাকৃল হইলেন। প্রতিশাসী গণকে একনাথের কথা জিল্ডাদা করিলেন, কিন্তু কেইই তাঁহার সম্বন্ধে কোন কথা বলিতে পারিলেন না। যে ২ পণ্ডিত গণের গছে একনাথ গমন করিতেন, তাঁহাদিগকেও জিল্ডাদা করা হইল, কিন্তু কেইই তাঁহার সম্বন্ধে কোন কথা বলিতে পারিলেন না। যে পৌরাণিকের কাছে একনাথ তাঁহার অভিপ্রায় জানাইয়াছিলেন, তিনি স্থানান্তরে গিয়াছিলেন, স্বতরাং একনাথের কোন সংবাদই পাওয়া গেলনা। একনাথ আনম্ম সকলেরই প্রিয় ছিলেন। তাঁহার জন্য সকলেই ব্যাকৃল হইলেন, এবং সকলেই তাঁহার সম্বান লইতে ক্রাগিলেন। গিরিগুহা, নদীতীর, বন ও দেবমন্দির প্রভান থানেই তাঁহার সম্বান পাওয়া, গেল না।

এক নাথ দেবগড়ে উপনীত হইয়া জনার্দন পদ্বের আবাস স্থানের অনুসন্ধান লইলেন। পদ্জী খ্যাত্যাপন ব্যক্তি ছিলেন, স্তরাং তবু লইবা মাত্র সমুদায়

অবগত হটলেন। এ স্থানে। জ্নাদন প্রের কিছু নলা আনশাক। পছজী, দেশস আশালায়ন আসাণ ছিলেন। ট্লিস প্রায়ে # शहात নিশ্স 'ছল। বিদ্যা 👁 বুজার প্রভাবে তিনি মুসলমান রাজার অদীনে উচ্চ ২ भाग भाष्ट्रियाकित्यन। स्मात्म, हिनि त्योलकायात्मत ध्यमान क्षाटकत পरि विविक हहेगाहित्यन । श्रमुकीत भातीतिक वस अवः भाष्म । विभक्त । जिल অনেক মুদ্ধে জয়লাভ করিয়াছিলেন। গুছাতে ধীরতা ও বীরতা বিরাল করিত। আবার ভিনে এক জন সাধক ছিলেন। প্রতি রহস্পতিশারে ডি'ন দতাতেয়ের 🕆 পূজায় ব্যাপুত পাকিতেন। স্কাতরাং দেব দিব ভিনি বিষয় ক।র্য্য হইতে অবসর লইতেন, এবং ওঁছোর স্থানের জন্য ताकारमध्य मगुर्वाश कार्यारलशहे रुम भिन नम् धाकिछ । खनाना भिट्म, विषय कार्या भगाषात श्व, छिनि मन्त्रा পুকা ও শগ্ন আলোচনার সময় অভিবাহিত কলিভেন ৷ তিনি যোগের প্রভাবে দতাত্রেয়ের যাক্ষাৎকার লাভ कतिगाहित्वन ।

একনাথ, জনার্দ্ধনপদ্বের বাটীর সমক্ষে উপস্থিত হইয়া এক জন ভ্রের জারা ঠাহার আগমন বাজা পত্ত্বীকে জানাইলেন।এই মংবাদ পাইয়া জনার্দ্ধন পত্ত্ব উঠিয়া আসিয়া বাহিরের দিকে দৃষ্টিপাত করিলেন। দেবিলেন ব্রহ্মচারীর বেশ্বারী একটা বালক জারের এক পার্দ্ধে দিশ্রেয়ান। একনাপের দৃষ্টি জনার্দ্ধন পত্ত্বের উপর নিপত্তিত হইল। দেখিবা মাত্রে তিনি বাটার ভিত্রে প্রবেশ করিয়া পত্ত্তীর চরণ তলে পত্তিত হইলেন। জনান্দ্ধি পত্ত্বি আগমনের কারণ জিল্লাম। করিলেন। জনান্দ্ধি পত্ত্বের আগমনের কারণ জিল্লাম। করিলেন। জনান্দ্ধি পত্তের ভেজঃপুঞ্জ শরীর এবং সৌম্য ভাব

ज्ञास्त्रीक, शहि, शि, त्रणश्रुत्तर अक्टी रहेनन आहि।

[†] দতাবোর—ইনি থবি মুনির পুত্র এবং ভগৰানের অবভার বলিয়া। প্রসিদ্ধান দাকিশাতো অভি সমার্থে ই হার পুজা হয়। ই হার জন্মদিনে মতোৎসব হইয়া গাকে।

Cদ্থিয়া এবং তাঁছার মি<mark>টি বাক্য আ</mark>ৰণ করিয়া এক-নাণ পরম আনন্দ লাভ ক্রিলেন এবং নির্ভয়ে তাঁহার মনের অভিপ্রায় প্রকাশ করিলেন। তিনি ব্লিলেন যে, माञ्ज वशायन खभाकान लाख अतः श्रेश्तमम् रनत मना ভিনি गाकूल इडेशां छन। तम रेननभी अनिशाहित्सन ভাছার উল্থে করিয়া বাললেন যে, দেবভার আদেশ্বেই ভিনি এখানে আসমন কলিয়াছেন। একনাথের কথা ত্বলৈ শুনিয়া জনাদ্দিন পছ পরিতৃপ্ত হইলেন। জনাদ্দিন পছ একনাথকে শক্তি অধায়ন করাইতে লাগিলেন। একনাথ প্রাচীন কালের রীতি অমুসারে গুরুদেব। कतिएक लाशिएलन ! अकनारथन शाहादिक कार्या अहै। রূপ ছিল। দিনি খড়ি প্রজ্যানে উঠিয়া মুখ প্রকাশন कत्र और हात अक (मरबत ग्रंट अ (मर्ने ब्रंट फेड्स), करण পরিফার করিতেন। তদনস্তর জনাদনি পদ্ধের সেবা করিতেন। প্রথমে ভাঁহার মুখ প্রকালখের আয়োজন করিতেন, পরে সানের জনা জল প্রস্তুত করিয়া রাখি-তেন। তদনন্তর পূঞা আয়োজন করিছেন। বেল পত্র, जूनभी भज अनः नाना श्रकात कून भिटक हशन कतिश। আনিতেন, এবং পূজার ঘরে সমুদায় সাজ। ইয়া রাপিতেন। ধুপ, দীপ, চন্দন প্রভৃতিও প্রস্তুত করিতেন । স্নানের। পর জনার্দ্রন পদ্ধ যে বস্ত্র পরিত্যাগ করিতেন একনাথ তাহা পৌত করিতেন। জনাদান পত্র গৃহেতেই থাকুন किया ताल कार्या भगन कक्रम, (५ गल (३) पाकून किया त्रगरकर् हे भगन कद्भन, जाकनाय छ। यात नाम डीहात অমুগামী হইডেন, এবং ঘণাদাদা তাঁহার সহায়তা করিতেন। একনাথের শরীর স্বল ছিল্ স্তরঃং তিনি পরিশ্রম করিন্ডে কাতর হইতেন না। একনাথের প্রতি জনাদ্নপদ্ধস্থাই হটলেন। তিনি ঠাহাকে যারের সহিত নান। শাস্ত্র গণ্যান করাইতে লাগিলেন। এক-नार्यत वृक्षिशाचार (मणिया सनामान म हमएक्र ষ্টলেন ৷ বেদ উপনিষদ্ ঝাদি প্রাচীন ধশা গ্রন্থ ব্যতীত একনাথ অমৃত * অমুভব ও জ্ঞানেশ্রী অধায়ন করি-रमन । अकनाथ जभागन चिमग्र मचरिक्त नाना ध्यकात

প্রায় করিতেন, এবং জনাদ্দি পছের কাছে 'সহতর পাইয়া পর্ম আনন্দ লাভ করিতেন।

क्षिश्रभाः ।

কামরপ কামাখ্যা যাতা।

(त्योन मः आत भत)

ভিলোকভারিলী মা দাকাগলীন ীঠিমাল' । অতি
ভ্রম্পের শার্মান্স চইলেও সুর্বান গুড়ানু-বন্কি নিশ্লশিপরাদিতে ভিতি বশতঃ ক্রমশাঃ ক্রন সমাগমের
বিরলতা হইল, ভঙ্মত সিম্বন্ধান সম্থ লোকসমূহের
ভাবিনিত হইয়া উঠিয়াছিল । কোন পীঠ কোথায়
আছে, ভাহা শাস্তেই নিষম্ন থাকিল; লোকে পুসুকে
পড়িতে লাগিল, শুনিতে লাগিল, বল্লিতে লাগিল,
কিন্তু সুর্মান হইয়া উঠিল আবাব ক্রম্মান্ত প্রায় হইয়া উঠিল আবাব ক্রম্মান্ত লাগিলেন,ভ্রমান্ত মহাক্রত্ব মহাস্থান জলাতে লাগিলেন,ভ্রমান্ত ক্রমান্ত হিল্ল আবাব ক্রম্মান্ত লাগিলেন,ভ্রমান্ত ক্রমান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত

কুচবিহারের পুরবভন পরম ভক্ত শুক্লধ্বণ মহারাক: **जेञ्चमरभा भार**शत शक्क्षशीर्कत चाँछ महिमा १५१४ कविश्व। দেখিলেন পীঠান্বান কাঁহারট রাজ্যের কোননা কোন শৈলশিখরে সংস্থিত। কিন্তু সহস্য ভাষা নির্মণণ করা মুক্টিন ইইলেভ ভক্তের মন মানিল না, শেলাশগর-वामिनी भारक (भागतात रूस ५८ छ। १ का विश्वा উঠিল, কোথায় কোন্দিকে পমন করিলে মনোরঘ পুর্ণ হইবে ভক্ত মহাবালা ভাষার অনেক সন্ধান এ বিচার করিয়া যাত্র। করিলেন। বনে ২ পকতে পকতে পরিভাষণ করিয়া শৈলশিখনবাদী কন याद्यात महत्र (प्रशा द्या, जावादक है बाकूल कत्य गारात छन्न र मन्नान किस्लामा करनन, (क्ट्टे किन्ह्य তাঁহার মনের মত ভত্র দানে সমর্থ হইল ন।। কেসল क्छिश्रा (लाटक वालस, (य थाग्रता (ए। कागाथा। वा কামরূপ কিছ্ই জানি না, তবে আমাদের যথন কোন विभन् विज्ञाहे, भीषा यानि रश उथन के जन्म बुजरहे छेकभीर्घ रेमनाभिधात या अकृषि कृता स्थान निया ওপ্ত গঙ্গার আয়ে ধীরে ২ জলধার। ধাবাহিত হইয়া।

^{*} দকিশাভোর ক্লিগাতি সাধু জ্ঞান দেব প্রণীত।

ষাইতেছে, ঐত্যানে গিয়া আমরা, প্রদ্ধা ও ভক্তিসহ शृका '9 र्यनमाणि कति(ल आभारतित मगछ भरनातथ দিদ্ধ হয়। খামরা জানি না, যদি তোমার দেবত। ঐ খানেই থাকেন। মাতৃহারা শিশুর মন উচাটিত হইল, क्रमाक्ष विवयं ना कतिहा तोका छतात्वार अवदस्भी र्य ভালেত্ৰ কৰিলেন। নিকিন্ত স্থানে স্তৰ্শতিল নিমাল জল-वाशी , कि मा मारा या अध्यवन दर्ग विद्या ना है ति मा माज, ं किन्ने लार्थास्य किन्हें, विकादन के ट्रांस भाविद्यान हो, সনের পিণাস: মিটিল না, কোভ ও ব্যাকুলভা জ্নয়কে ব্যাথিত করিল। মাকে পেখিলেও লাধ বুখি। পুলিন না ভাৰিয়া পথ-পরিশ্রান্ত মহাবাছা কাণিয়া বালিনেন্ भा। (मगा कि शाहित मा, कालाता अहि परा कि हहे। व না। বিজন বনাকীৰ্ণ প্ৰৱত্ত হোৱা ক্ৰেম্থী-রূপ চিনিতে না পারিয়া পাণলের মন্ত রাজা কভাক <u>कार्वित्नेन, श्रीतरभास विलालन, मा। यनि अहेके (स्थापत</u> অধিষ্ঠান-ক্ষেত্র হয়, ভৱে জামি এই খানে একটি মলিল নির্মাণ কলিমা দিব। একটি দামান্য সাক্ষতে বিশেষ রূপ কোন চিক্ত করিয়া স্থ্যারায় বিজেগ ভরিয়া বলিলেন, মা। এইই যদি ভোমার মুদ্রাপীঠ হল, তবে আমি ব্ৰহ্মপুল্লে মান করিছে গেলে, এই লাক্ডভটী থেন আমার কাডে উপস্থিত হয়। নতুবা ব্যালাম মান मार्मत की नरमत आभा भिन्निमा। अहे बालसा (७मि স্থানার্থ ওক্ষপুত্রতটে অবরোহন কবিলেন।

মায়ের মায়া কে বুঝিবে। হ্হ ন্দান্ত্রপান্ত্রিয়া মায়ের দয়াৰ কি সীলা ভাতে। এই ন্দা গুপু প্রস্তুম অপ্রকৃতি থাকিয়াও প্রের কাছির কাছির কিশেষ অপ্রকৃতি থাকিছে পারিলেন না। কলিবে শক্তির কিশেষ প্রকাশ হটবে না, উহাঁ যিকান্ত থাকিলেও অনুগত ভকের কথা মা ওড়াইতে পারিলেন না। প্রাণ ভরিয়া মা বলিয়া ভাকিবে না যে পায়াণ ভেল করিয়া জীবন্ত মন্তায় ভেলেকে হালর করিয়া কোনে নায়ের দ্যার কটিয়া থাকেন। মহারাজার কাছির ফলনে মায়ের দ্যার ক্রিকেটেন, এমন সময়ে একটি দারুপত্ত মায়ের শক্তি প্রবাহিত কানে। ভক্তি প্রায়েক প্রকৃতি কার্লিয়েক বিজেভেন, এমন সময়ে একটি দারুপত্ত জলাকোর কালি হ বাজার কবালের আদিয়া ভিতিল। মায়ের মায়ায়ন্ত্রবিষ্ণা রাজা ভপ্নে মনো-নিবেশ কর্মান্ত্রিস্থানের কথা একট্ট বিশ্বুত ভইয়ান

জল গ্রহণ করিতে গেলেন, সরেগে কাঠ থানি আবার হাতে আসিল, মায়ামুগ্ন মহারাজা আবার বিরক্ত হইয়া (यः निया मिर्लग । एक गारक छूलिशाएन जीलशा गा কি ভক্তকে ভুলিতে পারেন। ভাবার জল লইবার সময় कार्ठ थानि कानात आहा छिठिन, नातथात अहे त्रश (एथिशा ताकात भाषात (पात जानित, निक लार्थिक यात्र इकेत : (मधिएलन, छ। हाटके विक्छ (महे भाक्र খুঞ্ আহলাণ কণয় নাচিয়া উঠিল, সা দয়া করিয়া-एक कानिया क्या को तम भार्थक (ताम कतिसम अनर বু'কবোৰ এ স্থানেই কামরূপ কাম,খা গাঁঠ : সাবার ্বং ে ১৯৯৮ লেখা পিন সেই কানেই পুলা পাছি तकना कि करिया राष्ट्रा रिक्लीवरात मस्बद्ध माध मिलेकि-(लग । रा दा इन किली र अवस दोका (मुट्टे डिम्प्स क्रम्न আনি,সমাকীশ শৈল্পিলে বিভাম করিলেন । মায়ের কোলে ছেলে যেগানে দেগানে শুইয়া থাকিতে পারে। "ভার খাবার কি ১৪ লাবনা মার লা জিলোক-कारिली "। शाक राष्ट्र भग २३ ६३ (लग, भारत द्यारल গুটলেন, মাধের কোলে গুমটিলেন। তাই বড় সাধ ক্রিয়া প্রিব্রাক্তের স্থাতে ও ধিথিত ইট্যাতে—

> শীলাপেশ বাংলে গ্রেন্ড, মাংসের জালে মিশাইছে, সংগ্রেণ্ড জালাল, আন্দর্গ আলিশে দীলেতাবিংশ । ।

কগড়ের মাঞ্চাতে কাজা খুমাইলেন বটে, কিন্তু डॉर्डार जिल्ला-मधापिटक आखार किरिया मा टेडल्स्स्मारी ্সংগ্ৰ দৰ্শন দিলেন। বাল্লেন ৰংস। কোমার ভিত্তিক আমি অব্যক্ত রূপিণা 🛊 ইয়াও ব্যক্ত হুইলাম । ভোমার প্রতিজ্ঞাসুরূপ আমার সোনার মন্দির প্রস্তুত করিণা লাও। মহারাজা মায়ের বাণী শুনিয়া কুতার্থ ও চমকিত **इडे**रलन; नलिरलन, भा ! ृज्ज यन चामि दकाथाय भारेत (म, (कतल कांक्ट्रान (कांमात मन्द्रान निर्द्यान कतिय। यनि वार्तिम इस करन धान्तर्भ अस्मित নিমাণ করি ও প্রতি 🚙 ধরের উপর কিঞিৎ ২ কাঞ্জন দান করি। ভক্তের কথায় সা বিদ্যাধৎ হাঁসিয়া তথাস্ত্রলিয়া অন্তহিত হইলেন ৷ রাজার নিজা ভাপিল, চির্দিনের জন্য রাকার মুমের যোর ভাপিয়া মা " সংখ্য দেখা দিয়া গেল। চৈত্ত জালিয়া, চৈত্ত্যু, क्रिशी (काशाय लूका (ला ?)। मारमत चारत्र स्था का आ অপুর্বাযদির নির্মাণ করাইলেন। এখনও সেই মন্দির বিদ্যমান আছে। এরপ হুগঠিত মন্দির আসাম অঞ্লে गात (काषा व गारे।

দামরা গভীর শোকের সহিত জানাইতেছি. ভারতবর্ষীয় আর্যাধর্মপ্রানিণী মভার সভা ৬ কাশী-নিবাদী ভোঠিপ্রবর বাবু গোক্লচন্দ অকারল কাল-क्विलिक इहेग्राट्म । डीहात ज्ञाठा विधार्क हिन्दी कवि বাবু হরিশ্চন্ত্রও এই বয়দেই দেহত্যাগ করিয়াছিলেন। তাঁহার পিতা পিতামহাদিরাও ঐ বয়দে গতাম হইয়া-CEA । वःभाभत्रव्यातांग्छ निर्किष्ठे प्रकृत्रमारशत गीम्। **८क्टरे अ**क्तिम कतिए शास्त्रन नारे। अधिन धिन-প্রীয়দী মহামায়ার অন্তুত লীল। কে বুঝিবে ? ভাঁহার অনিক্রচনীয় ব্যবস্থা উল্লিজন করিবার সামর্থ্য আমাদের কোণায় ? বাবু গোকুল চল নানা গুণে বিভূষিত ছিলেন। তাঁহার মত অমায়িক, বৈষ্ণব দক্ষে প্রম-নিষ্ঠাৰান্, বিদ্যাসুশীলনে বিশেষ অনুরাগী, ধর্মণভা সমিতিতে উৎদাহী 'ব্যক্তি এখানকার স্ত্রাস্ত ধনী মহাজনদের ভিতরে প্রায়ই দেখিতে পাওয়া যায় না। মহাত্মা নিজ পুণ্যবলে ৮ কাশীলাভ कतिशाष्ट्रत । एखताः डांशत कता जगरदंगमील কামনা করিবার আর কিছুই নাই। সর্ববিহংখন।শিনী মা অন্তর্পূর্ণা ভাঁহার অশাস্ত পরিবারে শাস্তি আনিয়া দিউন, বিপদের অকূল সাগরে কূল দেখাইয়া দিউন. हेराहे खार्थना।

ধর্ম প্রচারকের পাঠক বর্গ বোধ হয় অবগত আছেন,
দিল্লীতে বিগত বারের ভারত ধর্ম গুলের অধিবেশনে
পরিব্রাক্তক জ্রীক্ষানন্দ শংস্কৃত বিদ্যালয় স্থাপনের
এক প্রস্তাব করেন। মহামওলে উক্ত প্রস্তাব পরিগৃহীত
ইইয়াছিল। উক্ত প্রস্তাবাসুসারে একানে অর্থসঙ্গ হের
চেন্টা ইইতেছে দেখিয়া আমরা আশান্তিত ইইয়াছি।
সম্পাদক দীনদায়াল আমাদিগকে সন্থাদ দিয়াগছন যে
লখ্নোএর মুন্দি নব্লকিশোর এক লক্ষ্য টাকা ও
কপুর থলার দেওয়ান নিধুরাদান বাহাত্বর পঁচিশ

হাজার টাকা উক্ত সাধু কার্য্যের জন্য দান করিছে প্রতিশ্রুত হইয়াছেন। আশা করি উক্ত মহাত্মাদ্র নিজ অঙ্গীকার কার্য্যে পরিণ্ড করিয়া আমাদিগকে স্থীকরিবেন।

বেদবিদ্যালয়ের আর ব্যয় আবণ মাদ ১৯৯৮। মৃষ্টিভিক্ষা।

শ্ৰীকৃষ্ণনাথ মুখোপাধ্যায় কুগুলা বীর্ভুম	रन्
"ভুবন মোহন সেন আমিনপুর ঢাকা	210/20
"রাখালদাস সেনগুপ্ত জামালপুর	810
" भूर्विष्य गुर्थाभाषाम वर्षमान	31
"কলীপ্ৰসম চক্ৰবৰ্তী গোয়ালপাড়া - *	2
" অক্ষচন্দ্ৰ আচাৰ্য্য কুমড়াবাদ গ্ৰুমকা -	٥,٠
"মধুদ্দন দাস গোয়ালপড়ো"	F 10
৺ কাশীধামের মাদ জ্যৈষ্ঠ	3940
"রজনীচন্দ্র সিংহ চুণ্ট। ত্রিপুরা	তা ৯
" ঈশানচন্দ্র রায় সরারচর স্থামনগিংহ	8\
[*] জয়চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় বরিশাল	20/
"অতুল বাবু ফুলবন মূরশিদাবাদ	٠,٠
"রামদাস বল্যোপাগ্যায় শিল্চর	د 40
" ছুর্বাপ্রমাদ বাব্ ছাপরা	b-1
" কেশবচন্দ্র ঘোষ ধরজামতৈল সাহাজাদপুর	261
* মতিলাল ভাছড়িটটালাবাগান কলিকাতা	41
" বিখেমর সেন গুপ্ত পটুয়াখাণী বাথরগঞ্জ	& ,
"ভারতচন্দ্র চক্রবর্তী ধানঘড়া রায়গঞ্জ	20
" দীননাথ পাত্র ্রামপুরহাট	000
" ভোলানাথ মুখোপাধ্যায় সাত্ত্রা হাওড়া	d.
"লালাশীতলপ্রমাদ ছাপরা	e,
''রমনীমোহন রফু দিনাজপুর	9110
''লগবন্ত গুড়ামগঞ্	810/0

সিখলা বালুগঞ্জ বাজার মা জ্রীঠপেন্তচক্র চা ক্রি ছোট দিমলা ঐ	होशांबलश 🚶		0110°	"दननी माध्य बटन्माा श्रीभाग्न मिप्णे कि त्यक्र तिम के	27
্র ছোট। শ্বল। এ শ্রী হারক ব্রহ্ম সেন গুপ্ত	· ·		300/0		1
• এক কালীন				" উমেশ্চপ্র চটোপাধার সেং প্রেম সিম্পা)0,
			•	মাদিক বৃত্তি	
बिभागाहत्व मृत्याणाधारा		াতা	21	শ্রীযুক্ত কাকিনার মহারাজা দত্ত	
"বি <u>শিনু</u> বিহারি রায় বঁ	~		40	ু'লবঙ্গজন্দরীর্ভি মাধ মাধাঢ়	*
' त्राभी श्रमने तीक ताकर			3/	'মহারাজা হারভাঙ্গা মাহ জুলাই : ২০	
" भारतिलाल वर्षेन्छाभाषाः।			İ	'' वीरतभत गुरभाषामाम करतन आशिष	Ì
(किः जाशिष गिम	न।	31	সি লামহে আমাড় ও আবেণ	`
' হরিধন মুখোপধ্যোয় কঃ	मः ८७ः ज	B	3/	" সভীশচন্দ্র রায় ফ, ইহাল আপিষ মাহ ঐ ঐ ॥	0
' गित्रीखनाथ म्र्थाणाधाय	ঐ	4	3/	বাৎসরিক বৃত্তি আবণ ১২৯৮ হইতে।	
বৈশিকাচরূপ মুখোপাধ্যায়	হোম আপিষ	ঐ	201	শ্রীধীরকৃষ্ণ দরকার প্রাইভেট দেকরেটরিয়েট দিমলা	e,
পরমেশ্ব রায়	à	ঐ	21	"मन्मर्थ नाथ द्वांष 💸 👑	,
' অঘোর নাথ মুখোপাধ্যায়		À	21		کرد
গঙ্গাধর দত্ত	A P	ঠ	31		` در
রামচন্দ্র মিত্র	ঐ	À	3/		H ·
হরিদাস-গুপ্ত	ত্র	ঐ	31		ຍຸ
केर शख्द कृष्ण गिक भिलिहे	त का का छे की म	B	3/		~\
'নগেজুনাণ মজুমদার স্থানি	क्षेत्र कशिमनातम	Ā	34	ख्रमाथ्रह	
অক্ষাক্ষার সরকার প্রাইটে	ভেট যেকরেটরিদ	िक	31	गृष्टि ভিকা ১৭৮ <i>५०</i> / व्याठाशागरगत मक्तिमा ४२	110
হেমচন্দ্র সরকার •	<u>A</u>	Š	عر	এক কাণীন ৯০০০ ছাত্র বুত্তি ২	'n
'গিরিশচন্দ্র রায়	À	ঐ	ی	মাণিক বৃতি ৪০॥● ছাঝাবাস ৬৮৶	; 0
াপাখানা ,	<u>ā</u>	ঐ	210	বাৎসারিক বৃত্তি ১৩॥৩ মাগুল ধরচ ।৶	>0
থ্ৰী ভৈরব প্রসাদ সিংহ	ক্র	ঐ	31	তং৮। পুচরা ব্যয় ১০১	٥ د
काली भन रचा व	<u>ā</u>	d)	31	নিম্নশ্রেণীর কর্মচারি ৩০।	Jo
'ভূতনাথ ছোষ	À .	d)	31	336403	, •
' (ञ्नानाथ ठरहोशामा। श		ঐ	31	বাকী ভহণিল মজুদ—————- ২০১৷	>•
'ওমরাও সিংহ	ğ	D	21	এ প্রাপ্তারা প্রাপান্যায়	
' বৈদ্যনাথ রায় চৌধুরী কা	·	ঐ	3)	(ल्थांश्रक्षा	



"वर्षी विश्व जगतः प्रतिष्ठा, वर्षोण पापं नुद्रति, वर्षो सर्वे प्रतिष्ठित. तकाहका परमं वदित ॥ " स्रतिः

কাশী-ভারতবর্ষীয় আর্যা ধর্মা প্রচারিণী সভা হইতে প্রকাশিত।

		श्रुहि ।				
বিষয়		2.01			•	781
ৰাজ্যবন্ধ্যসংহিতা	,	(मञ्लोकक)	•••	•••		9)
মারা মমভা		(अंग्लिशिक)	•••	•••	·	७३
সূপ		(শীয়ক পাঁচকড়ি বন্দোগাধায়)	***	•••		96
কামরণ কামাথ্যা		(পরিবাজক জীক্ষানম পামী)	•••	. • •		9 •
यूगा गखरगान		(কুমার প্রভাগনারারণ রায়)	•••	• •••		9.9
ভা বাহন		(मण्णामक)	•••	***		98
		•				

,১৪শ জাগ। ৬ঠ সংখ্যা। আখিন মাদ, শং ১৮১৩।

বারাণদী, ধন্মায়ত বস্তালয়ে মৃদ্রিত।



XXX

स्कृतभाक्षाः। (मज्जः)

দেব দেবীর স্থান ২ জুব এই পুরুক সংগৃহীত হুইনাছে। লিব ছগাঁ জগজাঞী প্রামাণ গলা বিষ্ণু, স্থা গণগতি আদির মনোছন গুণ রাশি পাঠ কবিশে পাবাৰ প্রাণেও ভক্তিন বীল জনুবিভ হয়। প্রায়া গুন-পাঠ মনকে পবিত্র করে, শ্বণগের কালি কুলি মুছাইরা পরিদ্ধান কর রে কবিরা দেবু। সিদ্ধা মহাত্রাগণ প্রোমাজ্সিক জলরে প্রমণ্ডলুর যে গুর-গগো গাঁল কালিখুছেন, ভাহা পাঠ করিছে ২ জ্বলে যে প্রদাণ বর্ষিরা দ্বে, ভাহা ভার্ক মাত্রেই অবগত আছেন। সুহরং ইহার গরিচর জনবিশ্বক।

हछी ७ भरक है गीछ।।

(यज्ञ)

চণ্ডী ও গীন্তা পাঠে এছিক ও পারলৌকিক অশেষ ফল লাভ হয়।
ইহা কিন্দু মালেই অবগত আছেন। ইহার অর্থ জ্ঞান অশেকা পাঠের
ফুলই অফিল। বে গৃহে চণ্ডী বা গীতা প্রাণ্ড পঠিত হয়, সে গৃহে
আধি বাধি বিগদাদির শান্তি হয়—আধানিক আধিলৈবিক আধিলিক উপদ্রব রাশি তিরোহিত হইমা যায়। যে স্থান পর্যান্ত চণ্ডী
বা নীন্তার পঠিবনি উদ্দীবিক হইতে থাকে যে স্থানের অগ্রাশ পরিত্র
হরু ম্র্ডিমতী পনিব্রতার শক্তি শে স্থান অধিকার কনিরা গাকে স্কুরাং
প্রেলেক গৃহে একখানি চণ্ডী ও গীতা গাকা আবশুক। অর্থ অপেকা
পাঠেব ফল যথন কহিক তথন পাঠের গুলভার প্রতি টোলিকভার
আতি বিশক্ষণ লক্ষ্য রাখা উচিত। মৌলিক পাঠ গাবিতাগ্য করিয়া
সংগৃহীত। শীঘ্রই প্রকাশিত চইবে।

বালিপ্ত বা ক্ষণেশে করিক পাঠ ক্ষণজ্বন করিলে কোন ক্ষাই হর না। বঙ্গণেশ বজ গুলি চপুনি প্রচলিত আছে, ইহাকের মধ্যে আনেক স্থুলে প্রশিপ্ত পাঠ সরিবিট ইইয়াছে। পুত্তকগুলির স্থলে স্থলে প্রণে বালিপ্ত পাঠ সরিবিট ইইয়াছে। পুত্তকগুলির স্থলে স্থলে প্রণে বালিক্ষ প্রিল্ড সালার বালের বালিক্ষ পুর্বাক ৮ কাশীয় পণ্ডিত মণ্ডলীর সাহাযো পাঠের মীলিক্ষার প্রতিভ ক্ষভার পেনি নিশেষ লক্ষা রাথিয়া মাকণ্ডের চণ্ডী প্রকাশিত কনিলে বংশ লোপ হয়। ক্ষানাং বাহাতে কিছু মান অগুরু না হয়, সে নিহরে আমবা বিশেষ সকর্কণা অবলয়ন কনিয়াছি। আমাদের লক্ষানিজ চণ্ডীতে আর একট্ট নুক্ষান্ত আছে। যে সমস্ত ক্রম ও পদ্ধতির সহিত চণ্ডী পাঠ করিলে কল লাভ হর, বঙ্গণেশের কোন চণ্ডীতেই ভাহা নাই। সেই সমস্ত ক্রম ও পদ্ধতি আমবা চণ্ডীতে সরিবিট করিয়াছি। পুত্তক শীঘ্রই প্রকাশিত হইবেল প্রেট গীতাও মুদ্রিত হইবেছে।

্র মুদ্রণ-কার্য। বড় ২ নুভ্ন অকরে স্কাকে ক্রণে সম্পন্ন হটা ছকে। বীধাই কার্যাও ইন্দর হইবে; পুত্রক সম্পূর্ণমুদ্রিভ হটালে মূল্য নিগারিছ করিয়া আস্বা প্রাহক্ষণকে জীনাটবঃ।

একিফ-পুশাঞ্জলি।

প্রিরাজক প্রীক্ষানন্দ স্থামীর হে সমস্ত উচ্চ্যেত্র ধর্ম ও স্থাপ বিষয়ক প্রাবস্থ ধর্মপ্রতারকে প্রাকাশিক চ্ইরাছে, ভাষাই প্রকাশতি সংগৃহীত। শীঘ্র প্রকাশিক চইবে।

माधु गहाजाि मिर्गंत करिं। वाक्।

নিম্ন লিখিত প্রসিদ্ধ সাধু মহাত্ম। দিগের ফটোগ্রাক্ (প্রতিকৃতি) আমার নিকট নিম্নলিখিত ঠিকানার এছে হওয়। যায়।

্ সহাত্মা তৈলেলী ঝামীর ফটোগ্রাফ্ [কার্ড সাইজ]।/১০
ভাক্ষরানন্দ স্বামীর ঐ ঐ //১০

প্রীকৃষ্ণানন্দ সামীর (ভারতবর্ষের প্রাণিত ধর্মাবজা চির কুমার প্রীপ্রিক্ষপ্রশাদ পরিপ্রাণক মহাশারের)
ফটোগ্রাফ্ (কার্ড সাইজ্) ।/>
শীকৃষ্ণানন্দ স্বামীর বড় আকারের ফটোগ্রাফ্ ॥/>
উপযুক্তি প্রত্যেক ফটোর সহিত্ব এক থানি
অরপূর্ণার ছোট ছবি উপহার দেওয়া যাইবে।
শীরাধিকানাথ বন্দ্যোপাধার।
ধর্মায়ত যন্ত্রালয় প্রশাশীধাম।

ওঁ নমো ভগবতে বাছদেবার।

धरा श्रा श्रा तक।

"কুলং পবিত্রং জননী কৃতাথা বস্তারা পুণাবতী চতেন। অপার সমিং তথ্যাগরেশিন্, লীনং পরে ব্রহ্মণি মুসা চেতঃ॥

১×শ ভাগ শত্ৰক এব শুজাজ থেয়া নিগনেইপাসুমাতি যঃ। শতালা ১৮১৩ ১৪ সংখ্যা • শতারেণ মহলাশং লক্ষমনতে গছতি॥ ৺ • জাশ্বিন মাস

ষাজ্ঞবন্ধা-সংহিতা।

(भ्यायुव्हि)

জনতি ক রণামাঃ দ কেশ কীট্রন্ধরিত্র ।

শ্রন্ধ গ্রুপিতোজিন্ট রক্ষার পতিকে জিত্র ।

উদ্ধানিতোজিন্ট প্রামারক বর্ধারে ।

গোপ্রাতং শকুনোজিন্ট পদা ক্ষারক কামতঃ ।

জনং পর্বিকং ভোজাং রেহাক্তং চির্দাহিত্য ।

অবং পর্বিকং বিজয়াঃ ।

অনাদর প্রবিক প্রদন্ত অন্ধ, র্থামাংস, কেশ কীটযুক্ত অম প্র্যাষত উচ্ছিন্ট, কুক্রস্পৃষ্ট, পভিত কর্তৃ প
দৃষ্ট রজস্বলা কর্তৃক স্পৃন্ট. গোকর্তৃক সাম্রাত
পক্ষীর উচ্ছিন্ট, ইচ্ছা পূর্বিক পদস্পৃন্ট অন্ধ
কদাপি ভোজন করিবেনা। কিন্তু যে অন্ধ মূত্রিক,
ভাষা বাসি হইলেও ভোজন করিবে । গোধ্ম, সব
ও গোছ্য খারা যে খাদ্যমের্য প্রস্তুত হয়, ভাষা স্বিদ
স্কৃত্যক নাহয়, ভবে বাসি হইলেও ভোজন করিবে ।

'मिश्वनानिर्द्धमावद्भाराशायाः शतिनक्ष हार,।

खेळेटेमकभकः देखनमादनाकमणानिकम्।

शक्ति भवसात्र हिंदी भाजीत 'अकवात इद्धामारन

হয়, এবং অপরের বংসস হালো যাহার ছগ্ধ দোহন হয়, এবং যে গাভীর সন্তান ভূমিষ্ঠ হনুয়ার পর দশ দিন অভিক্রান্ত হয় নাই, ও গে গাভী বংকুশ্নয়া-ভাহার এগ্র পান করিবে না। উন্তু, একপুর্বিশিষ্ট ও বন্য পশু এবং ভেড়ার এগ্র পান নিধিন্ধ।

एन कार्यः इतिः भिः छ लाहिकान् उण्हनाः छथा।

चन्नुशाक् क माः मानि निष्कानि कनकानिक १

क्रितान शिक्त मान् । एक धन्न हिन्निन्।

मानि मान् । प्रकान् मन्तिः मह आस्वामिनः।

दक्ष पित्रित हक्षास्त वनाकान् क विकितान्।

द्वर्ण कृषत मः यात शासमाशृश्याक् नीः

क्रित्र म कारकानः कृतदः तष्क मानकम्।

क्राम् शाम् यञ्जतिन व्यक्तिकारः प्रतिकान्।

हामार्यह तक्ष्मामाः ह स्मृतः वस्तुतः भवह।

सर्माः मह तक्ष्मामाः ह स्मृतः वस्तुतः भवह।

सर्माः मह कामराका क्रम्। साश्रवामद्वाहः वरम् ।

দেবতার জনা আনীত ঘুত, ত্রশ্চন ও শিশু রুক্ষের লোহত [আটা] অগজ্ঞীয় মাণ্স, বিষ্ঠান্তানোৎপক্ষ পদার্থ ও ছত্ত্রাক, শিকারী ও আসমাংসভোজন পক্ষা, শুক, চাতক, টিট্টিভ, সারস, একখুর বিশিষ্ট ছংস এবং গ্রামবাণী পক্ষী, কোয়ন্তি (পক্ষি বিশেষ) জলকুক্ট চক্রবাক, বক, প্রামাক্র্ট, চড়ুই, দ্রোণকাক, ক্রর,
ব্রুক্ট্রক, (কাটটোক্রা) ছাতার পক্ষী নীলকও এই
সমস্ত পক্ষীর মাংস, ও কুশাই কর্ত্র হত পশুর মাংস
ও শুক্ষ মাংস ও মংসা এবং দেবতাকে অনিবেদিত
পুনী পার্গদাদি সিন্টান্ন যে ব্যক্তি জ্ঞান পুশ্রক
ভোজন ক্রিবেন, তিনি তিন দিন উপবাসী
ধাকিন্দ্র।

ক্রেমশঃ।

ায়া মমতা।

ছু:খপূর্ব দংলার এত রমণীয় বোধ হয় কেন ? ্রেছা স্ত্রণমিয় জগৎ এত মধুর বলিয়া সনে হয় কেন শ্নিরাশার উষ্ণ নিখাস যাহার মজ্জাগত ধর্ম, নিহ্যাভনার হ। হতাশ गাহার শিরায় ২ নিহিত, এমন বিষম বিষদর অমৃতপূর্ণ বলিয়া প্রতিভাত হয় কেন ? –সায়া ক্ষতার প্রণোভন হাছে বলিয়া। যায়া মুম্তা সাছে বলিয়াই সংসারের চিতাভতা ত্রণরেণু বলিয়া বোধ হয়। মায়া মমতা আছে বলিয়াই এ প্রেতভূমে শুগীলের ত্তৃকার কোকিলের ঝফার বলিয়া বোধ হয়, মায়া মমতা আছে বলিয়াই এ ঘোর গহন অর্ণানী বিলাগ্যয় জীড়াকান্ন বলিয়া বোধ হয়। যায়া মুম্তা খাছে বলিয়াই এ কটু কঠোর দুর্ভেল্য বজ্ঞ প্রকোষণ কুলুমাস্তরণ বলিয়। মনে হয় । সংগার-রুকে মাধা মমতাই ফুটত ফুল, 'শংদার-মরুভূমে সায়ামমতাই খায়তের নিক্রিণী। সংসার-কালরাত্রির করাল অগ্ন-कारत माशा ममठाहे अञ्चलहा ५ता । भागस्त ५७ প্রিপ্রম, এত কফীময় জীবন-সংগ্রাম সমস্ত সহিয়া খাইতেছে, মায়া মমতার জন্য । মমতার প্রশান্ত জোড়ে নিজিত হইয়া মাতুষ সংগারের সকল কন্ট ভুলিয়া যায়, সংসারের সকল ব্যথা মুমতার অমৃত-মর্মতল হইতে মুছিয়া ফায়। মাকুদের निश्य क

কর্মাকেতের শ্রম-জনিত অবসাদ মমহার মদিরা-পানে কাটাইয়া মাতুষ নবে হিসাহে জীবতা হইয়া উঠে। মাতুষের শিশিল মর্গ্রান্তি মমতাভিষিক ইইয়া পুনরায় সভেক সরস হইরা উঠে। স্ক্রাং মমতার শক্তি মধ্যম্পাশিনী।

় মায়। মুমতা বলিতে সাধারণতঃ আমরা বুবি, ধন ক্রম পরিবারাদির প্রতি আন্তরিক টান। ইহাকে यामिक्टिरे तन, जानतागा है तन, अकहे कथा। मानिक ভাষায় বুঝিতে হয় যে বুভি পর্কে আপনার করিয়া লইতে চায়, বিভক্তকে সংযোজিত করিয়া লইতে চায়, পুণক্কে সন্মিলিভ করিয়া লইভে চায়, বিভিন্নকে षाश्रीय केतिया नहेट होत, छाहा है यागिक वा गाया মমত। । সাধারণ চলিত আর্থ সায়া মমতার গলী সর্জার্ণ হইয়া আনে। দাশনিক অর্থে মায়া মমতাব গভী ব্যাপক হইয়া দাঁঢ়ায় । লাশনিক অর্থ যদি ঠিক হয়, ভাহা হইলে দেখিতে পাই মায়া মমতার হস্ত হইতে কাহার ও প্রিত্রাণ পাইবার যো নাই, মায়া মুম্ভার ওবিশাল গর্ভে অনন্ত ত্রগাও ভূবিয়া রহিয়াতে । ভিগারি ইইডে সমাট পর্যান্ত গৃহস্ত হইতে অরণ্যবাদী উদাধীন প্রয়ন্ত মসুষ্য হইতে দেবলোক প্রয়ন্ত মুমভার দাস न्यु (क १ विश्वतिक वाञ्चमार कतियात सना-विधास প্রাপ্ত হইবার জন্য, ভালবাগার দামগ্রীকে করামলকবৎ कतियात जना कगरा ८० छिठ नगरा एक १ गृशी धन सन शतिवात शाहेवात जना लीनाशिक, विमाधी विमा পাইবার জন্য ব্যাল্ সম্মানাপী সম্মান পাইবার জন্য উৎস্ক, জানাধী জান পাইবার জনা বাস্ত, দেবত। অনুত পাইবার জন্য ব্যাকুল। নিঃসম্বল ভিখারি এক থানা জীপ বস্ত্র পাইলেই আপনাকে কুতকুতার্থ মনে करत। ভालवामात धनरक शाहेवात कना चारवश, প্রিয়ত্য প্রার্থের সহিত মিনিত ইইবার জন্য আন্তরিক টান ইহাই ত মৰ্গতা।. এ মনতার উপাদক অগতে

নয় কে ? হুখের সামগ্রীর প্রতি অনুরক্তি জগতে কাহার गाड १ थिशङ्ग तस्त्र शाङ्गीत शिशामा सगरङ गकरलत्र ममान। ज अस्टम कारीतंत्र महिल तकान भाषेत्र নাই। পার্থকা কেবল প্রিয়ন্তার চিত্র লট্যা--ভ্রের कानिर्म ल हेसा। अर्थ पुरु की व भागतः अर्थ (क हे मगख छ। अव আণিশ মিনে কার, তাই অথেন প্রতি আমানের সায়া মা কা। টুণ্ট্রেক আক্রাকে পেলেন। দেখিয়া কালকেঁর यन जुलिया गाय, त्यत्वना भागतन माता निन मगुँख ভুলিয়া মে ভাহাতে মলিয়া থাকিতে থাবে, খেলেনার জন্য দে মাকে ভুলিতে পাৰে, পিতাকে ভ্লিতে পাৰে, चारात निजारक जुलिएक शास्त्र, त्थरलनात जगनहे মাহার।, তাই বালকের থেলেনার প্রতি মায়। মুম্রা। যুবতীর হাদিয়ার মৃথ্যানিকে যুবক প্রথের সার मस्त्र गरंग कर्वन, अर्हे युन्ठीत अर्थ युन्रकत ग्रा মমতা বা আগক্তি। আবার অভুত্কট লাশনিক পুরুষ নিজের উচ্চ চিন্তাকেই সাংসারিক,সমস্ত প্রথের ৰরণীয় বলিয়া মনে করেন, তাই গভীর চিন্তার প্রেমে তিনি পালল, সেই চিন্তার প্রতিট ঠাহার বা আসক্তি। একটা সভ্য ঘটনা इहेर७एइ । नवकीर्य नाग्रभारखन यथन বিশেষ ১৯৯। ছিল, সেই সময়কার একজন বিশিষ্ট ' रेनग्राशिएकब कथा विलिटिडि । डिनि अक्तिन निष কুটিলে ৰসিয়া শাস্ত্ৰ-চিন্তায় নিম্ম বহিয়াছেন, এমন সময় একজন ধনী জামদার তাহার স'হত সাক্ষাৎ করিতে আশিলেন। একজন স্বাপ্ত ধনী গুহে উপাক্ত इंदेशा हिन (मिथ्रा) निशाशिक-भन्नीत वर्ष्ट्रे आनेन १देश. আদ্য কিছু লাভ হইবে, ভাবিয়া ঠাহার মন উৎফুল হইল। জমীদার নৈয়ায়িকের সম্মুখে উপান্তত হইলেন। रेनशाशिक छणन अक्यांनि न्याश्रभारञ्जत श्रू 'व 'निविधे-মনে দেখিতেছিলেন। তিনি শাংস্থার গভীর চিন্তা-সাগরে নিম্যা। বাহ্য জগতের প্রতি তাহার খেয়াল नाहे। अञ्जाः अभीपात्ततं पिरक ठाँशत कारकशहे

रहेल गा। छ। शाही अभीमात दकात सुल जामत अञ्चरीना ना भारत्या क्षेत्र सहैत्यन ना । आनिक कर् माँ शहिसा कितिया माठेतात मुग्र कत्याए रेग्यो-ষিককে বলিলেন, মহাশ্য । আফি জমীদাৰ, আপনি ব্ৰাৰ্মণ গভিত। অপিনাৰ গুড়ে আদিয়া কিছু দান না ক রিষা আমাৰ ্ষা হয়। উঠিত নিহে । আপুনার মাহ। বিহু গভাব অলুপপত্তি আছে, জানাইলে আমি কাহা शतन करिएड श्रञ्ज आ । क्रीकार्तित कथा स्थानिम দেই চিন্তাবিলোল নৈয়ায়িক ভ্ৰক্ত ই স্থাতির প্রি খানির এক খানি পাতা তুলিয়া কম্নানের হাতে দিং। বলিলেন, পুস্তকের এই স্থানটা ভাল রূপ বৃকিতে পারিতেছি না। বহু চিম্বা করিয়াও স্বর্থ লাগাইতে গারিডেছি না, ইহাই আমার অভাব অমুপপুতি, 📠 দ্যা ক'র্য়া আমার ক্ষ মোচনু করিতে ইচ্ছ ক হুইং: एवं, छ **এই धा**न है। भाषाश वृक्षाहेशा निष्टन, १०: হইলেই আমার সমস্ত অভাৰ অনুপ্পত্তি মিটিল सहित । तेनशाशिकत आर्थना खनिशा रक्ते भारत স্তম্ভিত হইলেন, সন্মান সহ প্ররায় বলিলেন, মহাজ্ন। এ অভাব পুরণ করিবার দামর্থ্য আমার নাই। অন্য কোন সাংঘারিক অভাব বলিলে আ'ম ভাষা পুর্ণ ক'রতে পারি। নৈয়া'গ্রিক বলিলেন, আমার মহে: অভারু, जाहा अहे माज भाषनारक विल्लाम । हेहा छाए। जात কোন সাংসারিক মভাব আমার নাই। ব্রাহ্মণীর ওণে সাংগারিক কোন কটই আমার নাই। তিনি অভিযঞ্জের সাহত শাকাম প্রতিদিন রন্ধন করিয়া প্রস্তুত করেন, আমি ভাহা প্রমান্দে (ভাজন করিয়া থাকি। স্তবাং আপনার কাছে আর আমার কিছু চাহিবাব নাই। लाभानी किश्विष्टतृति मैं । शहेशा श्रामीत अहे मकत कथा खान्या वर्ष्ट् अमञ्जल इहेट इंडिशन । मनाभाग समीनात যাইবার সময় আল্লাণীকে প্রাচুর পরিমাণে অর্থ দিয়া गञ्जुके कतिया (पुलन ।

ত্মি আমি অর্থকে বেমন ভাল্বাসি, বালক

বেশলেনাকে কোন ভালাবাদে, যুবক যুবভীকে বেমন ভালবাদেন, নৈয়। যিক শাস্ত্র-চিন্তাকে লেই রূপ ভাল বাদিয়া ছিলেন থেলাড়ে ম'ক্য়া বালক মা বাগ ঘর ৰাজি সমক্ষ ভুলিদ। ধায়, যুবতীকে স'ল্ফ: যুবক পুথিটি ভূলিষ: ধান, সেই কপে গল্পীর চিন্তাতে মজিয়া নৈয়ায়িক টাকা কড়ি বাহা পংলার সুমস্কট ভুলিয়া ্ডিলের সংখ্যার ফানি গালিক ভক্ত, তিনি ভগবানের জন্মে জিলা সমগ্রী বিদ্যামাল জুলিয়া মাইতে পারেন। Cতামার আমার পকে টাক' ংম্মন স্থের সাম্ভী, ষুব্যকর পক্ষে যুবকী যেমন স্লাগের সাম্থ্যী, চিন্তা-শীলের পক্ষে চিন্তা (ভগনট শান্তির প্রভাবন, ভক্ত ধ।ব্যিকের পরক ভগবং-প্রদঙ্গ তেমনই আনেন্দ্রক। নিম্ব ক্রিংটো, পুজ স্নীতে যে মধু লামরা লাদ।দ করি, हिन्द्रा । अ जनवर धभाष्ट्र मार्नानिक । अक (भन्ने प्रापृष्टे উপ্রেল্য করিয়া পাকেন। তাহার স্বরূপতঃ তার-ভিষা কিছু যাত্র নাই, কেবল শ্রেণিগত বিভেদ "থাকিটের পারে। ভুমি আমি শতি চেষ্টা করিয়াও।" व्कारक शांतिना, विश्वाभीरत्तत विश्वास कि स्रश् अर्कत ভগুবন্গুণাতুৰাদে কি হুখ। বিষ্ঠার কীট শত ১১টা कतिरलंख कि वृत्तिरंख भारत, तमरशक्ति वाहेरल कि ক্ষ হয় : ভুমি আমি বুনি আর না বুনি, তাহাতে कि इहे शामिशा गांश ना । 6 छा भी ल छ थ न। शाहित हिसास जामक इन्टरन (कन, जक छश न। शाहित अभवद्यवितरम पुर्वित्वन (कनश (कनन। शामिकि-लालम। त्य छटथत नञ्जत कना है इहेशा शास्त्र । त्य प्रश्रहा त। चामिक एडागारक वागारक मन्मारतत लाम करत, অধের জন্য পিশাচ করিয়া ভূলে, গেই মমভাই গভার छानीत अनग्रह इहेग्रा ढांशात्क छश्नतार्कात रमनक कतिस। कृत्त । (य सम्छ। वः ভ।लवाम। कामुकत्क कामिनीत পार्मानक-शिशास करत् रमहे छालवामाहे খোমিক ভক্তকে ভগবচ্চরণপঙ্গরোর কাঙ্গাল করিয়া ণেয়। যে রম্বির শারিশিকু নিম্বকলে পতিত হইয়া তিক্ত-

রদে পরিণ্ড হয় দেই বারিবিন্দুই পর আত্রকলে পাত্র হইয়া ওলাত্ব বদের লাই করে। যে প্রাকৃতি করে বিলাদীর হাতে পড়িলে বাইজির শিরোদেশে শোভিত হয়, সেই কুল্ল সাধু উপাসকের হাতে পাড়লে দেবতার চরণ তলে উৎস্গীরত হয়। মে গল্পার কল শুঁড়ের হাতে পড়িলে মদ্যে পরিণ্ড হয়, শোলার কল শুঁড়ের হাতে পড়িলে মেই গল্পার কল দেবতার চরণারত হয়ার দাঁড়ায়। মায়া মম্বা অলাকের হয়ার দাঁড়ায়। মায়া মম্বা অলাকের গল্পার জল। মংসার-কীটের বিলাস ভাওারে পড়িয়া উহা মাদকতায় পরিণ্ড হয়, সাধুর ক্ষওলুতে পড়িয়া উহা দেবতার চরণে নিবেদিত হয়। নারিকেল-জল কাংসাপাত্রে রাখিলে মদ হইয়া মায়, ভাহার মধুরতা মিফারা বিক্ত হইয়া য়য় ; সেই রূপ মায়া ম্মতা সংসারেট লাগের রাখিলে মেহেম্মী মদিরা হইয়া দাঁড়ায়। তাই শাস্ত্র বলিয়াছেন—

ৰা পীৰা মোহময়ী° অমাদমনিৰ ম্লাৰুভূতং জগং °

খানার তাহাকেই ভগবানের চরণে ঢালিয়া দিলে তাহাই খন্ত [ভক্তি] হইয়া যায়। খানরা মনতাকে খনতের পরিবর্তে হলাহল করিয়া ফেলিয়াছি, চন্দনের পরিবত্তে বিষ্ঠা করিয়া ফেলিয়াছি, জনরা-বিনি মাধুরীমাথা সামগ্রীকে নরকরতে ভাষাইয়া দিয়াছি। ব্যবহার দোমে সাগরণেচা মাণিককে আমরা প্রিপ্দরিত করিয়াছি, নিয়ল শারদীয় শশদরে গাঢ় কলফ কালিমার গুলেপ দিয়াছি, স্বর্গীয় সোণামিনীর ছলভ ছাতিকে অমানামারে অন্ধকার করিয়া ফেলিয়াছে। ব্যবহার করিছে জানিনা বলিয়াই মনতা খাদিক আমাদের বন্ধনের করিছে জানিনা বলিয়াই মনতা খাদিক আমাদের বন্ধনের করিছে জানিনা বলিয়াই মনতা খাদিক আমাদের বন্ধনের করিছে জানিনা ভাষাছে—প্রথমালা ভাষাণের নাগণাশ, হইয়াছে—

सुरा।

छ्य कि ? " अपूक्लीरनमनीय छत्रम्"। नाहा चाजात अयुक्तर्यन्ता, त्रं अवस्था সনুভাৰ-শক্তি সকল অবাধে এবং অনুর্গলিত ভাবে প্রবাহিত হটাতে पारक भवन डेस्सियंगन भाषायुक्त कार्या कतिएड भारक, र्य अवस्था अवि खनाइ भाषासुन, मर्थन বাসনা আকাজদাদি কোন দুক শক্তির দার। অভিক্ল न! इस, रम अवश्वास मारू। 61 वित, रम वञ्चत काना वा विनात করিৰ, ভাহাই পাইক, তখন মেই অবস্থাকে ভ্রমের व्यवचा वला याम् । मयुगु अगन निन भाहेरल छ्गो इस । ত্র আলার অবস্থা বিশেষ মাত্র, আলার কোন গুণ न्दर, देकान है जिस्स-जिस्सा न्दर, देकान व्याक्रीस शक्तित প্রাক্রণ নহে । উহাকে , আগার স্বর , শক্তির, স্বর্ किशात मायक्षरैकात जनकार नेला माहेर्ड भारत। কারণ নকাধারে দুইটি বিশেষ, শিরুদ্ধ এবং বিপরীত शक्ति किया भगजात ५ अकडे भगता **'हहे** छ। शास ৰা। শক্তি জিলাশীল হইলেই খন্যান্য শক্তিকে সম্যক্ শ্বাভূত করিয়া চাপিয়া রাখিয়াছে বুঝিতে হইবে। भषुरात हेल्या भक्ति मकल अत्रष्टात विर्ताधी क्यर ভিন্ন ভাষাপর। একের বিকাশে অন্যান্যের হাস হয় ; এবং একের বৃদ্ধির সময়ে অন্যান্য শক্তি সকল তাহাকে সংঘত ও সম্পুচিত করিতে চেফীও করে। প্রতরাং ঠিক অবাধিত বাত প্রবাহ মনুষা-শরীরে হওয়া অগন্তা। এই ক্ষাই অনেকে,শক্তিশামপ্রয়ের স্বস্থাকে স্বর্থের খবস্থা বলিয়া নির্দেশ করেন। পরস্তু যদি তথ গত্রভূতি-গমা হটল, তবে ক্রিয়াহীন দামপ্তপ্তের অবহাকে তথ विल (क्यन क तिया)

বিচার—ভর্কের কপা সাউক; ত্রপ কি তাহ্যপ্রথনে
সমাক বুঝা উচিত। মোটা কথায় সখন আমরা অভান্ত
পুসি হই, যখন আমোদে নার্চিয়া উঠি, আফলাদে গলিয়া
সাই, যখন উৎসাহে ফুলিয়া উঠি, ইাসিয়া ওলিয়া পড়ি:
যখন দেহ রোমাঞ্জিত হয়, চক্ষের তারাযুগল বিস্তৃত

ইইয়া পুড়ে, মুখাবয়ৰ পাববদ্ধিত হয়, সাংশ্পেশী সকং अलाहेशा याशः, तम , भूभ क्ली, तम लाते तत्र विराम्भ अवेषा মে দেখে সেই বলে আনন্দ ভগলিয়া পাছেছে, স্তাথেব মাগরে ভামিতেটে ভগনট তাহাকে স্থী ৰলা মাগ, এবং সেই গ্রন্থাকে স্থানে অবস্থা বলে । স্থ^ৰ গ্রন্থ-ভবের দামলী ; স্ভরাং হৈ কর্মণ জ্পাত্তণ করে নাই ভাহাকে বুঝান কঠিন। যে যেখন প্রকৃতির প্রোক गाहात (गगन धवृद्धि, त्य (मक्कण निकृष्का है।। एक उपयु-মায়ী ভিন্ন বিদ্যে ভিন্ন হ অবস্থায় তাহীরা স্তথাস্তুত্ব कतिया भारक। हे बाल जो अकाल अध्यत भग गरन করে, আমরা শীন্তাগমে আমোদিত হই। এমান সকল 'বিষয়ে, দকল ব্যাপারে প্রত্যেক লোকই নিজ ক্চি यमूगाशी स्थी हरा। जत्न गसूमा मात्वत्रे वीतन्त्राम् अित अक क्षकारतत, छगरवाम मुक्लतके ममान। अवः এট অমুভূতিট আলোচ্য। এবং ইছার ন্যাধিক্যামু-সারে ইহার ভোগী বিভাগ হইমাছে। ভগবান্ গীতায় বলিয়াতেন—

শ স্থং জিদানীং ত্রিবিদং শৃণু মে ভরতর্ষ ।

অভ্যাদাদ্রমতে যত হঃখান্তঞ্চ নিগছতি ॥ (৩৬)

যতদত্রে বিষমিব পরিণামেহমূভোপমম্।
তৎ হৃধং দাত্তিকং প্রাক্তং আজাবৃদ্ধি প্রদাদজম্ (৩৭)

বিষয়েন্দ্রিয় সংযোগাৎ যতদত্রেহমূভোপমম্।
পরিণামে বিষমিব তংশ্যং রাজদং স্মৃত্য (৩৮)

যদত্রে চাম্বদ্ধে চ হৃথং মোহন্মাজনঃ।

নিদ্রালন্তপ্রমাদ্যোগং তভামদম্দাহতম্॥ (৩৯) শ
গীতা ১৮ শ অধ্যায়।

ত্থ তিন প্রকারের (১) সারিক, (২) রাজদিক
(৩) ভাষদিক। "(১) ক্রনিক অভ্যাস সারা অনেক
কর্টেবে স্থের [সমাধি স্থের] সম্ভোগ করা যায়,
বিষয়-স্থের ন্যায় যাহা সদ্য লাভ করা যায় না, বে
তথ লাভ করিতে পারিলে সমস্ত দুঃথের অবসান হইয়া
বায়, বিষয়-স্থের ভাষা বাহার সঙ্গে কিল্লা অন্তে কোন

व्यक्तांत्र मृ: त्थृत वारशका थाएक ना, यांहा व्याग्राम्याया উপায়ের ছারা निष्ण्रम इस अक्रम चित्रितर्परमञ्जात মনে হয়, এবং পরিণামে অমতোপম হয়, বাহা আত্মত ব-বিষয়িণী , বুদ্ধির • প্রসন্ধতাবন্থার বিক্ষিত হয়, সেই व्यथहे मांदिक व्यथ । (२) विषय अवः हेक्सिन-मःरंगागा-ধীন যে স্থ উৎপন্ন হয়, যাহা প্রথমতঃ অনুভোগ্য মনে হয়, 1ক্সু পরিণামে অতীব কফীণায়ক ভাহাই রাজস হৃষ। [৩] নিদ্রা, জালদা এবং প্রমাদ দারা যে হৃথ উৎপদ হয়, যাহা এই ক্লে এবং পরিণামে আত্মার মোহ ব্যতীত আর কিছুই উৎপাদন করে না তাহাকে তামস হুথ বলে। " গান্ত্রিক হুথের কথা এখন থাকুক ; অগ্রে রাজদিক ও তামদিক হুথ কি তাহা বুঝা যাউক। विषयाधीन अर्थ याहा छाहारे ताजितक अर्थ । কামাদির অবাধিত উপ্রভোগে যাহা স্থােৎপতি, তাহাই রাজদিক স্থ । স্থার দৃশ্য দেখিয়া, স্থারযুক্ত গীত অবেণ করিয়া, মধুরাস্বাদপূর্ণ থাদ্য দ্রব্য আহার করিয়া ' (य द्वर हम डाहाहे ब्राज'गठ द्वर । भगूमा मार्ट्याहे अहे স্তথা:শভাগী, এবং এই স্তথ লাভেচ্ছায় সতত চেষ্টিত: छभ वलित्न ७ हे ताक्रीमक इर्थत धात्रगाहे मक्त्नत इहेगा थाएक।

তবে রাজনিক স্থাপর প্রধান বাধা অত্পি। বতই প্রান্তির বেগ ছাড়িয়া দিবে, শতমুখী হইয়া, সর্কব্যাপী হইয়া যতই বাসনার লোলজিহ্বা প্রসারিত হইজে থাকিবে, ততই তৃষ্ণার তীত্র যাতনা কোটিগুলে বন্ধিত হইবে। মে বিষম বুভুক্ষা ব্রহ্মাণ্ড প্রান্ম করিয়াণ্ড পরিত্র হইবে না। সহজেই মনুষ্য চিরস্থার আকাজ্যা করে, সদানন্দের ভিখারী হয় । এই অত্পি ত্যাগ করিয়ে চায়, পিপাস্। মিটাইবার জন্ম ব্যস্ত হয়। পরস্ত দেখা উচিত কেন রাজস স্থা এমন অত্পি থাকে । পূর্বেই কথিত হইয়াছে যে ইন্দ্রিয়াণ্ড বিষয়াধীন স্থাই রাজসিক সুখা। অর্থাৎ এ স্থ প্রধানতঃ শরীরকেই অপেকা করে; ফাথেই অত্পির ভাব শরীরক্ষ। সূত্রাং

যত দিন শরীর থাকিবে, তভ্দিন এ সুথের সুখী হইভে रुरेल वर् थरक मस्य नरेर ई रहेरा, उँहा baसारी थाकित्तचे। हेहा अगान कर्तिए इहेटल भातीत काधा-धनलौ त्वः छि। छ। भातभागत जगर्छ बागता अधान हः ছইটি শক্তির ক্রিয়া বৃঝিতে পারি। এক অপসারকতা (Expansion) দিতীয় সংকর্মতা (adhesion)। তাপ-তেজের ক্রিয়া দার। অণুপুঞ্জ ৬ড়াইয়া পড়ে, স্বাপনা-আপনি পৃথক্ হইয়া যায় । সংকর্ষতা ভারা [শৈত্য বশভঃ] উহার৷ আবার একত্রিত ও সন্মিলিত হট্যা थारक । स्थन कारभन भाषिका थारक उथन भगार्थ মাত্রেই বিস্তৃত, একটু প্রসারিত হয়, শীতের সময়ে উহারা সংক্ষিত কুঞ্জিত হইয়া পড়ে। এই দুই শক্তি-সামঞ্জন্যে বস্তুর্ উৎপতি, অবয়বের—আকারের সৃষ্টি। তবে পদার্থ মাত্রেই উষ্ণত। আকর্ষণ করিতে অধিক পটু ৷ যে বস্তু অধিকতর উত্তাপ্যুক্ত, তাহার তেজ হরণ कतियात जना भी उलाउत मामशी भकल विद्राप्त ८५ छ। করে। এবং পরিণামে সে ভতাপ অপহতত হইয়া যায়। জীবদেহ জড় পদার্থ হইতে অধিক উত্তাগমুক্ত। উষ্ণত। প্রাণী দেহে জীবন ধারণের এক প্রধান কারণ ঃ তাই আমাদের এই মনুষাদেহের তাপ পারিপাশিক সকল সামগ্রী সকলে। হরণ করিতেছে—আকর্ষণ করিয়া लहेटिह । अवः शास २ वामाम्त नातीतिक Tissue ((পाषक धार्) नसे रहेर ७ एए; मन जनतक विलाहेर ७२ নিজের ভাণ্ডার খালি। এই অভাবের পূরণ করিবার জন্ম আমরা আহার করিয়া ণাকি। পাকম্বলীভুক্ত मामश्री नहेशा दिवात। कि शहन कार्या कतिरहाह, अवर যে কারণে যখন শরীরের ধাতৃক্ষ হইতেছে তখনই তাহার খুভাব মোচন করিতেছে। আমাদের শরীরে এই হরণ পুরণ কার্যা নিয়তই হয় । পরস্ত স্বভাবের नियम अहे (य ८य शानिहे शिक्त, (य शानिहे किया, तमहे খানে তাপের বৃদ্ধি ছইবে, সূতরাং ক্ষম্ভ অধিক হইবে। कारिय स्थामता अमन स्थान किया स्थान कि

नारे, পृত्তिरे मन। (कनना किशामीन कश, পृত्তिकार्या छ ক্রিয়া জন্ম ; কামেই সঙ্গে সংস্কেই ক্ষতি। এই ক্ষতি-পরিপৃত্তি-চেটাই প্রবৃত্তির পিপাদ!—শদনার কুলা। याहा जातात हिल छाटा अथन नाहे, ज्यथेता मान हरा, ८६ में। कतिरल गाहा शाहरल अशहर अशित साहा है भारेगांत कता हेळा इश् छित्नांग इश । भत्र (गमन পরমাণুপুঞ্জের মধ্যে একটা স্বাহ্তি কার্য। চইলে, পুনঃ भूनः गांठ किया हहेता महे गांठत भीनः भूना हय, ভাহার নিকাষ মরে না। ভজ্রপ শরীরে বার ২ একটা কার্য্য হইলে উহার এক সংস্কার মস্তিদ্ধে স্বাঞ্চিত হইয়। याग्न, ज्युजिलारे अकरे। पृष्ट् शावना लिथित हम्र । भंतीरतत পোষক পাতৃর ক্ষতিপুর্ত্তির কার্যা পলে ২ হইতেছে, हे खिराग्न नान। मिटक व्यमातिक इहेग्रा निनिध व्यकारतत অভাব স্থায় করিওেছে, পুর্বেক স্মতি পুরাতন কণা **जूलिया मुख्य जान्दात (यांशाहेटलट्ड छाहे** ज्यागदा महाहे ক্ষতিপ্ৰস্থ হটতেছি। যে দিন ভূমিষ্ঠ 'হট্যাছি সেই पिन **इहेट हातित कार्ड (थलिए इहेर**डस्ट्र लाक-সানের ব্যবসায় চালাইতে হইতেছে। স্তরাং অভাব चात भिटि उट्ड ना। भतीत सहेशा नाष्ट्राष्ट्रा ग्रङ्गिन ক্রিব ভভাদন মিটিবেও না। ভগবান্ গীতায় বলিয়া-८६न-

" যে হি সংস্পর্শকা ভোগা দুংখ্যোন্য এব তে। আদ্যন্তবন্তঃ কৌন্তেয়! ন তেম্বমতে বুদ্লা" (২২) ু (৫ম অণ্যায়)

" বাফ বিষয়ে সংসর্গজনিত এই যে সকল হৃথ, তৎ
সমস্ত দুংথ বিমিত্তি এবং ভবিষ্যং দুংথের কারণ
হইয়া থাকে। কেননা ঐ সকল হৃথ আদি এবং অন্তবন্ধ;
অর্থাৎ উৎপত্তি এবং বিনাশশালী, অতএব, ঐ হৃথের
বিনাশ হইলে দুংথ অবশ্যস্তাবী, এই জন্ম হে কোন্ডেয়!
ঐ সকল হৃথের মারা পশ্ভিতগণ পরিতৃপ্ত হয়েন না। "
হৃতরাং বাহ্নিক বিষয়-জন্য, হৃথ, •ভোগ্য-ভোগী-সম্বর্জন্য হৃথ রাজ্দিক হৃথ, দুংথের কারণ। অতএব

বুঝিতে হইবে যে এ স্থা অতুপি অবিভিন্ন পার্কিবে, ত্রের নবনীতের নাায় রাজলিক ল্লংগ দুঃগু ওত্তপ্রাত ভাবে বিরাজিভ থাকিবে। স্ধুতাই কি 📍 ভোষরি कञ्चनां 5 एक (ग जाशकाश म्लन्तोत लातना छुद्दे। (निध्या মার্ভিয়া উঠ, ৰাছ্য কগতে সে নমুনার মত কয়ক্তন ভেমন শৃ-দরী কামিনা দেখিয়াছ ? জদরের গুপ্ত গবাকে বলিষা ভূমি নির্জ্জনে বিলাদের এবং ঐশ্বয়ের পে চিত্র অঞ্চিত কর এই জীবনে কখনও ক্লিডেমন স্থের সাুগরে ভাসিয়াছ ? কথনই নতে ৷ পথের ভিথারী হইতে কোটা-খন হৰু, সাপোভৌম সম্টি হৰু, কল্পনার স্থেৰ যাহা কখনও দেখ নাই কেখন সম্পদ্লাভ কর ভত্তাত ভোষার ছংখের ছ্য়ার বন্ধ হইবে না, त्र₄বণের চিতার ভাষ তোমার দৃঃথের চিত। অহরহ ভত্ 🛣 😇 থাকিবে। জড় জগতের নিয়মুদীন ভূমি, দেহী ভূমি, শরীর-পথে যে সাধ মিটাইজে চেষ্টা করিবে ভাগাই বাধিত এবং ক্লন্ধ হইবে। কামের বুরিতে রোগ্ ক্রোধের রন্ধিতে রোগ, লোভের রন্ধিতে রোগ, মঞ মাৎস্থোর র্দ্ধিতে রোগ—উন্মত্তা এবং স্কলের পার-ণাম উৎকট যন্ত্রণাময়, বিভীষিকাপূর্ণ মুছ্য । দেমন नार्कातत मनरा कृष्णत गृत्थ गठ कल भान कतित् ক্রিছবা আরও শুক্ষ হইন। উঠিনে, তৃক্ষঃ শভ গুনে নদ্ধিত **२३८न, (मर्बामा**श क्ष्रांगंड श्रांगं हरेट । श्रतिरम्ह মুহুতেই সকলের নিবৃত্তি। তেমনি মানুষ যতদিন म। नूम थाकिरव, यञ्जीन तत्क्रमाश्तमत क्रवतनीञ्च भाकिरव জতদিন তেত্রিশ কোটা দেবতার কাছে মাথ। কুটিলেও অতৃপ্রির ভাব দূর হইবে না।

তামদ স্থ দাক্ষাৎ কোন অনুস্তিদাধ্য ব্যাপার
নহে। উহাকে ইংরাজীতে "Negative function" বলা
যায়। রাজদ স্থা ইন্দ্রিয় বিশেষের তৃপ্তি চেন্টা আছে।
তামদে তাহা পাই,-উহা দার্কাবয়বিক স্থাত। জ্ঞান,
তাহাও ক্ষণিথ ও অতি-সামান্য। স্থ-নিদ্রার পরে
একটা যে প্রফুল্লতা হয়, আলস্য, রশভঃ একটা যে

আন্মেদ বোধ হয় তাহাই তামদ প্রথ। ইহাতে চেন্টা নাই ও'ড্লোগেনাই। রাজদ প্রথে ক্ষণকাল আহ্হাবাও হইতে হণ, তামদে আহিবিল্পুতি নাই। রাজদে প্রস্থাদিনী শাক মৃছে, তামদে আহার মুগ্ধত মাত্র, অবসদতামাত্র সাছে। তামদ স্থা কেবল Analogy লক্ষণায় মুখ্ বাস্তব স্থা উহাতে নাই।

সাঠিত্র জ্বের যে কিরুতি ভগৰান্ দিয়াছেন ভার্ वाशास्त्र की प्रमूप्तां भकातीत भएक व्यंक्रश उ वनपू-कुछ। छर्व ताझम स्थात स्थी २ हेश। कशन ५२ भन-কালের জন্ম যে ভীত্র আনন্দাসুভব করি, ভাহাকে চিন্ত্রায়ী করিয়া অনুণ্রত প্রবাহিত করিয়া যে সদা-নন্দের চিত্র ক্সনার পটে গঙ্গিত করি ভাহাই সাত্ত্বিক क्या है । इस कि काल्लीक ना इडेक, जात करी-স।ধ্য ভবং সাধারণের অনুভাব্য নহে। পরস্থ মদি ব্যতিরেকী ব্যাখ্যা থারা রাজ্য ও তাম্স স্থকে ক্ষণিক ও পরিণামে স্থায়ী ছুংখদ ব'লয়। ছুংখের श्राथमावस्था निर्देश कता यात्र, जाश इहेटल गादिक স্থকে প্রকৃত্ত স্থ বলিয়াই বুকিতে হইবে। পাশ্চাত্য পবিভগণ ইহাকে Sumum Bonum विलया थारकन। ইহাই পরমানন্দ এবং পরম পদাধ। অপিচ " মৃকা-স্বাগুনবং ''। যিনি বৃক্ষিয়াছেন ভিনিই মজিয়াছেন, ভোমার, আমার সভ্রোগ করিশার যো নাই। এখন क्षात्र अहे इहेएल इह (य क्षाती द्वाय मञ्जन कि ना। (मरहत কার্য-প্রণালীর যে বিবৃরণ দেওয়া হইল তাহাতে মানুষ যে স্থিন হইয়া কোন প্রথাস্বর করিতে সক্ষম্ ইছাই অবভোবিক বলিয়া আপাতত বোগ্ছয়। গ্যথন জীবনে অভৃপ্তিই সিদ্ধ ব্যাপার, তথন স্তথের সঙ্গে ব্য পুঃধ মিশিয়া থাকিবে, আলোক-পশ্চাদ্ বত্তিনী ছায়। চিরদিনই থাকিনে তাহাতে অনুমাত্র নাই। বিশেষতঃ বিশ্বস্তিরী মধ্যে কোন क्रिमारे याधीन जवः अवाधिक नत्ह। धनस बक्षात्व বিরাট শক্তিক্রিয়া, সংঘত সংবদ্ধ এবং নিয়মিত ভাবে

হটকেছে। উদ্ধান, ডচছ্নুছল ব্যাপার নাই; খনবরত, খনানিত লানাহ নাই। ক্রিষ্টার প্রতিক্রিয়া আছে, খনানিত লানাহ নাই। ক্রিষ্টার প্রতিক্রিয়া আছে, খনাকের প্রাধ্য বিষ আছে, পুণার ক্রোলে পাল আছে। তাহে। হটলে সাত্তিক প্রথ অসাণ্য ব্যাপার। পাশ্চান্তা পণ্ডিতর্গণ তাহাদের ব্যাথ্যাত Sumum Bonum কে অসাণা, অসম্ভব বলিয়া ঠেলিয়া রাখিয়াছেন। পরাস্ত ভগবছুকি হিন্দুর বৃদ্ধিতে মিণ্যা বলিয়া প্রতিপদ্ধ চটিতে পারে না। সাত্রিক স্তথ আছে এবং উহা সাগ্য ও মন্প্রের আয়ন্তাদীন। তবে পাশ্চান্তা মুক্তি ধরিতে গেলে ঠেকিতে হইবে। এই শানে আর্যা শাস্তের চরণচুন্ধন করিতে হইবে।

গেমন বাহ্য জগতে জিয়া প্রতিজিয়ার খেলা আছে, ভেমনি মনুষ্য দেইও ভিন্ন প্রকৃতির প্রক্ষার निरतामी नकि आहि। देखियाजीश याश, जाशह শরীর ব্যাপিয়া কার্য্য করে, বাহ্য বিষয়ে বিজ্ত হইয়া পড়ে। অভাতা এমন মনঃশক্তি আছে, যদ্ৰা বাহিনের বিষয় হইতে বৃতি আক্ষিত হইয়া কোন অন্তঃকেন্দ্রে সঞ্চিত হয়। এই জন্ম দার্শনিকেরা "ব্যুখান" उ "निरताध" नाटम छूटे भक्तित कल्लना कतितारकन। একের রদ্ধিতে অভা সঙ্কুচিত হইবে। কামাদি ষ্ড়রিপু ত্রণং বিষয়।শ্রিত অন্য ব্লুক্তি সকল 'ব্যুগ্থান' শক্তি ধারা ক। যা করী হয়। নিরোধ জারা মন আত্মপথের পথিক হয়। নিরোধ ধর্মের ভিত্তি বু।থান অধর্মের মূল। পরমায়। চিদ্ঘন আনশদময় । কেননা ভগবান্কে मामा (भवजा कतिर ६ इति मध्य ६ (माणामिक इहेर्ड হটবে। তাই পুকাপাদ মহ্যিগণ ভাষাকে আনন্দ্ৰয়-আনন্দর্প--স্পানন্দ--স্পাস্থপ বলিয়া নির্দ্দেশ করি-য়াছেন : নিরোধ মনকে এই আ্যাকুগ করে--আনন্দ-সাগরে ভুবাইয়া দেয়। মে সাগরে ভূবিলে আর ভঠিতে इस मा, कारपड़े हिद्र अस्थत छ्लो ६७सा यास, मादिक হ্রখ-ভাগী হওয়া যায় ৷ কিন্তু ইছা সাধ্য ব্যাপার ; মরু-**टा** मिम्यी व्यगहिनी एक नागतं त्थाप फिताहेटङ

 इटल कर्छ आसम खोकात्कातरमञ्ज्या (कान् भाग माहेता कि कि मिल्ल, त्कान् छे॰ कछ खंड अवन कश्चित्व (म छात्र । माजरते प्रेश्वा कृष तम स्वा गांश, जाशके বিল্লোর জন্ম। বুর্টিবার জান্ম (গ্রাটিবার মান্ম স্থার অপার শাস্ত্রাণ প্রিক রহিয়াছে। সে প্রের গ্রিক कार्नक आर्छन् इस (मर्नित श्रक्षा यु^{*}किरल शाक्या यात्र, कार्यात न ११७ लवामन सहित्य, डीस्ट्रांत श्रमाङ्ग-गहन कतिहरू कुरुकार्थ इहेर्न्ड । शतस्त्र असुतानी न इंडेर्स निमगर्भाग इंडर इंडिस कांक्रस ना कविर्क भारितम भाषिक-छथ-भाषना वस ना ।

😬 निषया विभिन्छि छ गिर्नाष्ट्रांत्र 🗷 (महिनः। तमारुकः तरभाद्रशाका शतः मृष्णु। निवर्द्धाः ॥" । ''(म नाकि भोड़ामि निक्कम अथना अक्षिम हित्त्रत আভাবে নিলুহার হয় কুর্যাবর ইন্দ্রিগগুলি শিশ্পল **২ট**য়া-পড়ে বিলীন প্রায় হয**় কিন্তু ভা**চয়ত বিষয়াত্ব-লংগের কিছুমাত্র ক্ষর হইতে পারে না। আরে ইংহার। আর কে দেখিতে পান ঠাহাদের অসুরাগের সাহত ইন্দ্রিণাদির প্রতিসংহার হয়, সত্তর পীড়াদি জনিত है। खुय रेगांभेना दकान कार्र्यात नदृष्ट, ष्ययुतारंगत महिल মে ই'ব্রুয়ের লয় হয় ভাহাই উপ্সতির চিহু।" অনেকে शाम करतम (य निषया श्रुतांशरक मा मध्ये कतिरल श्चरभत शरथ निष्ठनम कता यात्र ना। रमहे कंट्रा सर्वोड 🤞 भगरक गांना 🕰 कांत्र शीएन कांत्रमा शास्क्रमा शहरू মলি প্রথ ভোগা হয়, গুবুং শাহং মধ্যতি ভাব সভ দিন প্রাকিবে, ভোগা-ভোগী সম্মন্ত জাতি থাকিবে জাত इडेर्स अयुतालभूना इडेया भगनास्त्रत छ। श्री इन्यः। कामक्रव वर्षाभाव नस किन छए थई शामी वर्षेत्र ভেদে শ অধুরাধের জিন শ্রেণী ইইয়াছে এবং কছনটো ত্তপ তিৰ প্ৰকাৰের। ক্রিম্ন সদি কেচ প্রথময়—আলক 📔 কারণ এখানে ভোগা তোগা সক্ষ নাই, মাহ। ভোগা । মাসঞ্জ গণতে পার। এই সাম্প্রস্থাক। গাঁচ শ্রা—

াহাই তে গী-এক-লবের ভানন্দ্র। বিচার- কর গালোচমা দেখাগা নতে, যুক্তি-পৃদ্ধিব জ পথে খ্ৰেশ ক্ষিকাৰ নাই। সুত্রাণ গাঁচা বিচারী ওাহা অন্তর্গ অধীন বিষ্ণ ি ভূমি আল্লান্তরালী না **२हें(त** भी द्वा छार्यत नाती कहिए । शह गा_{री} हाहै। মারিক তথা আয়াস কামা টেলায় হার কিন্দান হয়, উহাতে আছতিদ্ধবিষ্ট্ৰী বৃদ্ধি প্ৰশন্ত প্ৰাধি চয়, উহ্। অপাধিব, জড় জলতের— লড়/০: ০র ফটীত। " মাধিক ন্তৰ চিত্ত প্ৰসাদেশন, নিজ্ঞিক ন্তৰ্জানিনীক-तिक्षणभग्न, **भादिक छ**ा ५५४ ए ३५५ छन्। पनी निर्मा, ताक भिक छथ डेडांन जित्रश्र-एक नाक्ना, कल्य-(क्रमभूनी স্বাদেশ প্লাবিনী ব্যাস্ফীতা অবাহিনী; সাহিক হণ ত্রত নিয়ম প্রায়ণা, সিদ্ধি সাধন পুতা, ভিতাত্তা ভক্তিমণী ভৈরবী; রাজ'সক তথ বিলাসিন্টনিটী: ৩টট ত্র-এক সর্বের জর্, অপর নরকের ভ্রশ, এ♥ ত্তব অনস্তকাল ব্যাপী, অন্য ক্ষণস্তায়ী । ভূঃখাতুসঙ্গিক । লোকে আমোদে উগাত হইয়া হাঁনে, আবার কাৃ চুকু দিলেও হাঁদো। সাজিক হুণ আনন্দ বিফালের মূত্হাসা ধ্বনি, রাজ্সিক ত্থ কাতুকুতু জন্য বিকট শুক হে! (ই1 শক্ব ।

পৃন্ধাই বলিয়াছি যে আধুনিক অনেক পণ্ডিত मक्त्रं --मामक्षम् एक छ्यं निव्धा थारकन्। अनः अहे মত পরিপুরির দল ভামত্রবদ গীতাকেও ধরা পাক্ডা করা হট্যাতে চামেটাম্টি বুঝিতে হট্লে "স্মেঞ্চ্য " कथान। है:ताकी "Equilibrium" नदमत असूत्राम মাত্র। অর্থ হ নাহার। "সামপ্রসা" শক্ত আদক ব্যবহার। করেন ঠাহার। দুছা বিলাতী ভাবেই প্রয়োগ করিয়া। আনুরাগযুক্ত চইকে, চইকে। জবে পারেকেদে এ বিষয়। পাকেন। যানে এইটি সমান ক্ষতিশালী, সমবেগসম্পন্ন র্বাঞ্জ ক আলেক করে, কথন উহালের বেগা যেন क्रमांत महाति, स्थात कर विलीन श्रेशः भाषा । हेर्। हे মধ হয়েন তাহ। इक्टल जिल्लि अञ्चलाभूना इक्टियन । " Equilibrand" अ०%।, यूनि वरिषट १६ ७ व्हार क्टि

নিজ্জিল মৰছ।। হণ এওছ ভিগমা, অনুরাগদাণেক, ভোগা ৰবছা ; হুত্রাং হুধ্যুত্র করিতে হুটলে আত্মায় কোন এক রাত্র পারচালনা আবশ্যক। গীতাতেই ভগবাদ যে তিন একার হথের কথা বলিয়াছেন ভাহারা সকলেইত অফুভাব্য e সাধ্য। এখন Equilibrium चनचा कति । इहेरन चापारनुतं निष्किश २३८७ हुईरा। ডাহ। অসম্ভব; গভালন শরীরী পাকিব, যভাদন রক্ত মাংসের অধীন খারিব; ততদিন শারীরিক ভিন ২ विभागे अकुडित मकि मक्ल, किया कतिए थाकित। জড় লগতে জিয়া শুনাত। অস্বাভাবিক। অপারঞ্চ শুধ শতুরাপ দাধ্য ব্যাপার হুত্রাং দামপ্রতা কোপায় : এত-षाভীত ঠিক সামপ্রদা কথনও হয় না। শক্তি থাকিলেই कितानीन उति शक्ति भात भशक्ति बहे भावता। वर्षा ए सम नार छत् जना अक मकि अयुक्त इरेशा-ছিল তাহা বাধাপ্রাপ্ত হইলেও তাহার Energy তেজ नके इस ना । गथन था कि रमाभी मिकि कौ भवल इहेरन, ,ভখনই উহা ফুটিয়া উঠিবে। এবং পলে পলেও নিজ গতি धकार्मत अभ मराध्ये पर्करत । श्रीवरी मृश्यात চতুম্পার্খে বুরিতেছে। শর্থাৎ গে শক্তির দারা ভূষওল সমঁরেপায় অনন্ত আকাশ পথে বিক্লিপ্ত হইয়াছিল ভাতা সুর্য্যের আকর্ষণী শক্তি দারা বাধিত হওয়ায় ঋজু পথ তা।গ করিয়া উহা এদাক্ষণ করিতে লাগিল। অশ্ कथात्र मञ्ज-क्रिया पुरे मिलत शाचारकत Resultant কল ক্রিয়া মাজে। কেন্না সূর্যোর আকর্ষণী শক্তি ভ আদি শক্তি সমবেগদম্পন্ন হওয়াতে পুথিবী সৃষ্যাকে পাতত হইল না এবং খনন্ত আকাশ-পথেও ছুটিল না। াবশ্বস্প্তির ব্যবস্থাই এই, শক্তির ঘাত প্রতিগাতে ক্রিয়া-পুরত। উৎপাদন হয় না, একটা মাঝামাঝি ফল হয় । ৰাগানে উলু বন ও গোলাপ গাছ ছুই থাকিলে ভাল श्लालाभ कू. छेना, विस्तु द्रक भूळाण्ना हत्र ना । भक्ता-স্তরে বিষয়াসুরাগ হইতে লাগোসুরাগ অধিক তীত্র ও কাবল ; কাম হইতে ভক্তি অত্যন্ত শক্তি শালিনী।

যাহা ৰাহ্যবস্থার অপেক। কৰে, শনীরের অপেক। করে जनः निम्धाभीन, छाद्यात द्वश मृतीत है। छत्य जनशनिमस्यद्र অবস্থাদারা সংযক্ত হয়, 🖓 স্থ আলোজুরাণ বিষয়-शतिकाशी, प्रेश श्राधीन । अकारत कार्य करत कार्ड উহার বেগ শত্তাৰে বৰ্দ্ধি হ হ্র। ত্রি জ্বারীর সৌক্র্রো মুশ্ধ হও, ভোমাকে ভাছাৰ মন যোগাইয়া চলিছে হটবে, ভোষার শরীরের স্বল্ভ। তুর্বল্ভান্গায়ী ভাহার প্রতি ভোমার প্রণয় ক্রেমনি গাঢ় স্থানা শুক হটবে, কিন্তু আন্নান্নানী ভগ্ৰদভলিপ্রায়ণ হ● टिंगाटक काहात अशास्त्राप केतिए हरेट ना. কাহারও মন গোগাইতে হইবে না, তু'ম নিজের ভাবে নিজে মত থাকিবে। এট কয়ই ভক্তি, খীতি, ভাগামু-ताग जानित अकान . इहेटन विमश द्वांत मृद्र गाया উহাদের পরাক্ষ্য স্বীকার করিতে,ই হয়। কাণে কাথেই मामञ्जमा थाएक ना। चामता छरभत एव विद्राप्त किलाम ভাছাতে সামপ্লগাকে হুপ বাললে চিল্লিব লাডাংকে 🗨 ত্ৰ বলাচলে। বাস্তবিক শামঞ্চা ফাঁক। কথা—কণার কণা মাত্র। তবে ভোক্তা ও শর্করা এক ইইলে, ভুগী ও छत्र गिलित जानमञ्जार्थी चानमगर हहेता, त्याहर आश्चार इहेटल कि इस निलाक शाति ना ;

कामक्रम कामांशा।

(পুর্ব্ধান্তর্তি)

মানের মনোহর মন্দির বিনিথিতি হইলা শেলে কুচ্ বিহারের রিজিখার্য হইলে মানের বিবিধাণিচারে পূজা চলিছে লাগিল ও চিব দিন পূজা চালবাৰ জ্ঞ রুজি ব্যেই।পিতে হইল। ক্রমণং মধ্যে মধ্যে বিদ্যাপক সঞ্জানীগণ পাঁঠ স্থান দর্শনে আধিতে লাগিলেন। কোন কোন সাধক গভীব নিশীপে সার পাঁঠ পার্মে মন্ত্র সাধন ও পূজাদি করিছে বসিয়া বিপল বিভাটে পাছ্যাছিলেন। এপন্দ যে সকল মালাকর বিদামান আছে, পাহাদের মধ্য এক জনের পূকা পুরুষ সিদ্ধ সাধক গণের উত্তর সাধকতা করিছে। একবার একজন সাধক নাকি সম্ভ আয়োজন করিছা মার পূজায় প্রবৃত্ত হইয়াছিল, কি জানি কোন অপবাধে ভাহার সাধের সাধনা কৈনে অলেশ কিল্লাশি দেখা দিল। খনছোর সোধনালার জায় কি বেন দৈবী মায়া জাল আকাশ মণ্ডল আছের করিয়া লইল, বিহাদ্বিকাশবং অটুহাতে স্থান প্রিপুর্ণ হইল। বিকট হুলারে

প্রথমগুল ভ্যানক ভইয়া ট্ঠিল, বিৰ্গন। বিক্টি দশনা কভে যে লগন। । কুমানী বেশে মুঠ্মিনী ভইরা বাংলার ভালে ভালে প্রতি নির্দেশ্ভ क्रांत्यत्र गीता पृष्टे ठठेण, जाहा वता गाम मो । पृकास त्य छाण निवास कता ! क्ट्रेग्नाहिल, क्ष्टात मन्डक्टे। लहुंभा अल्पन्छ। व्यश्न कदमाला (मन लुल्याः : পুশিয়া ক্রীড়া কাবলে লাগিল : সাধিক ভাত ও চাকিত হতলেন ও ডাওর শাধককে ছালার ও বলা স্থানে স্থাপন কবিছে বলিবেনী : উত্তর সংদক ৰশিল, এই ভাকিনী যোগিনীগণের গীলাকোতে আমাম অন্তাসর হ*চাক* পারিক ন । মহালাযার সাধাদক বিলোচিত সাধক নিজাসন ভাগিও कतिया न्यमन व्यस्त ७। छ। ४ लिट्ड प्रतिट्वन व्यस्ति (यन ८क कॅल्ड्रास्क . 🗟% পথে উচ্চিয়া ব্ৰহ্মপুত্ৰাভিমূপে কোলায় বইয়া গ্ৰেল, ভাতার সুনা-চাব আবি পান্যা গেলুনা। যাঁহারা মায়ের ঐকপ সাধনা করি।। পাকেন বাণিণিভ আছেন, তীহার, ভিন্ন এই ঘটনাটিৰ স্থাভায় বিশ্বাস কারতে হ্রতে। অনেকৈর ভ্রসা হটকে না।

লোকমুণে ভানিতে পাওয়া ধায় যে অস্বাচীর সময় যখন পুলিবী রক্ষণা হয়েন, ভগন মুদ্রানীঠ ৹ইে ে নাকি ক্ষিক দারার ভাষে জবম্য ভারতে নির্মান তইকে পাকে। স্থামি ক্যাস্থাবাদী রাজ্ঞা গণ্কে ইতার অব্য জিজা্সা করিয়া ছিলাম ১জী:হাৰা ব'লন, ধ্যু আমৰ: পিতৃ পিডাংহা भूरच । हेत्रण क्रिया का मिरक्षि १०८य के उस ताका महाभ्यक हेड। शर्तीका শ্বিশার অভ একবার অনুশ্রিটিতে পীঠভানে ভ্লান্ত লাখিনা দিয়া क्रियाम । देवा तक्कवर्ग इस कि ना वेद्यं वे (मिश्रवात अपन्न कें।वाव देवणाह । अंश्वरका अविश्वाहित । ताका ,यिमिन नञ्जवका करत्रन , स्टेमिन ताबिट ० नोकाच्यक्ष (मिश्रित्वनुपा दिवारण्डुक्त नागा कि विदेक च्यापात छो काक শীলা কিছুই প্ৰশাস কৰিব না, ভূমি নাতুণ্নীক্ষা প্ৰেৰুত ত্টয়া ভালা করে নাই, এরপে জারে করিও না ভূমি জরু, ্ভাসার বঞ্জি বংল िच्च श्रुक्ता कतिहरू च्यात एक इंग्लिटिक शांत सां। कराक सिर्वाद रुक्ति स् ्र असम करतम सी। বানি অবস্তম গাকে। পাগাণত অস্বাদীর সময় বক্তবর্গ গট্টবন্ধ বানি निष ठेट्रैन ।

আৰু একটি আশ্চৰ্যা কিম্বদস্তী প্ৰচলিত আছে ৷ বাহ্মণকেন্দ (मात्र मिलात हेर्द्र । त शामान-मृद्धि । घ'एइ) श्वम अन्त हिलान । किनि । মার নাট মন্দিরে প্রতি নিশিতে বসিয়া বাদা বাদাটতভন ও স্থাপুর স্বরে মারের প্রণান করিছেন, মাও নগকি ভক্তবাঞ্চকরণভা, ভাই ভক্তিরদে মাভোরারা—্মা বলিতে জ্ঞান হারা ভক্তকে কুভার্থ করিবার অভ নানারছাল হাঞ্ ও বিচিতা বসলে বিভূষিত। মা আমার হাত স্থী

নুত্য কৈবিভেন। স্পিধের স্থাৰ অস্কলন্ত প্রিকেট স্থাছাত মাৰাৰ कस्माञ्चारमः जाता भारत क्षण भनी, भारतानि ल्लीका कविराण्डाक, राज्य में बात कतक तरक (शतिरक्षात्र), वासूतिहरूरहरू, कीतश क्या केर्रिन ভূমৰণ গলে বাহিছেছে, আজ আমার সেই, নুধকাণী মা কজেব প্রেণ ভারে আপ্তিট নাচিশেছেন। আৰু প্রাঞ্ধা (জামারট বাদ। প্র ∴্য বাংদার দ্রণির সংক্ষ্⊅াংধর ক্লুক্ষারক বৃন্ধ বৃদ্ধিভ প্রণিবিন্দর নুপ্রধান লিখা মিশিষাছিল। 🕠

> " এकनाव नाहरण भूषा একবার ভেষ্কি কেম্কি কেম্কিকের লাচ্চ্যে ছ্রাম্ 🚕 বিখকপ কোৰে কুমাবী সেকে একবার নাচলো আমা ওমা এলেটেকদে আলু৹ালুবেশে একবার নাচলো হামো⊹

मा माहिर हम, वाहिरवन्न इत्तरक माहाता मधान थाकिया छन्छि, ভাষানা ব্ৰাহ্মণেৰ বাদাছাড়া এই বিচিত্ৰ নুপুৰ ধ্বৰি শুনিছে পাইছ 🦠 উক্তপাঞ্জা রান্ধণকে মা'ন অ'বিভাব ও লাচেন কথ্য ক্রিক্সোমা ক্রিকেন। त कथा काशास्त्र व विश्व मा जाकर्वत लाकि (हेन्नल मान्यक व्यक्तिन) ছিল রাজার অন্থরেটের বাহ্মণ বিব্রুত, চলে বলিল উত্তী আপানত ভো কৌশলে পরীকা করিতে পারেন। রাজা মন্দিরন্বারে একটি কুঞ ভিন্ন করিয়া রাত্রিকে দেপিতে লাগিলেন। দলিয়া কুলার্থ ইউলেন বটে কিন্তু ম। মধন কোপক্ষায়িত ,নতে চক্ষরে পুক্তি বলিলেন, ব্রুন। অ'ছ চউলে শোমার বংশের কেনে বাকি আনব অনুসায় এখান আনুসিকে পাৰিৰে না, আংসিংল বংশ এলাগতত বা রাজণ পতি হতাক ভূমিত আমাৰ পকাৰ অনুতা দেখিকে প্ৰিৰেনা . শ জগন উভ্যেট স্তান্তিৰ অপাত্তে অপথিব রোপণৰং কিঞ্জিণ কোমার দৃষ্ট ১ইবে সাজে ⊧বংকা দীক ও সূত্ৰং মৃথিক'∙ ১ইবেনন। পুনঃ সংচৰণ তইষা নিজনীয়ক ভাহাই ্দ্রিষা রুঙার হুইলেন আব প্রশিক্ত করিকেন না । সেই বিজ্বাধ্য জ্ঞা অনুদোচনা করিকে করিকে উভ্রেই চকিয়া প্রেন সময় চইকে অধুৰাচীর কিন দিন নিভা পুল র অধিকানী মিনি, কিন । সেই অৰ্ধি কুচবিহাবের রাজবংশের কেই ঝীমা চ্যে।নী লীইদর্শন কপ্র

গায়ের মলিবের বাবস্থাপক ছই, জন অবিক্লিক লেকে আছেন। পেট ফানে রক্ষা করিন। একটোন সংগীলন । অজন্ম " কার্মন করিলে। মাংমের প্রার প্রেই ধানীশ্র যে ক্টেড্ডটিয়া পাকেন, উক্ত কর্মচেরী। আহা চচতেই একটু একটু ভিডিয়া দিয়া লাকেন। লোকেন বিশ্বাস ছিল জাইর বার্শিক অংশ পাইয়া লাকেন। কুমারী ও আঙ্গালকেক এই যে জয়া বিজয়া পরিধেনিত ভগ্রতীর এই রক্তবন্ধ মন্ত/ক উন্দীশ িষাত্রীগণ যে বন্ধালকাৰ বা অর্থাদি দান ক্রেন্ডাই। বর্ষকাল স্কিড বাঁধিয়া শে কাৰ্য্যে যাত্ৰা কৰিবে, মেই কাৰ্য্যই জয়, সেহ কাৰ্যাই । গাকে, বংস্বাস্তে সেই সমস্ত, ভগায় গুকুৰাৰ জুমাৰী ও আহ্মা আ্লাডেই সকল গুলিকে আগ কৰিল দেশন হয়। এই সহাবস্থাপাক্ষেত্তিক প্রিল কেই প্রিল না একণ হইছে পায় না। অঞ্চল্প স্থানের ভীর্ব-বাক্ষণ শণ অংশকা এথানকার পাতাগণ কিছু ছাল মানুষ বলিষা বে!গ হইল

> কামাথা। শৈঁ। শিপরের কোন কোন হ।নে কালী, সে:ড্শী ज्वरनचती, रेजदर्गी, हिन्नमछ। धुमाव ी, वधना, माछनो कमना, जानितछ मित आहि । देशांत मेर्या (कान २ मिनत बनाकीर्ग ७ छलारव

इडेक উঠির। তে: ভুবরেখনীর মন্দির্টি মার্কাচে শিপাব সংক্রিক ক্সানটি শণিকাৰ হ' প্ৰদৃষ্য । এই শিশুৰে ৰসিষ্কারক্ষপুত্ত ন্ধেৰ ও বঁনকেইব रेल्लातः कित (শাঙা দলিতে অকি অংক্রাণ হয়। বৈশ্যমণে র তলে ভলে ्मीकाजी कहरूक लागानामाण्य भ्याच त्य तालाच बाह्य उहे भागत ভট্তে সেই প্রান্ত টি শুলুরেপারত ধানীকি হয়। বিলম্ভর ভারে ছানে পাহাটীনণ চারে অন্বাদ কবিয়াছে দুই হট্যা গাকে। ভুব নখনী পাৰাড় হইছে পৌৰাটি অনি প্ৰশ্বাষ ৷ মাজুবনেশ্বীৰ মন্দিলে ≨িষ্ঠানদা ব্ৰহ্ম হী নায়ে একজন সাধিক বীয়ে কৰেন। উট্চার স্থিত প্ৰশ্লী অনুষ্টুলাৱিনী চুলোকটি ভক্তিমান চুড্ৰমত স্থাৰ্ক্তালাণে चाक्ताविक रहेनाम ू किनि एकान शाक्षत में मकारी वहेरत्व कार्यो আন্দি ভীর্থ প্রাটন পুরুক অবংশ বীদাধন মিহিন্থ রা মান্ত জীবন मार्थक कतिवाद अष्ट मिलिश विद्यातिनी मान्यत करे विकास निरक्त राम আ। এর এছণ কবিষাছেন। উচাকে আংমি চাফিকে চাফিকে কিলাসা ক্ৰিলংম, আপুনি এই বিজন বাংস এক কী গাকেন, আপুনাৰ ভয় प्राह्म अप्रता १ कि. कि. के इसे क विदयन काश्चिम य मार्ट्यन कारण धूमाडेशा ৰাকি। ছারিমী অভদা, ভার কি আৰার কর আছে। মনের মত উত্তর ও নির। বড় আ, হল। গ হঠল । প করিছে কাম। ব্যাকারণ বিশেষ প্রদা क्षित्रा शादक।

এক দিল কামাধাবাসী রাজ্যণা আসালে কিজাল কবিলেন যে ঞ্জানে স্থানক প্রিক্ষেত্রও সমাগ্র হইর পাকে। ইংচারা কচ কেচ विश्वाभिष्टमांकी इहेर्गय ध्रभारत मरख माध्य (काकत कांग्या शास्कत আপনি সেরণ করিবেম না কেন 📍 এপানে বে মংস্যাণি থাইতে হয়: चाक्रि डाहाटड ७३ माज नः ऋल উदत निगाम (य. यनि माध्यत श्रमान ब्लिया (कास अअभा ९ (अका कति, छ। हार एक। स काम (साय हरा, न करते कि 🖥 अधारमत रुग ट्रिक करी श्रमानि नियनिक स्टेश्म । भारम बारम द्वि भाष्ट्रण मध्यम दुक्ति धाम अम्रत्वेक त्रविगारक কটি সংহলান শিষ্কে নিজ ভিক্তি বংগ অনুভ করিণ ভাজন ক[ি]শা छित्सन, निरम्ब मांकि छै।छात्। मन्नानिक व्यानावः किन्नु छ।नना জাসাল কানিয়া পাটালাও সংসা নাংসাদিও শক্তিই মানাদের শ**ি**রে ক্ষিয়া করে, প্রসাদের পান্ধি অনুস্কৃতিনী ওচনা কিনা করে কণ্ড राभक । कृषि .कः सिर्यमन काउन हे खुनारक अभावनिया गरण गर्थ क ቀিলিধাপান কৰ্ কৰে মাভাগ হও কন্ত কই পহল(দেৱ হায় বিষ্⇔া অধুত হুইল না। ভাই ধলি, যত দিন প্লাদেৱ ভান কৰিয়া মংস্থাংব बाद्धि व किरन, उर प्रिम शामाणी रिल्हा माध्य त्यावन त्य गिर्माम উভা আমার সংস্কার নাউ। ভাগে মাধ্যের ভাষিকী পুরুত্তি বৈধ অবিকারী বিলি, বিশ্লি সিদ্ধি সাধানর জন্ম গ্রান্ত প্রকর্ণায়ুক্ত কার্য্য করিবে আৰ্থি ভাছ। দোষাবৃত মনে কণি না। কিন্তু |আনাধিকাবে পুঞার काल कतिया मध्य माश्य मनापि (मध्य कतितीन भाष्ट्रकश्रक इटेंट्र द्य । (यमन क्यां-मानाम कार्या कतिर्फ (शरम क्यांत्रत कानिमा

আকে লানিবৰ, একণ ভয় কুনিলৈ চবল লা, ফেটকপ যিলি "ময়ৰণ সাধ্যেষস্থা শ্রীবস্থাব্য ব্যাহত " বিশ্চয় অংশিয়া ভাগৰতীর সাক্ষাত্রাক। গালেব জজ বিধি পুরাত সাধনা করি🔑 গংকন, উচিতেক জন্ধ শাল্পের তথ বিদি কাষ। অবশ্ৰহ কৰিতে হতৰে সভা কিন্তু অ মি ছে। সিদ্ধি ল ধনলো জাক প্ৰকাৰণা এখানে অংসি নাই বিশেষ্তঃ তাথিকী নীক্ষাল্পৰ ও আন্দিনহি কৰে নিন্দিনৰ জল মাকে দৰ্শন কৰিছে অসিধানিক নিধমকে প্ৰিভাগি কবিব কেন। মাকে দশন করিবাব গম্পা প্রির কানেট অংসিছে, স্গিতে ও পা্কিতে হয়, আমি শাংশ্রের বৰপাৰিক নিষ্য প্ৰিছালে কবিৰ কেন্। আন্ম ভো ভুচ্ছাভিছুচ্ছ ক্টিন্তুক্টিয়ন্ন স্বেক্ত্রেপ্ত নহাভ্যা মহর্ষি বাধ্য মারে সাক্ষ্রের मध करठात उल्हा कतिमाहित्सम एयम मह श्रम्ध रेमननामी श्राह्म শীহাকে যভাগ্নের পশারণাল পুর্বাধ ক্রেছে।চাবে বর ইটায় কপঞ্জা किटिक विविधाक्तिया विभिन्ने विषयपार्थ किया लग्, काभीराह महा তেইলে ছণায় প্রশিক্তাং দি অস্ত যেমন পাপকার্ম কংব না কিন্তু কাশীদে প্রতিরাখ পুরাক অভার দেহ ভয়াগু করিলে এই পাপ বঞ্জেলেশবং চইছ। দাঁড়িয়ে, গুমইরূপ সংধ্নাধ সিদ্ধ হঠকে সাধন-কাল্ডড় রাপেঞ্চির ্রজিলাচার আলালর অপরাধে কোন "পাতি হয় লা বুটে, কিন্তু যদি সাধনের অন্ত কোন ক্রটি বশক্ত মা'র সাক্ষাকার রূপ প্রমা চিক্লি লাকে ব্যক্তিক হট, ওয়ুৰ মেন্ডাচার ফলা পাদক বাশি প্রলোকে অভি श्रीफानामक हटेया माँ छाटेरत । किन्द्र यकान्तारत लाकिरत मिक्र मा **হুটলেও ম্য়ণান্তে এই প**ৰিত্ৰ!চার জনিক অবশ্ৰস্থানী विकार कहेव ना। व्याव एक्टिकांकात विकास यकि मीखड शावश यात्र, ভগতি ভাষা শক্ষান্যকেশ। কিন্তু ভ্রমতারে হিজি বিলম্পাধা। ভইলেও উठा नि:मःभग ও मक्ष भूगा **এ खन। अत्रशावनप्र**ीय। विश्वनाकी । লপ্সহল হইবেও নির্বিত্ন দূর পথ দিখাই বুনিমান্ বাক্তি শুমন ल लिल्लम् । ६ वन वल्पि वलिएसम्, मा मीम भगाम्या । स्तान भएक वाम কবিনা বুনি দৰ্শন লাভ আবে নাই দাৰ আগমি মেচচাচাৰে প্ৰিক্ বান্ধাণ শরীল ভাগবিদ্ধ করিব না। বশিষ্ঠের জার বাজিক পুরাভূমি শাৰতে যে কাৰ্য্য কৰিতে গাছস কৰেন নাই আমি ভাছা কৰিব কোন মাত্রের মদি জালিকাম আমার সিদ্ধি এট তিন দিনেট নিশ্চর হটবে তবে এতাত্ব কবিভাষ, কিন্তু ভাতার কোমাশা নাই। মাজাগার প্রবেধ প্রভিষ্য, বিভিন্ন ক্রিয়া আম্বাকে ব্যর্প বিধান ক্রিয়ের অবি শংগ্র শিংলাগাল কবিব: বান্ধণণ আমার উত্তর, শুনিষা शहर्म-र्तिहरू वैश्विद्यान, या आधिनाच वहे निर्धा आवि व वृद्धि ककन ।

কাজৰ লিখেৰ আন্তৰ্গ অন্তৰ্গে মাৰে মন্ত্ৰি সমীৰে মাথেৰ তথ্য কৰাৰ বাছতি বৈজ্ঞা কৰিছা এপালিনে শৈলানিখন কৰাজ কৌহানীকৈ অবাহনৰ কৰিলামান্ত জ্থাৰ জাবালীত দশন ৰ ভ্ৰাজনৰ ভাল মাহোদনগাৰেৰ অন্তৰ্গীৰে ভাল, দিন সনাতন ধৰ্ম সম্মীয় বস্তুত্ব কৰিয়া বন্ধিভাশ্ৰম ক্ষানে স্বিধান কৰিলান '

क्रमणः।

रूषा गउरगान ।

व्याक्ष कात्र कावरकत नवा भव्यानारयन नवा कि पृष्टे बहेबी भीटक। অনেকেই মুদ্রিত পুরা । বির ২০৮ পাত: পাঠ করিয়া স্বীয় স্বীয় সভ अकारण निवा वृद्धिन भनिष्ठेश पिट्ड क्विड कनिट इन् गा । आवित्र व्यक्तिक त्मरणत करू भरतामणात्वत भन्नामक भग योग योग यार्थ मिकि **बना किना विवाद हम १ कि ना क्रिक्ट हम १ शरतत निमायाम्हे** একমাত্র অবশ্যন। নিজের কু ৩ কার্গের কল কু ৩ দুর গাঁড়ার ভাহার अधिक लक्षा ना करिया व्यवनात क्रुड कार्यात कलाकरलत विष्टुत स्मार्या त्ताल कृतिया लाटकन। वटल, ७८०, ८कोनटन हर्गाटनत अस्थ्रनायु मरधा" च्यापन व्यापन (#8३) (१४। हम्राजन प्रभारक नाविका वाष्यात विकास কর ৩: প্র**িধা করাই এক** মাত্র ডক্ষেত ভর্যা দ**ি**ড়িছিলছে। এমত স্থলে সময় সময় একতা ভিন্ন কিছুচেত দেশের ভরাত সাধন হইবার নয় এই ৰালগা যে চীৎকার করিয়া লাকেন ভাছা । কবল ভান মাত্র। যে ছেতু তীহারা অধংহ একভার মৃত্র কুঠারাবাত করিতে উদাভ হইয়াছেন । हेशाटक (भाषत अञ्चल माधन इत्रमा भूरत थाक दशः व्यापन व्यापन সম্প্রদায় মধ্যে একটা ভূমুল বাগ্ৰীন ওওা উপাস্তত হইয়া ক ০ক সমধ্য ঐক্তেই বুলা কাটিয়ৢ যাহতেছে এজুনা শৃশাদক মহোদয় গণের ও স্থদ আছ-ণের গমাপে আমার বিনীও ভাবে প্রাথনা যে অন্যের ৫৩কাথ্যে কুট না श्रमित्रा छ । भाषाद्राभ चा अभागता विठाउँत भात भारत्कारभत जगतरे 🐠 ও করতঃ নিত্র ভাবে নিজানিজ মনোগঁত ভাব সক্ষ প্রকাশ করিছে থাকুন। গাঠকবর্গ লাভ অর সময়ের মধ্যেছ লেখক বুলের স্মাটানভা 🛥 দুরদশীভায় পারচয় পাহৰেন। পরমানি পূর্ণভক ব। বাগ্বিতভার ব্যাবঞ্চ কি। বিবেচনা করিয়া দেখুন এই সনাচন হিন্দু ধন্মের আলোচনা ও দ্বর বিশ্যের মানাংসা চারিযুগ ধবিষা চলিয়া আসিতেছে কিল আ প্ৰাপ্ত ন্ধান্মত নিক্ষাপ্ত হুইয়াছে কি । ইত্বে বুলিয়াও সম্ভবেনী। এবে যিনি ই.হার উপাসনা করিতেছেন ুাঙান ভাইাকেই মন লাণ অপন করতঃ আমিত্ব প্রিত্যাণে একমাত্র পূর্ণ এক আনে চিত্ত श्वित कांत्ररण भारतिरंग भिक्ष भरनात्रण श्रेरण शानिर्यन, कांत्रण "विचारित्र মিলামে বয় ড কে বত্দুর "। আল কাল যে সে সংবাদ-পতিকাভেছ भाष । श्रेचत विनश्न वार्दिना त्मिनिट » পाख्या याय । व्यक्त वराष्ट्रत खन उ मनःगात विखात बार्या, कना व्यवित ७। शतर निन्तावार्य नेव खब भौतपूर्व पृष्ट इसा खरः मत्त्र मत्त्र माम दे चोत्र द्या याकारत कर्म मसात्त्र আফটিমার্কার কার্যাপ্রও মুদ্রিভ হয়। এ সকল কি বাগেরি । এই गना अने कारी भन्न पहल कि निम नटर, ताभी (कभीत गम नटर (र रही क्रणा जामक बामक इंट्रलंड वा क्रांक वृक्ति कि । এट श सामाना विषय न(र-भाषा हरा गर्या आलाहना क्या विलय वृक्षिमान । अध्यक्ष ভাজনান্ত জ্ঞানবান্ধোকের কাগ্য। ভাই ! ভোমার আমার মত ल्गारकत काना गत्र, रिक्ट्र भल्कत खेलानेंगी जानांगी । अक जाकात नग्रं

बहे छैनामना नक अनात। यणा, देलन, मानमाडा, भाक, गरेवकन ल रैगोत्र। এই शक शकात हाड़ां ९ व्यन्तटक निवाकात उदात्रत हेशामना 🧟 করিয়া গাকেন। মৃশক্ষা ইহার মধ্যে যাহা মহোল সলে লাগিয়াতে ও अक कर्क् क छेशनिष्ठे श्रृतारहन, जिनि रम्हे आनामीरछ निल छेशागा-मित्र कर्छन। कतिशा थारकन। त्कृ द। निताक्र व खक्त छेलामना রুক্রিয়াথাকেন। এমত স্থবে ভূমি যদি কোনটারক এবেল করিয়া অনাটাকে কিছুই নয় এই গ্রপু উক্তি করিয়া নে:মারোণ করিবার চেটা কর ভাষা হইলেই ভূমুল বিভগু উপস্থিত হচবে। আমরা মদি ভগবান বেদবাদে কি জীবসুক্ত ওকদেব যোগী দাঞ্চৰতা প্ৰভৃতি মহাঝ।পণের সহিত তুলনায় কিঞ্জি ভাত যোগ্য হততে পারিভাম ভাছা হছলেও ২০০টা বিধয় গছুয়া কিছু কাল ভক্ক বিভক্ক কাবলে চলিও। योशिका व्याकीतन (कान् भक्ती शताः 🛎 🥱 (कान् . ५४६ वा शक्त ७८० প্রণী, এতাবং বিচারার্থ ঈম্বরাংশে অব্বতীর্ণ হ্ছয়া পূর্ণ রক্ষা অব্যার লালাগ পুণ ঈশর্ম প্রাকাশে স্কীশর-পদ-বাচ্য হচ্যা ভারত্যক আৰম্ভ कतिया भिया छिन, डाहरित ५ (ठा धकते। (मध्य गिषा छ । वा गकरित्य भावक कोत्रद्र भारतन नाह। गींग भारतर्कन छ। श्राहरू 🔭 🏋 🖼 নানামত কথনই হহত না। যাগ বল বুঝিতে না পারায় এরপ पितारियः, पाक्षा शरः। शरी रहेल पान्यास्य निमा भाग नै। नस **২ই**য়াছি**ল, সেই** পণ্টারহ অনুসরণ করত সকলেই এক বা.কার সাহত সেই একনাত্র পূর্ণ অক্ষেত্রই উপাননাদতে প্রসূত্র স্থা इहें छिने। ध्यवर ७६ निवत्रण ७६० माध्यत्वत्वत्र ८५०००। व वाल प्रति भ००६ সহিত আকার-বাকো আগন লাপন পুরাণাদি দক্ষ সমূতের সংশোধনে পরাঙ্মুণ হই ছেন ন। এবং স্ক্রি। দাস্ক্স্থাত্যুক্ত এক ধানি প্রশ্ রচনাকরিতেও জ্রুটি করিতেন না। তাই। না ক্রেয়া শিন ধাহার উপাস্যদেব, ভিনি তাহারহ বিষয় আবোচনা করতঃ ভাহাকে জনক ভাবিনার সপা গু:।কর ও নব্দ জাবের পরিত্যাত। থকপে বাবি।।•করিয়া বিষাছেন। এবং যে একান শাস্তাদিতে সাম মতের অনুকুলে যে সমুদ্র होक हा जापि (प्राथा (किन) शह अरक्षार के कुर कर का निक निक প্রস্থেব পোরকভায় যথা থানে সার.বশিত কাবগাছেন। সে স্থান আমাদের নায় অল বৃদ্ধি মানবের ধারা ঈশ্বব বিষয়ক মীমাংস। ৰ क्रेचन (१ कि जाक:न शरा दिन कन्ना गर्क नेत्र । भना भन्न क: कना কোন সময় স্বয়ং বিষ্ণু, নহেম্বর ও একা তিন্ত একটন সম্বেভুক্তল একাসনে উপবেশন করতঃ সর্ব সম্মতিক্রমে দেবাদিদেব মহাদৈষ क्कुक देशामा निभरवत भौभारमा इहेबा ७९ दानानी अकर्ग अकतरण অঠারিভ হহয়ছে ৷ আবার সময়তে বিফু স্বাং মীমাংসা করভঃ অন্যক্ষপ উপায়ুনাৰ ভাবের গহিত প্রেম ছাক্ত রূপ ভপাগনারই লেট্ড प्यचारेबार्डन में कावान क्लिट्ड देठलना एवं अक्ल शकात खेलान्नावि खांग क्षिमा/दक्षा क्रिक दशाल नाम-माशाद्यात लवाका । तम्भाहेना

গিনাছেন। কৰিতে ইহাতির জন্য উপাসনাদি কি যোগ জিয়াদি কিছুই চইতৈ পারে না চুহাই পাঙিগর করিয়া গিনাছেন। অতএব গড়িয়া গুনিয়া বৃষিয়া স্থানা ঈশার গিনাজ হওয়া স্থাকটিন, শ্রহা পূর্বাক ক্রিল গুলু দত্ত বস্তুর আরাধনান নিযুক্ত হইয়া কার্য্য করিলে শুভ ক্লুইবে, বুণা গগুণোল ছাড়িয়া দাও।

আবাহন।

इ:शीत (मर्रिम तामतारमध्ये मा जामिर उर्छन, मीन होन कामारगत বেশে দ্যামরা মা দ্যা করিয়া প্রভাগমন করিতেছেন, ভাই দিকে ২ **७**९मटवत नाकना चाकिए ३३६ । िथातित कोन गर्न कृष्टित निरामास বাসিনা এগজননী আসিয়া বিরাজ করিবেন, তাহ ক্ষাণ আণে আনন্দের শংশী উপলিয়া উঠিতেছে। ছোরাশ্ধকার-স্মাঞ্ম গভীর গিরিগুহার বানিয়া দা।নমগ্ল যোগাও বংহার বিছাস্বিকাশ কণেকের জনাও আই এব কারতে পান নাণু সেই চিদ্ধনক।দাধনী মহামার। নিজ ভূবন क्लाक्का कर्मचार्द्ध माताम मिश्र मिश्र श्र आध्यानिक करिया शिक्षिक अध्यत উদার্থে স্থাবেৰ প্রাপ্ত হইবেন তাহ আশার আখাসে আশাচীন ভর্মাণীন জীব সানলে া 🤊 । উঠিয়াছে। নিধিকর সমাধি আশ্রয় করিয়া मध्नालम कतिए। ना ११। । । । या या इ। त माकार ला७ इम ना, (महे bमानक কাপিণী দেৰতা আজ অধ্যানিভাবিণী মাহইয়া দশন দিবেন, ভাই ভূবন শরিয়া শীনন্দের করোগ উঠিতেছে । জাতি ধাহাকে নির্ভূণ ৰণিয়া ৰণ্না ক্ৰিয়াছেন, মন ও ৰাক্য, থাহার গোচরী ভূত হয় না, সেই নিবিকার নিরঞ্জন প্রমায়ক্তিনী মা আৰু গ্রিহীন অনাণের মূণের ণিকে ভাঙাইয়। কয়লা-কল্লভিকা হইয়া অবভীৰ্ণ হইবেন, ভাই আজ मीन घुःशीत घरत २ व्यानत्मन्त शंभाता विशेषा शिवार्छ। निता अटवत व्याद्धाः रहेता कशब्दन्ती वाक कश्मात जमात्रक-मानीय मगरूरक प्रशी काकालत विकित गार्भत मामधी विलाहेत्वन, छाहे कामनात माम व्यागता व्यानत्म व्याह्याना इहेटहि।

এব সা ! এ বোগ- শাক-জবা জীর্গ দেশে আবোগানিগানিনী হইরা
মা ! তুমি এম ! এ উজাড় শালা-প্রান্তরে গলীবনী চিয়ারী শক্তি হইরা
মা ভূমি এম ! এ দাবদহন দক্ষ মক্ত্মে অমৃতের প্রবাহিনী হইরা মা
তুমি এম ! বছ আশার বছ জবগার মা ! ভোমার আবাহন করিছেছি।
অপ্রের গুপুনিকেভনে গুছাইরা ২ কত কণা লুকাইনা রাণিরাছি,
সা ! ভোমার বুলিব। গুংগের কণা, জালাযন্ত্রণার কথা, মর্ম্মানের ক্রা ভোমার আন্তর্ন গুণু হোমার ভালাইব ! সংবংশরে মনাপ্রাণের অস্তরেল বে
চিতাভ্য অনিগ্রেছ, ভালাই ভোগাকে উপহার দিব। কৃত্ত শত অবাজ্ঞ বাজনার আমানের অন্তি গুলুর প্রিয়া পাছতেছে, মা ! ভোমার ভাহাই
নিবেদন ক্রিব। দেবি ! এজগতে ত্ঃখীদের " আপনাণি" ব্রিবার

কেই নাই। দূর হটতে গুংগী ভিগারী দেখিলেই সকলেট ছার্কেশ বন্ধ করিবা দেৱ। জগতের এক কোণে ছাতি—প্রদানিভ—শক্তিনী নাত্তর ভার পজিয়া রহিবাছি। জাই শক্তি সক্রিণী না । ভোনার আপ্রাঞ্জনে মুথ লুকাইয়া প্রাণ ভরিষা এক কার কাঁদিছে চাই। মা । এবার ভোমার পূলার আমাদের ছঃখই কেবল উপকরণ হইকে। নর্নজল ভোমার পাদ্য হইবে, কবির ধারা জোমার চলল কল্পুস হইকে, জংশিও ভোমার ক্রম হইবে, বিলাপ-গাণা ভোমার মন্ধ হইবে। অভি মজ্জা মেল সাংস সম্ভাবে নৈবেদ্য সাজাইয়া মা । ভোমার নিবেদন করিয়া দিব। অলক্ষ উংগাটেও করিয়া মা । ভোমার হেমকুতে নিকেশ করিয়া দিব। অলক্ষ মাজনাক চিভানল দিয়া মা । ভোমার নীরাজনা করিব সা । আমরা জন্ম থী, জুংখ ছাড়া আরু আমাদের ভাতারে কোন স্থল নাধ। ভাই গ্রেম্য সামন্ত্রী সম্ভাবেই মা । ভোমার অক্রম করিব। কিবিধ । ভোমাকে ভাতাতেই পরিত্র হইতে হহবে।

জরবছার আর বাকি কি গুবল নাই, বুদ্ধি নাই, ধনা নাহ, সাম্থা ঐখর্য কিছুই নাই, মধুদাত্বের বাহিরে আবাদ্যা পাছলাভ । কুদাউ কুরুর এক মৃষ্টি অর পাহণে ্যমন চবিতাপ হচলা যায়, মেই কপ কোন রূপে উদরালের সংস্থা কারতে পারিংলত আমর। রুংকুভার্ হইয়া মাই । আর কিছু কামনার বস্ত জগতে বুঁলিয়া পাত না। এফনই पृष्टि मक्षीर्ग हरता विशादक । मार्कन कोवन भरवादम अफ़िशा कीवतनत উচ্চলক্ষ্য ভূলিয়া দিন ২ স্থলত হইতেছি । প্রপদ-এড়নে আ ছাত্ হয়। শ্রীর মন ঝাঝার সংধানতঃ হারাইয়া ধূলিকণার নাহত মিলিয়া गाहराङ्कि। व्याभा नाह, अत्रमा नाह, क्यू कि नाहे, एउन नाह, एसार क मश्तात गड উक्तिभाशीन दह्या कथांऽभटक क्षानिर • क्षि । माणात केंपत দিয়া শত বজ্ঞাতাত ব্যিয়া আহতেছে, বংকাদেশে মহাশূল ভীমবেংশ প্লোণিত হইভেছে, জার্ণাণ অভিক্ষাণ্ময় দেহে আ। টি ধুক্ ধুক্ कतिरिक्ट । आत काँ रिनान वाना नाई मा । अश्विम काल नर्भक्ट-गिकिति। अकराति विश्वति जामिया में । ज्ञास । ज्ञास्त भक्त । अभिन ভুলান মাধুরীমাণা মুখ থানি একবার দেখিয়া লই। ধাধ বিচাইয়া ও ভুবনমোহন প্রতিমা দেখিয়া জুড়াইয়া ধাই। মা ! মারব, ভাষাতে তঃগুলাই। কিন্তু ভোষার উপাসক হইয়া, হেলয়া প্রদায়। বা ভোষার शुक्क इहेशा 9 व्याक (शिखितिक हिन्दू गतिन, हेशा ७ (अ) वह कनक त्य हार्तिनिदक त्रिटिय, छार्राहे छारिया आप कार्षिमा याया गा । स्थात আমাণের বারিয়া লাভ কি । মরণই আমাণের গকে মঞ্লকর । की गन (य कका नगत रहेता के कितारह । এ काना मून कार अत कारह আরে দেখাহতে পারি না। লঙ্কার খুণায় মর্প্রেদনায় অণীর হত্যা উঠिशाधि। मा। এ अवनानमम जीवनकात क्वाहेश नाड । अ जाना-যথুণাপুৰ্ব অমুভূতির অব্যান করিয়া দাও ৷ এ শত সংজ্ঞ বুশ্চিক দংশ্-र । त या जना इट्रेंट अवग्रहि मृत । देशहे आर्थना ।

প্রীর জণয়াণ দেবের মন্দির সংস্কার্থ সহয়ে, আম্বা এক থানি অন্ধান পত্র প্রাপ্ত ইই।। ছি। মন্দিরের গ্রে সমন্ত স্থান সংস্কার-বোলা ভাহা ইহাতে উলিখিত ইইয়াছে। ভিছ লক টাকা সংস্কার কার্যোলাবিব এই রূপ স্থিনীকৃত ইইয়াছে। জগয়াণ দেবের মন্দির হিন্দ্র নির্মনপ্রাের অত্লনীর কীর্ত্তি। এ কীর্ত্তি স্থানী কবিতে ভিন্দুমান্তেরই চেটা করা উচিত। জাতীর গৌরব-সাম্প্রীর শুতি খোর ছনবস্থার দিনেও মনে শান্তি আনিলা দেয়। স্থতরাং শ্বনেশ-হিভালী মাত্রেরই এ সম্বন্ধে সাহাযা করা উচিত। আর বাহার। প্রার্থী, উভিন্ন সংকার্যোলান করিয়া প্রাস্থান করিবার এমন শুভ মুহুর্ত্ত উপেক্ষা করিবেন না। বছই আংহলাদের করা, কি বাঙ্গালি, কি বাঙ্গালি, কি বাঙ্গালী, কি বোঙ্গালী সকলেই যথাশক্তি এ বিষয়ে অর্থ-শাহায্য করিতেছেন। ধর্মাই হিন্দুর শ্রিলন-ক্ষেত্র।

আমরা শুনিরা আহলাদিত হইলাম বেঙ্গল গণগনৈণ্ট ও বোষে গণগনেণ্ট শ্রীযুক্ত অনিনাশ চন্দ্র কবিবর মহাশাদকে চরক ও প্রকাশ্বেষ নানা ভাষায় প্রচার সম্বন্ধ এক হ'লবে টাকা কবিছে সাহায়া দান কবিছে এতি সাহাছা কবিছে প্রতিভাগ কবিছে প্রতিভাগ কবিছে প্রতিভাগ কবিছে প্রতিভাগ কর্মাছেন। বিদেশীয় 'বভিন্ন ধর্মাক্রান্ত গার্লা আয়ুক্ত করে অনুক্রভা কবিতে ট্রন ইহাতে মনে অনুপার আনন্দের উপর হয়।'' রাজা প্রকৃতি বঞ্জনাব।

আমারা সাহিত্য নামক নবপ্রকানিত মাসিক পত্র হুই পশু উপথার ব্যাপ্ত হইরাছি। জীয়ুক স্করেশ-চল্ল সমাক্রপতি ইতার সম্পানক। উপ বুক্ত লোকের হস্তেই সম্পাদন ভার অপিত হইরাছে। বফ্লব প্রধান ২ শক্ষ হাতিই লেখকগণ ইতাতে লিখিয়া থাকেন। মানানিদ প্রথমাঠা প্রাবন্ধ ইহাতে প্রাকাশিত হয়। কালে তিয়া একথানি ভারম শ্রেশির মান্যিক প্রাপ্রিন্ত হইবে এ রাগ আশো করা যায়।

श्राप्ता १ भव ।

১। সাহেব গঞ্জ — ৬ই ভাদ্ত চিরকুমার পরিব্রাঞ্চক শী খ্রীকৃঞ্জানন্দ স্বামীজী মহোদয় দিনাজপুর জেলায় যাইবার পথে এখানকার সক্তন মণ্ডলীর অমুরোধে মানব জীবনের সার্থকতা শ বিষয়িণী একটি অতি ফ্লালত বক্তৃতা করেন। শ্রোত্বর্গের হৃদয় জ্ঞান ও ভক্তি পূর্ণ উপদেশে পরম হৃধ ও ভৃপ্তি লাভ করিয়াছিল। ইহা ছাড়া তিনি যতক্ত এখানে হিলেন, লোকে সর্বদা ভাহার নিকট অনেক সংশ্যু-ভঙ্কিনী তত্ত্বধা ভনিয়া কৃতার্থ হইয়াজিল,।

হ। বাহিন—এপানকার জমীদার ঐায়ক হিন্দর
চল্র চৌধুরী মহাশা অতি গাধু সভাব ও উপার হলা।
তাহার বারস্বার অক্রোধে সামীজী সহোদয় সাহ্যেগঞ্জ হইতে তথায় গিয়া তিরাত্রি বাস ও চুই, দিন নানা
উপদেশ পূর্ণ বক্তৃতা করেন। রাইগঞ্জ, হারপুর, দিন জপুর আদি হইতে অনেক ধর্ম শুল্রাপু বাক্তি উপদেশ
শুনিতে উপন্থিত হইয়া ছিলেন: তুই দিন বাহিনে
থেমের হিলোল বহিয়াছিল, বলিতে কি লোক সকল
এ তুই দিন যে অথের ছবি, দেপিয়াছিল, ভীহা আরি
কপনও ঘটিয়াছিল কিনা সম্পেধ। ঈশ্বর বাব স্থানীজীর
প্রতিতিত বেদ বিদ্যালয়ের সাহায্যার্থ ২০, টাকা এক
কালীন দান করিয়াছেন।

৩। ফুলবাড়ী—বাহিন হইতে স্বামীকী ফুলবাড়ীহরিসভার বাধিক উৎপবে গমন করেন তথায় ৫ দিন
ক্রেমাগত শাস্ত্রের শুহ্ম রহস্ত পূর্ণ বক্তন ভ হারনাম
সংকীর্তন হয়; এক দিন নদী-পারবর্ত্তী নকাপুর গ্রামেভ
বক্তা ও হরিনাম সংকীর্তন হইয়াছিল । সামাজীর
উপদেশ শুনিবার জন্য দিনাকপুর, পার্বভীপুর, রংপুর,
বিরামপুর আদি দূর দূর স্থান হইতে অনেক ভন্ত লোক
ভারিয়াছিলেন।

৪। রঙ্গপুর—ফুলবাড়ি হইতে বার্থার অনুরুদ্ধ হইয়া স্বামীলা রংপুর ধর্ম গভায় গমন করেন। সভা আত সমারোহ সহ ভাহার অভ্যুর্থনা চত স্বাংজ্জাত হইয়াছিল। প্রথম দিনে "হিন্দুরাণী" হু য়াছিল। প্রথম দিনে "হিন্দুরাণী" হু য়াছিল। প্রথম দিনে আশাতিরিক অভিজনতা জত্ম সভা গৃহে প্রোড্ বর্গের ও বক্তার শ্বাসাবরোধ হইবার আশকা হইয়াছিল, বিতীয়া দিন সভার পার্থবর্তী ময়দানে বক্তা হয়, লোকে লোকারণ্য হইয়াছিল। ধীর গন্তীর ভাবে নারবে এত বাঙ্গালী একত্তে দেখিয়া মনে বড় আহ্লাদ হইল। এখানকার স্বনীতি স্কারিণী সভার যত্নে নগর-সংকীর্তনও হইয়াছিল। একজন আসুষ্ঠানিক আক্ষা

প্রায়ণিচত পূর্বক হিন্দুশুশো পুনদ্ধীক্ষিত হইবার জন্ম সংশিকীন নিকট মুংপ্রমণ শাইন্থন দেখিয়া বড় আহলাদ হইল। তিনি রোজা-সমাজের অনার স্বাব্ধ চকা-নিনাদে বিরক্ষ ভইলা হিন্দু ধর্মের চরণ-চুম্বনে পুন: এরের হইলাছেন। স্বানীজ্ঞার ধর্মপ্রচার অভিশয় শুভফল-প্রস্ হইতেছে। বেদ বিদ্যালয়ের সাহায্যার্থ রংপুর ধর্মেদভা ১০ টাকা ও বর্জন কোটের জন্মীনার জ্ঞীয়ান্ কুমার

৫। দিনাজপুর—খামীলী রংপুর হইতে দিনাজপুর
হিরসভার বার্ষিক উৎসব উপলক্ষে গমন করেন।
তথায় ৩ দিন হরিসভায় ৫ এক দিন প্রীযুক্ত রায় নাধাপ্রোতিক্ষ রায় সাহেব বাহাদুরের বাটাতে বক্তা
করেন। আর একদিন বিদ্যালয়ের বালকবর্ণের
বিশেষুসুরোধে-"ভবিষ্যৎ ভারতবর্ষ" বিষয়িণী বক্তৃতা
হইয়াছিল। এই বক্তৃতায় শিক্ষা ও সমাজ সংস্কার
বিশেষ রূপে আলোচিত হইয়াছিল। প্রোভামাত্রেই
বড় ত্থা হইয়াছিলেন। একদিন নগর গলীর্ত্রনও

हहेशां किता । क निन भंकर ना कित कर्ण निनारत छ । श्र क्ष्मन व नर्करन रम्भ हेल्यल कतिशा छित्रिगां किला । वात-मक्षा रवन-निमां मर्श्व माहाशार्थ किक कालीन ८०० होत्का । व ताल मार्ह्य बाहा छत ८०० हो का नान कतिशा-रहन ।

৬। মল্লারপুর—স্থামীজী দিনাকপুর হইতে পুর্ণিরা রাইগঞ্জ আদিতে ঘাইবার জন্য অত্যন্ত অনুক্রন্ধ হইলেও ঘাইতে পারেন নাই। তিনি তথা হইতে সাহেবগঞ্জ হইলা মল্লারপুরে মল্লনাথ মহাদেব দর্শনে গমন করেন। তথায় তাঁহার অনুগত জক্ত সাধক গণের একত্র সমাণ্রামে " আনন্দ-মণ্ডলীর " মহাধিবেশন হয়। এই অধিবেশনে কলিকাতা, বীরভুম, কুণুলা, মামুদবাকার সাহেবগঞ্জ, রামপুরহাট, মল্লারপুর আদি হইতে অনেব সন্ত্রান্ত ও শিক্ষিত ভক্ত গণ উপস্থিত ছিলেন। দেবালয়ে পুলা, ভগবতীর ভোগরাগ, সন্ধীন্তন, সন্ধীত ও নিগ্র

भग्न अठा तक।

" কুলং পবিত্রং জননী ক্কতার্থা বৃস্তম্বরা পুণ্যবৃতী চ তেন। অপার সন্থিৎ স্থখসাগরেশ্বিন্, লীনং পরে ব্রহ্মণি যুস্য চেতঃ॥"

১৪শ ভাগ ৭ম সংখ্যা " এক এব স্থদ্ধশ্বো নিধনেংপ্যনুবাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ক্ষমন্যন্তু গচ্ছতি॥"

শকাৰু ১৮১৩ কাৰ্ত্তিক মাস

যাজ্ঞবন্ধ্য-সংছিতা।

(পূর্ব্বপ্রকাশিতের পর)

পলাগুং বিড্ বরাহুঞ ইত্রাকং প্রামক্রুটম্ ।
লভনং গৃঞ্জনকৈব জন্ধা চান্দ্রায়ণকরেৎ ॥
পলাগু (পাঁজ) গ্রামাশ্কর, ছত্রাক, প্রাম্যক্রুট,
লভন (রস্ত্রন) গৃঞ্জন (গাঁজর) এই সমস্ত ভোজন
করিলে চান্দ্রায়ণ প্রায়শ্চিত করিতে ইইবে।

ভক্ষ্যাঃ পঞ্চনথাঃ সেধা গোধাকছপ শল্পকাঃ।
শশন্ত মহস্তেদ্বপি হি সিংহতুগুকরোহিতাঃ।
তথা পাঠানরাজীব সশক্ষান্ত বিজাতিভিঃ।
অতঃ শৃণ্ধাং মাংসস্থ বিধিং ভক্ষণ বর্জনে॥
পঞ্চনথবিশিই জন্তুর মধ্যে সেধা (ভল্লুক) গোধা
(গোসাপ) কচ্ছপ, শল্লক (সজারু) শশক এই পঞ্চ জন্তু ভক্ষণীয়। মহস্তেরু মধ্যে সিংহতুগুক (মহস্থ বিশেষ)
রোহিত (রুই মাছ) পাঠান (বান মাছ) রাজীব (বোল মাছ) এবং সশল্ক অর্থাহ আনবিশিক্ত মহস্থ বিজ্ঞাতি ভোজন করিতে পারেন। অতঃপর কি রূপ

মাংস ভক্ষনীয় এবং বর্জনীয়, তাহা বলিতেছি।
প্রাণাত্যয়ে তথা প্রান্ধে প্রোক্ষিতং বিজকান্যয়া।
দেবান্ পিত নু সমূত্যচ গ্র খাদন্ মাংসং ন দোষভাক্॥
ভীবন হানির সভাবনা হইলে মাংস ভোজন করিলে

দোষ নাই। আদ্ধকার্য্যে ব্রাহ্মণ ভোজনার্থ উৎস্পীকৃত দেব ও পিতৃগণের উদ্দেশে নিবেদিত ও যন্ত্রীয় সাংস -ভোজন করিলে কোন দোষভাগী হইবি না।

বসেৎ স নরকে ঘোরে দুনানি পশুরোমভিঃ।
সন্মিতানি ছ্রাচারো যো হস্ত্যবিধিনা পশূন্॥
যে ছ্রাচার অবিধি পূর্বক পশু হনন করে, পশুর
গাত্রে যত গুলি লোম থাকিবে, ততদিন তাহাকে ঘোর

নরকে বাস করিতে হইবে।

দর্কান্ কামান সমাপ্নোতি হয়মেধফলং তথা।
গৃহেপি নিবসন্ বিপ্রো মুনির্মাংস বিবর্জনাৎ।

যে ব্রাহ্মণ মাংস-পরিত্যাগী, তাঁহার সমস্ত মন্বোরথ

সিদ্ধ হয়। তিনি অখ্যমেধ যজের ফল প্রাপ্ত হন। তিনি
গৃহবাসী হইলেও মুনিতুল্য।

ইতি ভক্ষ্যা ভক্ষ্য প্রকরণ সমাপ্ত।
সৌবর্ণ রাজতাজানামূর্দ্ধ পাত্র গৃহাম্মনাম্।
শাকরজ্জু মূল ফল বাসো বিদল চর্ম্মণাম্॥
পাত্রাণাং চমসানাক বারিণা শুদ্ধি রিষ্যতে।
চরুত্রুক্ ভ্রুব সম্মেহ পাত্রাগৃহক্ষেন বারিণা॥
স্থবর্ণ এবং রজত নির্মিত পাত্র শুদ্ধ ও মৃক্তা আদি
জলজ পদার্থ ভারা নির্মিত পাত্র, গৃহস্থিত প্রস্তর-নির্মিত
পাত্র, শাক, রজ্জু, ফল, মূল, বস্ত্র, বিদল (ধনিত্র)

চমনির্মিত পদার্থ এই সমস্ত জল দারা ধৌত করিলেই শুদ্ধ হয়। চক্রুম্থালা, স্ফ্রুক্, প্রব, (তিনটি যজ্ঞপাত্র বিশেষ) সম্মেহ, অর্থাৎ তৈলবৎ পদার্থ যুক্ত চিক্কণ পাত্র উষ্ণজল দারা ধৌত করিলে শুদ্ধ হয়।

জ মশঃ। শ্যামা-রহস্থ। (ডুপ-রহস্থ)

যতে রূপরহস্থতত্ত্বমনিশং ধ্যাষ্ট্রাপি নো যোগিনো,
জ্বাতা যৎশ্রুতিরপ্যচিন্ত্যমিতি সংপ্রোবাচ তন্ত্রং তথা।
উচে ভীতমিবাক্ষ্টং জড়ধিয়স্তদ্বক্তু মৃদ্যমতেঃ,
ক্ষুত্র্যাং জননীতি মে শিশুমতে ব্যাচালতা দ্ধণং ॥

জগভজননি ! যোগিগণ, নিরস্তর ধ্যান ধারণা করিয়াও তোমার রূপের গুঢ়তত্ত্ব অবগত হইতে পারেন নাই, তোমার রূপের যে গুঢ়তত্ত্বকে শ্রুণতি অচিন্ত্য বলিয়া নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন, তোমার রূপের যে গুঢ়তত্ত্বকে তন্ত্র ভীত ভীত ভাবে অক্ষুট রূপে ব্যাখ্যা করিয়া গিয়া-ছেন, জড় বুদ্ধি আমি আজ তোমার সেই রূপের গুঢ় তত্ত্বকে প্রকাশ করিতে ইচ্ছা করিয়াছি । ইহা আমার নিভান্ত বাল চপলতা। আমি বয়সে বালক না হইলেও জ্ঞানে চির দিনই শিশু। শিশু সন্তান মায়ের নিকটে কত চপলতা প্রকাশ করে, কত কি অসংলগ্ন কথা বলে, মাতা তাহা নিজ্ঞণে ক্ষমা করিয়া থাকেন। অতএব এই শিশুমতির বাচালতা দোষ নিজ্ঞণে ক্ষমা করিবে।

শ্রুতি বলেন—"প্রণবোধসুং শরোহ্যাত্মা ব্রহ্ম তল্লক্যা মূচ্যুতে। অপ্রমন্তেন বেদ্ধব্যং শরবৎ তন্ময়ো ভবেৎ।" প্রণব (ওঁকার) ধনুং, শর আত্মা, ব্রহ্ম তাহার লক্ষ্য। অপ্রমন্ত চিত্তে সেই লক্ষ্য বেধ করিয়া তন্ময় হইয়া যাইবে। অর্থাৎ যোদ্ধ্যণ যেরূপ ধনুর্বেক শর সংযোগ পূর্ববিক লক্ষ্য বেধ করে, সেই রূপ প্রণব রূপ ধনুকে আত্মরূপু শর সংযোপ করিয়া ব্রহ্মরূপ লক্ষ্য বেধ করিবে।

দবলে নিঃক্ষিপ্ত শর যেরাপ লক্ষ্যের অভ্যস্তরে ভূবিয়া তম্ময় হইয়া যায়, আর তাহার পৃথক্ অন্তিত্ব থাকে না, আক্সাও সেই রূপ ব্রহ্ম রূপ লক্ষ্যে ভূবিয়া তন্ময় হইয়া যাইরে, আঁর তাহার পৃথকু অন্তিত্ব থাকিবে না. দ্বৈত ভাব থাকিবে না, উপাস্থ উপাসক ভাব থাকিবে না । তথন তিনি সংসারের মায়া মমতা কাটাইয়া দিব্য চক্ষে त्पृथित् भारेत्व "िं किमानम क्रिशः भित्वारः भित्वारः"। ইহারই নাম নির্বাণ-মুক্তি। জগতের যত সাধক, যত ভক্ত, যত উপাদক দকলেই এই মুক্তির নিমিত্ত লালা-য়িত। সকলেরই চরম উদ্দেশ্য এই নির্বাণ মৃক্তি। শর যেরূপ মলিন থাকিলে লক্ষ্য বেধ করিতে পারে না. 'দেই রূপ মলিনাত্মা (পাপাত্মা) ব্রহ্ম রূপ লক্ষ্যে ডুবিয়া অভিন্থ হইতে পারে না । 'এই জনা প্রাভি স্থান। ন্তরে বলিয়াছেন-"মহাস্ত্রং শরং ভ্রপোসা শাণিতংণ" সেই আত্ম-রূপ শরকে উপাসন। দারা শাণিত (নিশ্মল) করিয়া লইবে। উপাসমা দারা আত্ম-শুদ্ধি হইলে সেই শুদ্ধা-ত্মাকে র্রাক্ষ রূপ লক্ষ্যে প্রবেশ করাইতে হইবে। তবেই আমরা তব যাতনা হইতে মুক্তি লাভ করিতে পারিব।

কিন্তু লক্ষ্য আমাদের পরমাণু হইতেও সৃক্ষতম।
চক্ষুং কর্ণ প্রস্থাত কোনও ইন্দ্রিয়েরই বিষয়ীস্থৃত নহেন।
মন পর্যান্ত তাঁহাকে ধারণা করিয়া লইতে পারে না।
প্রথমাবস্থায় শিক্ষানবিশীর সময় এত সূক্ষ্ম লক্ষ্য কেহই
বেধ করিতে পারে না। তাই হিন্দু শাস্ত্রে স্থুলোপাসনার
বিধান রহিয়াছে।

বহিদৃষ্টিতেও আমরা দেখিতে পাই, যাহারা শর শিক্ষা করে, তাহারা কদলী রক্ষ প্রভৃতি কোনও একটী স্থুল লক্ষ্যকে ঠিক করিয়া লয়, প্রথম ২ তাহাও বেধ করিতে পারে না, বাণ (তীর) বাম দক্ষিণ দিক্ দিয়া চলিয়া যায়, কিছুতেই লক্ষ্যে পতিত হয় না। কিছু দিনে এই রূপ স্থুল লক্ষ্য ভেদ করিতে অভ্যাস হইলে ক্রমে ক্রমে হাত পাকাইয়া বহু দিনে, বৃহু পরিশ্রমে সৃক্ষম লক্ষ্য বেধ করিতে অভ্যাস হইয়া থাকে। অগ্রন্থ গ্যুক্তে লক্ষ্য বেধ

করিতে হইলেও ঠিক্ এই রূপ প্রণার্লা অবলম্বন করিতে হইবে। তাই শান্ত্রে প্রথমাধিকারীর স্থুল ভাবে সগুণ ব্রক্ষোপাসনার ব্যবস্থা বিহিওঁ হইয়াছে। জীবের রুচি ভেদে অথবা প্রকৃতি ভেদে এক একাই কালী তারা হুর্গা,শিব বিষ্ণু গণপত্যাদি রূপে স্থুল ভাবে উপাস্থ রূপে বিরাজিত রহিয়াছেন। তশ্বধ্যে শক্তি বিষয়ই আজ আমাদের সমা-লোচা। অতএব শক্তি-তত্ত্ব সম্বন্ধে যথাশক্তি শাস্ত্ৰাভিপ্ৰায়ু নিম্নে প্রকাশ করা যাইতেছে। *

• बाक्ष, मात्रा, शक् ि विना।, व्यविना।, हेश प्रमुख्ये वहे अर्थाय मक । मार्नेनिकश्य এই मिक्टिक कह भवार्थ विद्या निर्देश करिया शिक्षा रहत। (कदण पार्निक १४ (कन, आर्या पिट्शत क्षांक श्रुकि प्रमंनापि **कृ**ति कृति माल्ल এট मक्ति कड़ा नित्रा व्य-िं का। हेटाट काशांडकः বোধ হয় বাঁচারা শক্তির উপাস্কু, তাঁচারা যেন স্কুড় পদার্থের উপাসনা कतिया गारकन। मक्ति कडा मका, किन्दु कार्ड विषया मार्क्सन कड़ পদ্যবের উপাসক নাহন। কারণ শাক্তগণ কে্বল শক্তির উপাসক নতেন। তাহারা যে ভাবে শক্তির উপায়না করিয়া গুরুকন তাহা কেবল निक नार । छे। टेड कमामिश्रिका मिका

বাঁহারা রক্ষের উপাসনা করেন তাঁহারাও কেবল ব্রন্ধের (নিপ্রণ ক্রন্তের) উপাসক নতেন। ভাঁতারা শক্তি মিলিভ ব্রন্দের অর্থাং সঞ্গ ব্রংশ্বর উপাসনা করিয়া লাকেন এবং বাহার। শক্তিন উপাসক, তাঁভার ও **८करन मक्तित উপাসনা না क**तियो तक युक्त वर्षार टेन्डना युक्त শক্তির উপাসনা করিয়া পাকেন। নচেৎ নির্গুণ রক্ষের কোনও কত্ত্ব।-দি না পাকার ভিনি জড়বং ও অজের, সুভরাং উপাসনার অংযাগা। व्यादाव देव छन। मृना। मिक्कि । क्या निवाय छे भागनात व्यत्याया। । त्य क्रिप प्रश्न क्रम ह करन प्रश्न गिमान बक्ट क्या, त्राटे क्रम मिकियुक देइ हुना ७ देइ हुना मुक्त मिक कुक है कर्णा। इन्तार मिकिमाधान छ ব্ৰশ্ন স্থাপনে তুলা ফল লাভ চইনা পাকে। এই জন্ত মহানিব্ৰাণ ভয়ে **ढे त** इहेशारक — "युशा बरकाशरमत्मन विमुख्नाः मर्स्तराख्वेतः। शक्क खि बक्र সায়জাং তথৈব তব সাধনাৎ। " তন্ত্র শাস্ত্র শক্তিকে চণকাকার রূপিণী বলেন। চণক যেরূপ ছই অংশে একত্র কড়িত হইম। মহিয়াছে শক্তিও ঠিক সেই রূপ প্রাক্তি পুরুষ অংশে জড়িত চইয়া উপাস্ত ভাব অবলম্বন করিনাছেন। মথা ভাগবড়ে স্পষ্ট উক্ত হইয়াছে—"সাচ মায়া পরা শক্তি: শক্তি মভাহ মীখরী।" সেই মায়া সরমা শক্তি,আমি গেই শক্তিমভী ঈখরী। " ि कि कार्णन याक्र प्र प्र क्रिका क्रिका क्रार ", " या त्मती मर्ख क्रिक् চেডনেড্যভিধীরতে " ইভাঃদি বাক্য দারাও বুঝা যায় যে সেই শক্তির উপাসক, ইভাঃদি ভালে কেবল শক্তির নামোল্লেথ করিয়া থাকে। মহাশক্তি চৈতন্যাপ্রিতা শক্তি, কেবল শক্তি নহেন। যে রূপ অগ্নিতে বিশ্বত বিলি নেই চৈতি ছাপ্রিতা মহা শক্তিকেই বুঝা যায়।

কেহ ২ গণ্ড মূখ ্ভণ্ড বৈরাগী দিগের চণ্ড শাসন বশতঃ, কেহ বা স্বধর্মের মর্ম্ম না জানা বশতঃ, কেহ কেহ বা বৈদেশিক বিরুদ্ধ শিক্ষাম বিরুদ্ধ সংস্থার বশতঃ শক্তি সাধন সম্বন্ধে আজ কাল কেমন ২ একটা ভাব অবলম্বন করিয়াছেন। প্রামারূপ ভয়ন্কর, শ্রামা-সাধন ভয়ন্ধর, ইহাতে যেন একটা তামসিক ভাব আছে বুলিয়া অনেকের অন্ধ বিশ্বাস দেখিতেছি। শ্রামা মূর্ত্তি বড়ই। ভয়ন্ধরী, এ মূর্ত্তি হলাসনে বসাইফ্ল'শান্তি তথ ল্লাভ করা याहरू शास्त्र ना। याहार्क त्मिश मन ज्लिश गहरू তীহার জগৎ ভুলান রূপ হওয়া চাই প্রশান্ত মূর্তি হওয়া চাই এরপ কথা বাত্তা আমরা মধ্যে ২ বুদ্ধিমান লোকের মুখেও শুনিতে পাই। বস্তুতঃ শ্যামা রূপ্রে বাহ্যিক চাক্-চিক্যের লেশ মাত্রও পরিলক্ষিত হয় না বটে । ইংনতে क्लात माला, मूळात माला, मक्त कू एल, हीतात मुकूछ. সোণার নৃপুর প্রস্থাত অলঙ্গারের বিন্দু বিদর্গ ও দেখিতে পাই না বটে। এমন্ কি, মা উল্প্লিন্ন অঙ্গে বসন খানা পর্যান্ত নাই,তাই সংসারের কাঁট--বিষয়ের দাস বিলাসীর চক্ষে এ রূপ অতি ভয়ঙ্কর। সংসারী জীব হুয়ত এরূপ লজ্জাকর, ঘৃণাকর, ভয়ঙ্কর ভিন্ন আর কিছুই দেখিতে পাইবেনা, কিন্তু যাঁহারা ভক্ত, সাধক, জ্ঞানী, তাঁহারা দেখেন খ্যামারূপে কেবল প্রকৃতি পুরুষের বিহার, প্রকৃতি পুরুষের লীলা থেলা ভিন্ন আর কিছুই নয় । এ রূপ ভক্ত কল্লতক, ভক্ত ই হার নিকট যাহা চান তাহা পান. যে ভাবে দেখেন সৌভাবে তাঁহার বাঞ্চা পূর্ণ হয়। যে মুর্ত্তির উপাসনা দারা সাধকগণ কুতার্থ হইয়া গিয়াছেন, रय मिन्न भृत्वित छेशामना कतिरा मनानित छेशानन अनान . করিয়াছেন, যে মূর্ত্তির পদতল হইতে কেশাগ্র পর্যান্তে ব্রহ্মভাব— ব্রহ্ম-বিভূতি দেদীপ্যমান্, সে মূর্ত্তির বাহ্যিক

আর অধিন দাছিকা শুক্তিতে কিছু মাত্র প্রান্তেদ নাই। সেই কাণ শক্তি আর শক্তিমতীর অভেদ বিবকা করিয়াই লোকে " শক্তির উপাসনা,

চাক্চিক্যের কিছু মাত্রই আবশ্যক.করে না। ভাবুফ ভক্ত ক্লপক রূপের অভান্তরে যে ভাব দেখিতে পান তাহাতেই তিনি কৃতার্থতা লাভ করিয়া থাকেন।

মহা কালীর ধ্যানে আছে তিনি শব শিবা রুঢ়া। শব বলিলে আমরা হতদেহই বুঝি । শিবের মৃত্যু নাই, তিনি মৃত্যুঞ্ম, যিনি মৃত্যুকে জয় করিয়াছেন, তাঁহাকে শব ' বলিবার তাৎপর্য্য এই শিব শব্দে এখানে শুদ্ধ বৃদ্ধ সচিচা:-নন্দ নিশুণ ব্রহ্ম। ১ জীবের মঙ্গল দায়ক বলিয়া তিনি শিব পদবাচ্য। শ্রুতি বলেন তৎশুরুং, তিনি শুরুবর্ণ অর্ধাৎ অত্যন্ত নির্মাল, তাই পুরাণাদি শাস্ত্রে রজত গিরিনিভ বলিয়া বর্ণিত। এই শিব (নিগুণ অহা) <u>_ নিতাক্ত অকর্মণ। পুরুষ। শ্রুতি ই হাকে নিশ্রেষ্ট নিজ্ঞিয়</u> विलग्ने निर्देश करिया शियारहन । यिनि दिन्छी मूना, কিয়াশুনা, শক্তিশুনা, তিনি জাবিত থাকিতেও মৃত। তাই কুজিকা তত্ত্বে বলা হইয়াছে "রুদ্রাণীক্রুতে আসং ্ৰতু কৃত্ৰঃ কদাচন। অতএব মহেশানি। রুদ্রঃ প্রেতোন मः गाः । " क्र<u>ा</u>जां शेष्टे क्र १९८० थान करतन, क्रम कि हुई করিতে পারেন না, অভএব রুদ্র (নিগুণ ব্রহ্ম) প্রেত স্প্রথাৎ মৃত। যিনি মৃত তিনিই শব পদবাচ্য । অনাদ্যা মুহাশক্তি এই শব রূপ শিবে আরুঢ়া হইয়া অর্থাৎ নিগুণ ব্রন্ধে সংযুক্তা হইয়া সৃষ্টি স্থিতি প্রলয় করিতেছেন, তাই মহা কালী শব শিবারুঢ়া। এই তাৎপর্য্যার্থ গ্রহণ করিয়াই মহাকাল-তন্ত্রে উক্ত হইয়াছে—"পুরুষো দক্ষিণঃ প্রোক্তো বামাশক্তি নি গদাতে । বামা দা দক্ষিণং জিত্বা মহামোক্ষ-প্রদায়িনী। ' দক্ষিণ শব্দে পুরুষ (নিগুণ ব্রহ্ম) আর বামা শব্দে শক্তি। সেই বামা পুরুষকে জয় করিয়া অর্থাৎ নিশ্চেষ্ট পুরুষের উপরে স্বয়ং আধিপত্য দেখাইয়া কালী-क्राप्त महारमाक्रमाशिमी इरेशारहम । धरे मिक्रगरक जय করাতেই মায়ের নাম দক্ষিণা কালী হইয়াছে। অভএব শ্যামারূপে প্রকৃতি পুরুষের দন্মিলনে সাক্ষাৎ মহেশ্বরী प्मिनी श्रामाना वृहिशास्त्र । ममख प्राप्त यिनि कनन (গ্রাস) করেন তিনি মহাকাল, মহেশ্রী প্রলয়ে মহা

কলিকেও কলন করেন বলিয়া মহাকালী নাম ধারণ করিয়াছেন। * এই মহাকালী মহামেঘের ন্যায় কৃষ্ণ-বর্ণ। তন্ত্র বলেন, শেতপীতাদিবর্ণ যে রূপ কৃষ্ণবর্ণে বিলীন হইয়া যায় তদ্রুপ প্রলয় কালে মহাকালীতে সমস্ত ভূত বিলীন হইয়া থাকে। এই জন্য মায়ের কৃষ্ণ বর্ণ নিরূপিত হইয়াছে। মায়ের বসন নাই, তিনি বিবন্দা। বস আচ্ছাদনে, এই বসন শব্দের অর্থ আচ্ছাদন, অর্থাৎ আবরণ। শক্তিময়ী আবরণ-শক্তিম্বারা জীব জগতের চক্ষু ঢাকিয়া রাথেন, তাহারই আবরণে কোটা ২ ব্রহ্মাণ্ড আর্ত হইয়া থাকে, কিন্তু তাহাকে আর কেহই আর্ত করিতে পারে না, তিনি আবরণ-রহিতা, তাই বিবসনা। নচেৎ কৃবের যাহার ভাণ্ডারী, কটাক্ষে যিনি মণি মুক্তা কাঞ্চনাদি পর্ণ কোটা ২ ব্রহ্মাণ্ড সম্ভন করিতেছেন তাহার বন্ত্রালঙ্গারের অভাব কিছুতেই যুক্তি-সঙ্গত হয় না।

দক্ষিণ করন্বয়ে থড়া মূণু,গলে মুগুমালা, মুথে অট্টহাসি,
মহাশক্তি এই ভয়ন্ধর বেশে বক্ত নিনাদ-হুল্কারে অস্তরপ্রকৃতি পাপী তাপীর বিনাশ সাধন করিতেছেন। আবার
বামকর ন্বয়ে বরাভয় লইয়া মাভৈঃ মাভৈ রবে ভবভয়ে
ভীত ভাবুক ভক্তকে অভয় প্রদান করিতেছেন। গভীর
সাগরের ন্যায় একাধারে ভামকাস্তগুণ ধারণ পূর্বক হুইট
দমন শিন্ট পালনের দেদীপ্যমান ভাব দেখাইতেছেন।

আমরা এই স্থূল ভাব ছাড়িয়া আর একটু সৃক্ষাভাবে দেখিতে পাই, মায়ের করে খড়গ মুগু, গলে মুগুমালা, কর্ণে মৃত বালক, কটা দেশে করকাঞ্চী, বিকটদশনা বিলোল রসনার করাল বদনে অট্ট অট্ট হাসি বিরাজিত। এই ভীষণ বেশে জগদস্বা কোটা ২ জগৎ শাসন করিতে-ছেন। শ্রুতি বলেন, তিনি "ভীষ্ণং ভীষ্ণানাং।" তাঁহারই ভয়ে ভীত হইয়া ইন্দ্র চক্র বায়ু বরুণ খাটিতেছে।

[•] कननार मर्ख्यकृतिनार महाकान है कि खूकः। महाकानश्च कननार वसामा कानिका नता। महानिकार्य कर्त क्ष्मान।

এমন্ কি, মৃত্যু পর্যান্ত তাঁহার ভয়ে ব্যতিব্যস্ত। # ইহা দেখাইবার নিমিত ই মায়ের ভয়ঙ্কর বেশের অবতারণা।

এই ভৈরবী মূর্ত্তির কটাদেশে, করে, কর্ণে, কঠে, এমন কি যে দিকে তাকাও সেই দিকেই যুক্ত মানবের অঙ্গ প্রত্যঙ্গ দেখিতে পাইবে। প্রতি দিন এই সংহার-म्ंतिंत श्वतर्त, मनत्न, मर्गत्न, क्षारत प्रकृष्डय-प्रकृ जात উপস্থিত হইরা থাকে। সংসারের অনিত্যতা, জীবনের অনিত্যতা মৃত্যুঁহু: উপলব্ধি হইতে থাকে । এ রূপ দেখিবার মত দেখিলে, ভাবিবার মত ভাবিলে ধন মান রূপ যৌবনের অভিমান চূর্ণ বিচূর্ণ ইইয়া পাষণ্ডের ছাদয়েও ওদাস্থভাব-বৈরাগ্য ভাব উপস্থিত হইয়া থাকে। তখন জীব পাপ-যাতনা মৃত্যুয়াতনা 'দৃর করি-বার জন্য কুমতি কুকার্য্য পরিহার পূর্বক সাধন-মাগে অত্যসর হইতে থাকে। ইউরাং সাধকের এই ভৈরবী মূর্তিতে যত উপকার,ফুলের মালা মুক্তার মালায় সাজান হাঁসি মাথা বার্য়ানী মূর্ত্তিতে তাদৃক্ উপকার হইতে পারে না । রূপ যদি দাধকের হিতের নিমিত্তই হইল, তবে যে রূপে সাধকের সত্বর কার্য্য সাধন হয় সেই রূপে উপাসনা করাই যুক্তিসঙ্গত। তাই জগদম্বার ভয়ঙ্কর রূপ প্রকাশিত।

প্রলয়ে সমস্ত ভূতকে গ্রাস করেন, কালরূপ দস্তে চর্বন করেন তাই কালী করাল বদনা। †

তন্ত্র বলেন, চন্দ্র সূর্য্য অগ্নি মায়ের নয়নত্ত্রয়, ত-দ্যারা তিনি সমস্ত জগৎ/দর্শন করিয়া থাকেন। +

যিনি দেখেন তাঁহারই নাম সাক্ষী। মায়ের উক্ত তিনটা চক্ষুঃ নিখিল জগৎকে দেখে বলিয়া লোকে চন্দ্র সূর্য্য বহ্লিকে লোক-সাক্ষী বলে। সূর্য্যের এক নাম সরিতা। সূর্যা না থাকিলে জগৎ থাকে না, সূর্যালোকে জগতের নিথিল পদার্থের উ৯পতি, সতর্প সূর্যা জগৎকে প্রস্কাব করিতেছেন। চন্দ্র অনুদ্রময় রশ্মি দ্বারা জগৎকে পোষণ (পালন) করিতেছেন। বহ্নি প্রলয় কালে প্রলয়ামি রূপে জগদ্বনাশ করিতেছেন। তাই ভাবুক ভক্তগণ বলেন, মায়ের কটাক্ষেক সৃষ্টি দ্বিতি প্রলয় হয়। জানীগণ জগদ্বার কটাক্ষকে মানুষের চর্মাচক্ষুর কটাক্ষর ন্যায় না ব্বিয়া তল্পোক্ত শশি সূর্যাগ্রি রূপ সেত্রের বিজ্ঞান-গর্ভ কটাক্ষকেই বুঝিতেন।

আছেতি বলেন একা অহত স্বরূপ। তন্ত্র বলেন, তাই জানাইবার জন্য এক্ষময়ীর ললাটে মৃত্র ময়ী শশিকলা দেদীপ্যমানা রহিয়াছে। •

শ্রামা মুক্তকেশী । অন্তর বধে ঘোরর্দ্ধি কেশ-বন্ধনের অবকাশ ছিল না, যাহারা স্থলদশী তাহারা বলে, মায়ের আলুলায়িত কেশজাল পাদ পদ্ম পর্যান্ত পড়িয়াছে । যে মায়ের পাদ-পদ্মের আত্রয় লয়, তাহার কি আর বন্ধন-দশা থাকে ? তাহার বন্ধন-দশা চির কালেঁর নিমিত ঘুচিয়া যায়, সে অনন্ত কাল মুক্তাবশ্রায় থাকে । ইহাই ভক্তগণকে জানাইবার নিমিত মুক্তকেশী মুক্ত-কেশে বিরাজমানা রহিয়াছেন।

এই রূপে কতক গুলি আধ্যান্মিক সৃক্ষা তত্ত্ব প্রইয়া
সুলাধিকারীর সাধন সম্পাদনের নিমিত মহাকালীর
সুল রূপ নিরূপিত হইয়াছে। যাঁহারা চক্ষুমান্, তাঁহারা
এই সুল রূপের অভ্যন্তরে স্ক্ষা ২ তত্ত্ব অবলোকন
করিয়া চরিতার্থতা লাভ করিয়া থাকেন। আর যাঁহারা
অজ্ঞানান্ধকারারত, অথবা কিন্তৃত কিমাকারের উনবিংশ্র
শতান্দীর রুচিবাগীশ,তাঁহারা বাহিরের আবরণ দেখিয়াই
লক্জায় ভয়ে অবসন্ধ হইয়া পড়েন। তা পড়ুন্,
যাঁহার এরূপ ভাল না লাগে তিনি অন্য রূপের উপাসনা

ভরাদভারিতপতি ভরাত্তপতি ত্রাঃ। ভরাদিলেন্চ চল্লন্দ
 মুচার্কাবতি লঞ্মঃ। কঠোপনিষ্ধ ৩৪ বলী। ,

[†] अनमार मर्सक्छानाः कान मरसन वर्त्तनार । निर्काण क्ष्यः ।

⁺ শশিস্থা।রিভিনৈ তৈ রখিলং কালিক। জগং । সম্প্রাতি বভরতাং করিতং নাল্পার্যা। মহানির্বাণ ১৩ উলাস।

অমৃতত্বা রলাটেইভা: শশিদ্ভিইং নির্মাণতং । মতা নির্মাণ ১০ উরাস—অমৃতঃ পর্মাত্মা গণা মহাভারতে—মহতঃ পর মহাক্র মনাক্রান পরং কিঞ্ছিলিতা। ।

করিতে পারেন। হিন্দ্ধশ্মে রূপের অভাব নাই, যাঁহার যে রূপে ইচ্ছা, তিনি সেই পথ অবলম্বন করিয়াই একই গন্তব্যস্থানে উপস্থিত হই,ত পারিবেন। কিন্তু সাবধান! একরূপে উপাসনা করিয়া অন্য রূপে ভেদ ভাব, বিদ্বেষ ভাব, স্থার ভাব, দেখাইয়া যেন অধঃপাতের সোপানে আরোহণ করা হয় না। কণ্ঠী গুয়ালা মহাপুরুষ দিগের এ বিষয় একটু বিশেষ সতক হওয়া উচিত।

কেমশঃ।

একনাথ-মহারাজ-চরিত।

একনাথের বীরতা সম্বন্ধে একটা উপাখ্যান আছে। ভাষা এই – এক নৃশক্ত কর্ত্ব দৌলতাবাদ আক্রান্ত रहेला देन ममरा जनांकन পाख्त नाम वीत शूक्ष ताजात অধীনে ছিল না। স্ততরা শ্রেপছজীর বীরত।ই রাজার এক মাত্র ভরদার স্থল। ওাঁহাকে আনিবার জন্য রাজা লোক প্রেরণ করিলেন। লোকটী আসিয়া দেখিল যে পস্থজীর গৃহদ্বার বন্ধ এবং বাহিরে একটা বালক দাঁড়াইয়া আছে। তথন পন্থজী সমাধিস্থ। রাজদূত বালকটীর কাছে ইছা জানিতে পারিয়া প্রত্যাগমন করিল। যাইবার পুর্বের, একনাথ তাহার নিকট হইতে সমস্ত রভান্ত অবগত হইলেন। একনাথ মনে মনে আলোচনা করিতে लागित्नन त्य, शुक्रतंनत्वत भान-ज्ञ कता छेठिত नत्ह, অথচ তাহা না করিলে রাজ্যের যোর অমঙ্গল হইবে। এখন কি করা যায়। মনোমধ্যে এবস্পূকার আন্দোলন করিতেছেন এমন সময়ে ভয়ঙ্কর তোপ-ধ্বনি শুনিতে , পাইলেন। আর তিনি তথন স্থির থাকিতে পারিলেন না। স্বয়ং যুদ্ধ যাত্রা করা পরামর্শ-সিদ্ধ বিবেচনা করিলেন। তাঁহার গুরুদেবের যে সাজ সজ্জা ছিল, তাহার দারা সক্তিত হইলেন। এক হাতে তরবারি, অপর হাতে বর্ষ। এবং পৃষ্ঠদেশে ঢাল ধারণ করিলেন। । সঙ্গে রণ-শিক্ষাও लहेलन। अकनाथ मरनामर्था वित्वनना कतिलन त्य, যদ্যপি যুদ্ধে জয়লাভ করিতে পারে।, তাহা হইলে

জনাদন পদ্বের যেশ র্দ্ধি হইবে, আর যদি পরাজিত হইয়া যুদ্ধে জীবন দিতে হয়, তাহা হইলেও তাঁহার উত্তম গতি হইবে যে হেতু গুরু-কার্য্যে জীবন দান ভগবানের প্রীতিকর। পরে একনাথ এক টুকরা কাগজে সমুদায় বৃত্তান্ত লিখিয়া, গুরুদেবকে প্রণাম করত যুদ্ধ-याजा कतिरलन। रकलात निकरि शिया एनथिरलन रय শক্তুগণ তোপের দ্বারা কেল্লা ভঙ্গ করিতেছে। রাজা ও তাঁহার অমাত্যগণ জনার্দন পদ্বের প্রতীক্ষা করিতে-ছিলেন। সেনাও প্রস্তত ছিল। একনাথ শিঙ্গার রব করিলেন এবং সৈন্যগণ আনন্দ-ধ্বনি করত ভাঁহার অমুগামী হইল। জনাৰ্দন পম্ব যে প্ৰণালীতে মুদ্ধ করিতেন, একনাথ সেই প্রণালী অবলম্বন করিলেন। ছুই দলে যোর মৃদ্ধ হুইতে লাগিল। শক্রদল এরূপ রণ কৌশল প্রকাশ করিল যে প্রজেদেনা ভীত ছইয়া পশ্চাৎপদ হইবার উপাক্রম করিল। ইহা দেখিয়া; একনাথ তাহাদিগকে উৎসাহ-পূর্ণ-বাক্যে সম্বোধন করাতে তাহার৷ উত্তেজিও হইল, এবং প্রভূত বিক্রম প্রকাশ করিয়। শক্ত-দলকে পরাজয় করিল। একনাথ এই যুদ্ধে অসামান্য রণ-নিপুণতা দেখাইয়াছিলেন। তিনি বিপক্ষ দলের সেনা-পতিকে নিহত করিয়াছিলেন। নিজের দেহ শক্রদের অস্ত্রাঘাতে ক্ষত বিক্ষত হইয়াছিল । কিন্তু সে দিকে তিনি দৃষ্টিপাতও করেন নাই। ভাঁহার ওরুদেবের কার্য্য मगाथा कतिएक मक्कम इहेग्राएइन अहे जानन डाँहारक উৎফুল্ল করিয়া ভুলিল। তিনি এক হাতে দেনাপতির মস্তুক এবং অপর হত্তে তরবারি লইয়া জনার্দ্দন পছের বাটীর অভিমুখে গমন করিলেন। এ দিকে পছজী সমাধি হইতে উঠিয়া বাহিরে নিগ্ত হইলেন। একনাথকে না দেখিয়া চিন্তিত হইলেন। পরে যে কাগজের টুকরা একনাথ রাখিয়া গিয়াছিলেন, তাহার প্রতি তাঁহার দৃষ্টি পড়িল। তিনি তাহা পাঠ ক্রিয়া অতীব আনন্দ লাভ করিলেন। তাঁহার. প্রিয় শিষ্টার্ক মনে মনে সাধুবাদ मिलन। একনাথ বালক, তাহার द्वाता कि ध द्रहर

ব্যাপার সমাধা হইতে পারে? আর কি প্রিয় শিষ্যকে জীবদ্দশায় দেখিতে পাইব? মনে মনে এই প্রকার আলোচনা করিতেছেন, এমন সময়ে একনাথ গাঁহার সমক্ষে আসিয়া উপস্থিত হইলেন, এবং সাফাঙ্গে গাঁহাকে প্রণাম করিলেন। জনার্দন পত্থের আর আনন্দের সামারহিল না। তিনি একনাথের মস্তকে হস্তার্পণ করত তাঁহাকে অন্তরের সহিত আশীর্কাদ করিলেন। পরে তাঁহার শুস্কারার ব্যবস্থা করিয়া দিলেন। একনাথের শরীর স্থম হইলে, প্রক্রী তাহার কাছে য়দের সমস্ত রকান্ত অবগত হইয়া পরিকৃপ্ত হইলেন। সকলে জানিত যে জনার্দন পন্থই মুদ্দে জয়লাভ করিয়াছেন। তাঁহার স্থ্যাতি চারিদিকে ব্যাপ্ত হইল। রাজার আর য়ানন্দের সীমা রহিল না। তিনি খেলারেত ও পাল্কী জনার্দন পন্থকে পাঠাইয়া দিলেন। ত

• একনাথের একটি বিশেষ গুণ এই ছিল যে, যে কার্য্য গুলি কর্ত্তব্য বলিয়। জ্ঞান করিতেন তাহা তিনি অসম্পন্ন রাখিতেন না। গুরুদেবা ব্যতীত একনাথ রাজ্য-সংক্রান্ত অনেক কাঁহ্য করিতেন। জনাদ্দন পছ তাঁহাকে রাজ্যের আয় ব্যয়ের হিদাব রাখিতে দিয়াছিলেন। একদা রাজার নিকট হইতে আদেশ আদিল যে আগামী কল্য রাজসভাতে হিদাব দেখাইতে হইবে। একনাথ দেই দিন অন্যান্য কার্য্য সমাধা করিয়া, হিসাব প্রস্তুত করিতে লাগিলেন। রাত্রি তিনটা পর্যান্ত এই কার্য্যে ব্যাপৃত থাকিলেন। হিদাব প্রস্তুত হইলে দেখিলেন, একটা পয়সা মিলিতেছে না। তিনি এজন্য অতিশয় চিন্তিত হইলেন। মনোযোগের সহিত সমস্ত হিসাব দেখিতে লাগিলেন। অবশেষে যথন ভুলটা বাহির হইল, তথন তাহার আর আনন্দের, সীমা রহিল না। তিনি করতালি দিয়া হাস্য করিতে লগিলেন। জনার্দ্দন পস্থ শব্দ শুনিতে পাইয়া ভাঁহার নিকটে ত্রালেন, এবং আনন্দের কারণ জিজাসা করিলেন । একনাথ সবিশেষ রতান্ত তাঁহাকে জানাইলে জনাপুন, পুছ বিশ্বয়ান্বিত হইলেন। তাঁহার

কর্তব্যু-পরায়ণতা ও অধ্যবসায়ের বিষয় মনোমধ্যে আলোচনা করিয়া তিনি একনাথকে সাধুবাদ দিলেন। এমন উপযুক্ত শিষ্য পাওয়াতে তিনি আপনাকে ধন্য জ্ঞান করিলেন। একনাথ একাগ্র চিত্তে গ্রুক্র-সেবা করিতে লাগিলেন। জনাদিন পত্তও মনের আনন্দে একনাথকে নানা শান্তে শিক্ষা কৈতে লাগিলেন্। একনাথ তাঁধার বুদ্ধির প্রভাবে বিলক্ষ অভিজ্ঞত। লভে করিলেন। এইরূপে দ্বাদশ বৎসর অভিবাহিত হইল। একনাথকে উপযুক্ত বিবেচনা করিয়া জনার্দ্দন পত্ন তাইনে ব্রহ্ম-মন্ত্র প্রদান করিলেন। তখন একনারেধর বয়স ২০ বংসর মাত্র। দৌলতাবাদ হইতে ছুই ক্রোশ দূরে একটী পর্যবত আছে। দতাত্তেয়ের পূজা করিবার জন্য জনার্দন পন্থ প্রতি রহস্পতিবারে তথায় গমন করিতেন ট্রেখ্রানে যে দত্তাত্তেয়ের একটা মূর্ত্তি আছে তাহা জনাদীন পত্ ব্যতীত আর কেহ জানিত না। একদা প্রতী একনাথকে সঙ্গে লইয়া গমন করিলেন। পথে ঘাইতে গাইতে এক-নাথ মনোহর দৃশ্য সকল দেখিতে লাগিলেন। বিজন বনের অপূর্ব্ব-শোভা ! ফুল দকল হাস্য-আনন বিক্তার করাতে বনের আরো অধিক শোভা বিকার্থ ইইতেছে। বায়ুর হিল্লোলে গাছের পাতা সকল নড়িতেছে। যেন বন-দেবতা অতিথি সংকার করিবার জন্য জনার্দন পস্থতঃ একনাথকে আহ্বান করিতেছেন। আবার কোন কোন তরুর শাখা সকল অবনত হইয়া রহিয়াছে। বোধ হইল যেন তাহারা জনার্দন পন্থকে অভিবাদন করিতেছে। অদূরে পর্বত হ'ইতে প্রস্রবণ নিগ'ত হইতেছে। ইহা দারা প্রকাশ পাইতেছে যে, যাহার পাষাণ ক্লয়, তাহার পক্ষেও একা অবস্থিতি করা অতিশয় ক্লেশকর। এই জন্যই পর্বতটী প্রস্রবণ-চ্ছলে রোদন করিতেছে, এবং ঝর ঝর শব্দে লোক সকলকে আহ্বান করিতেছে। এই আহ্বান-বাণী শুনিয়া উভয়ে পর্বতের নিকট গমন করিলেন, এবং ক্রমে তাহার উপরে উঠিতে লাগিলেন। পর্বতটা অতি উচ্চ। আবার নানা কারণে ইহা ভয়-

প্রদ হইয়াছে। বহু কালের রক্ষ সকল ভীষণ আকার ধারণ করিয়াছে। এক নাধ এই রক্ষ দকলের উচ্চতা দেখিতে লাগিলেন, স্থাবার দরী সকলের গভীরতা विलाकन कतिया जीउ इहे.लन । किन्न नेयातत कि আশ্চর্য্য স্বাষ্টি-কৌশল ৷ সর্বব্রেই ভীষণ ও কোমল ভাব মিলিয়া রহিয়াছে। এক নাথ যেমন ভ্যানক দৃশ্য সকল দেখিতে লাগিলেন, তাহার সঙ্গে ২ নয়নপ্রকুল্লকর ব্যাপার মুকল তাঁহাকে পুলকিত করিতে লাগিল। যে ভীষণ বৃক্ষ দেখিয়া একনাথ ভীত হইলেন, সেই বৃক্ষকে আশ্র করিয়া যে বলরী বহিয়াছে তাহার পুষ্পগুচ্ছ সকল ভাঁহাকে পরিভৃপ্ত করিল। আবার তরুর উপরি স্থিত বিহুঙ্গকুলের মধুর সঙ্গীত, নিছে খি'ঝি পোকার হিত করিল। তথন তাঁহার মনে এই ভাবের উদয় হইল ্য প্রকৃতি বুঝি ভগবানের গুণ গান করিতেছে । এই প্রকারে কখন ভয়ে আকুল কখন বা আনন্দে উৎফুল্ল হইয়া একনাথ পর্ব্বত-শিখরে গিয়া উপনীত হইলেন । কিঞ্চিৎ বিশ্রাম করিয়া, একনাথ এখানকার শোভা ক্রেখিতে লাগিলেন। তথায় একটা উত্তম সরোবর রহিয়াছে। তাহার জল অতি নির্মাল। সরোবরের চারি দিক্ নানা প্রকার রক্ষে স্থশোভিত। নানা প্রকার পুপ প্রস্ফু টিত হইয়া অপূর্ব্ব শোভা বিস্তার করিতেছে, এবং চারিদিক্ সৌরভে আমোদিত করিতেছে। এই সকল রক্ষের মধ্যে একটা ভুখুরের রক্ষ আছে । এই রক্ষটি নানা প্রকার লতা গুল্মে বেষ্টিত হইয়া লতা মগুপের ন্যায় প্রতীয়মান হইতেছে। রক্ষের তলে এক থানি প্রস্তর রহিয়াছে, তাহার উপর দতাত্তেয়ের মূর্ত্তি স্থাপিত। এই সকল দেখিয়া একনাথ অতীব আনন্দ লাভ করিলেন। ইহার পর জনার্দ্দন পছ ও একনাথ मत्त्रावदत्र स्नान कतित्वन । शदत मक्तामि ममाशन कति-লেন। একনাথ ইতি পূর্ব্বে পূজার আয়োজন করিয়া ताथियाहित्मन। जनार्मन शब्द अक महत्व गिर्वाम श्रुका

করিলেন। তদনন্তর এফনাথ নিকটন্থ একটা বৃক্ষতলে বসিতে বলিয়া জনাৰ্দন পন্থ সুমাধিত্ব হইলেন। জনাৰ্দন পছ যথন নিজ বাটীতে যোগ সাধন করিতেন, তখন তাঁহার ঘরের দার বন্দ থাকিত। হৃতরাং একনাথ কখন তাঁহাকে যোগাক্সায় দেখেন নাই। একনাথ এখন অ্দুর হইতে সমস্ত ব্যাপার দেখিতে লাগিলেন। জনাদন পৃষ্ বাঘাম্বর পরিধান করত, গলে রুদ্রাক্ষ ও ক্ষটিক-মালা ধারণ করিয়া, সর্ব্বাঙ্গে ভন্ম লেপন করিয়াছেন। দত্তাত্তেয়ের মূর্ত্তি নানা প্রকার ফুলে হুশোভিত হইয়াছে। তাঁহার সন্মুখে ধৃপ দীপ স্থলিতেছে । সহজ্ঞ শিব-লিঙ্গ ফুল ও বেল পাতায় আচ্ছাদিত হইয়া অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিতেছে। জনাদ্দন পন্থ এখন প্রাণায়াম আরম্ভ করিলেন। পূর্ফ রেচক এবং কুম্ভক প্রক্রিয়া হইতে লাগিল। জনাদন পন্থ কখন পূরক প্রক্রিয়ার দারা দেই মধ্যে বায়ু পূর্ণ করিতেছেন : কিয়ৎ কলি এই বায়ু ধারণ করিয়া ["]রাখিতেছেন। আবার তাহা ত্যাগ করিতেছেন। এই প্রক্রিয়া হইতে শব্দ উপস্থিত হইতে मांशिन। अरे श्रकाद्य क्षक नात्र श्रानाग्राम कतिग्रा. জনাদন পছ ধ্যানস্থ হইয়া রহিলেন। এমন সময়ে মেঘ-গৰ্জন হইল, এবং আকাশ হইতে একটা ভীষণ মূৰ্ত্তি নিম্নে আসিয়া জনার্দন পদ্বের সম্মুখে অবস্থিতি করিল। একনাথ এই মূর্ত্তিটাকে দেখিয়া ভীত হইলেন। মেঘের গর্জনে জনার্দন পছের ধ্যান ভঙ্গ হইল। তিনি সম্মুখে महार्ज्याक (मथिया डाँहारक সাফীঙ্গে প্রণিপান্ত করিলেন। পরে একনাথকে নিকটে আসিতে বলিলেন। একনাথ তাঁহার গুরুদেবের আদেশ মত নিকটে আসিলেন। কিন্তু দেবতার সমক্ষে গিয়া প্রণাম করিতে ভয় পাই-लन। देश प्रिया, मला त्वार मोरा मूर्लि शातन कति तन। **व्याधित अन्य कार्यिक व्याधित * म्रिंगे थरे थकातं :- थ्रम्स र्मलात नाम जिनने मूथ, विन्छातिल ছয়টी नश्न এवः इश्र इन्छ । जाहात पृष्ठेरमरम মৃগাজিন রহিয়াছে এবং ক্ষত্তে ভিকার পুলি। এক হতে

শধ, এক হস্তে চক্র, এক হস্তে গদা, এক হস্তে পদা, এক হত্তে কমগুলু, এবং এক হত্তে ডমরু শোভা পাই-তেছে। কৌপীন বস্ত্রে তাঁহার অঙ্গ আচ্ছাদিত এবং পায়ে খড়ম রহিয়াছে। তাঁহার দঙ্গে একটা কামধের। ফল কথা এই, একাধারে ত্রিদেব অর্থাৎ ব্রহ্মা বিষ্ণু ও মহেশর বিরাজ করিতেছেম। ভক্তের কামনা পূর্ণ করি-বার জন্য নিকটে কামণেমু রাখিয়াছেন। এই মনোইর मृर्ভिष्ठी जनत्नाकन कतिशा धकनारशत जात्र जानत्मत সীমা রহিল না । তিনি তাঁহার জীবনকে ধন্য জ্ঞান করিলেন। একনাথ এই পরম দেবতাকে প্রণাম করিবার জন্য অগ্রসর হইলেন, ইহা দেখিয়া জনাৰ্দন পত্ব তাঁহাকে আপনার হত্তে ধারণ করিয়া দুরুরেয়ের পদতলে নিক্রেপ कतिरमन । मुखार्ख्य "अकनाथरक छैठाईया अहरमन, <u>কাহার মুক্তকে হাত দিয়া আশীব্রাদ করিলেন এবং</u> এই বর দিলেন যে, তিনি এক জন সহাপুরুষ রূপে পরিগণিত হইকেন, এক হাঁহার দারা লোকের, সম্পিক মঙ্গল সাধিত হইবে । ইহার পর, দতাত্ত্রেয় অন্তহি ত ছইলেন। তথন একনাথ জনার্দন পস্থকে বন্দনা করি-লেন, এবং তাঁহার কূপায় যে তিনি ধন্য হইলেন একথা বার ২ বলিতে লাগিলেন। তদনস্তর উভয়ে গৃহে প্রত্যা-গমন করিলেন। জনার্দ্দন পস্থ একনাথকে সর্ক্ বিষয়ে উপযুক্ত বিবেচনা করিয়া, গাঁহাকে যোগের নানা অঙ্গ, সমাধির প্রকরণ, চিত্ত-শুদ্দির উপায় এবং নিফাম ভাবে ভগবানের পূজার সম্বন্ধ্রে সবিশেষ উপদেশ দিলেন। পরে একনাথকে দঙ্গে লইয়া, জনার্দন পন্থ নাসিক নামক তীর্থে গমন করিলেন। পথি মধ্যে চল্র ভট্ট নামক এক জন পোরাণিকের সহিত তাঁহাদের সাক্ষাৎ হইল। জনার্দন পন্থ হাহার সহিত সদালাপ করিয়া ভৃপ্তি লাভ করিলেন । চন্দ্র ভটের ইচ্ছা হইল যে তিনি সর্বাদা পম্বজীর সহিত অবস্থিতি করেন। জনার্দ্দন পশ্ব ইহাতে সম্মত হইলেন। পরে তিন জনে গমন করিতে২ নাসিকে গিয়া উপনীত হইলেন । গোদাবরীর তীরস্থ মনোহর

ঘাট ও দেবালয় সকল দেখিয়া একনাথ পুলকিত হইলেন এবং নদীতীরে বিপ্রাগণকে সন্ধ্যা বন্দন কব্রিত দেখিয়া একনাথের আর আনকের দীমা রহিল না। পরে গোদাবরীর অপর পারে গিয়া পঞ্চরী দর্শন করিলেন, এবং এখান হুইতে তুপোবনে গমন করিলেন। জ্নাদিন পছ একনাথকে বুঝাইয়া দিলেন 'যে, • লক্ষণ-দেব এই বনে তপস্থা করিতেন, এবং প্রত্যহ কন্দ মূল ও ফল সংগ্রহ করিয়া রাম সীতাকে প্রশ্বতীতে দিয়া আসিতেন। লক্ষণ দেবের ভাতৃভাব হৃদয়ঙ্গম করিয়া একনাথ বিশ্বয়াশ্বিত হইলেন, এবং অন্তরের সহিত ঠাহাকে বার ২ প্রণাম করিলেন। এবনট্টা অতি মনো-ছর°। কোন ২ রক্ষ জন্দর ২ ফুল ধারণ করিছা ওয়ন হাঁদিয়া বলিতেছে যে. হে ভক্তগণ ! আইদ এই সকল ফুল চয়ন করিয়া বিভূর পদে প্রীজ্পাঞ্জলি প্রদান কর, এবং কোন ২ রক্ষ স্থমিষ্ট ফল সকল ধারণ করিয়া দেবতাকে নৈবেদ্য দিব:রজন্য লোক সকলকে অধ্যান করিছেছে \rfloor এই বনটার নিম্ন দিয়া গোদাবরী প্রবাহিতা। তাহার কল কল শব্দ যেন পথিক গণকে আহ্বান করিতেছে, এবং তাহার সহিত যোগ দিয়া ভগবানের মহিমা ঘোষ্টা করিবার জন্য অমুরোধ করিতেছে। এই বনটীর নিকুটে একটা দেবালয় আছে। ইহাতে লক্ষণ দেবের মূর্ত্তি স্থাপিত। বন মধ্যে স্থিত বিহঙ্গ কুলের কলরব, নদীর কল ২ শব্দ এবং দেব-মন্দিরের ঘটারব, এস্থানটীকে আমোদিত করিয়া তুলিরাছে। একনাথ এখানকার পবিত্র ভাব अन्यक्षम করিয়া পুলকিত হইলেন। এই তপোবনে কএক দিন অবস্থিতি করিয়া তাঁহার! ত্যুস্থক অভিমুখে যাত্রা করিলেন। তথায় উপনীত হইয়া কুশাবর্ভ, বিল্লক প্রস্থৃতি দেখিলেন। পরে স্নান করত এখানকার অধিষ্ঠাত্রী দেবতা ত্রাম্বকেশ্বর মহাদেবের দর্শন ও ষ্ঠাহার পূজা করিলেন। যে পর্ব্বত হইতে গোদাবরী নিঃস্ত হইয়াছে, তাহার উপরে উঠিয়া নদীর উৎপত্তি-স্থান দেখিলেন। ইহার পর ঠাহারা নাসিকে প্রত্যাগমন

করিলেন, এবং পঞ্চবটাতে কিছু কলে অবন্থিতি করি-লেন। এখানে অবন্থিতি কালে জনার্দন পদ্থের আদেশে একনাথ ভাগবতের টীকা প্রস্তুত করিলেন। পরে ভাঁছারা শৌলতাবাদে প্রত্যাগমন করিলেন।

দৌলতাবাদে উপনীত হইয়া কএক দিন বিশ্রামের পর জনাদন পছ একনাথকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন হে শিষ্যপ্রবর ! ভগবানের কৃপায় তুমি নানা শাস্তে खान लां के कि ता . खेला विमा था थ हरेग़ाइ धरः দ্বাত্তেয়ের দর্শন লাভ করিয়াছ। এখন তোমার নানা তীর্থ দর্শন করত, বিশ্বদেবের সৃষ্টি কৌশল অবলোকন ' করা, সাধু জনগুণের সহিত সদালাপ করা এবং নানা দেশীয় প্রাকের আচার ব্যবহার দেখিয়া অভিজ্ঞতা লাভ করা আবশ্যক । এরপ করিলে বহুদর্শিতা লাভ করিবে, তোমার অন্তঃকরণ উদার ভাব ধারণ कतिरव धवः ट्यामात्र मन मृष्ट रहेरव । তीर्थमर्गरनत्र अत পৈঠনে অবস্থিতি করত গৃহস্থাশ্রম অবলম্বন করিবে। ঈশ্বরকে লাভ করিবার জন্য যে সংসারকে ত্যাগ করিতে হইবে তাহার কোন কারণ নাই। শাস্তে চারিটী আত্র-মের কথা আছে বটে কিন্ত গৃহস্থ আশ্রমকে সকল আলমের সার বলিয়াই নির্দিট করা হইয়াছে । চেফা করিলে সাধক সংসারে থাকিয়াই ঈশ্বরকে লাভ করিতে পারেন। এতন্তিম অন্যান্য আশ্রমে যাহা সমাধা হইতে পারে না, সংসার আশ্রয়ে তাহা স্থসম্পন্ন হইয়া থাকে। সংসারে থাকিয়া পিতা যাতা ও অন্যান্য গুরু জনের দেবা করা যায়, ক্ষুধিতকে অশ্বদান, তৃষ্ণাতুরকে জল मान, अवः ताशीत अधामा कता यात्र, विमार्थीतक विमा-দান, আপামর দাধারণকে উপদেশ দান এবং কুপথ-গামীকে স্থপথে আনয়ন করা যায়। বিশেষতঃ সংসারে থাকিয়া একটা প্রকৃত বীরের কার্য্য করা যায়। এই কার্য্য ষ্ডু রিপুকে বশীভূত করা । সংসারে নানা প্রকার প্রলোভন আছে। যিনি এই সকলকে তুচ্চু করিয়া ঈশ্বরে মনঃপ্রাণ সমর্থণ করিতে পারেন,তিনিই ত প্রকৃত ধার্মিক,

তিনিই ত প্রকৃত ধর্মবীর। নতুবা, যিনি এ সকল কার্য্য সমাধা করিতে না পারিয়া বনে গমন করেন, তিনি ত রণে ভঙ্গ দেওয়া দিপাহী। সংসার ত্যাগ করিলে কেবল যে ভীরুতা দেখান হয় তাহা নহে, কর্ত্তব্য কর্ম্মে অবহেলা জন্য পাপের ভাগী হইতে হয়। পিতা মাতা e অন্যান্য পরিশোধ না করিয়া, সংসার ত্যাগ করা কোন মতেই উচিত নহে। তবে সাধ্য মতে পিতা মাতা প্রস্থৃতির मिता कतिया है हाएमत अर्गादताहन है हेएल शत, छेशबुक পুল্রের প্রতি সংসাপ্নের ভার দিয়া, গৃহী ব্যক্তি সন্ত্রীক, কোন পবিত্র এবং প্রাকৃতিক শোভা সময়িত স্থানে. ঈশবের আরাধনায় তাঁহার অবশিষ্ট জীবন অভিবাহিত করিতে পারেন। এ অবস্থায়, তাঁখার যে কর্তব্যের শেষ হইল তাহা নহে। তিনি তখন ও আপামর সাধারণের **मित्रा नियुक्त थाकिएज भारतन । 'वार्ष का-मभाग्न जाधिक** কিছু করিতে না পারেন, লোককে উপদেশ দানে ভাঁছার সময়ের কিরদংশ ব্যয় করিতে পারেন। এই সকল উপ-**एम खार्या क**तिया अकनाथ जनार्फन शहरक माछोज প্রণাম করিলেন। পছজী তাঁহাকে আশীর্কাদ করিয়া স্থৃত হইয়।ছি। তুমি অতি উপযুক্ত পাত্র। তোমার দ্বারা যে পৃথিবীর সমধিক মঙ্গল হইবে তৎপক্ষে সন্দেহ মাত্র নাই। গুরুদেবের আশীর্কাদ শিরোধার্য্য করিয়া একনাথ তীর্থজ্মণে যাত্রা করিলেন।

ক্রমশঃ।

বিজয়া।

विजया अश्र्व माम श्री — अमाधातन এवः अशार्थित।
उदा आत्माक ७ अक्षकाद्वत मः रयात्रा, स्थ ७ द्वः ध्वत
मन्नम, दर्घ ७ विषादमत आनिन्नम, आस्नाम ७ अवमादमत
ममादिन, दमव ७ मानदित्र मिमानम। विजयात मिन दामि
७ कामात द्यां ७ अकाधाद श्ववादिश्व द्या । दम मिन

ছায়া ও উষা হাত ধরাধরি করিয়া প্রীতি-কথা কহে । এমন বিরুদ্ধ সংযোগ, এমন অসম্ভব ব্যাপার পৃথিবীর আর কোথাও সম্ভবে কি না জানিনা, পূণ্যভূমি ভারত-वर्स छेहा चर्स २ घिंगा शास्त्र । विमर्क्सतित मिन व्यामार्गत रहार्थ जल व्याहरम: व्यामता का निया रक्ति। কেননা, এই দিনে দীন তুঃখীর সহায় জ্ঞান্মাতা, দয়া করিয়া দরিদ্রের তমসাচ্ছন গৃহ দিব্য হাঁসির বিদ্যা-দিকাসে সমালোকিত করিয়া, অস্থতীকে স্থাপের আসাদ निया চলিয়া যান। যাঁতার আগমন-প্রতীক্ষায় বৎসরা-বধি ভূষিত চাতকের ন্যায় উদ্গ্রীব এবং উৎক্তিত থাকিতে হয়, তাঁহাকে কোলের কাছে পাইয়া, সেই নয়ন-তারা তারাকে তিন দিন, গৃহে রাথিয়া আদর যতন করিয়া আবার যে জলে ভাসাইয়া দিতে হয় ; ভাই মন:প্রাণ কেমন করিয়া উঠে, যেন মতিচ্ছন্ন হয়. **टक्मन विश्वल विखारखत नी** श्रे शूतिशा द्वज़ारे । अहे দিনে হিন্দুর গৃহ শাশান হইত্তেও ভীষণ । আ্মাদের পক্ষে এই দিন বড় ছঃ থের, বড় যাতনার, বড় বিপদের। त्य व्यामाग्न कीवन, त्य व्यामाग्न मनुशुक, त्महे व्यामाग्न क्ठां एयन चमा हारे পড़। हिन्दूत गृटह धर्मन मेकू-লান নাই। এই অস্বচ্ছন্দতার অবস্থা হইতে তিল তিল করিয়া সংগ্রহ করিয়া তবে নমো নমো করিয়া বৎপরান্তে এক ধকার পূজা হইয়া থাকে। পূজার চিন্তা, পূজার चारमञ्जन, शृकात ८०छ। वात्र मामरे थाटक । भत्रस्र विमर्क्स्तत पिन मत्न ह्यु रयन मकल हिन्छ। मकल (हन्छे। সকল উদ্যোগ নষ্ট হইয়া গেল। যেন আশা ধসিয়া পড়িল,। বড়ই সংযমী হইলেও বিসর্জ্ঞানের দিন বুক্ ছুর্ ছুর্ করে, চোখ্ ফাটিয়া জল আইদে।

পক্ষান্তরে বিজয়া — হিন্দুর বিজয়া। বিজয়ার দিন হিন্দুর কঠে বিজয়-রৈজয়ন্তী মালা শোভিত হইয়াছিল। বিজয়ার দিন হিন্দুর শক্তি, ধর্মের শক্তা, পবিত্রতার শক্তা, দেবতার শক্তা, মনুষ্যক্ষের শক্তা রাক্ষদ রাবণ নিহত হইয়াছিল। বিজয়ার দিন জীরামচন্দ্রের চির- বিচ্ছেদের অবসান হইরাছিল, এই দিনে তাঁহার কিষাদমাথা মুখে হাঁসি দেখা দিয়াছিল। বিজয়ার দিন বিরাট
রণ-প্রাঙ্গনে বিশ্বরাপী অরিজের উচ্ছেদ হইয়াছিল। এই
শুভিনি, দেব দানবে আলিঙ্গন করিয়াছিল, নরবানরে
কোল কুলি করিয়াছিল, প্রণুয়ের সন্মিলনের পাঁয়ুষ
প্রবাহ ছুটিয়াছিল । এই দিনে বিবাদ নাই, বিমন্তাদ
নাই। আমোদ ঝালিঙ্গন —প্রাত্তি —সোহাগ — স্লেহ —
সোহাদ্য এবং উৎফুল্লভার ফোরারা ছুটিতে থাকিবে।
এমন সার্বজনান আনন্দোৎস্বের দিন বৎস্রের মধ্যে
বুঝি আর নাই।

তাই জিজ্ঞাসা করিতে ইচ্ছা হয়, মা আনন্দময়ি! তোমীর সদানন্দের রাজ্যে আর ব্দর স্থানে--এমন আলোক-আঁধার করিয়া রাখিয়াছ । আমরা ত মা ! তোমায় রাবণবধের কারণ ডার্কি না। তোমাকে দেখিব. তোষার কথা শুনিব, তোমার পূজা করিব, তোমায় মা বলিয়া ডাকিয়া মনের সাধ মিটাইব ; আর • ভূমি হাঁদিবে, অধর প্রান্ত চাপিয়া ২ আকর্ণবিশ্রান্ত চক্ষের কোল ঘুরাইয়া ২ অন্যের অলক্ষ্যে দশ হস্ত কাঁপাইয়া, মুকুট নাড়িয়া ভূমি হাঁদিবে; আরতির সময়ে ধৃপধুনা श्रुशात्मत हक्तांकात घन धृत्मत मत्था, श्रुश्र्वात्रित নৃত্যের তালে ২ আপনা ভুলিয়া, ত্রিভুবন ভুলাইয়া লুকাইয়া ২ ভূমি হাঁসিবে, তোমার হাঁসি দেখিয়া আমি হাঁদিব, দশজনকে হাঁদহিব—মাতাইব। আমার मकल छू:थ, मकल काला, मकल जावना मृत्त याहेत्व, আমি কৃতার্থ হইব, ধন্য হইব। এখন আমার সে দিন नारे, तम भक्ति नारे, तम প্রভাব नारे, আমার পক্ষে শক্রবধ-আকাজ্যা বামনের চাঁদধরা মাত্র। আমি সার্বত ভৌম সমাটের বংশধর হইয়াও এখন কুরুরপদদলিত। শক্তিরপিণি। শক্তি প্রার্থনা করিবার জন্য তোমায় ডাকিব কেন মা ? আমার কি আর শক্তি-ধারণের ক্ষমতা আছে? আমি চাই তোমাকে—তোমায় দেখিতে। তুমি (मथा (म ७, कथा कछ, नाथ मिहाछ। अवः यहिवात

সময়ে ক দে ইতে ২ হাঁ দাইয়া যাও! এ বিচেদের ভীষণ মেঘের কোলে মিলনের অচঞ্চল চপলা হাঁদি অঙ্কিত করিয়া দিয়া যাও! তোমার মহামহোৎদবের এই টুকুই চমংকার, এই টুকুই আশ্চর্যা প্রহেলিকা!

কত পুরাতন কথা মনে পড়ে। সে পূর্ব্ব গৌরবের— তেক্লের—স্পদ্ধার কত কথ মনে পড়ে। মনে পড়ে, এক ' দিন <u>শীরামচন্দ্র রাজরাজেখর হইয়াও জটাবল্কল ধারণ</u> করিয়া অতিইনে দীন তুঃখীর বেশে সাগর-বেলা-ভূমি-সন্নিকটে তোমার পূজায় ব্যস্ত, অন্ট উর্দ্ধ শত নীলকমল লইয়া তোমায় অঞ্জলি দিতেছেন চারিদিকে বানর পাল निञ्ज-कत-र्याए प्रधारमान । একে ২ সকল জোমতে রাঙ্গা পায়ে শোভা পাইতে লাগিল, কিন্তু বুঝি একটি,কম পড়িল, পাতি পাতি করিয়া খুঁজিয়া কোথাও অপহত পদ্ম পাওয়া গেঁল না, কি হইবে, পূজা পূৰ্ব কেমনে হইবে ? পরিশেষে মহাবীর রামচক্র ভাঁহার ুজপরূপ কোটীকমলগুভা-পরাজ্য়ী নেত্রকমল উৎপাটিত করিবার মানদে শরাসনে শর্যোজনা করিলেন, আর স্থেহময়ি মা ! তুমি তথনি তোমার বাল্কাময়ী মূর্তির অন্তরাল হইতে দিবা মাতৃরূপে আবিভূতি হইয়া ভগবানের হস্তরোধ করিলে। তোমার আশীর্কাদে তোমার দিব্য শক্তিযোজনায় রাবণ নট হইল, দকল তুঃখ দূর হইল। সেই এক তোমার করুণার দিন! আর আজ কত দব পণ্ডিতের মুখে শুনিতেছি যে মা ত্মি জগমাতা, তুমি কাঁট পতক্ষের বিশ্বচরাচরের অন্ন যোগাও তুমি না বলিতে সকলের সাধ মিটাও, তোমার কৈছে প্রার্থনা কি ? তে:মার কাছে কামনা কি ? কথাটা সভ্য কি মিথ্যা ভূমি জান, আমার দে অমুসন্ধানে আবগ্যক नारे। किन्न मत्न इत अरे भिकात त्नार्य द्वि आकात করিতে ভুলিয়াছি।তবুও মা তুমি ঘরে আদিলে তোমাকে সকল অভাব না জানাইলে,মন তৃপ্ত হয় না। যিনি দর্শ্বে-খর, তিনি তোমার কাছে প্রার্থনা না করিতে পারেন, আমিত মা সর্বহারা, ভোমার ছরারে আমি ভিক্রা

করিব না ত আন্যে কে করিবে ! অরণ্যচারী ভিশারী ভগবান রামচন্দ্রও নাকি তোমায় "ধনং দেহি পুত্রং দেহি " বলিয়া পূজা করিয়াছিলেন। আমরাও বলি মা ভূমি আমাদের ধন দেও, পুত্র দেও, ঐশ্বর্য্য দেও, সম্পাদ্ দেও, বিদ্যা দেও, বৃদ্ধি দেও, বল দেও, বিক্রম দেও, তক্তি দেও, আদ্ধা দেও, স্নেহ দেও, পবিত্রতা দেও আর ঘাহা দিবার, তাহাও দেও। ভূমি না দিলে আর কে দিবে মা! তোমার কাছে না চাহিলে আর কাছার কাছে চাহিব মা! ভূমি দয়া করিয়াছিলে, তাই একদিন জগন্মান্য হইয়াছিলাম, আবার করুণা-দৃষ্টি করিলে পূর্ব্বপদার্ক্র হুইতে পারিব।

পূজার তিন দিন দাও দাও যে বলি নাই, ভিশারীর বেশে তোমাকে যে ব্যস্ত করি নাই তাহা নহে।

সাধ্য অসাধ্য, সম্ভব অসম্ভব, কত সাধ্ তোমাকে জানাইয়াছি কত আকার তোমার কাছে করিয়াছি।

তুমি সকল বাসনা পূর্ণ করিয়াছ কি না অথবা পরে কগনও করিবে কি না তাহা তুলি জান সে সকলের হিসাব নিকাসের এ সময় নহে। এখন তুমি চলিলে,

আবার তোমায় দেখিতে পাইব কি না, তোমার পূজায় ব্যস্ত থাকিতে পারিব কি না তাহা ভগবানই জানেন।

এই বেলা আর একবার তোমায় নয়ন মন ভরিয়া দেখিয়া লই, চক্ষুর সাধ মিটাইয়া মনের বাসনা পুরাইয়া তোমার চাঁদ মৃথ থানি দেখিয়া লই, বক্ষের উদ্বেগ চাপিয়া নেত্রনীর মৃছিয়া তোমার জবাশেঃভিত অপরূপ রাঙ্গাচরণ তুথানি দেখিয়া লই।

লোকে বলে মা ! তুমি চিমায়ী অরূপিনী । কিন্তু
আমার বারণা মা ! তুমি মুমায়ী রূপশালিণী । তুমি আমাদের
মা, যে ভাবে যাহা দিয়া তোমাকে নির্মাণ করিব, যাহা
দিয়া সাজাইলে আমি প্রিত্পু হইব, তুমি তাহাই ।
তুমি খড় মাটির পুতুল হইলে দোষ কি ! তোমাকে
ভাকের সাজে সাজাইলে, চাল ক্লা খাওয়াইলে দোষ
কি ! আমি পোত লিক হইব, অভোশাসক বইব, অসকা

बर्यत मूर्थ इहेर, क्रगरंजत त्लांटक शारत धूना नित्र, ক্ষতি কি ! অপমানের, লাঞ্নার আর বাকী কি আছে ? বে গালি খাইতেছি, যে इर्फगा ভোগ করিতেছি. हेशात अधिक चात कि हरेंदर ? आधि जानि ना दूनि সাকার কি নিরাকার, ভূমি সগুণ কি নিওণি, ভূমি আছ कि नारे। उदय जामात गारा जान नारंग, जामात गारा মনোমত, বাল্যকাল হইতে আমি যাহা শিথিয়াছি তুমি তাহাই। তুমি বিশ্বচরাচর, তুমি বিশ্বস্তি, তুমি আদি, তুমি অস্ত, তুমি অনাদি, তুমি অনন্ত, তুমি জড়, তুমি শক্তি, তুমি শক্তি, তুমি ভার, তুমি ভক্তি, তুমি মায়া, তুমি মেধা, ভূমি ছায়া ভূমি উষা, ভূমি অস্তি ভূমি নান্তি, ভূমি উদ্বেগ ভূমি শান্তি, ভূমি পূর্ণ ভূমি শুনা, ভূমি নীচ ভূমি মান্য, তুমি মাতা তুমি পিতা, তুমি কুত্র, তুমি বিধাতা, তুমি আমি, তুমি তুমি. তোমা ছাড়া আরু কিছুই নাই, তুমি বৈ আর কিছুই নাই। হইলেই বা. মা ! তুমি খড় **मिष्ट्र वाम वाकातीत ममष्टिं। यादा मिव. यादा अताहेव,** যাহা দিয়া তোমায় পূজিব. তাহা তোমারই দব, তুমিই সব। কারণ তোমা ছাড়া বিষয় হয় না, তোমা ছাড়া কথা সম্ভবেনা। তবে এত গোলমাল কেন, এত বিতণ্ডা কেন ? আমি যাহা, তোমায় তাহাই হইতে হইবে, আমার যাহা আছে তোমায় তাহাই লইতে হইবে। এখন আমি ककीत, আমার খড়-দড়ি-মাটি ভূষ বই আর কিছুই নাই, আমার ডাকের দাজ বৈ অন্য আভরণ নাই, আমার চাল কলা ব্যতীত অন্য ভোজন-সামগ্রী নাই। তাই মা! তুমি জগন্মরী হইয়াও ভাষার গৃহে আসিয়া মুম্মরী হইয়াছ, রাজরাজেশরী হইয়াও আমার মা হইয়া ডাকের সাজে অলকৃত হইয়াছ, অমপূর্ণা হইয়াও দরিদ্রের ্চালকলায় তোমার ভোগরাগ হইতেছে। আবার স্থদিন হইলে তোমায় কণকময়ী করিব, দিব্যাভরণ-ভূষণে সাজাইব, অমৃতভোগে জোমায় পরিতৃপ্ত করিব। এখন তুমি কাঙ্গালের মু; তিই কাঙ্গালিনী হইয়া-जिथातिनी—(अश्यह्मही इरेशा आमात शृंदर वामिशाहितन।

দেবি ! তুমি দীনবেশেই আসিয়াছিলে । নিবেশেই/
চলিয়া মাইতেছ। তোমার পূজা আমি ভুলিয়াছি,
তোমার সেবা আমার দারা দার হয় না. তোমায়
আনিয়া তোমার দোহাই দিয়া, নীচ আমি পাপের
ভ্যোত প্রবাহিত করিয়া দিই—আমার পৈশাচিক
পিপাসার তৃপ্তিসাধনে চেষ্ট্রিত হই । বারে বারে তুমি
কত প্রকার বিভীষিকা দেখাইয়া যাও, বারে বারে তুমি
আমার দারিজ্যের, পরিমাণ করিয়া যাও, বারে বারে
তুমি ভারত-মহাম্মশানের চিতা গণনা করিয়া, যাও,
কি বলিব পাষাণী তুমি, বিধির বক্তলেথ তুমি মুছিয়া
দিলে না, ললাটের লিখন তুমি উল্টাইলে না। যাও
মা! আবার আসিও আবার এমি হাঁসি মুখে আমাদের
তুর্দশা দেখিয়া যাইও!

এদ মা! তোমাকে 'যাও' বলিতে মাই," P তোমার আমার অকল্যাণ হইবে আসা এক; তোমার বিসর্জনে তোমার আগমনী, বোধনে তোমার বিজয়ার সক্ষেত। এস মা! যথায় তোমার আগমন, তথায় ভূমি আইস। গঙ্গাণর মহাদেব তোমার আগমন-প্রতীক্ষায় তুয়ারে দাঁড়াইয়া আছেন। মৃথায়ী মা! গঙ্গার পবিত্র সলিলে তোমার মৃথায় দেছ গলাইয়া, তোমার সপত্নী অঙ্গে অঙ্গ মিদাইয়া, আমা-দের গৃহ শ্ন্য করিয়া, শ্ন্যের মধ্যে পূর্ণভোদ দিয়া, পরাজ্ঞয়ের দিন বিজয়ার শতদ্বন্দুভি-ধ্বনি ঘোষিত করিয়া এদ মা ! ঐ আকাশে শারদেন্দু গুধামাথা হাঁসি হাঁসিতেছেন, ধরাতলে তর্গ্নিনী মন্দাকিনী আমা-দের নেত্রনীরের সহিত উছলি উছলি, শুভ জ্যোৎস্না-চ্ছটা উথলি উথলি অয়তধারায় তোমার মুম্মরী প্রতিমা ভাদাইয়া লইয়া যাইতেছে, আর নদীতরঙ্গ-প্রতিঘাতী কোটা কোটা চক্ৰকলা তোমায় লইয়া স্থাক্ৰোতে উলটি পালটি গলিয়া যাইতেছে। ঐ অদুরে বিস্তীর্ণ রামলীলা-কেতে নাট্যশালার নাট্যরঙ্গে প্রচণ্ড রাবণের থকাণ্ড চিতা ৰূলিয়া উঠিয়াছে, তাহার পৌরজনবর্গের হাহা-

ধ্বমির সাস ঐারামচক্রের অপণিত নরবানরে জয় জয় त्रदेश मिल्मिं। विकम्भिङ **क्रिया मिल्डिছ। मल्माम**ती ्काॅ पिल, व्यवाधिनी इटेल। आंद्र मर्द्र माजार नी হাঁসিলেন-পতিসোহাগিনী ছইবার আশায় আনন্দোৎ-ফুলনেত্রে আনন্দের মুক্তামালা কপোল ও গণ্ড বহিয়া গড়াইয়া পড়িল। মা ! তুমি এস ! তোমার আসার সহিত কক্ আশা আসিয়া জুটে, আবার কত আশা চলিয়া যায়। মা ক্ষুদ্র আমি, তুর্বল আমি, বিজয়ার এ বিপরীত ব্দুষ্টি অংমার ধারণা চ্য় না। তোমার বিসত্র্যনের দিন टायाय जूनिया टक्यन कंत्रिया जावात शामित ! वन मा ७ हाँ मि-कामात हित्र विद्यांध त्कमरन पूछा हैव। এদ ভাই—আৰু কাঁদিতে কাঁদিতে হাঁদিয়া কেল্রিয়া, শূনা গৃহে পূর্ণতার পূর্ণ কল্লোল করিয়া আমরা অবাপ্না-আপনি-আলিঙ্গন করি । আমরা কীদিব, टकनना वामता छःथी, वाबाटमत मा वि वात दकर न। दे. সেই মাহোরা আজ 'হইলাম•; আমরা হাঁসিব কেননা লক্ষীছাড়াকে लक्यीयस क्रियाह्न. ষা আসিয়া **এরামচন্দ্রের শূন্য কক্ষ পূর্ণ করিরাছেন, কোজাগরে**

শু ভ্রজ্যোৎস্না বিলাইতে বিলাইতে মা লক্ষ্মীর আগমন হইবে, অন্নহীনের গৃহে অন্নপূর্ণার আবির্ভাব হইবে। আমি কাঁদিব কেননা তোমরা বুঝি কাঁদিতেছ, আমি হাঁসিব কেননা আমার এ রোদনের বেগ ত আর রোধ হয় না।

মা আবার আসিও! আবার—কাঁদাইও! আবার হাঁসাইও! এস মাঃ

২৩ শে কার্ত্তিক হইতে ৺ কাশীধামে ভারতবর্ষীর
আর্থ্যপর্ম প্রচারিণী সভার মহামহোৎসব আরম্ভ হইবে।

> লা অগ্রহায়ণে শেষ হইবে। প্রসিদ্ধ ধর্মবক্তাগণ
উৎসবোপলকে বক্তৃতা করিবেন। ৺ চুন্তিরাজ গণেশ
কিমনাথাদির পূজা, বেদবিদ্যালয়ে বেদগান, সঙ্কার্ত্তন,
গঙ্গাবকে জল্যানে সঙ্গাত্ত ইত্যাদি কার্য্য কলাপ
অক্সিক্ত ইইবে। এতত্বপলকে ধর্মপ্রচারকের গ্রাহক
অক্স্থাহক পাঠক বর্গকে আমরা নিমন্ত্রণ করিতেছি।
উৎসব-দর্শনের সঙ্গে যাহারা তীর্থদর্শনের ফল লাভ
করিতে চাহেন, তাহাদের ইহাই শুভ অবসর।

বিজ্ঞাপন।

আমার নিকটে সরাসীয়ত বিষয় অব, প্রীচা ও বরুৎসংযুক্ত অব, হতিকা অব, হলর দৌর্মণা উদরী, মুত্তকুত্ব, শোণ, পাও ছাবা, ধাতুকরজনিত পীড়া, মেহ ও তৎসংক্রান্ত অব, কোডাভিঙ বায় ও অলগী দোব, অম ও তৎসংক্রান্ত শ্ল, প্রদর, কাণ, ও তৎসংক্রান্ত অব, হাণানী কাণী বন্ধা পারা দোব, গোঁটে বাভ প্রভৃতি রোগের ঔবধ আছে। এই ঔবধে কোন প্রকার হানিজনক দ্রবা নাই। ইহার মারা আশুর্বারূপে রক্ত পরিছার হইয়া অল্লিন মধ্যে শরীরের পৃষ্টি সাধন হয়। এমন কি সালুসা বা ক্ত্লিভার অবেশ অপেকা অনেক এবে প্রেট। মে কোন কারণে পরীর চর্পল হউক না কেন অভি অল্লান্ত মধ্যে ইহা বাষহারে পৃষ্ট সাধন করিবে। বলি কাহানত পরীরে কিকিয়াত জীবনীশক্তি থাকে ওবে আমার এই ঔবধ নির্মিওক্রপে বাবহার করিলে নিশ্চর আরোগা লাক করিবে।

কাশ ও আগর রোগে সপ্তার ২ ছুট টাকা। অক্সান্ত রোগে সপ্তার ১ এক টাকা। বিনি নিরুপার, প্রমাণসূত্ পান বিপিপে ও ভাক মাপুল দিছে শীকার করিলে বিন:মুল্যে ঔদধ দিব। সর্পান্ধন-চিকিৎসা ও আবংশীতিক ঔবধাবলি। প্রাক্তোক প্রক মৃশ্য 🗸:১ । পাণ্লের মহোমধ। ইয়া হার। স্ক্রাকার পাগল জন্নদিনের মাধ্যে ভারে গ্যু হইবে। এক কোটার ৪০ টি বটিকা থাকিবে। মূল্য ৩ টাকা।

•व्य वाषात्र-- मृत्यत्रा

धन्त्रं श्रात्क।

" কুলং পবিত্রং জননী ক্লতার্থা বস্তব্ধরা পুণ্যবতী চ তেন। অপার সন্থিৎ সুখসাগরেম্মিন্, লীনং পরে ব্রহ্মিণি অস্য চেতঃ॥"

১৪শ ভাগ ৮ম ও ৯ম •সংখ্যা " এক এব স্থীদ্ধশো নিধনে২প্যকুর্যাতি নঃ।
শরীরেণ সমলাশং সর্বামন্তু গচ্ছতি॥":

শকাব্দা ১৮১**৩** অগ্ৰহীয়ণ ও পৌৰ মাস

যা**ত্তবন্ধ্য-সংহিতা**। (পূর্ব্বপ্রকাশিতের পর)

ক্ষ্য সূর্য্যাজির ধ্বান্যানাং মুদলোলুখলানসাম্।

থোকণং সংহতানাক বহুনাং ধান্যবাস্থাম্॥
তক্ষাং নার্কশৃঙ্গাল্লাং গোবালৈঃ ফলসংভ্বাম্।
মার্জনং যজ্ঞপাত্রাণাং পাণিনা যজ্ঞকর্মণি॥
যজ্ঞবন্ত্র, সূর্য্যাজির, (কুলা) ধান্য, উত্থল, মুদল ভ্
শক্ট এই সমস্ত্র উন্ধজল দ্বারা শুদ্ধ হয়। পুঞ্জীকৃত
ধান্য ও বন্ধের উপরে জল ছিটাইয়া দিলেই শুদ্ধ হয়।
কাঠ ও শৃঙ্গনির্মিত পাত্র তক্ষণ দ্বারা, ফল নির্মিত
পাত্র গো কেশ দ্বারা ও যজ্ঞপাত্র হস্ত দ্বারা, পরিমার্জন
করিলেই শুদ্ধ হয়।

সোবে রুদক গোমুত্রৈঃ শুরুত্যানিক কৌশিকম্। সঞ্জীফলৈরংশুপুট্টং সারিক্টৈঃ কুতপং তথা।

সাজি মাটি, গোম্ত্র ও জল দারা কমল ও তসর আদি বস্ত্র শুদ্ধ হয়। বক্ষলনির্মিত বস্ত্র বিল্লফল, সাজি মাটি, গোম্ত্র ও জল দারা এবং শাল দোশালা আদি বস্ত্র রীঠা, সাজি সাটি ও গোম্ত্র দারা শুদ্ধ হয়।

সংগাঁর সর্বাসিং প্নঃ পাকান্ মহীময়ং।
কার্মহন্তঃ শুচিঃ পণাং ভৈক্ষ্যং যোষিন্মুখং তথা।

বেশনী বস্ত্র গোস্ত্র ও সাদা সর্বপ দারা, মৃন্মর পাত্র পুনঃ অগ্নিপাক দারা শুদ্ধ হয়। শিল্পী, ধোবা ও বং প্রস্তুত কারীর হস্ত, বিক্রেয় ক্রিব্যু কিলালক দ্রব্যু, ও সম্ভোগ কালে জীর মুখমণ্ডল সর্ব্বদাই ফভাবতঃ প্রিত্র।

ভূশুনি ম জিনাদাহাৎ কালাদ্গোজমণাতথা।

সেকাজ্লেখনালেপাদ্ গৃহং মাজ নলেপনা

সমাজ নী দারা পরিকার করিলে, অগ্নি দারা দগ্ধ
করিলে, জল দারা সিঞ্চন করিলে, খনিত্র দারা খনন
করিলে, গোপাদক্ষেপ হইলে, এবং কিয়ংকাল অতীত

হইলে ভূমি শুদ্ধ হয়। গৃহ মার্জন ও লেপন দারা
শুদ্ধ হয়।

গোডাতেয়ে তথা কেশে মকিকাকীটদূবিতে।

সলিল: ভন্ম হৃদ্বাপি প্রফেতবাং বিশুদ্ধরে ॥

যদি অন গো কর্ক আছাত হয়, কিম্বা কেশ,

মকিকা, ও কীট দ্বারা দূষিত হয়, তাহা হইলে তহুপরি

সলিল, ভন্ম, কিম্বা মৃত্তিকা বিন্দু মাত্র ছিটাইয়া দিলে,

তাহা শুদ্ধ হয়।

ত্রপুদীদক তামাণাং ক্ষারায়োদক বারিভি:। ভন্মাদ্রিঃ কাংস্থলোহানাং শুদ্ধিঃ প্লাবো দ্রবস্ততু॥ পিতল, দীদা ও তাম, লবণাক্ত জল, অমুজ্ল ও শুদ্ধ জল দারা পদ্ধ হয়। কাংস্য ও লোহ ভদ্ম ও জল দারা শুদ্ধ হয়। য়ত ও তৈল আদি দ্রেব পদার্থ করণ মাজেই শুদ্ধ হয়।

ক্রহীশঃ।

অহঙ্কার ৷

, আমরা পূর্ব প্রবন্ধে 🔹 দেখাইয়াছি, তীব্রতার তিক্রাভাব – ছুর্শ্বলতার , আতিশয্যই পাপের ভিত্তি-ভূমি। শক্তিসত্ত্বে তেজের সন্নিধীনে—ভাবের বিকাশ-ক্ষৈত্রে ভাবের আবির্ভাব একরূপ-একরূপ কেন. সম্পূর্ণ ই অসম্ভব 🖲 অস্বাভাবিক। তাই মহান্মা শুকদেব বলিয়াছেন—" "তেজীয়সাং ন দোগায় ।" কিন্তু .দে তেজিফিত্রী অথাদ্য আহার জনিত পাশ্য শক্তি নহে— তাহা বয়ঃস্থল ভ রজস্তমাঞ্জিত উন্মার্নগামী মনমাতঙ্গের বিষয়বিষাক্ত উন্মত্তাক নহে—উহা অনান্সিক ও অ্যানবিক—মনের অতীত দেশনিংসত। শক্তিখীন শ্রীরে কুপথ্য তো ফ্লেশকর বটেই ; স্বাস্থ্যের স্থাদ্যও বিষময় ফল প্রস্ব করিয়া থাকে— আলিম্বন তথন বন্ধন -विनया Cवाध रुप्त, मार्थित जनकात अक जारत वान मार्थित বর্ম্ম ঘর্মাকারক এবং শিরস্ত্রাণ শিরঃপ্রাচার কারণ হইয়া উঠে। ছুর্বলঞ্চয় জীব আপনার শক্তিহীনতা-স্বীকারেও অসমর্থ,ত।ই অপরের স্কন্ধে দোয়ারোপ করিয়া আপনার অসত্য সাধুতার পরিচয় দিতে চায়, অপরের দোষে নিজের দোষ ঢাকিতে গিয়া আপনাকে আরভ দূষিত করিয়া ফেলে। কালি হাতে মুথের কালি মুছিতে র্বগয়া সম্বরূপ সকলকে আরও ভাল করিয়া দেখাইতে চুেক্টা পায়।

অহমারও আমাদের অলমার, কিন্ত এ আভরণ সম্বীণ অহনিকতা উদ্দীপনার জন্য নহে, অন্মদাদির উদ্দিগতি—উন্নতিকয়ো হাজিত—ইহা জীবের শিবত্ব-

* মঙ্গলময়ী শক্তি চিরশিবদাতী। স্বরূপত কিছুই অন্তথকর নছে-পার্থক্যই-ভয় ও ছংখের কারণ (দিতীয়াদৈ ভয়ম্ভবতীতি প্রতিঃ) এবং ক্ষুদ্রতাই তাহার মূলবাজ। পূর্ণায়তনে কোন পদার্থই দোম-স্পৃষ্ট হয় না, অসম্পূর্ণত্বা—অল্লতাই দোমের আকর, কুদ্ৰ হ'ইয়া পৃথক্ থাকিলে, দূষিত হইবে—ভাই বলি বড় হইলা লাও, নিতাভ বুড় হইতে না পার, তো তাহার আপ্রিত হও, তদনুবর্তী হইয়া ভাদুানা ভাবে गिलिया गिलिया, गाउ-छात छैल इहेगा गाउ, किन्छ মাছ হই এনা আবার ধরা পড়িবে, পৃথক্ অন্তিত্ব রূপ লবুর্বিধায়ক শুক্ষ অলাবু সঙ্গে লইওনা, তাহা হইলে ভূবিয়াও ভাসিয়া উটিবে—বুদ্দ সহ উপরে তুলিয়া (क्लांहेरय-अरक्वारत अलिया यां 3-आशनारक o 'ভুলিয়া যাও—বড় হইবে তো আপনাকে বড়ই ভাব, लाकरकै 9 छ। इ छ। विषठ (म 9— लाक वर्षे दे प्रथ्क, তোমাকে পুথক্ যেন আর না দেখিতে পায়। বড় হইতে গিয়া আপনাকে আর পৃথক্ করিয়া ভাবিতনা, ক্ষুদ্র इरेग़ा गारेत-शाम शाम शिलाम शिलाम शिलाम छरेकाल বহুরপৌ সাজিয়া সকলের সমক্ষে মুণিত ও হাস্যাস্পাদ इहेरत। जिम्ल गठका (श्रामीत माजिएमर्ग थारक. ততক্ষণ নিচ্পেশিত হয় না, কিন্তু পুথক্ হইয়া দূরবর্চী হইলেই চুণবিচুণ হইয়া যায়। প্রার্কজনিত বাসনা বায়বিতাড়িত হইয়া অহ্মিম বুদ্ধির বিকাশেই পার্থক্যের • জীবের জন্মের 🕫 স্কেশের ব্রেণ। ক্রিয়ার আধার-কেন্দ্ৰ দদৈব নিশ্চল, তাই কেন্দ্ৰে ছৈতি নিৰ্ভয়, কিন্তু

বিধায়ক। কিন্তু ব্যবহারদোবে অমৃত বিষ হইয়াছে, কঠের হার উদ্ধান রজ্জু হইয়াছে—হন্তের বদায় চরণশৃত্থালে পরিণত হইয়াছে। অপব্যবহারে স্বর্ণবর্ণ কলম্বিত, উদ্ধাশা ছরাশা ও নিরাশায় পরিণত। উম্বতির দারে অবনতির ক্রোত প্রবাহিত, মুক্তির মূল বন্ধন
শূল হইয়া দাঁ ছাইয়াছে, তাই অহঙ্গৃতি বিকৃতি ভাব ধারণ করিয়াছে।

अन्य भोतिना ३०म नथा। २०म छ[त मः शः।

কেন্দ্র।তিগ হইলেই ঘ্রিয়া মরিতে হয়। বিচার-দৃষ্টিতে অহন্ধার সরপতঃ বাহ্যজগতের উন্ধতি ও অন্তর্গতের নিদ্ধি স্বরূপ। আন্ধ-স্থিত-জ্ঞান না থাকিলে কার্য্য-কুশল হওয়া যায় না, আন্তিক্য বৃদ্ধির ও উন্ধ হয় না। পাঠক! অহন্ধারের মলিন মূর্ত্তি অনেকবার দেখিয়াছেন ও অনবরত দেখিতেছেন স্থতরাং সে বিষয়ে বিশেষ কিছু বলিবার আবশ্যক দেখিনা; কিন্তু যে ভাবে মহান্ধা রামপ্রসাদ বলিয়াছিলেন—"এবার ভূমি থাওঁ কি আমি খাই মা, ছ'টার একটা করে নান।" ইহার যদি নিগৃত তম্ব জানিতে চাহেন—যদি এই দৈবী প্রতিমা দেখিবার ইচ্ছা থাকে, তবে একবার শাস্তাদর্শে অবলোকন কর্জন।

যোগবাশিষ্ঠে-

জীরীম, টুবাচ।

কিমাকৃত্রির্হ্শাব্রঃ কথং সম্ভাজ্যত্তে প্রভো।
সশরীরোহশরীরো বাঁ ত্যক্তে তিম্মংশ্চ কিং ভবেৎ ॥
বশিষ্ঠ উবাচ।

ত্রিবিধাে রাঘবাস্থীই অহস্কারাে জগজ্রে।

কে শ্রেড।বিতরস্তাজ্যঃ শৃণু তে কথয়াম্যহন্ ॥

কাইং সর্বনিদং বিশং পরমালাহমব্যয়ঃ।

নান্যদন্তীই সন্দিদ্ বা পরমা সাহ্যহস্কৃতিঃ ॥

সর্বন্ধাদ্ব্যতিরিকোহং বালা প্রশতকল্পিতঃ।

ইতি বা সন্দিদেশাসো দিতীয়াহস্কৃতিঃ শুভা॥

সোক্ষারৈষা ন বন্ধায় জীবন্মুক্তপ্র বিদ্যতে।

পাণিপাদাদি মাত্রের্মিইমিত্যেব নিশ্চয়ঃ।

অহস্কারস্কৃতীয়োসো লৌকিকভুচ্ছ এব সঃ॥

বর্জ্য এম ছুরালাসো কন্ধ সংসার সন্তক্তেঃ।

অননাভিহতো জন্তুরবোধঃ পরিধাবতি॥

অনয়া ছুরহংকত্যা ভাবাৎ সংত্যক্তয়া চিরম্।

শিক্ষাহন্ধারনান্ জন্ত র্ভাবার্ যাতি মুক্ততাম্॥

প্রথমৌ দাবহন্ধার্যবন্ধীকৃত্য তু শৌকিকোঁ।

ভৃতীয়াহন্ধৃতি জ্যুজ্যা লৌকিকী ছুঃখদায়িনী॥

এমা তাবং পরিতাজ্যা তাজৈনাং ছঃখদারিনীয়।
বথা যথা পুলাং তিঠেং পরমেতি তথা তথা ॥
ভাহস্কৃতি দৃশাবেতে পূর্বোক্তে ভাবরন্ যদি।
তিঠিত্যভোতি পরমং তংপরং পুরুষেহিন্দ্র ॥
তথা তে অপি সংতাজ্য সক্ষাহস্কৃতিবিজ্ঞিতঃ।
স তিঠিতে তথাপুর্কিন্ধ পদমেবাধিরোহনিত॥
শরীরাস্থাস্থাস্থাস্থারহংকার বর্জনাং।
ভাততে পরমং শ্রের এতদের্পরং পদম্॥

শ্রীরামচন্দ্র কহিলেন হে প্রভা! অহস্কার কি প্রকার এবং কিরুপেই বা উহাকে ত্যাগ করি তি বারা বায় ? উহার কোন বাহ্যিক লক্ষণ আছে কি না, এবং তত্যাগেই বা কি ফল ?

ৰশিষ্ঠদেৰ কহিলেন – হে রাঘব! এই ত্রিজুগন্মগ্রে ত্রিবিধ অহম্বার আছে, তনাংক্রে চুইটা শ্রেষ্ঠ ও অপরট তাজ্য। আমি তোমার নিকটে ইহার সম্বন্ধে বলিতেছি. ভাবণ কর। এ সমস্ত বিশ্বই আমি, অন্য আর <u>কিছুই</u> নাই। আমিই অবিনাশী পরমাত্রা এই প্রকার অন্তঃ-করণের বৃত্তিকে পরম অহস্কার বলিয়া জানিও। আমি সকল বস্তু হইতে অতিরিক্ত, আমি বালাগ্র হৃণের ও ্রকভাগ – সুক্ষ¦তিসুক্ষ ্বতাব্রিয়, ভাগের এইরূপ জ্ঞানের নাম দিতীয় অহলার, ইহাকে শুভজনক জানিবে। জীবমুক্তাবস্থাগুলভ এইরূপ অহস্কার দারা মোক হইয়া থাকে, বন্ধন হয় না। আমি পাণি-शामामि विभिन्छे भंतीत माख हैश निश्वहर हुष्ट 8 লোকিক তৃতীয় অহঙ্কার। এই তুরান্বাই সংসারাস্তির হ্মন্ন স্বরূপ, এই অহ্যারে অভিহিত জীবগণ অজ্ঞতা' বশতঃ ইতস্ততঃ করিয়া থাকে, এইজন্য ইহা বর্জনীয় 🕽 সর্বাথা সাবধানে এ ছুঃহৃন্ধার পরিত্যাগ ও সদহন্ধীরের আশ্রয় গ্রহণ করিলে জীব এশী শক্তি সম্পন্ন হইয়া মুক্তি লাভ করিয়া থাকে। প্রথ মাক্ত ছুই প্রকার অলৌকিক অহম্বারের আশ্রয় গ্রহণ করিয়া, লৌকিক ছ:খদায়ক তৃতীয় অহঠার পরিত্যজ্ঞা।

এই অহঙ্গৈতিকে পরিত্যাগ পূর্বক অবন্থিতি করিলে পুরুষ পরম শ্রেয় প্রাপ্ত হইতে পারে। হে অনঘ! পুরুষ পূর্বোক্ত উ্তম অহঙ্কার ছুইটার ভাবনায় (পরোক জ্ঞান কালে) তৎপর হইলে পরম পদ পাইয়া थारक, यात मन्दाह्याः विर्काउ 🐞 हहेरल फेष्ठ उचाराम তাদায়্যভাব লাভ হয়। শরীরের প্রতি আমাই পাপ স্বরূপ অহঙ্কার। অতএব উহাকে, পরিত্যাগ করিলে य (धार लां इरेश) था क जारा है भन्न भन विनशा জानित । भातीऱ- अरुकात भूना ७ यक्त प अरुकार-मण्डम ইইরী শবরাস্থর-স্কিত রাগাদিবিহীন, জরামরণ ভয়-রহিত, সমদৃষ্টি দানবগণ ও দেব সেনার ছুর্ধর্য হইয়া উঠিয়াছিল । সুদহক্ষারসংযোগে দানবও যখন, দেবের হৈক্রের হইয়াছিল তখন অমুকূল গামী মানবৰ তদ্বারা य मः मातामिक अधिक एम ममर्थ इटेर व वाहारिक व्यात मत्नर कि ! वना वाल्ना, त्नोकिक व्यरकात শ্রীর, তাহার পরিণামও অসস্তোষ—অন্তথের আধার; কিন্তু কার্য্যকেত্রে আত্মমর্য্যাদাবৃদ্ধি সদহস্কারামুগত।

জলে যেমন শুক্ষতা নাই.গুরুভারে যেমন লঘুর নাই, পূর্ণতায় সেইরূপ অভাব-অবকাশ নাই। যাহা যত পূর্ণ-তোমুখ, তাহা ততই অক্ষুণ্ণ ত অভাবশূন্য— নির্দ্দোষ। রত যতই ক্ষুদ্র, হইবে, তাহার পরিধির বক্ষতাও তত অধিক দেখা যায়, আর ব্যাসের রন্ধির সহিত পরিধির বক্ষতা হ্রাস হইয়া আইসে। আমাদের ক্ষুদ্র চক্ষেপৃথিবী অতীব রহৎ, তাই তাহার অবয়বের বক্ষতা অমুভূত হয়না—সর্বব্রেই সমতল বলিয়া বোধ হয়। যাহা পূর্ণ তাহা দোষশূন্য, দোষ থাকিলে তাহা পূর্ণ হইল কৈ ? ভেদ-বৃদ্ধিতে দোষ দেখিলেও সে দোষ পূর্ণ পদার্থকে স্পর্শ করিতে পারে না, তৎসম্বন্ধে উহা তো তদংশজ, দোষের সেখানে দ্বিতীয় অস্তিত্ব নাই—

মতরাং দোষ (অভাব) পূর্ণতাকে দৃষিত করিছে পারেনা, বরং স্বয়ংই (দোষ দর্শীগণ) পৃথক্ হইয় দৃষিত ও দলিত হয়।পূর্ণ পদার্থ প্রেমময়—আনন্দময়— অ্সাপদ্বাচ্য। আমরাও দেখিলাম অহঙ্কৃতির পরিণ্ডি ব্রহ্মপদ্পাপ্তি। অহঙ্কারের প্রদীপ্ত প্রভা—পূর্ণাভিন্য প্রজানমানন্দমনন্তং ব্র্মোতি সমাপ্তি।

শ্রামারহম্ম।

নিরাকারে সুলাধিকারীর মন নিবিষ্ট হয় না, তাই
সাকার ভাবে কালী তুর্গা শিব কৃষ্ণাদিরূপে সংসারাসক
জীবের উপাসনার বিধি ব্যবস্থা রহিয়াছে। এ কথা
আমরা রূপ-রহস্তের প্রথমেই বলিয়াছি। কিন্তু এই
রূপ কি অন্মের প্রকৃত্রূপ, অর্থাৎ উপাসকের হিতের
নিমিত্ত এক অক্ষই কি উক্ত নানা রূপ অবলম্বন
করিয়াছেন, কিম্বা মান্বেই ক্রুচিভেন্তে তাহার নানা
রূপ ক্রনেং করিয়া লইয়াছে। উনবিংশ শতাকীর
পূর্ব্ব হইতেই এরূপ একটা কৃতর্কের প্রোত চলিয়া
আসিতেছে।

শান্তে আছে— "উপাসকানাং হিতায় জ্বন্ধার রূপকলনা" এই বচন দেখিয়া কেহ কেহ বা কেবল ভাবে বিভার হইয়া নিজ নিজ মার্জিত কদয়ের বিখাদে বলিতেছেন, রূপটা কেবল মান্ত্রেরই কলিত। ঈশ্বর কখনও সাকার হইতে পারেন না।

" ব্রহ্মণো রূপকর্মনা " এই কর্মনা শব্দ দেখিয়া বাহারা দ্বির করিয়াছেন শ্বে ব্রহ্মের রূপ মাসুবের করিত, তাহারা নিতান্ত জান্ত ও সংস্কৃত ভাষায় অনভিজ্ঞ। ব্রহ্মণো রূপ কর্মনা এ ছলে ব্রহ্মণঃ এই ষষ্ঠী সম্বন্ধে নহে। কুদন্ত কল্পনা শব্দের যোগে কর্তৃকারকে ষষ্ঠী হইয়াছে। স্বতরাং উপাসকের হিভের নিমিত ব্রহ্ম কর্তৃক রূপ ক্রিত হইয়াছে। এছলে এই অর্থ ব্রাইতেছে। অত্এব রূপ মাপুষের ক্রিত নহে। উপাসককে কৃতার্থ ক্রিবার নিমিত, সাধুগণের পরি

অপরোক জান লাভের পর অমনসাবস্থার বিপ্টার অবিদ্যম।নে

,বি নীর পণাবের অভাব হেতু অহঞ্ভির ক্রণ অবস্থা।

আণের নিমিত্ত, অহ্যরপ্রকৃতি পাৃপীর বিনাশের নিমিত্ত, ধর্ম সংস্থাপনের নিমিত্ত, দেবতাদিগের কার্য্য উদ্ধারের নিমিত্ত এক ব্রহ্মই নানা রূপ অবলম্বন করিরাছেন। কত কত সিদ্ধ পুরুষ এই সকল সিদ্ধ রূপের ডপাসনা দারা সিদ্ধি লাভ করিয়া গিয়াছেন। যাহারা দেখিবার উপযুক্ত পাত্র—প্রকৃত ভক্ত—প্রকৃত সাধক, তাহারা দিব্য চক্ষে এইরূপ-মাধুরী দেখিয়া কুতার্থতা লাভ করিয়া গিয়াছেন।

অন্ধ্ন রণকেত্রে ভগবানের অনন্ত রূপ দর্শন করিয়া ভীত চকিতভাবে বিশ্বিতচিত্তে করপ্পুটে বলিয়া ছিলেন প্রভো! তোমার অনেক নয়ন, অনেক মুণ, অনেক মন্তক, অনেক অন্তুরী দর্শন, সকল, দিকেই ভোমার অনন্তরূপ দেখিতেছি। বিশ্বরূপ। পূর্বে ভোমায় দগা ভাবিয়া কক্ত অপরাধ করিয়াছি, আদ্ন কোমার ভূর্ম-নি রূপ দর্শনে ভয় ইইতেছে'; কমা কর, ভোমায় কোটা কোটা নমস্বার করি। এই বলিয়া কত্ত স্তব করিয়াছিলেন।

শুস্ত দৈত্য মৃত্যুর পূর্বের রণক্ষেত্রে মহাশক্তির **খনত্তরপে-দর্শনে বলিয়াছিলেন ছুর্গে! এ কি. তোমার** একা যুদ্ধ করিবার কথা, এখন দেখি অনন্ত মূর্ত্তি রণকেত্রে উপস্থিত! তখন জগদ্যা হাসিয়া ব্লিলেন, কৈ ভাষিতো একাই বাট, আমি ভিন্ন জগতে আর কোথায় কি আছে ! এই বলিয়া দেই অনন্তরূপিণী षामामिक मगर मेक्टिक আন্নদেহে লুকায়িত করিলেন। ধ্রুব অহলাদ স্থরপ সমাধি প্রভৃতি দাধক গণও আরাধ্য দেবতার রূপ দর্শনে কৃতার্থতা লাভ করিয়া গিয়াছেন। তোমার আমার পাপ চক্ষে দেখিনা বলিয়াই যে রূপ কলিত, ইহা কিছুতেই যুক্তিসঙ্গত বলিতে পারি না। যিনি সর্বা শক্তিমান্, তিনি রূপ অবলম্বন কা তিত অক্ষম, এ কথা বলিলে ঈশ্বরের স্*রুশ*িক্তিমত/ অস্বীকার করিতে হয়। वार्लिन, !' পूर्वाशांकि माञ्ज हित्रिक्तिहे **নিরাকার**

তোমার চক্ষুংশূল। প্রক্রিপ্ত আর করিত এই ছই কথা তোমার আন্ধারামের কাটী। এই কাটির বলে ভূমি ভূরি ২ শাস্ত্রকে আকাশে উটাইয়া দিতে প্রস্তে । তাই ভূমি হয়তো বলিবে শাস্ত্রের সকলই কয়মা । প্রক্রাদ প্রদে স্থরের রূপে আর্কান্ত কবিকয়না। রূপ কর্মনা হইলে কালা, ছুর্না, শিব, হবি, দয়াময়, মায়ায়য়, প্রস্তিত নামগুলিও অবশ্য কবিকয়ত। ইহাতে কিছে তোমারও অব্যাহতি থাকে না । ভূমিও মাঠে মারা যাও।

দিতীয়তঃ তর্কের অমুরোধে স্বীকার করিলাম, রূপ দেখাও মিধ্যা, থাকাও মিধ্যা, শাল্পের সকলই যেন মিথ্যা, কেবল তুমি যাহা বল তাহাই বেন সত্য, রূপ যেন মানুষের কল্পিতই হুইল, কিন্তু তাহাতেওতো সাধকের কোনও হানি দেখিতে পাইনা। এই কল্পিত রূপে যদি উপাদকের বিশ্বাদ থাকে, তবে তাহাতেই উপাসকের কার্য্য সিদ্ধি হইবার সম্ভাবনা। অন্ধকারী রাত্রে নিজ্জন স্থানে কোন কোনও সময়ে কৈছ কেছ রুঞ্াদিতে ভূতের বা মৃত মানুদের আকৃতি বোধ, করিয়া থাকে । তখন জ্বে ২ সেই রুক্ষের শাখা প্রশাথাদিতে হস্ত পদাদি কল্লিত হইয়া যথন দৃতৃ• বিশাস হয়, তখন প্রকৃত ভূত-দর্শনের যে ফল, ঐ কল্লিত ভূত দৰ্শনেও অবিকল দেই ফল উপস্থিত হইয়া থাকে । তখন তাহার স্বর-বিকৃতি, কম্প, স্তৰতা, মৃচ্ছা, এমন কি মৃত্যু প্ৰয়ন্ত ঘটিতে দেশা যায়। আবার যথন স্বল্লাবস্থায় ক্রীসহবাস হয়, তথন তেঃ मकल है मिथा। शांहे मिथा, नगा मिथा, जी मिथा, কেবলই মনের কল্পনা মাত্র। কিন্তু তাহার ফল হয় সত্য। প্রকৃত স্ত্রীসহবাদের যে ফল, তাহাতেও রেতঃ-পাত রূপ সেই ফল উপস্থিত হইয়া থাকে।

যখন প্রত্যক্ষ প্রমাণে দেখিতেছি, বিশ্বাস থাকিলে কল্পনার ফলও সভ্য ইইয়া দাঁড়ায়, তথন রূপ কুলিত হইলেও তাহাতে বিশ্বাস থাকিলে উপাসকের কেন কার্য সিদ্ধি হইবে না । এই জন্য মনস্তত্ধবিৎ মহাযোগী মহরিগন মৃক্তক্ষে বলিয়া ণিয়াছেন " সাধকস্ত চ বিশ্বাসাৎ কেবতাসন্ধিবিভ্বেৎ"। বিশ্বাসী ভক্তগণও বলিয়া থাকেন " বিশ্বাসে পাইবে তাঁরে তকে বহু পূর" তাত এব আমরা থে দিক্ দিয়া কেন দেখিনা, কিছুতেই সাকারোপাসনার বিফলতা দেখিতে পাইনা । এ কিয়ে আরু অধিক বলা নিস্প্রোজন, সাকারোপাসনা প্রতিপাদন করা আমাদের অদ্যকার উদ্দেশ্য নহে । তবেকিনা রূপ-রহস্তের মূল ভিত্তিই রূপ। সেই ভিত্তির সারবভা দেখাইবার নিমিত্ত এবং বাবুনের রুচি পরিবর্তনের নিমিত্ত স্থাকেপ ছুই এক কথা বলিয়া প্রতাবিত বিষয়ের অনুসরণ করা যাইতেছে।

পূজা রহস। রূপরহত্যে পূর্দাণতে যাহা বলিয়াছি, তাহাতে আশিঙ্কা হইতে পারে যে যদি শ্রাম। রূপে এত গুঢ় তর ধাকে, তবে আমরা পূজা করি কাহার ? শবশিবারত। শ্যামা যদি অকৃতি পুরুষাগ্রিকা জগদীধরী হন, তবে আমরা আবাহন বিস্ফান করি কাছার ? ঈশ্বর সর্ল-वााभी देश मर्कारणा ७ मर्काभारत वर्ण। यिनि मर्का-ব্যাপিনী, প্রতি প্রমাণতে ঘাঁহার মতা বিদ্যমান त्रहिताएक, यिनि गर्निख माकाः (निनीलामाना त्रहिताएकन, তাঁহার আবার আবাহন ব্লিসভান হয় কি রূপে ? "ইহা গচ্ছে বলিলেই বোধ হয় যেন এ স্থানে তিনি নাই, অধবা সর্বত্র বিনি আছেন, আনি বেন তাঁহাকে ডাকিতেছি •না। তাই বলি তবে আমরা পূজা করি কাহার ! দ্বিতীয়তঃ আমরা বস্ত্রালভার প্রদান করি কাহাকে। धिन विवयना, बृह्द हरेएड वृह्द, गाँशांक कथन ७ কেহ ভাবরণ করিয়া রাখিতে পারেনা, তাঁহার আব-রণ্যথে ৭৮ হাত বন্ধ্র প্রদান করায় কি অজ্ঞানতার পরিচয় প্রদান করা হয় ন।। তৃতীয়তঃ কোটী ২ ব্রহ্মাণ্ড যাঁহার রোম কুপে অবস্থান করিতেছে, সেই অনন্ত

জগতের আধার রূপিণীর স্নানার্থে এক কুশী জল দান করা কি বালকের ধূলা থেলার ন্যায় নহে । চতুর্থতঃ যিনি পূর্ণ, যাঁহার কোনও অভাব নাই, যিনি কত উপালের বস্তু দারা জাঁব জগৎকে প্রতিপালন করিতেছেন, তাঁহার প্রীতির জন্য এক মৃষ্টি তণুল প্রদান করায় কি উন্মত্তার পরিচয় প্রদান করা হয়না? বিরুদ্ধ বাদী দিগের মধ্যে কেহ বক্তায় কেহ প্রবিষ্কে কেহা বা গানে এই রূপ নানা কৃতর্ক দ্বারা হিন্দুর পূজাপদ্ধতির কুৎসা কীর্ত্তন করিয়া বেড়াই-তেছেন। রাম মোহন রায়ের একটা গান আছে—

মনরে জাপ্তি ভোমার, আবাহন বিস্কৃতিন কর তুমি কার, যে বিভূসকারীখাকে, ইহাগচ্ছ বল তা'কে ইত্যাদি।

এই সকল বালক জুলান.কথায় প্ৰের ২ অনেকের মন ফিরিত বটে; এখন ও হয় তো, অনেকের মনে সন্দেহ থাকিবার সম্ভাননা, অতএব পূর্জা প্রণালীর স্থূল মর্মা প্রকাশ করা যাইতেছে। অথ্যে আবাহনের কথাই বলিতেছি।

লগন সক্রাপী বটেন, তিনি কোটী ২ একাণ্ডের প্রতি পর্নান্ধ ব্যাপিয়া দৃক্ষাতিদৃক্ষ রূপে দর্বত্র বিরাজিত আছেন বটে, কিন্তু আনি দেই অনন্ত কোটা ক্রেছি লইয়া ভাঁহাকে ধ্যান ধারণা করিতে পারি কোধায় । শাস্ত্রে শুনি তিনি দর্বব্যাপী, তাই পড়া পার্যার ন্যায় মুখে মাত্র বলি, ঈশ্বর দর্বব্যাপী। কিন্তু আমাদের জ্ঞান তাহা বুকিয়া লইতে পারে কোথায়? আমার মনই বা দেই দ্ক্ষাতি দৃক্ষ ভাব লইয়া ভৃপ্তি লাভ করিতে পারে কোথায়। ঈশ্বরের দর্বব্যাপিছ যে দিন মনে মুখে বুঝিব, আর যে দিন দেই দ্ক্ষ ভাবে ভ্প্ত হইয়া নিবিড়ানন্দ লাভ করিতে পারিব, দে দিন কেবল আবাহন বিদর্জন কেন্দ উপাশ্ত-উপাদক-ভাব পর্যন্ত থাকিবে না। দে জ্ঞান নাই বলিয়া, দেই দৃক্ষ ভাবে ভৃপ্তি হয় না বলিয়া স্থূল ভাবে আবাহনের প্রয়োজন।

বায়ু সর্বব্যাপী, বায়ু সর্বত্ত না থাকিলে আমরা নিংখাস প্রাথাস বন্ধ হইয়া মরিতাম । ভূতরাং আমরা বায়ু-সাগরে হাবু ছুবু থাইয়া রেড়াইতেছি। কিন্তু তথাপি यथन देवनाथ मारमत मधाकू ममरत नतीत खिलता नात, मन चर्षित रहेशा छेट्ठ, ल्यांग हरे करें कतित्व थारक, তথন আর দেই সূক্ষাতিসূক্ষা বায়তে কুলায়না, তখন, আর তাহাতে মনের আকাজ্ঞা মিটেনা, প্রাণের পিপাস্থ ফুরায়না, দেহের উত্তাপ জুড়ায়না, তখন মন প্রাণ চায় স্থল বালু। তাই আমরা পাখার বাতাস করি। বালু সৰ্বত্ৰ থাকিলেও এক স্থান হইতে অন্য স্থানে আকৰ্ষণ করিয়া থাকি। সেই রূপ ঈশ্বর সর্ববত্র থাকিলেও যথ্য পাপে তাপে यागामत एक थानेन खिला संत, मन ছট্ ফট্ করিতে থাকে, েরোগে শোকে ভয়ে অনুতাপে আমরা যখন অন্তির হইরা পড়ি, চহুদিক্ অয়কার দেখিতে থাকি, তখন আরু দেই দর্শনিকের সূক্ষানুসূক্ষ बत्मा कूनांश ना। ज्यन मन थान छात त्मरें जनम्बननीत्क, বাঁহার রাঙ্গা চরণ হেরিয়া ভীবন সার্থক করিতে পারিব, যাঁহার অভয় করের আখানে ভবভয় দূর হইয়া যাইবে। যাঁহার করাল কুলাণের শাসনে কামাদি অহার নির্যাতন করিতে পারিব, মন প্রাণ চায় সেই মূর্তিমতী মাকে। মায়ের সূক্ষা ভাবে সভঃ সর্ব্বিত্র थाकिरलंख वायु-चाकर्वरंगत नगाय छेलामन:-कारल শাধক স্থূল ভাবে জননীকে এক স্থান হইতে অন্<u>য</u> স্থানে আবাহন করিয়া থাকেন। গুতরাং একটু চিন্তা করিয়া দেখিলে কিছুতেই ইহা দে। যের বিষয় হয় না। যাঁহারা নিরাকারের রাঙ্গাচরণ শীতল ক্রোড়-প্রাণী, ভাঁহারাও তো বলেন প্রভো! তোমার রাঙ্গাচরণ ८५७, भीजन द्रांदि हान ८५७ हेन्डामि। यिनि मर्व-ব্যাপী, ভাঁহার রাঙ্গাচরণ, শীতল ক্রোড় তো সর্ব্বদাই প্রকানুতে লাগিয়া তোমার মনঃ-প্রকৃতির রহিয়াছে, নচেৎ তিনি সর্বব্যাপী নহেন। তবে আর डांशांत्र कार्ष्ट थार्थन। कंत रकन ? किन्छ हिन्मूता हेश

দোষ-বৃদ্ধিতে দেখে। না, যাহাদের বুঝিবার, ভুল, তাহারাই কেবল পরের দোশ কীর্তন করিমা বেড়ায়।

কঠোর যোগ সাধন ও ত্রজানোপাচ্জন ঈশ্বর-সাক্ষাৎকারের মুখ্য উপায়। মুখ্যুয়োগ সাধন (ব্মুনিয়মাদি অন্টাই যোগসাধন) সংসারাস্ত ব্যক্তির হয় না। যাহারা গৃহস্তাশ্রমী, যাহাদের ধন জন বধু বক্রাদিতে মমত্য—আসক্তি রহিয়াছে, সেই সকল ভূপিলাধিকারীর উদ্ধারের নিমিত যোগাঙ্গসমূত্রে কিছু কৈছু অংশ লইয়াঁ তন্ত্ৰ পুৱাণাদি শান্ত্ৰে পুজা পদ্ধতির আবিকার হইয়াছে। এই পূজা বিধানে ভিক্তিযোগ, মন্ত্রমোগ; ধ্যানযোগ, কর্মযোগ, লয়যোগ এই পাঁচটা যোগই পরিলক্ষিত হুইভেছে, ভতরাং এই পূজা দারা সাধক ঐহিক পারত্রিক মঙ্গল লাভ করিয়া থাকেন। ইহাতে যে[®] প্রাণায়াম করিতে হয়, मिट्टे खांगायां चांता (फ्ट्ट झेंचित इत, देखित मन रुग़. थानिधात्र । मामर्था যজাদির রোগ বিদ্রিত হয় ও আয়ঃ রুদ্ধি হয়। শ্বাস প্রশ্বাসের নাম অজপা । এই অজপার একটা সংখ্যা আছে, মেই সখ্যা পূর্ণ হইলেই জীবের জীবন नाहित रुहेशा याग्र। कुछक चाता चाम वन्न कतिया রাখিলে অজপার সংখ্যার ন্যুনতা হয় বলিয়া প্রাণায়ামে আয়ুঃ বৃদ্ধি পাইয়া থাকে। আর্যাধ্যদিগের আহার বিহারের কিছু মাত্র পারিশাট্য ছিলনা, তাঁহারা অনশনে পৰ্ণাশনে বনে বনে শীত বাতাতপ সহ্য করিয়াও কেবল প্রাণায়ামের বলে দীর্ঘকাল জীবন ধারণ করিয়া গিয়াছেন, আর আমরা অইত।হর পুষ্টিকর বস্তু ব্যবহার করিয়াও প্রাণায়ামের অভাবে দিন দিন অন্নসত্ত্ব অল্লায়ুঃ হইয়া যাইতেছি।

পূজাতো যে ভূতশুদ্ধি করিতে হয় উহা এক প্রকার কঠোর যোগ সাধন-বিশেষ * তার পর অঙ্গন্যাস, কর-

এই ভূতভাদিতে চতুরিংশতি তথের ২০টা ছালকে ক্রমশাং পর পর
ভবে লয় করিতে করিতে পরম তত্ত্ব পরমাত্মার সমস্ত তৃত্ব লয় করিয়া

ন্যাস ক্রাদিন্যাস এছতি আরও কতকগুলি ক্রম আছে, এই সকল অমুষ্ঠান দারা চিত্ত প্রস্থির ও নির্মাল হইংল নাবক শ্যামাপুজার অধিকারী হন। ।

ইহার পর ধ্যানের ব্যবস্থা। হুৎপলে ইন্ট দেবতার' রূপ চিন্তা করিতে করিতে সাধক তন্ময়ত্ব লাভ করিতে পারেন, হুরু শময়ে রূপ ধ্যান করিয়া প্রাণ বহিগত হইলে সারূপ্য মুক্তি লাভ হইয়া থাকে, প্রইরূপে বহু দৃষ্টাস্তাদি দ্বারা যোগশাস্ত্রাদি এই ধ্যানের ভূরি ভূরি মহিমা কীর্ত্রন করিয়া গিয়াছেন। ধ্যানের পর শক্যমুসারে কাহারও পক্ষে পঞ্চোপ-চারে, কাহারও পক্ষে দশোপচারে কাহারও পক্ষে ধ্যোড়শোপচারে পাদ্য অর্ঘ্য ধূপ দীপ নৈবেদ্যাদি দ্বা সায়ের পূজার ব্যবস্থা বিহিত হইয়াছে । পূর্বেই আমরা বলিয়াছি যে এই ধূপ দীপ নৈবেদ্যাদি থাকায় হিন্দুর পূজা পদ্ধতিকে অনেকেই উপহাস করিয়া বেড়াইতেছেন। যিনি অনস্ত জগতের কর্তা, বিহার কিছুরই অভাব নাই, হিন্দুরা ভাহাকে সামান্য তগুলাদি দ্বারা বাধ্য করিতে চায়, ইহা আপাততঃ

ক হক গুলি বীজনম ৰাষা পাণায়ান পূৰ্বক যৌগিক বিধানামুসারে বিশ্বন মুখ্য ক্রিছন নূহন পেই প্রস্তুত ক্রিছে হয়। এই কম দীক্ষিত মাতে অবগত আছিন, অধীক্ষিত বিধান পক্ষে ক্রিশ বোধ হইবে বলিয়া এত্তো লিপিব্দুত্ব না।

ি অনুষ্ঠান গুলি সহজ্বসাধ্য নহে। স্কাজনাং সকল ছলেই যে শ্রামাপুলা হর ইহা আমনা বিখাস করিছে পারিনা। সকলের অধিকার নাই
বলিয়া গুল পরে। হিছা করিবার বিধি ব্যবস্থার হিয়াছে।
কাল্মাছাজ্যে অনেক গুল পুরোহিছেও আমানের ন্যায় হীনশক্তি
হুইয়া উঠিয়াছেন। ইহা বাক্তিগ্র দোষ । ব্যক্তিগ্র দোষ সকল দেশে
সকল সম্প্রারেই আছে। বাক্তিগ্র দোষ আমানের সমালোচ্য নহে,
শাল্পের গুড় কর দেখানই—এই প্রবিদ্ধের মুখ্য উদ্দেশ্য। ভবে এই
মার বক্তবা যে কিরাফ্টানে যিনি যত অধিকারী, উভার পূজা হত
দূর ফলবনী হুইবার সন্তারনা। যিনি কেবল ব্যবসা রকার নিমির
কিয়া বাহ্যাড়য়র দেখাইয়া সমাজে প্রতিপ্রিকাত করিবার নিমিন্ত
পূজা করিয়া খাকেন, তাহার পূজা প্রারই নিক্ষা বলিয়া আমাদের
দৃঢ় বিখাস।

উপহ।দের বিষয় বলিয়াই বোধ হয় বটে। রামমোহন রায়ের জীবনচরিত্রের একস্থানে আছে যে রাজা রামমোহন রায় এক দিন প্রভূষেে নিজের পুজ্পোদ্যানের সন্মুখে পালচারণা করিতে ছিলেন। এক ভ্রাহ্মণ ইফ-পূজার নিমিত্ত প্রতিদিনই সেই উদ্যানে পুষ্প চয়ন করিতে যাইতেন, সে দিনও গিয়াছিলেন। রাজা উদ্যানের দারদেশে একটা হুছের উপরে ঐ আক্ষণের একখানী নামাবলি দেখিতে পাইয়া কৌজুক দেখিবার নিমিত তাহা স্থানাওরে লুকাইয়া রাখিলেন। দরিজ ব্ৰাহ্মণ বন্ধ না পাইয়া ব্যতিব্যস্ত হইয়া ইতস্তত: অস্বেদণ করিতে লাগিলেন। যথন কোথাও না পাইয়া বাক্ষণ হতাখাস হইলেন, তখন রামমোহন রায় বস্তু খানি দিয়া বলিলেন, লভিচ্ঠাকুর। এখন তে। সস্তোধ-লাভ করিয়াছ। আক্ষাণ বলিলেন আমার বস্তু আমি পাইলাম, ইহাতে আর সম্ভোগ লাভ করিব কেন ? রাজা বলিলেন ইহা যদি তুমি বুঝ, তবে ঈশ্বরের ফুল निधत्क मा ७. ইशा छ जिन मा अप ना क कित्रवन दकन !

এই রূপ কথা যাঁহারা বলেন, তাঁহারা হিন্দুর উপাসনার উদ্দেশ্য বিন্দু মাত্রভ অবপত হইতে পারেন নাই। তাঁহারা ভাবেন, হিন্দুরা ঈশ্বরের তুষ্টিসম্পাদনের নিমিত্তই তাঁহাকে নানা অকার বস্তু প্রদান করিয়া থাকে। এই অন্ধ বিশ্বাসের বশবর্তী হইয়াই তাঁহারা হিন্দুর উপাসনার পদে ২ নিন্দা করিয়া থাকেন। উপাসনা যে ঈশ্বরের উপকারের নিমিত্ত নহে, একথা নিতান্তে মূর্থেও অনুভব করিতে সক্ষম। স্কুতরাং হিন্দুরা ঈশ্বরকে যাহা দেয়, তাহা ঈশ্বরের উপকারের নিমিত্ত (অর্থাৎ ঈশ্বরের তুষ্টি সম্পাদনের নিমিত্ত কিন্দা তাহার কোনও অভাব দূর করিবার নিমিত্ত) নহে। উহা কেবল নিজের ভিকিত্র তি উত্তেজিত করিবার নিমিত্তই প্রদত্ত হইয়া থাকে।

क्षेत्रत पूर्व-निकाम, रहेश आर्राअविश्व

জগৎকে শিক্ষা প্রদান ক্রিয়া গিয়াছেন। স্তরাং তাঁহাদের আবিজ্ত পূজায় ঈশরে যাহা সমর্পিত হইয়া থাকে, তাহা ঈশরের, প্রীতির নিমিত্ত নহে, ঈশরে নিজের প্রীতি স্থাপনের নিমিত্ত বলিয়াই ব্ঝিয়া লইতে হইবে।

व्यामार्मत व्यामिक ভालवामा ममल्हे मः मारतत मिरक। श्रेयत किष्ट्रे वामिक ভामवामा नाहै। ध पिरक निर्कत मण्णिख किं हुई नाई। (मह, गन, थान, कन, गृन. कुल मुकल हे जेशदूतत । हिमाव कतिया (पिशित्न यागात আমিছে পর্যান্ত অধিকার থাকেনা। ত্তবে আর অন্য বস্তুতে অধিকার থাকিবে কিরূপে ? তাই উপায় নাই विनया भन्नाकरल भन्ना भूजात भगाय ठाँशात वस्त्र ठाँशीरक দিয়াই হিন্দুরা নিজের ভক্তি বৃত্তি উত্তেজিত করিয়া থাকেন। ফাঁহারা ইহাক্তে উপহাস করিয়া বেড়ান. .ভাঁহাদিগকেও স্তমস্তি ঘারা কিম্বা-স্লুলিত গান ঘারা ইশ্বরোপাসনা করিতে দেখা যায় । কিন্তু একবার ভাবিয়া দেখা উচিত যে ঈশ্বর যে রূপ ফল মূলের কাঙ্গাল নহেন; ভাহাতে যেরূপ তিনি ভূলিবার পাঁত্র নহেন, সেইরূপ ছুটো মিষ্টি কথায় ও তো তিনি ভুলিবার পাত্র নহেন, তিনি যে তিরন্ধার পুরন্ধার-বিবঞ্জিত । মিষ্ট কথায়ও তৃষ্টি লাভ करतन नां, आंत करूँ कथाय । वित्रक्ति त्वांभ करतन না। তবে তোমার স্তবস্তুতি দারা খোশামূদী করাও **८ठा हिन्दू**त कलकूनमारनत न्याय हहेया माँ। इसा তাই বলি, একটু তলাইয়া বুঝিতে হয়। বুঝিতে হয় যে মিউ কথায় ঈশ্বরের সন্তোয উপকার না হইলেও আমাদের তাহাতে যথেষ্ট উপকার আছে। আবার क्रेयत्रक शालाशालि कहित्ल जिनि जाशास्त्र क्रे ना হইলেও আমাদের তাহাতে মহাপাপ মহাপকারের সম্ভাবনা।

তবেই দেখ, ঈশরের স্তবস্তুতি আর গালাগালী বানী ঈশবের তুপ্তি রুপ্তির কারণ সহে। উহা জীবের নিজের হইল।

উপকার অপকারের কারণ হইয়া দাঁড়াইতেছে। স্বতরাং ফলমূলাদি ঈশরে সমর্পণ করিলে ঈশর তাহাতে তুটিলাভ না করিলেও যে দেয় তাহার তাহাতে উপকার হইয়া থাকে। তাহার ভক্তি শেম একাগ্রতা আমাক্তি পরিপূর্ণ হইয়া আলোমতি লাভ হইয়া থাকে। আর যে তাহা দেয়না, তাহার আলোমতি লাভও হয় না। ইহা ঈশরের সেবার ফল, ঈশরের তুটি ক্টিসাধনের ফল নহে।

হিন্দুর সঙ্কয় "ইশর প্রতি কামনীয়া" ইহার অর্থ ঈশরের প্রতি নহে। ঈশরে নিজের প্রতি নিজের ভালবাদা হওরাই হিন্দুর সমস্ত ক্রিয়ার উদ্দেশ্য। যাহারা উদ্দেশ্যজ্ঞান রহিত, তাহারাই হিন্দুর উপাদনার নিন্দা করিয়া বেড়ায়, আর যাহারা চিষ্টাশীল ভক্ত, তাহারা পাদ্যাদি দ্বারা মায়ের পূজা করিয়া ক্রতার্থকা লাভ করিয়া থাকেন।

ক্রমশঃ।

विमर्ज्जन। *

লোকে অনেক বিষয় শুনিতে চায়—অনেক বিষয় দেখিতে চায় । যাহা দেখিবার, তাহা দেখিরা লয়, যাহা দেখিবার নহে তাহা শুনিয়া লয় কিন্তু যাঁহা অতি উপাদেয়, তাহা লোকের দেখিবারও ইচ্ছা হয়—শুনিবারও অভিলাম হয়। আজ আমার বক্তব্য বিষয় শুনিতে আদিয়া মহালাগণ এই পুণ্য তীর্থ দশাখমেধ বাটে গল্পার তটে দাঁড়াইয়া মা জগন্ধাত্রী মূর্ত্তির বিসর্জ্জন দেখিবেন ও আমার বক্তব্য "বিসর্জ্জন" শুনিবেন ন মায়ের ভুবনমোহিনী রূপ "দেখিয়া" মনের যে তৃপ্তি

^{*} কাণাতল বাহিনী ভগণতী ভাগীরগীর তেটে দশাখনেধ হাঁটে—ভা, আ, ধ. প্রা. সভার উৎসবোপলকে শত্ত নরনারী পরিবেটিত হইরা গত জগদ্ধানী পূজার বিস্ক্রের দিন কুমার-পরিব্রাজক আশ্রীক্ষণানন্দ স্থানী মহোদয় যে বক্তৃতা করিয়াছিলেন—ভাহারই মন্ধাংশ উদ্ভ হইল।

হইবে, আমার নীরদ কথা শুনিয়া তত আহলাদ হইবার আশা নাই। প্রবণ অপেক্ষা দর্শন অধিক প্রীতিকর, তাই লোকে অন্ত বিষয় শুনিবা মাত্র দেখিতে চায়। দেখিলে যেমন বিষয়টি মধ্যে অঙ্কিত হয়, শুনিলে তত হয় না। কিন্তু অথ্যে না শুনিলে, দর্শনের স্থুখ হয় না, দুর্ভেদ্য তত্ত্ব বিদিত না হইলে, দর্শনে করিলেও পদার্থের সার মর্ম্ম গ্রহণ করা কঠিন হয়—তাই অথ্যে শুনিকে হয় ও পশ্চাৎ দেখিতে হয় । "প্রোতব্যং মন্তব্যং বিশিখ্যাসিত্য শ্রেশ্বাৎ সাক্ষাৎকর্ত্ব্যম্"।

যাহা দেখিবার, তাহা দেখায় কে ? যাহা বুঝিবার তাহা বুঝায় কে ? সপ্তর্ষি মণ্ডলী একবার ত্রিজগদ্ওরু কৈলাসপতির নিকট ভ্রহ্মতত্ব শুনিবার জন্য গিয়া-ছিলেন। ভুতভাবন তগবান্ বলিলেন, তোমরা সমাহিত চিত্তে বিষয় তত্ত্ব বিষয় শ্রবণ কর । তাঁহারা সমাধি-পূর্বক বদিলেন, বিশ্বনাথ ও সমাহিত হইলেন। জগতের कारात कर्न (कान कथा अदन्य कतिल ना, সংিকান্ স্থরে কোন্ ভাষায় কি রূপে মহাদেব কি বুঝাইলেন, কণবিলম্বে দকলে উঠিয়া আনন্দে তাওব-নৃত্য—উল্লাসে অট হাস্ত করিয়া উঠিলেন । আমরা জগতের ক্ষুদ্র জীব এ গুপ্ত কথার গুপ্ত প্রাহেলিকা বুঝিতেও পারি না—বুঝাইতেও জানি না। সমাধি-সূত্রের ভিতর দিয়া যাঁচার। প্রমায়া দর্শন করিয়া, থাকেন, তাঁহারাই এ নিগৃঢ় কথা ইঙ্গিতে বুঝিয়া লইবেন। আমার কথা শুনিয়া স্থা হইবার কাহারe আশা নাই।

আজ প্রথমে পূজার বাদ্য না বাজাইরা একেবারে
বিসর্জ্জনের বাদ্য বাজাইলাম কেন! পূজা না হইতেই
বিসর্জ্জন, একথা নৃতন । আমরা কলির জীব। পূজা
অপেকা বিসর্জ্জন আমরা অধিক ভাল বাদি, তাই
বিসর্জ্জনকালে ঘাটে এত ধুম—এত লোক সমাগম। সে
দিনও তো মা দশভুজার পূজা হইয়া গেল । পূজাবাটীতে মাকে দেখিতে মায়ের পূজা করিতে—মায়ের

চরণে পুপ্রাঞ্জলি দিতে কয় জন লোক গিয়াছিল! কিস্ত প্রতিমা বিদর্জনের দিন গঙ্গার ঘাটে ২ অগণ্য লোকে লোকারণ্য হইয়াছিল । তাই ভাবিলাম—আজকাল আমরা পূজা অপেকা বিসজ্জন যখন অধিক ভাল বাসি, তখন পূজার কথায় আর কাজ নাই, একেবারেই বিসজ্জনের বাজনা বাজাইয়া দিই। মা যেন বিদায় হইলেই আমরা বাঁচি। ভক্ত যাঁহার চরণ পূজা কা:বেন বলিয়া সম্বৎসর কায়মনোবাক্যে চেন্টা করিয়া যত্র করিয়া আয়োজন করেন, আমরা তাঁহার বিসর্জনের দিন স্থসত্তিত হইয়া ঘাটে মঠে তটে দাঁড়াইয়া থাকি। একেতো আমরা বিসর্জন ভালবাদি—তাহাতে আবার সকলে কাশীনিবাসী। কুাশী—আনন্দ কানন হইলেও মহাশ্মসান। লোক সকল দিগ্দিগন্ত হইতে বিসৰ্জ্ঞানর বাজনা বাজাইয়াই কাশীতে, আদে। কাশীতে শরীর বিসঙ্গিত হইলে লোকে পুনর্বিসঙ্গনের দায় হইতে এড়াইয়া যায় । অন্য দেশে যে দেহা বিসৰ্জন গাল গালি, এখানে তাহাই পরম মঙ্গল। স্তরাং কাশীতে পূজা অপেকা বিসর্জ্জনের সম্মান অধিক । তুমি পাপ তাপের তুর্নহ ভার লইয়া জরাজার্ণ দেহে কাশী আসিলে—বিশ্বনাথ অমপূর্ণার পূজা করিতে পার আর নাই পার, সজ্ঞানে বা অজ্ঞানে জলে স্থলে বা অন্তরীক্ষে অথবা যে কোন অবস্থায় এখানে দেহ বিস্ফুন করিতে পারিলেই তোমার আর জনন মরণের বিভ্স্বনায় পড়িতে হইবেনা, कीं । পতঙ্গ তীর্য্যাদি যে যোনিতে হউক এখানে একবার দেহ বিসর্জন করিতে পারিলে আর তাহার বিসর্জনের ভাবনা ভাবিতে হয় না, তাই বলিতেছি এই বিধনাথ-পুরীতে বিসর্জনেরই মান অধিক। যেথানে বা যে কুলেই জীব জন্ম গ্রহণ করুকনা কেন, এই খানে মরিলেই আর জন্মিতে হয় না।

> "জাতান্ত এব জগতি ভূজন্তবঃ সাধু জীবিতা। যে পুনমেহি জায়ন্তে শেষা জঠরগদিভাঃ॥" তাহারাই জগতে জুনিয়াছে ও তাহাদের জীবনই

সাধু, যাহারা আর জন্ম গ্রহণ ক্রিবে না। যাহাদিগকে পুনর্জন্ম গ্রহণ করিতে হইবে, তাহারা গদিভী গর্ভজাত সন্তানের ন্যায় ভার বহন করিতে আদে মাত্র । অতএব বিদর্জন যদি এই অবিমৃক্ত ধামে হয়, তবে তদপেক্ষা পূজাও শ্রেমন্তর নহে। কেননা বহু যোগ যাগ পূজা পাঠ তপস্থাদিতেও যে "নির্বাণ" সাধিত হয় না, কেবল কাশীতে দেহ বিদর্জনেই তাহা অবাধে হইয়া থাকে। তাই বলি কাশীতে বিদর্জনই প্রধানতম বিষয়। ত্রহ্মবৈবর্তে লিখিত আছে—

অফীঙ্গাদিভিরন্যৈশ্চ তপো যজ্ঞ ব্রতাদিভি:। সাধিতৈঃ পাক্ষিকী দিদ্ধি রবিমৃক্তে নিরর্মলা।। "

মা নাকি সর্বত্ত স্ববিকার্য্যের আদি অন্ত ও মধ্যের বিরাজমানা, মার নাকি যাওয়া আদা নাই—স্থিতি মাত্রই মায়ের রাকি প্রতিমা, তাই মাকে বিসর্জন দিলেও আবার আমরা বর্ষে বর্ষে ভারাকে দেখিতে পাই। যখন দেখি, আমাদের আঁধারময় ক্রমাধারে মাকে আর রাখিতে পারিতেছি না, যখন দেখি ক্রদর্যাধারে সাকে আর রাখিতে পারিতেছি না, যখন দেখি ক্রদর্যাধারে সাক্রে ক্রায়ের চিত্র আর স্থাপ্ট লক্ষিত হয় না—তখন মনের তুঃখে শোকে অশান্তিতে অধীর হইয়া কন্যাকে শ্বন্তরালয়ে পাঠাইবার মত বলিয়া থাকি—

"গচ্ছ গচ্ছ মহাদেবি! গচ্ছ দেবি! যদুচ্ছয়া। সম্বংসারে ব্যতীতেতু পুনরাগমনায় চ।

মাকে রাণিতে না পারিলেও ছাড়িতে চাই
না, তাই বর্ষে বর্ষে ডাকিতে থাকি। মায়ের
বিসক্তন – তিরাভাব না থাকিলেও আমাদের ফুর্বল
মনে তাঁহার আবির্ভাব তিরোভাব হইয়া থাকে।
তাই তাঁহার আবাহন ও বিসর্জন। যত দিন না
ব্রহ্মায়বোধ দ্বারা মায়ের তৈল ধারার ন্যায় নিত্য
নিরবচিছ্ম একরস বিদ্যমানতার প্রবাহ না চলিবে,
ততদিন আবাহন বিসর্জন হইটো থাকিবে। যতদিন
বিশ্বতি, ল্রান্ডি, বিষয়-বুদ্ধি প্রসাদাদি থাকিবে,
ততদিন আবাহন ও বিসর্জন করিতেই হইবে। যাঁহারা

বলেন "মনরে জান্তি তোমার—আবাহন বিদর্জন কর তুমি কার" সেই বাঙ্মাত্র রাদী প্রমাদীগণ কি নিত্য নিরন্তর ব্রহ্মারাধনা করিয়া থাকেন ! যিনিই উপাদীনা করিছের ব্রহ্মারাধনা করিয়া থাকেন ! যিনিই উপাদীনা করিছের বদেন ও আবার উপাদনা করিছে উন্তিয়া গিয়া অন্য কার্য্যে লিপ্ত হয়েন, তিনিইতো বাক্যে না মানিলেও কার্য্যে আবাহন ও বিদর্জন করিলেন, উপাদনার প্রারন্ত কালই ভাঁহার আবাহন, আর উপাদনা ভাড়িলেই তাঁহার বিদর্জন — তাঁহাকে ভূলিয়া থাকিলেই তাঁহার বিদর্জন । অন্য কার্যে ব্যাপৃত হইলেই কাহার বিদর্জন । আমরা পূজা করি আর নাই করি, বিদর্জন করিয়া বদিয়া আছি । আনাদদের ন্যায় তুর্বল হদয় হইলেই মানব বিদর্জন-প্রিয় হইয়া থাকে।

ভারতবর্ষীয় মহর্ষি-রাজর্ষি মুদ্রি ও গুণীগণ সভ্যবুগে বেদমস্ত্রে যে ভাবের উদ্বোধন করিয়াছিলেন, ত্রেতাতে কঠোর তপোযোগে যাহার প্রতিষ্ঠা ও মহাপূজা হইয়াছিল, দাপরে যাহার পরিচর্য্যায় মনঃপ্রাণ সম্পূর্ণ করিয়াছিলেন, কলিযুগে আমরা অবোধ অজ্ঞানী মানবগণ তাহারই বিসর্জন করিতে বিস্থাছি। ব্রহ্মচর্য্যে যাহার আয়োজন করিতে হয়, গাৰ্হস্থো যাহার প্রতিষ্ঠা করিতে হয়, বানপ্রস্থো যাহার রমাসাদ করিতে হয় এবং সম্যাদে যাহার পরিপাক করিতে হয়, আমরা না বুঝিয়া না বিচারিয়া তাহাই বিসজ্জন করিতে বসিয়াছি। মহাতৈকা ব্রাহ্মণুগুণ যে দেবত্র্লভ মহাপূজার জ্লন্ত জ্যোতিতে জগৎ উদ্থাসিত করিয়াছিলেন, শূরবীর প্রতাপশালী ক্ষত্রিয় বর্গ শৌর্য্য-বীর্য্য অকার্য্য দ্বারা থাহা সংরক্ষণ করিয়াছিলেন, নিজোচিত নিষ্ঠাপরায়ণ বৈশ্যবর্গ যাহার পালন-ভার স্কল্মৈ লইয়াছিলেন এবং শূদ্রগণ যে মধুর হইতে স্থমধুর অমৃতময়ী কল্পলতিকার স্থচ।রু চরণের সেবা করিয়া আসিতে-ছিলেন, আমরা সেই কল্পলতা উৎখাত করিয়া কর্মনাশার জলে বিসর্জন করিতে বসিয়াছি। আর্থ্য-

কুলে জন্ম গ্রহণ করিয়া আর্য্য দিগের প্রাণাৎ প্রিয়তর সামগ্রীকে বিসর্জন করিতে আসিয়া—মায়ের বিসর্জন-বাল্য শ্রবণ করিয়া হৃদয় বড় ব্যাকুল হইয়াছে। তাই পুতলিকে-वित . हर्ज्यभाञ्चिमिणन ! श्राप्तत সাধের' সামগ্রীকে—শাস্ত্রের বিধি বোধিত রীতিনীতি ७ कर्पादक विमञ्जन मिरवन ना। ज्यानानीरनत शूताजन প্রদীপের ন্যায় ইহা পুরাতন হইলেও , অতি ও পরম সিদ্ধিদায়ক। অন্তত্ত —অতিবিশ্ময়জ্মক নব্যচাক্ টিক্যময় হাবভাব-নিলাসময় যৌবন-রঙ্গ-তরঙ্গ-चूनक्रभग्न এদীপের পরিবর্ত্তে যেন সেই পুরাতন জলন্ত দীপ বিসৰ্জন করিও না। আবার ভাবি, আমরা বিসর্জন না • দিলে ও আমাদের ছুর্দ্দশাদোষে আমাদের ' 'त्नीक्वजात्नाख आयता ताथिए পातिना विवास मा বুঝি আপনিই চলিয়া য়াইতেছেন।

সাধু মুখে শুনিমাছি, একজন দরিদ্র ত্রাহ্মণ আপ-নার একটি মাত্র কন্যাকে একজন সম্পত্তিশালী ক্ষিতি-পাল-পুত্তের সহিত বিবাহ দিয়াছিলেন। গৃহে ব্রাহ্মণী ভিন্ন ভাঁহার আর কেহ ছিল না। দরিদ্র বাহ্মণ বড় ভক্তিমান্ ছিলেন; সম্বৎসর ভিক্ষা করিয়া যথা কথঞিৎ দ্রব্য সংগ্রহ করিতেন ও শরদাগমে বর্ষে বর্ষে আর 'কিছু দিতে পারুন বা নাই পারুন, মনঃপ্রাণ ও চক্ষের্র শ্রেমাশ্রু জল দিয়া সচন্দন বিলুদলে মায়ের চরণ পূজা করিয়া কুতার্থ, হইতেন। স্বয়ং পূজা করিতেন ও ব্রাহ্মণী ভোগ পাক ও অন্যান্য আয়োজন করিয়া দিতেন। একবার পূজার পূর্কেই ব্রাহ্মণীর অতিশয় পীড়া হইল, ভোগরাগাদি প্রস্তুতির নিতান্ত নিরুপায় হইয়া উটিল। আহ্লা ভাবিয়া আকুল হইলেন, সম্বংসরের বাসনা পাছে অসিদ্ধ হয় এই জন্য ত্রান্ধণ মনে মনে বলিলেন্, মা ! ছুংশী বলিয়া কি আমার ঘরে আবিস্তৃতি হইবে না ? আবার ভাবিলেন চিস্তা কি ! এবার কন্যাটিকে লইয়া আদি, তবেই দমস্ত শুসম্পন্ন हरेरत। ब्रक्त थीरत धीरत रेववाहिरकत चवरन गमन कतिरलंन

এবং কন্যাটীকে এবার পূজার সময় পাঠাইতে হইবে এই প্রার্থনা বৈবাহিকের নিকট করিলেন। ধনমদ-গর্বিত ভূস্বামী সম্পর্ক ভুলিয়া ভক্তের মনের ঐকান্তিক বাসনার দিকে দৃষ্টিপাত না করিয়া বিরক্তি প্রকাশ ও তিরস্কার পূর্বক বলিল ; তোমার ছঃসাহস বড়! তোমার তৃণকুটারে একটু সামান্য পূজা দেখিবার জন্য হাত 'পোড়াইয়া ভোগপাক করিবার জন্য পরিচারিকা-পরিদেবিতা রাজকুলবধূ রাজ গৃহের অতুল আনন্দময়ী পূজা না দেখিয়া. বাটীতে কত খামোদ খমোদ হইবে, তাহা না. দেখিয়া দীন হীনার ন্যায় তোমার বাটীতে গমন করিবেন ! কথনই নহে, তুমি দ্বিতীয় বার একথা উচ্চার্ণ করিও না ৷ বৈবাহিকের কথা শুনিয়া দরিত্র ত্রাক্ষণের মর্মে বড় আঘাত লাগিল—তথা হইতে বাক্ষণ অমনি উঠিলেন, বাহিরে আসিয়া কাঁদিতে কাঁদিতে বলিলেন, মা ! তবে-কি এবার এপাদ্পদ্মে বিলুদল গঙ্গাজল দিতে পাইব না! মা দাদের আশা কি পূরাইবে না, মা দীনদয়াময়ি ! আমার তুমি বই আর কেউ যে নাহি মা । " মা আর কি থাকিতে পারেন, ভক্ত ব্রাহ্মণকে হোরুদ্যমান দেখিয়া পথি মধ্যে একটি পুষ্করিণীর তটে দাঁড়াইয়া একটা অসঞ্জিতা মেয়ে—ঠিক তাঁহারই মেয়ের রূপে তাঁহার মেয়ের কণ্ঠ স্বরে বলিলেন-বাবা! তুমি কোথা গিয়াছিলে ? ত্রাহ্মণ ফিরিয়া দেখিলেন, যাহারই জন্য এত লাঞ্ছনা, সেই কন্যাই ডাকিতেছে । ব্রাহ্মণ ছুঃখের তাবদ্বিবরণ কন্যাকে क्षनारेलन । कन्या विलालन, वावा, व्यापनि ভाविद्यन না। আমি চুপি ২ তোমার বাটী যাইব ও পূজায় ভোগ-পাক করিয়া দিব; আপনি বাড়ী যান্। আহ্মণ বাটী গিয়া দেখেন-কন্যা পূর্ব্বেই আদিয়াছেন ও রন্ধন-শালার যথাযোগ্য সমস্ত ব্যবস্থা করিয়া লইয়াছেন। বাক্ষণ বলিলেন মা তুমি এত শীঘ কেমন করিয়া আদিলে ! মা বংলিলে ; বাবা আমি একটা গুপ্ত সোজা-পথ (ভক্তি মার্গ) ধরিয়া আদিয়াছি। মায়ের মায়া ব্রাহ্মণ

বৃথিতে পারিলেন না। আজ সদ্ভক্তকল্পতিকা মা
অন্পূর্ণা ভক্তের মেয়ে সাজিয়া ভোগ পাক করিলেন।
(বৃথি সাধকের সংসারের সমস্ত ভোগ পরিপাক করিলেন।
(বৃথি সাধকের সংসারের সমস্ত ভোগ পরিপাক করিলের
জন্য মার আগমন ইইয়াছিল !) নিমন্ত্রিভগণ প্রসাদ
পাইয়া বলিল, এমন উপাদেয় অন্ন কথনই খাই নাই।
তিন দিন কাটয়া গেল, ৪র্প দিনে মেয়ের সাজে মা
দীনদয়ায়য়ী বলিলেন, বাবা! এখন তো ভোমার কাজ
(সাধন সিদ্ধি) ইইয়া গেল, আমি চুপি ২ চলিয়া যাই।
দরিদ্র ভাক্ষণ, কাঁদিতে ২ মাকে বিদায় দিলেন—
মনঃপ্রাণ মায়ের পশ্চাতে ২ চলিয়া গেল, ভাক্ষণ
আচেতন ইইয়া পড়িলেন, ভাক্ষণের চিরদিনের সাধ
মিটল—সংসার পাশ কাটিল।

অভাগা আমরা তাই না শাস্ত্রীয় ব্রহ্মবিদ্যাকে জলাক্রেলি দিতেছি—তাই না মা আজ দরিদ্রের ক্টার
ট্রাড়িয়া চলিয়া যাইতেছেন—রাখিতে কি পারিব না!
মা যদি তিন দিন (সত্য, ত্রেতা, ছাপর) থাকিয়াই
৪র্থ দিনে (কলিয়ুগে) চলিয়া যাইবে, তবে মাঁ! একটি
বার সম্মুগে দাঁড়াও. একবার প্রাণ ভরিয়া দেখিয়া
লই. একবার মা বলিয়া ডাকিয়া লই—প্রাণের সাধ
মিটাইয়ালই। মা! তুমি বিসজ্জিত হইবার পূর্বে আমরাই বিসজ্জিত হইব। তোমার বিসজ্লিনের পর
কি আর কাহারও অন্তির থাকে! মা, তুমি বিদায় লইও
না; তুমি থাক, আমরাই বিদায় লই. তুমি আবার
নিজ ভক্তমুখে স্থমধুর স্বরে তোমার পূজা পাচ প্রবণ
কর। সভ্যগণ! এক্ষণে বিদায় গ্রহণ করিলাম।

একনাথ-মহারাজ।

ইতি পূর্বে বলা হইয়াছে যে, চক্রপাণি ও তাঁহার
প্রী একনাথের কোন প্রকার সন্ধান প্রাপ্ত হন নাই।
ইহা লেখা বাহুল্য যে, তাঁহারা, যার পর নাই মনের
ক্ষেত্র জীবন যাপন করিছে লাগিলেন। তাঁহারা পুত্রশোকে কাতর ছিলেন। কিন্তু একনাথের প্রতি চাহিয়া

শে শাক সম্বরণ করিয়াছিলেন। তাঁহাদের একে র্দ্ধাবস্থা, তাহাতে আবার দুৈন্যদশা। কোথায় তাঁহারা ' বাটীতে ব্যিয়া নিশ্চিন্ত ভাবে অব্স্থিতি করিবেন না তাঁহাদের উদ্রামের জন্য লালাগিত হইতে হইল। তাঁসারা আশা করিয়াছিলেন যে, একন্ত্রির দারা ভাঁহাদের সকলু অভাব দূর হইবে। কিন্তু সে গ্রাশা বিফল হাইল। কোথায় একনাথ অর্থ উপার্ল্যন করিয়া আনিবেন এবং তাঁহার জী রন্ধন ও অন্যান্য গৃহ কার্য্য করিরেন না এ অসমর্থ-অবস্থায় চক্রপাণিকে দারে দারে ভিক্রা করিতে হইল এবং তাঁহার দ্রীকে গৃহকার্য্য সলাধাণ করিতে হইল। এই ভাবে ত্রয়োদশ বংসর অতিবাহিত হইল। একনাথকে পুনরায় পাইবার আশা ভাহারা ত্যাগ করিয়াছেন এমন সময়ে ভানিতে পাইলেন যে যে পৌরাণিকের সহিত একনাথ সদা সর্বাদা শাস্তালাপ করিতেন, তিনি খত্যাগমন করিয়াছেন। ইহা শুনিয়া চক্রপাণি তাঁহার কাছে গমন করিলেন এবং একনাথের বিষয় জিজ্ঞাসা করিলেন। পৌরাণিক মহাশয় বলিলেন বে. একনা একনাথ ভাঁহাকে বলিয়াছিল বৈ, সে শাস্ত্র অধ্যয়ন এবং ব্রহ্মজ্ঞান লাভ করিবার জন্য জনাদ্দন-পত্থের নিকট গমন করিবে। বোধ হয় একনাথ দৌলতাবাদে পস্থজীর কাছে অবস্থিতি করিতেছে ইহা শুনিয়া চক্রপাণি বলিলেন যে. তিনি নিজে দৌলতাবাদে যাইতে সমর্থ নহেন, আর চাঁহার অবস্থাও এমন নহে বে অর্থ-ব্যয় করিয়া তথায় •কোন লোককে পুনঃ প্রেরণ করেন। হৃত্রাং একনাথকে পুনঃ প্রাপ্ত হওয়া একপ্রকার অসম্ভব। চক্রপাণির কাতর উক্তি গুলি শুনিয়া পৌরাণিক মহাশয় স্বয়ং দৌলতাবাদে যাইবার জন্য প্রস্তুত হইলেন। ইহা দেখিয়া চক্রপাণির মনে আর আনন্দ ধরিল না। তিনি পৌরাণিক মহাশয়কে माधुवान निरलन अवः विलालन रयः जिनि यावञ्जीदन তাঁহার কাছে কুতজ্ঞতা ঋণে বন্ধ থাকিবেন:

পোরাণিক মহাশয় দেলতাবাদে গমন করত

জনার্দন পত্থের সহিত সাক্ষাৎ। করিলেন। পৃত্বজী তাঁহাকে সম্মানের সহিত নিকটে বসাইলেন এবং আগননের কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন। পৌরাণিক মহাশয় একনাথের কথা উত্থাপন করিলেন এবং তাঁহার অভাবে চক্রপাণি 'ও তাঁহার সহধর্মিণীর যে কি পর্যান্ত তুর্বস্থা এই বৃত্তান্ত্তী শুনিয়া জনাদন পন্থ অতিশয় ব্যথিত হইলেন, এবং আশা জনক বাক্যেপোরাণিক মহাশয়কে বাললৈন যে একনাথ সম্প্রতি "ব্রহ্মবিদ্যা লাভ করত কৌর্থ-সমূদে গমন করিয়াছেন। তাঁহার প্রতি আদেশ আছে, তীর্থাদি দর্শনের পর তিনি বাটাতে প্রত্যাগমন করত গৃহস্থাশ্রম . অবলম্বন করিবেন। অতএব তাঁহার পিতামহ । अ পিতামহা যেন মনঃকটে কাল্যাপন না करतन। (পीतांगिक महासार विलालन त्य, अवनाथ কতকালে প্রত্যাগমন করিবেন তাহার ত কোন স্থিরতা নাই। তিনি যদি ভারতবর্ষের সমুদায় তীর্থ দর্শন করেন, जारा रेहेरल ७ कवक वर्मत व्यक्ति। रिक रहेरत, व्यवः তাহা হইলে চক্রপাণি ও তাঁহার জ্রীর ক্লেশের এক শেষ হইবে। তাঁহারা ত্রয়োদশ বৎসর মহাক্রেশে জীবন যাপন করিয়াছেন। এভাবে আর অধিক দিন থাকিতে পাদিবেন না। শোকে তাপে এবং অন্নাভাবে তাঁহাদের জীবন থাকা কঠিন ইইয়া উঠিয়াছে। এখনও যদি একনাথকে দেখিতে পান তাহা হইলে ভাঁহারা কিছু কাল মনের আনন্দে জীপন যাপন করিতে পারেন। अडे मकल श्विता जनार्फनशन् विलालन (य. धकनाथ) এখন উত্তর দিকের তীর্থ সকল দর্শন করিতেছেন। যখন দক্ষিণ-দিকের তীর্থাদি দর্শন করিতে গমন করিবেন, তখন ঠাহাকে পৈঠন হইয়া যাইতে হইবে। যাহাতে একনাথ অন্যান্য তীর্থে গমন না করেন, তিনি তাহার ব্যবন্থ। করিতেছেন। এই বলিয়া, জনার্দন পন্থ এক-নাথের নামে একথানি পত্র লিখিয়া তাহা পৌরাণিক महाभारमुद हारा निंदलन, अवः वर्लिटलन दग, यथन अक-

নাথ পৈঠনে আসিবেন এই পত্র থানি যেন জাঁহার হস্তে দে e য়া হয়। তিনি চ ক্রপাণির নামে আর এক থানি পত্ত লিখিয়া পোরাণিক মহাশয়ের হতে দিলেন। এই পত্র ছই খানি লইয়া পোরাণিক মহাশয় পস্থজীকে সাফাঙ্গে প্রণাম করত, পৈঠন অভিমুখে যাত্রা করিলেন। তথায় উপনীত হইয়া চক্রপাণির হস্তে চুই থানি পত্র দিলেন এবং পন্থজীর সহিত যে সকল কথা হইয়াছিল তাহা বর্ণনা করিলেন। চক্রপাণি তাঁহার নিজের নামের পত্ত খানি পাঠ করিয়া অতীব আনন্দ লাভ করিলেন। এই পত্তে জনাৰ্দন পন্থ ভাঁহাকে অনেক সাস্ত্যনা বাক্য লিখিয়াছেন এবং আশা দিয়াছেন যে একনাথের হস্তে অপর পত্র খানি দিলে তিনি আর অন্য তীর্থ দর্শনে গমন করিবেন না। চক্রপাণি পত্র থানি পাঠ করিয়া অতীব আহলাদিত হইলেন, এবং মনের আনন্দে একনাথের প্রত্যাগ্যন প্রতীকা করিতে লাগিলেন। একনাথ দৌলতাবাদ ত্যাগ করিয়া উত্তরাভিমুথে গমন করিলেন[°]। নর্মাদা তীর্থ-দর্শন করত প্রয়াগে গমন করি-লেন। তথা হইতে একে একে কাশী, অযোধ্যা, মথুর রন্দাবন, হরিদার কেদার এবং বদ্রিনাথ দেখিয়া দক্ষিণা-ভিমুথে আগমন করিলেন। পরে দারকা, জুনাগড় ডাকুর প্রভৃতি দৃর্শন করিয়া পৈঠন অভিমুখে গমন করিলেন । অন্যান্য তীর্থ-দর্শন করিতে হইলে পৈঠন হইয়া যাইতে हम, अहे निमिछ अकनायरक ज्याम याहर इहेन। একনাথ কোন নগর বা আমের ভিতর থাকিতেন না। তিনি অদূরে কোন দেবালয় কিন্তা ধর্মশালায় অবস্থিতি করিতেন, এবং কোন সাধু ব্যক্তির সন্ধান পাইবা মাত্র তাঁহার সহিত সদালাপে কালক্ষেপ করিতেন। পৈঠনের নিকটে আসিয়া তিনি একটা শিবমন্দিরে অবস্থিতি করিলেন্। এই মন্দিরটী একনাথের অত্যন্ত প্রিয়। বাল্যকালে তিনি বুর্বদাই এখানে আসিতেন ज्वर जह थारनहे जिनि रेम्द्रेगागी अवन कतिशाहितन। এই দেবালয়ে অভ্যাগতদিগের ভোজনের কোন ব্যবস্থা

ছিলনা। এই নিমিত্ত একনাথকে নগরে গিয়া ভিকা করিতে হইত। একনাথের ইচ্ছা ছিলনা যে তাঁহার পিতামহ ও পিতামহীর • সহিত সাক্ষাৎ করেন, তবে ্কোন প্রকারে ভাঁহাদের সংবাদ লইবার অভিগ্রায় ছিল। জনার্দ্দন পছের পত্র পাইয়া অবধি চক্রপাণি একনাথের সন্ধান লইতে লাগিলেন। যেখানে তীর্থবাত্রীগণ একত্রিত হইত সেইখানে গিয়া সন্ধান লইতেন ু मन्त्रामी ७ बन्नाहातीत व्यागमन-वार्टा श्वनित्व जांशातित নিকট গমন করিতেন। তাঁহার প্রতিবাদীদিগকেও সন্ধান লইবার জন্য বলিয়া রাখিয়াছিলেন। স্থতরাং চারিদিকেই একনাথের অনুসন্ধান হইতে লাগিল। धकना ठक्क शानि Cकान दनवालय कर्नन करिया -वाही co প্রত্যাগমন করিতে ছিলেন। কিন্তু শরীর ক্লান্ত হ ভয়াতে তিনি এক গৃহত্তের বাটার বাহিরে উপবেশন क्तिरलन। এমন সময়ে, 'সেই গৃহত্তের বাটী হইতে একনাথ ত্রহ্মচারীর বেশে নির্গত হইলেন। তাঁহার সর্বাঙ্গে ভন্ম লেপন, মস্তকে জটাভার, এক হস্তে ভিকার পাত্র এবং অপর হত্তে ত্রিশূল। চক্রপাণি **धकनाथरक एमिशा अथरम विरवहना** कतिरलन त्य, ইনি একজন মহাযোগী হইবেন, পরে ভাঁহার প্রতি নিরীকণ করাতে বিবেচনা করিলেন যে, ইনি একনাথ হইতে পারেন। একনাথ কিয়ৎদূরে গমন করিলে চক্রপাণি একনাথ বলিয়া ডাকিলেন। একনাথ চক্র-পাণিকে দেখিব। মাত্র তাঁহাকে চিনিতে পারিলেন। তাঁহার তুরবন্ধা দেখিয়া তিনি কাতর হইলেন। কেবল ব্রত-ভঙ্গ-ভয়ে তাঁহার নিকট নিজ পরিচয় দিলেন না। কিন্তু চক্রপাণির কাতর স্বর শুনিয়া তিনি আর স্থির থাকিতে পারিলেন না'। তখনই চক্রপ।ণির নিকটে গমন করিলেন, এবং তাঁহার পদৃতিলে পতিত হইলেন। চক্রপাণি তাঁহাকে আশীর্কাদ করিলেন এবং স্নেহ সহকারে আলিঙ্গন দিলেন। ইহার পর উভয়ে বসিয়া मनामाभ कतिराज मीशिरमन। ठजाभागि अकनाथरक

জিজ্ঞাসা করিলেন 🕻 যে এ প্রকার অবস্থায় তাঁহাদের রাণিয়া যাওয়া কৈ তাঁহার পকে উচিত, হইয়াছিল ? একনাথ ইহার কোন উত্তর দিলেন না। তিনি রোদন করিতে লাগিলেন।. কিয়ৎকাল পরে তিনি চক্রপাণিকে বলিলেন যে তিনিই তাঁহাদের এত ক্লেশের কারণ এবং এ জন্য কম। প্রার্থনা করিলেন। তদনস্তর শিবালায়ে দৈববাণী অবণ এবং জনাৰ্দন• পত্বজীর কুপায় ব্রক্ষজান লাভ ও দ্তাত্রেয়দর্শন এবং তাঁহার অসাদ প্রাপ্তি সম্বন্ধে আমুপূর্ব্বিক রতান্ত বর্ণনা করিলেন। ইহা শুনিয়া চক্রপাণির মনে আর আনন্দ ধরিল না। তিনি আপনাকে ধন্য জ্ঞান করিলেন। পরে চক্রপাণি একনাথকে গৃহে ুজ্বস্থিতি করিতে বলিলেন। ইহা শুনিয়া একনাথ বিনীত ভাবে নিবেদন করিলেন যে, তাঁহার গুরুলেবের আজ্ঞা এই যে. তিনি সমুদায় তীর্থ দর্শন করিয়া গৃহস্থাশ্রম অবলম্বন করেন। এখন দক্ষিণ দিকের কএকটা তীর্থ 👺 🖰 অবশিষ্ট আছে। ইহার প্রভাতরে চক্রপাণি কিছু না বলিয়া, জনাৰ্দ্দন পাস্থের পত্র থানি গৃহ হইতে আনয়ন করত তাঁহাকে পড়িতে দিলেন। পত্র খানির মর্ম্ম এই— ভুমি পৈঠন ত্যাগ করিবার পর, ভোমার পিতামহ 🧣 পিতামহীর ক্লেশের এক শেষ হুইয়াছে। তাঁহারা তোমাকে অবলম্বন করিয়াছিলেন, তোমার অভাবে তাঁহার। আশ্রয়হীন হইয়াছেন। একে তাঁহাদের বৃদ্ধাবস্থা, তাহার উপর আবার তাহাদের দৈন্য দশা। এ অবস্থায় ভাঁহাদের তত্ত্ব লইবার ও সেবা করিবার কেহ নাই। এখন ভাঁহাদের সেবা করাই তোমার পক্ষে প্রকৃত তীর্থ দর্শন। অতএব এই পত্র পাঠ মাত্র **অ্পর** ' স্থানে যাওয়া স্থগিত রাথিবে, এবং গৃহে অবস্থিতি করত তোমার পিতামহ ও পিতামহীর সেবা করিবে। গুরুদেবের আজ্ঞা শিরোধার্য্য করিয়া একনাথ তীর্থ-'দর্শন স্থগিত রাখিলেন, এবং তাঁহার পিতামহ ও পিতা-মহীর সেবায় নিযুক্ত হইলেন। এই দেবাত্রত সমাধার

পর যে,সময় পাইতেন,তাহা পৈঠন বািদীদের উপকারার্থে **অতিবাহিত কে**রিতেন ।''বে স্থানে তাঁহার পিতা-মহের সহিত সাক্ষাৎ হইয়াছিল, সেই স্থানে একনাথ **बक्री मागागर के श्रम्य कित्रा एकन की उंग** बदर শাস্ত্র ব্যাখ্যা করিতে লাগিলেন। পৈঠন বাসীগণ আনন্দের সহিত তাঁহার উপদেশাদি অবণ করিতে লাগিল। ক্রে লোক-সংখ্যা বুদ্ধি হওয়াতে, স্থানের স্ফুলান হইত না, ক্র্যু-পাছ্রসকলে বর্থ সংগ্রহ করিয়া' একটী প্রশস্ত মন্দির নির্মাণ করিয়া দিল। এই মন্দিরটী নাথ-মন্দির নামে বিখ্যাত হইল। একনাথের খ্যাতি চারি দিকে ব্যাপ্ত হইল। নানা স্থানের লোক তাঁহার কীর্ত্তনাদি শ্রবণ করিবার জন্ম আগমন করিতে লাগিল। বিজয়-পুরের এক জন সন্ত্রান্ত ব্যক্তি তাঁহার ছহিতাকে একনাথের হস্তে অপ্ । করিবার জন্য উৎস্ক হইলেন। এ সম্বন্ধে চক্রপাণির সহিত কথা চলিতে লাগিল। न्दरभय বিবাহ ধার্য হইল । কন্যাকর্ত্তা পাত্রীকে লইয়া পৈঠন পুরীতে আগমন করিলেন। এখানে একটা স্বতন্ত্র গৃহে অবস্থিতি করিলেন, এবং এই গৃহেতেই উদাহ-কার্য্য সমাধা হইল। পাত্রীর নাম গিরিজা বাই 🐞 রাখা হইল। একনাথ বিবাহ-বন্ধনে বন্ধ হইয়া শাস্ত্র-অনুসারে, গৃহী ব্যক্তির কার্য্য সকল সমাধা করিতে লাগিলেন। তাঁহার দৈনিক কার্য্য এই রূপ ছিল-স্নানের পর সন্ধ্যা বন্দনাদি ক্রিতেন, তাহার পর পুরাণ পাঠ করিয়া অতিথিসংকার করিতেন। পরে ভোজন করিয়া কিঞ্চিং বিশ্রামের পর, নাথ-মন্দিরে গমন করত শাস্ত্র-व्याश्या कतिएक। मिवा ज्यमान रहेल, मक्षा वन्ननीमि 'সমাপুন করত, ভজন, কীর্ত্তন ও শাস্ত্র ব্যাখ্যা করিতেন। ভক্তবৃন্দ, কথা শুনিতে আদিয়া যে তগুল আদি দিত, তাহাতেই এক নাথের সাংসারিক ব্যয় নির্বাহ হইত।

কিয়ৎ কাল পরে চক্রপাণি ও তাঁহার সহধর্মিণী

ইহলোক পারিত্যাগ কদ্বিলেন। জনার্দন পছও সমাধি लहेलन। এই मकल घटना अक्नारथत शक्क विरमय শ তিজনক হইল সন্দেহ নাই । কিন্তু ভগবান্ যাহা করেন তাহা মঙ্গলজনক, এই বিবেচনা করিয়া, তিনি বৈর্যা অবলম্বন করিয়া রহিলেন। যাহাতে ভাঁহার গুরু-দেবের পরলোক-প্রাপ্তির দিনে প্রতি বৎসর উৎসব হয়, একনাথ তাহার ব্যবস্থা করিয়া দিলেন। এই সময়ে উর্দ্ধন নামে একনাথের এক জন আগীয় তাঁহার শিষ্যত্ব স্বীকার করিল, এবং তাঁহার সহায়তা করিতে লাগিল। একনাথের অসাধারণ বক্তৃ ভাশক্তি ছিল। ড়াহার বাক্যগুলি মধা বর্ষণ করিত। তিনি শাস্ত্রের কোন ২ অংশ অবলম্বন করিয়া তাহা বিশদ রূপে বুঝাইয়া দিতেন। কথা কহিতেও উপযোগী আখ্যায়িকা সকল অবতারণা করিতেন, এবং মধ্যে ২ উপমার দারা তাঁহার অভিপ্রায় শোতাগণের ছদয়ঙ্গম করিয়া দিতেন। একনাথ একজন উত্ন কবি ছিলেন। ক্রত রচনা তাঁহার একটা বিশেষ ক্ষমতা ছিল। কথা কহিতে কহিতে তিনি চমৎকার কবিতা রচনা করিয়া শ্রোতাগণকে শুনাইতেন। তিনি এমন সহজ ভাষায় শাস্ত্র ব্যাখ্যা এবং কথকতা করিতেন যে. অজ্ঞ ব্যক্তিগণেরও তাহা বোধগম্য হইত। তাঁহার অসাধারণ বাগ্মিতা, স্থমধুর ভাষা এবং সরল বাক্য-বিন্যাস আপামর সাধারণ সকলকেই মোহিত করিত। একনাথ জ্রীকৃষ্ণের ভক্ত ছিলেন, এবং তিনি তাঁহার বক্তৃতাতে ভক্তের প্রাধান্য সমর্থন করিতেন। নানা স্থান হইতে লোকে পৈচনে আসিয়া তাঁহার বক্তৃতা শ্রবণ করিত। অবশেষে, শ্রোতার সংখ্যা এত অধিক হইল যে, মন্দিরে আর স্থান হইত না । ইহা দেখিয়া পৈঠনবাদীগণ, অর্থ-সংগ্ৰহ করত, একটা প্রকাণ্ড দেৰালয় এবং তাহার সম্মুখে একটা নাটমন্দির প্রস্তুত করিলেন। দেবালয়ে শ্রীকৃষ্ণের বিগ্রহ স্থাপিত হইল্. এবং এই নাটমন্দিরে ভজন, কীৰ্ত্তন ও কথা হইতে লাগিল।

^{*} দাকিণাতে প্রথা এই যে, খগুরাক্রে নব বধু একটা ন্তন নাম

अहे ममरा अकनाथ अक शांनि वार्राशा श्रुष्ठक থাকাশ করিলেন। সাধু জ্ঞানদেব-প্রণীত জ্ঞানেশ্রীর ভাষা কঠিন বলিয়া অনেকেই তাহার ভাব সকল হৃদয়স্বন করিতে পারিত না। এই জন্য তাহা তাজিল্য ভাবে ছিল। কিন্তু, জ্ঞানেশ্রী এক খানি অপূর্ব্ব গ্রন্থ। ইহা গীতা ও ভাগবতের ব্যাখ্যা এবং নানা প্রকার সত্নদেশে পরিপূর্ণ। এই পুস্তক থানি পাঠ করিয়া একনাথ এত আনন্দ লাভ করিয়াছিলেন যে, তিনি ভাহা একা ভোগ্ন করিয়া তৃপ্তি লাভ করিতে পারিলেন না। যাহাতে তাহার উৎকৃষ্ট ভাব পকল আপামর माधातरगत कमग्रक्रम इस, अहे हेन्द्रा ठाँशात व्युस्टरत বলবতী হইল। এই এছের, অন্তর্গত ছুরুহ, ভাব স্কল একনাথ বিশদ রূপে ব্যাখ্যা ক্রিলেন্ এবং তাহা शुखाकाकारत थकांम •कतिरलन। टलारक मानरत बहे পুস্তক খানি পাঠ-করত তৃত্তি লাভ. করিল। এই পুত্ত খানি পাঠ করিয়া এবং একনাথ কর্ত্ব বিরচিত সতুপদেশ সকল এবণ করিয়া, পৈঠন বাদীগণ বিশেষ রূপে উপকৃত হইল। অনেক কুপথগামী ব্যক্তি তাহাদের মন্দ রীতি সকল ত্যাগ করিল এবং পূর্ব্ব কৃত পাপের জন্য অমুতাপ করিয়া ধর্ম কর্মে প্রাণমন সমর্পণ করিল।

একনাথ যে রূপ উপদেশ, দিতেন, সেই মত তিনি কার্য্য করিতেন। পর উপকার সাধন করিবার জন্য তিনি আপামর সাধারণকে উত্তেজিত করিতেন এবং এই ব্রত সাধন জন্য তিনি তাঁহার শরীর ও ধন উভয়ই নিয়োজিত করিতেন। তিনি সাধ্য মত দীন ব্যক্তিদের অভাব দূর করিতেন, এবং আতুর ব্যক্তিদের সেবা করিতেন। কথকতার দ্বারা তাঁহার যথেই উপার্জন হইত। সাংসারিক ব্যয় নির্বাহের পর যাহা উদ্বর্ত হইত, একনাথ তাহা মনের আনদেদ পর উপকার জন্য নিরোজিত করিতেন তাঁহার বাটীতে দলে দলে লোক সকল আগমন করিত। তিনি তাহাদিপকে

সাদরে এহণ ক্রিতেন, এবং যে ব্যক্তি যে অভাব জানাইত, তিনি সাধ্য অনুসারে তাহা দুর করিতেন। একনাথ সকলকে সমান ভাবে দেখিতেন এবং সকলের প্রতি সমান ব্যবহার করিছেন। কি ধনী কি ধনহীন, কি নীচ জাতি কি উচ্চ জাতি, যিনি সদ্তণ শালী হইতেন তিনিই তাঁহার কাছে সুশ্বান লাভ করিতেন 🔰 অতিথি-সংকারের সৃময়ে তাঁহার বড় ছোট জ্ঞান ছিল না। সকলকেই সমান রূপে খাদ্য দ্রব্য দিতেন । বছ विनया (य डाँहारक छे ९ क्से खेवा मिर्ट इय अवेश (छाडे বলিয়া তাহাকে দানান্য দ্ৰব্য খাওয়াইতে ইয় এ ভাব তাঁহার অন্তঃকরণে স্থান পাইত না। লোকের সহিত ব্যবহার সম্বন্ধে তাঁহার এই থকার উপদেশ ছিল-ব্রাহ্মণ জ্ঞানহীন ওকদাচারী হইলৈ তাহাকেব্রাহ্মণোচিত गर्यामा (म ६ शा छ हि छ न ट्यू कि ख कान हीन का छि-ভুক্ত লোক জ্ঞানবান্ ও সঞ্চরিত্র হইলে, তাহাকে সম্মান করা উচিত। যদ্যপি কোন কদাচারী ব্রাহ্মণ ও কোন আত্র ব্যক্তি আদিয়া উপস্থিত হয়, তাহা হইলে প্রথমে আছুর ব্যক্তির সৎকার করা কর্ত্ব্য । একনাথ যেমন পর উপকার-পরায়ণ ছিলেন, তাঁহার প্রকৃতিও তেমনি শান্ত ছিল। কোন খকার কন্ট তাঁহাকে ব্যথিত করিতে পারিত না এবং কোন প্রকার ছুর্টনা তাঁহাকে বিচলিত করিতে দক্ষম হইত না।

ক্রমশঃ।

ভারত বর্যীয় আর্য্যধর্ম প্রচারিণী সভার বার্ষিক উৎসবের কার্য্য বিবরণ ।

আবার উৎসব আসিল। সংবৎসরাস্তে, আবার উৎসবের বিজয়ভেরী বাজিয়া উঠিল। ধর্ম বিল্রাটের এ বিষম ছুর্দিনে আবার উৎসবের শুভসংবাদ ঘোষণা করিতে অবকাশ পাইলাম, ইহাতে আমরা ধন্য। বর্ষে ২ এম্নি দিনে এই শুভবার্তা। প্রচারিত করিতে পারি, ভগবানের কাছে ইহাই থার্থনা। উৎসব কথন্ও পুরাতন হয় না,। বিশেষতঃ ধর্মোৎসব 'চির দিনই দুতন। সাংসারিক কোন পদার্থ ক্রমাগত অনবরত উপভোগ করিলে তাহাতে অরুচি জন্মায়—তাহার মধুরতা বিলুপ্ত হইয়া যায়, তাহার কমনীয় কান্তির উপর পুরাতনত্ব জনিত মলিন্তা জমিয়া উঠে, ইহা ঠিক, কিন্তু ধর্ম কথন্ও পুরাতন হয় না, অবিরত ধর্ম পুরাত ধর্মের মাধুরী আরও ঘলিয়া উঠে, ধর্মের সোহাতে ধর্মের মাধুরী আরও ঘলিয়া উঠে, ধর্মের সোহাত গ্রের ফুটিয়া উঠে, । ধর্ম চির সনাতন, তাই ইহা চিরস্কলর। যাহা অতি পুরাতন, তাহাই অতিনৃতন হইয়া দাঁড়ায়। স্কতরাং ধর্মোৎসব কিছুতেই পুরাতন হইবার নহে।

২৫ এ কার্ত্তিক হইতে আরম্ভ করিয়া ৬ই অগ্রহায়ণ প্ৰয়স্ত এই ছাদশ দিন ব্যাপিয়া উৎসব-কাৰ্য্য বিঘু বাধা অতিক্রম করিরা স্থসশার হইয়া গেল। পূজা, मुक्ती हिन, (तम शान, वक्कृ छा, भाजवारीशा व्यक्ति नाना-বিধ ধর্ম ব্যাপারে কাশীবাসীগণ কয়দিন অপার আনন্দ অমুভব করিয়াছিলেন। "বিসর্জন" "আমি ও আমার", "ধর্মের কায়া ওছায়া" "গাহ স্থা দর্মা" " সাজ ও কাজ"" "মা আমার মাতা কি পিতা" এই কয়টি বিষয়ে বক্তৃতা হইয়াছিল। "'বিসর্জন " বক্তৃতাটির দার মর্ম ধর্ম খচারকের অন্যত্ত উদ্কৃত্ইল। " সাজ ও কাষ " "মা আমার মাতা কি পিতা" এই ছুইটি বকুতা পুস্তকাকারে প্রকাশিত হইবে। " আমি ও আমার " এই বিষয়ে পরিবাজক জীতীকৃষ্ণানন্দ স্বামী হিন্দী ভাষায় বক্তা করিয়াছিলেন। বৈদান্তিক গুরু গন্তীর আঁশতর তিনি এত সরল করিয়া বুঝাইয়াছিলেন, যে অশিক্ষিত লোকেও তাহা অতি হৃন্দর রূপে হৃদয়ঙ্গম করিয়াছিল। তিনি উক্ত বিষয়ে যাহা বলিয়াছিলেন, তাহার সংকিপ্ত মর্ম এই—

" জগতে অনম্ভ ভাষা অনম্ভ শব্দ। এই অদীম শব্দ-

ভাণার হইতে সকলেই আপনার ২ মনোমত শব্ ব।ছিয়া লয়। যে শব্দ যাহার মনোমত— গ্রিয়, অপরের পক্ষে তাহা হয়ত প্রিয় না হইতে পারে। শিশুর পক্ষে रय भक्त विश्र, शूर्वा कर शिक्ष का हो विश्र ना हहेरछ পারে। পশুর পক্ষে যে শব্দ খিয়, মনুষ্যের পক্ষে তাহা প্রিয় না হইতে পারে। স্বতরাং সকল শব্দ বিভিন্ন ২ মূর্ত্তিত বিভিন্ন ২ জাতির প্রিয় হইয়া থাকে । সর্বাঞ্চন-প্রিয় যদি কোন শব্দ জগতে থাকে, ত এক মাত্র " আমি "। বালক রৃদ্ধ, যুবা, পৃশু, পক্ষী, মানব ইহাদের মধ্যে " আমি " শব্দকে কে না ভাল বাসে ? কিন্তু " আমি কি " ইহা কয় জনে বুঝে ? সংসারের অন্যান্য পদার্থের সংবাদ লাইবার জন্য আমরা সর্বাদা ব্যস্ত, কিন্তু " আমির " পংবাদ লুইতে কয়জন চেন্টা করিয়া থাকে ? দুরাদ্রতরবর্তী কত পদার্গের তত্ত্বার্তা অনুসন্ধান করিতে আমরা ছুটাছুটি করিতেছি, কিন্তু নিকট হইতেও নিকটতর আমি ত্বের বিন্দু বিদর্গ মাত্র তত্ত্ব সংগ্রহ করিতে আমাদের চেকী হয় না, ইহা व इ विष्ठि अर्हानका! "आगि कि" डाहा जानि ना, কিন্তু এই অজানা অচেনা জিনিষের প্রতি আমাদের এত ভাল বাসা কেন ? কেননা আমরা জানি "আমিত্ব" স্পূর্শ মণির ন্যায় মূল্যবান্ । লৌহ স্পর্শমণির সংস্পার্শে ' হ্বর্ণ হইরা যার—তাহার মূল্য বাড়িয়। যায়, মেই রূপ পদার্থ আমিছছেঁ। য়া হইলেই সুবর্ণ হইয়া যায়,—তাহা আমার পকে মূল্যবান্ হয়। দেকোনে শত সহস্র ঘড়ি সাজান থাকিলেও আমার পক্ষে তাহার কিছুই মূল্য নাই, কিন্তু যাই তাহার মধ্যে একটি ঘড়ি আমি জয় করিয়া আমিত্বসংস্পৃষ্ট করিয়া লইলাম, অম্নি তাহা আমার পক্ষে মূল্যবান্ হইল, আমিছের স্পার্শে তাহা তথন স্থবর্ণ হইয়া গৈল, কেননা তথন বুঝিলাম যে তাহ। "ৠামার জিনিষ"। কি জানি আমিত্বের কি মহতী মাক্তি আছে, যে আমিত্বের সম্পর্ক থাকিলে অভিভূচ্ছ পদার্থ । পামার পক্ষে মহা মূল্যবান্

আর আমিছের সম্পর্ক না থাকিলে, অতি মূল্যবান্ পদার্থ আমার উপেকার বিষয় হইয়া থাকে। আজ वक्राप्तरभत काधीन ताका भिश्ति हित पिरनत कना हिन्दूत হস্ত হইতে হারাইয়া গেল, কিন্তু তাহার জন্য আমার তত ছু:খ হয় না, কেননা তাহা " আসার" নহে। কিন্তু আমার এক থানি ছেঁড়া কাপড় হারাইয়া গেলে তাহার জন্য আমি মরমে মরিয়া যাই। সুতরাং না জানি আমিছ ,কত মধুরতার প্রত্রবণ, যে তাহার সম্পর্কে অতি তুচ্ছ জিনিষও আমাদের পকে মিউ হইয়া উঠে । যাঁহারা महामना, उाहारनत आमित्र मकीर्न गछीत• मर्था आवक নহে। স্ত্রী পুদ্র পরিবারাদিকে তিনি নিজের জিনিষ विलाया (यमन मतन करतन, टिमने निर्जत रिमने নিজের সমাজকে তিনি "নিজের জিনিষ " বলিয়া অফুভব করেন । নিজের একটি উপযুক্ত পুস্ত সরিয়া গেলে তিনি যেমন ছঃখিত হন,সেই রূপ টীকেন্দ্রজিতের ন্যায় স্বদেশের স্বাধীনতাপ্রয়াসী কোন বীর মরিয়া গেলে তিনি তেমনই যাতনা অমুভব করেন। কেননা তাঁহার স্বত্ব-ভাঁহার নিজত্ব-তাঁহার আমিত্ব নিজ পরিবার মণ্ডলী রূপ কৃপে কেবল আবদ্ধ নহে । তাহা अरम्भ ऋथ इतिभाग मगुप्रस्क (वर्षेन कतिशा (किनशांट्र । আবার যিনি আলদৃষ্টি সম্পন্ন, নিজের একমাত্র আলাকে " আমিকে" দর্বন জাবে বিরাজমান দেখিতে পান, তিনি বিশ্বভ্রন্মাণ্ডকে " নিজস্ব " বলিয়া অমুভব করেন। अक जन ककीरतत शह गरन हरेर उछ ।

ভাগলপুরে ট্রেজারির (খাজনা খানা) পথ পার্গ দিয়া একজন ফকীর চলিয়া যাইতেছেন । ট্রেজারিতে হুড় ২ করিয়া টাকা ঢালা হইতেছে, তাহা দেখিয়া ফকীর বলিতেছেন—"রুপেয়া সব বড়ী হিঁপাজৎসে রাথ দেনা জব্ মেরী জরুরৎ হোগী তব্ ময় লেলুকা" তাহার এই কথা শুনিয়া একজন কর্মাচারী কোতুহলা-কাস্ত হইয়া ভাহাকে কাছে টাকিয়া বলিলেন, এ টাকা যে আপনার, তদ্বিয়ে প্রমা কি ? ় ফকীর। এইটাকা যে আমার নহে, তদ্বিষয়ে প্রমাণ কি ?

কর্মচারী। ইহা মহার নী ভিক্টোরিয়ার টাকা।
ফকীর। যাহার যে বস্ত অধিকৃত, তাহার কাছেই যে
সর্বাদা তাহাকে বদিয়া থাকিতে হইবে, এমন কথা
হইতে পারে, না । তুমি বলিতেছ, উহা মহারাণীর
টাকা, কিস্ত কৈ মহারাণীত উহার কাছে বিদিয়া নাই,
তবে উহা আঁহার টাকা কেম্ন করিয়া হইলু ১

কর্ম্মচারী। উহা আপনার টাকা কেমন করিয়া 📍 উহার চাবিত আপনার কাছে থাকে না।

ফকীর। তোমার মতে উহা যে মহারাণীরই টাকন, তাহাই বা কেমন করিয়া হইতে,পারে ? উহার চারি ত মহারাণীর কাছে থাকে না। মহারাণীর কাছে চারি না থাকিলেও তুমি যেমন মানিয়া লইতেছ উহা মহারাণীর টাকা, তেমনই মানিয়া লও না কেন উহা আমারই টাকা।

কর্মচারী। আমরা মহারাণীর লোক জন। মহারাণীর আমাদের উপর আদেশ আছে, ঐ টাক। ব্যবহার করিতে, তাই ইহার চাবি আমাদেরই কাছে থাকে।

ফকীর। তোমরা দকলেই " আমার " লোক জন.। আমি আদেশ করিতেছি, তোমরা হিদাব করিরা টাকা কড়ির ব্যবস্থা করিয়া লইবে!

কর্মাচ।রী। উহা যদি আপনার টাকা হইত, তাহা হইলে প্রয়োজন মত টাকা আপনি লইতে পারিতেন, ভাহাত আপনি পারেন না। সূত্রাং উহা আপনার টাকা কেমন করিয়া ?

ফকীর। উহার জন্য সাহেবকে নিযুক্ত করা হইয়াছে। সাহেব প্রয়োজন মত টাকা উহা হইতে ব্যবহার করিতে পারেন। তাঁহার প্রয়োজন সিদ্ধ হইলেই আমার প্রয়োজন সিদ্ধ হইল। "আমি" সাহেব, পশু, পক্ষী মানবাদি সর্ববিত্তই বিদ্যমান আছি।

কর্মচাহী নিরুত্তর।

ফুকুরিরর মতে আমিয়কে বাড়াইয়া লইতে পারিলে "অহংমম" জ্ঞান আর বন্ধনের কারণ হয় না। সঙ্কীর্ণ আমিয়ই বন্ধনের কারণ, ইহাই শাস্তের নিদেশ। যে আমিয়ের সম্বন্ধ থাকিলে পদার্থ প্রিয়—মধুর বলিয়া বোধ হয়. সেই প্রিয়ভার জন্মদিলৈ আমিয়কে য়বিস্তৃত করিবার জনা জীব মাত্রেরই চেকটা ক্রা উচিত নি সংসাবের স্ক্রার্ণ গণ্ডী পার হইয়া আমিয় যাহাতে চিন্ময় পুরুষের চারু চরণ চুম্বন করে, তাহার জনা জীব মাত্রেরই প্রস্তুত হওয়া উচিত "।

পণ্ডিতবর জীয়ুক্ত অম্বিকাচরণ বিদ্যারক্ত মহাশ্র

"ধর্মের কায়া ও ছায়া ও গাহ ছার ধর্ম ' এই বিষয়ে
বক্তী কারিয়াছিলেন । সরস দৃষ্টান্ত ছারা শান্তীয়
শোকের মর্মোদ্রেদ করিতে তাঁহার অসাধারণ শক্তি ।
তাঁহার শাস্ত্রব্যাখ্যাময়ী 'বক্তায় শোহ্রগণ এত দূর

মন্ত্রই দিন উৎসবের সময় বাড়াইয়া দিতে হইয়াছিল। বে
সমস্ত অধ্যাপক প্রচার-কার্য্যে ব্রতী হইয়াছেন, বিদ্যারক্ত
মহাশয় তাঁহাদের মধ্যে শীঘ্রই শোষ্ঠ আসন অধিকার
ক্রিতে পারিবেন বলিয়া বোধ হইতেছে।

৩০ এ কার্ত্তিক রাণি ভবানীর কালী বাড়িতে বেদবিদ্যালয়ের পরীক্ষোতীর্ণ ছাত্র বর্গকে পারিতোষিক
দিবার জন্য মহতী সভার অধিবেশন হইয়াছিল। কাশীর
পণ্ডিত্যগুলী বেদ্বিদ্যালয়ের পরীক্ষার ফল দেখিয়া
বিশেষ আহ্লাদ প্রকাশ করেন। ০০।৪০ জন ছাত্র
পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া পুস্তক পুরস্কার প্রাপ্ত হয়েন।
বঙ্গদেশনিবাসী এক জন ছাত্র সামবেদ পরীক্ষায়
উত্তীর্ণ হইয়া প্রধান পুরস্কার প্রাপ্ত হইয়াছেন। বেদবিদ্যালয়ের প্রধানাচার্য্য প্রিয়ক্ত যুগলকিশোর ব্যাস উক্ত
জনতাময়ী সভায় যজ্ঞাদি অনুষ্ঠান শিক্ষার জন্য যে
সমস্ত কার্চনির্মিত ক্রক্ ক্রবাদি পাত্র প্রস্তুত ইয়াছে,
তাহার প্রত্যেকটির বর্ণনা করেন। কোন্ পাত্র যজ্ঞের

কোন্ কার্য্যে প্রয়োজনীয়, কোন্ পাত্র ছারা কিরপ অমুষ্ঠানাদি করিতে হয়, তাহা তিনি যথাযথ রূপে বুঝাইয়া দিয়াছিলেন । মন্ত্রগ্রমণ্ডলীর সভ্য পণ্ডিত রামমিশ্র শান্ত্রী মহাশয় বেদবিদ্যালয়ের উন্নতির কথা, ধনাগমের কথা, দাহগণের প্রতি ধন্যবাদের কথা সকল কথাই বুঝাইয়া সংস্কৃত ভাষায় বক্তৃতা করিয়াছিলেন। সর্ব্রেশ্যে অধ্যাপক পণ্ডিতগণকে বিদায়ী দক্ষিণা দিয়া সংকার পূর্বিক সভা ভঙ্গ হয়।

পূর্বব ২ বর্ষের মত এবার ও গঙ্গাবক্ষে জল্যান ও সঞ্চীর্তনাদি যথাবং অনুষ্ঠিত হইয়াছিল । এথানকার হরিনাম প্রদায়িনী সভার সম্পাদক জীয়ক্ত মধুরানাথ মদুমদার ও বালরঞ্জিনী সভার অধ্যক্ষ জীয়ক্ত মধুসূদন সমাদার মহাশয় স্থাণ ও ভক্ত মণ্ডলী সহিত উৎসবের সঞ্চীর্তনে যোগদান করিয়া আমাদিগকে "বিশেষ স্থী করিয়াছেন। এ জন্য ভাঁহারা আমাদের ধন্যবাদভাজন।

উৎসবোপলকে যোগাশ্রমে মা অন্নপূর্ণার সমুখে
"মা আমার মাতা কি পিতা"। এই বিষয়ে পরিব্রাজক
শ্রীকৃষ্ণানন্দ সামী যে বক্তৃতা প্রদান করিয়াছিলেন,
তদ্ বিষয়ে যে গান তিনি রচনা করিয়াছিলেন, তাহার
একটি নিম্নে উদ্বৃত হইল।

বা উলের হার । তাল গড় পেমটা।

কে বা জানে "মা " আমার ঘাতা কি পিতা।

চিন্তে পারি নামা হে চিন্তাভীতা (হৈৎন্যকপিণী মা যে চিন্তাভীতা)।

পুরাণ দর্শন ছন্ত, ক্রতি স্থৃতি বেদ মন্ত্র,

যাগ যজ্ঞ যোগ যন্ত্র, হুন্তি স্থৃত্য ব'লে ডাকে,

কেউ বলে মাকে তাবে তাকে, শিবননি লা।

কেউ বলে মা রণকাণী কেউ বলে বা বনমালী,

কেউ বলে মা দশভূজা, গিরিছহিছা।

এ সক্লই মায়ের মায়া, যত কপ সব মারেন ছারা,

মায়ের স্থানপ ক্রপ কারা, বুনিবে কে তা ॥

মানহে পুরুষ হেরে, নাহি ক্রম্মনণ বিরে,

কৃষ্টি ছিভি লন্ধ্যায়ে, এই সার কথা ॥

গরিরাজকে বন্ধা মাকার্জ নহে, স্থাভাবনিভা।

वनगारवा गा विज्ञारक ।

গত মাদে কয়েক দিন আমার হাধুয়ায় অবস্থিতি কালে আমি একদিন তথা হইতে আ॰ কোশ দূরবর্তী था ওয়ে নামক স্থানে কেন্দোক ব্যাপী একটি গভার বন দর্শন করিতে গিয়াছিলাম। এই বন পূর্দের নাকি চান কোশ ব্যাপিয়া ছিল, এফণে আবাদ হওয়ায় বন কোশৈক মাত্র অবশিষ্ট আছে। এ স্থান্ট খাধুনা-বিপতিরই রাজ্যান্তর্গত। এখানে খাবেশ মাত্রেই প্রথীন মহারাজার বনবাদ-বাটী ও একটি নির্মালনলিল। পুক্রিণী দৃষ্ট হয়। তাহার পরেই একটি দেবীর না শিংহ-বাহিনীর মন্দির বিদ্যোন আছে, এই মন্দির অভিজ্ন করিলেই গহন বন। লতামওপু-জড়িত রুফরাজি সজিত এই গভার বনে বন্য শূকল, হরিণ, ও রহ্ছু চঙ্গ ও বানর গণ সকীদা বিচরণ 'করিয়া থাকে। কিন্তু শুনিলাম 'দেবীর প্রভাবে ইহারু। ক্রখন নাকি কাহারও প্রাণহানি করে না। এই গছন বনে ৩২ বর্ব হইতে একটি সাধু তপদ্বী বাদ করিতেছেন। তাঁহার স্থান্টুক্ অতি পবিত্র, নির্মাল e প্রফুলতাপূর্ণ। তিনি সর্বাদা লোক সমকে বাহির হন না, তবে কাশী হইতে এক স্বামীজী আসি-য়াছেন, এই সমাচার পাইয়াই তিনি কুটার হইতে বাহির হইলেন ৬ অতি শিকাচার ও সমাদর পূর্বক আমার সহিত বার্টালাপ করিলেন—তাহার আশ্রমে গেলে খার ফিরিতে ইচ্ছা করে না। সংসঙ্গ করিবার জন্য মহারাজাও এই বনমধ্যে একটি পৃথক্ স্থান নিশ্মাণ করাইয়াছেন।

বনবাদিনী মা দিংহবাহিনীর এই রূপ কিম্বদণ্ডী আছে—বর্তুনান হাধুয়াধীশ নিজ রাজবংশের ১০২য় পুরুল। ইহাঁলের পুর্নারাজগানী হাঁশীপুরে ছিল । মথন মুশলমান রাজন্য বর্গের অত্যাচারে হিন্দুগণ নিতান্ত উপদ্রুত হইয়াছিলেন, মেই জনয়ৈ ইহারই জনৈক পুরুষ মুশলমানরাজ-বিরুদ্ধে কয়েক বার মুদ্ধ যাত্রা করেন, কিন্তু প্রতিবাহেই পরাজিত ও হত্যান হইয়া

ফিরিয়া আদেন। ঝালোর যুদ্ধে যথন অস্ত্র শস্ত্র সেনা সাম্ভ ক্ষিয়া আমিল, তুগুরু মহারাজা একটিন স্থাত ८५ थिएतन (म तकान एकती काशिश विनरिक छन, नश्म ! আমি মুদল্মান রাজ্যে অপ্তায় অনেবায় আর থাকিতে পালিতেভিনা। ভূমি যুদ্ধ করিরা এই বন অশিকার কর। রাজা বলিলেন, মা। আর তে। মামর্থা নাই— হত্র শুর লোক লন্ধর প্রায় সকল্ট শেষ হইয়াছে, তার কি দিয়া যুদ্ধ করিব ? ভগবতী বলিলেন, ভয় নাই—ভাবুন। নাই; যাহা আছে তাছাই লইলা ভুমি বুর্নাঞা কর— জীয়লাভ করিবে। মাইবার পথে তুনি প্রথমে এক্টি সর্প – পরে শশক ও শেষে শিবা দেখিতে পাইবে। গ্রথম ছ্ইটাকে ছেদন করিবে, ভৃতীয়টিকে, নমকার করিংশ খুদো যাইনে, জন হইনে । এবং একটি ব্লুক-বিশ্লেষ নিৰ্দেশ করিয়। বলিলেন, ুযে এই রুক্তলে আমার প্রতিষ্ঠা করিবে। রাজা প্রাত্তে স্কণ্ডেখিত হইয়া ভাবি-লেন যে স্বপ্ন সভ্য কি নিখ্যা, বুঝিৰ কি রূপে ! তথ্নই নিজ নিকোষিত অসি ভূমিতে নিকেপ করিয়া ব**লি**জুল মা ! যদি স্বপ্নত্য হয়, তবে এই তররারি আপনি উঠিয়া দাঁ। ছাইবে। তাহাই হইল। নিঃশক্ষতিতে মহা-ताङ। यूक्तगाजा कतिरलन, शरश खश्रवृष्टे मधीनि एपि-(लग—(म्तीत बाछा शालग कतिरलग। युक्त विक्रा लोख করিয়া, অনুসন্ধানে দেবীর স্থান - দেখিতে পাইলেন। এখন দেবী পুরাতণ মন্দিরে বাস করিতেছেন, সন্দিরের নিচট দেই বুফটি এগনও আছে – সে ব্ফের কেহ নান বলিতে পারে না। বর্ডমান মহারাজা ন। সিভেবাহিনীর দিব্য রৌপ্যময় সিংহাসন ও মানাবিধ সাজ সজনা। করিয়া দিয়াছেন। মার কাছে ব্যিয়া অনেক ফণ ধান-পুজাদি করিলাম। স্থানাট সিদ্ধ পীঠ । তথার ব্যাব মাত্র, হৃদ্ধে দেন ভক্তি প্রেম আপনি উছলিয়া উঠে — প্রেমের অঞ্চলারা চকু ফুটিয়া আপনি বহিগতি হয়, অসাধকেরও সাধন-বেগ **উচ্চ**ুসিত হয়। নার কাছে বসিয়া প্রাণ জুড়াইলু—চৈতন্যমলী, মার লীলাভুসিতে

পবিত্র ও কৃত্থে হইলাম। বুঝিলাম, সেই ভক্ত মহা-রাজাকে চরিতার্থকরিবার জন্য— তাঁহার বংশধর গণকে ধন্য করিবার জ্ব্য এই গহন বন মাথে আমার মা বিরাজে!

হিন্দ্র ছেলে খ্রীষ্টীয়ান।

ধর্মের জন্য অল লোকেই বর্মান্তর গ্রহণ করে—কেহ
সংগ্রর ক্ষোভে, কেহ খুবতীর লোভে, কেহ অবুদ্ধিতায়
কেহ পেটের দায়ে। সংবাদ-পত্রে প্রকাশিত হইয়াছে
বি একজন সভিত্রে বল্যোপাধ্যায় (বনাম সদানক স্বামী),
শ্বিভীয়ান হইয়াছে। দৈনিক ও সমাচার-চিন্দ্রকা
বলেন—লোকটা বেশধারী সন্যামী ও অব্যবস্থচিত্ত।
বস্তুতঃ তাহাই বটে। প্রান্তীয়ান হইবার পূর্কে উক্ত
ব্যক্তি ক্যার-পরিবাজক মহাশয়কে যে পত্র লিখিয়াছিলেন ও পরিবাজক মহোদল যে উত্তর দিয়াছিলেন,
তাহা সাধারণের গোচরার্থে আমরা নিল্লে প্রকাশ
করিলান।

— প্রা। ইশার উপায়। কুমার পরিবাজক শ্রীয়ৃক্ত শ্রীকুফানন্দ সামী মহোদয় সহীপেয়ু।

মহাশ্য !

আনি এক জন রাজে বংশ-ভাত থানী : প্রমহংস কর্ত্রক দীকিত্র
ইট্রা ধরানে ধরা অন্তর্গক প্রায় ১৯১২ বংসর প্রায় নানা ভীর্ব
প্রাটন ও মহারাগনের নিকট শুনাণ ও উপ্রেশ এইশ পূর্বক সর্প্রেক্তি
কলিকাতার আমহার্ট ইট্রিট ২০০০ মিশনে জুদার আকুল ইইরা প্রিয়াছি।
কিন্তু আমারে জুদার ভার কেইই গ্রহণ কুরেন নাই দেখিয়া খুইেন অরণ
ইয়াছি। আগামী বাব্রার বন্ধাইছিলের কার্যা হওন কথা ইইয়াছে।
এক্ষণে নিবেনন আগ্নানিব্রের ন্ধাইছিলের কার্যা হওন কথা ইইয়াছে।
এক্ষণে নিবেনন আগ্নানিব্রের ক্ষাইছিলের পূর্বক হিন্দুপ্র উজ্জ্ব কর্মন
ভাত্রিক জন প্রায়ীর কুদা নিব্রেণ পূর্বক হিন্দুপ্র উজ্জ্ব কর্মন
ভাতরিক ক্ষা কর্মন !

ভীম্যানিক স্বায়ী।

উত্তর। স্কিল্যক্তনিক্তনেয়—

শ্রীমমহাশরের কুপালিপি প্রাপ্ত হইরা কুতার্থ হইলাম। পাটান্তে নিতাত বিজিত হইলাম। ১২।১৩ বংসর ক্রমাগত ভীগটিন ও সংসঙ্গ করিয়া, পরমহংসের শিষা ও স্বাং স্ব্যাসী হইয়া সুপার জা্লায় প্রীন্ট পর্মা-বল্মন ক্রিতে, হইতেছে, ইহা জানিয়া আশ্চর্য্য বোধ হইল। আপনার কি ক্লুধা, তাহা খুলিয়া লেখেন নাই। যদি শরীরের ক্ষুধা হয়, তাব তজ্জন্য পাহহংদের চিন্তা কি ?

" ক্ষুদ্যাধিশ্চ চিকিৎস্যতাং খাতিদিনং ভিক্ষেম্ধং পথ্যতাম্ "।

ভিক্ষান ভোজনই যে প্রসহংসের র্ত্তি, ভাঁধার আবার কলিকাতার ন্যায় সহস্র ২ হিন্দুসজ্জন-মণ্ডলী-পূর্ণ স্থানে কুনির্ভির চিতা কি ! লিখিয়াছেন - যদি কেহ হিন্দু থাকে। * * * তবে একজ্ন প্রাণীর ফুরা নিবারণ পূর্ববক, হিন্দুপন্ম উজ্জ্ব করুন ও জাতি রক্ষা करून। " मार् ७ जिक्नार्थीत जना हिन्दूत गृह-पात मनाहे মুক্ত, মে বাড়াতে ঘাইবেন, সাধু সেই বাড়ীতে প্রায় আদৃত হ'ইবেন । যিনি পে্টর দায়ে প্রধর্ম গ্রহণ করেন, তাঁহার ন্যায় অসার খকুতি তো জগতে আর নাই। আপনি সম্যাদী, আপনার আবার জাতি কোথায় ? আপনার জাতি রকার জন্য হিন্দুকে অহ্বান করিয়াছেন কেন ? সাপনি তো জাতি কুল ত্যাগ করিয়াই সন্মাদী, তবে আবার জাতির পরিচয় কেন, বুঝিতে পারিলাম না। সার যদি মনের ক্ষুণা হয়, তবে পরিষ্কার করিয়া लिथित ভाल इत । আপনি मन्त्रामी, हिन्दुममार्जत সম্মানের সামগ্রী, অতএব সদ্ওরপদিউ সাধন-তত্ত্ তৎপর হইলেই ভবকুধার শান্তি হইবে। সাধনই मग्रामीत मर्क्य । माधक मग्रामीत जावात धर्मास्त्रत এহণ করিতে হয়, ইহা এই নৃতন শুনিলাম। ঐষ্টিয়ান হইলেই যে আপনার উভয়বিধ ক্মধার শান্তি হইবে, ভাহা• নহে, বরং প*চাতাপে দগ্ধ হইতে হইবে। वााथाहेज हहेत्वन ना । मञ्जलत मन्न करून, मानन অভ্যাস করান, সজ্জন-গৃহে ভিক্ষান্ন গ্রহণ করান, শরীর মন পবিত্র হইবে, ভগবদ্ধাবের ক্ষুর্ত্তি হইবে, আপনার জন্ম জীবন কুতার্প হইবে।

অত্যলম্। ৺ কাশী যোগাশ্ৰমে ১:ই কাৰ্ত্তিক।

দীনাতিদীন শ্রীঞ্ফানন্দ

পরিব্রাজকের ভিক্ষা।

চির-কুমার-পরিত্রাজক শ্রী শ্রীক্ষানন্দ স্বাদী মহোদয় ष्यत्नक मिन इट्टेंड धर्मार्थ हिन्तूमगादर्जंत করিয়া আসিতেছেন। তজ্জন্য সহ ব ২ ব্যক্তির নিকট তিনি স্থপরিচিত। মনেকে সমুরাগ পূর্বক কত কণ্ জানিবার জন্য – বুঝিবার জন্য তাঁহাকে সর্ব্বদা পত্রাদ্ লিখিয়া থাকেন। যে রাশি২ পত্র প্রত্যহ তাঁহার শিরো-নামে আদিয়া থাকে তাহা পড়িতে ও ততাৰতের যথোচিত উত্তর লিখিতে তাঁহার অনেক সীময় খতি-বাহিত হয়। ইহাতে তাঁহার মনন নিদিপ্যাসনাদি-সাধনার অভিশয় ব্যাঘাত হইয়া ঝাকে। অতএব অনুগ্রহ করিয়া আর কেহ ঠাহাকে পতাদি না তলখেন, ইহাই ভাঁহার ভিক্ষা। বদি লেথেন তেবে তিনি যে পত্রের উত্তর দান অতিশয় আবশুকীয় মনে করিবেন, অবকাশ পাইলে তাহারই উত্তর মাত্র দিবেন, জাঁন্যণা তাহার খ্রবৈর কেছ আশা করিবেন না। তিনি পত্র লিখিলেন না বলিয়া কেহ কুরা ব। অপ্রসন্ধ কেন্ট বা ক্লিফ না হয়েন, ইহাও হাহার ভিকা। তাঁহার নিকট যাহা যাঁহার জানিবার ইচ্ছা হইবে, তাহা ঠাহাকে না লিখিয়া ধর্ম-প্রচারক কার্য্যালয়ের অধ্যক্ষের নামে লিখিলেই হুইবে।

স্থসমাচার।

আমরা শুনিয়া সম্ভব্ট হইলাস, যে জ্রীয়ুক্ত গতিনাথ রায় মহাশয় গত ফাল্ গুণ মাস হইতে আধিন মাস পর্যান্ত ভিন্ন ২ স্থানে গমন করিয়া সনাতন ধশ্ম- প্রচারের বিশেষ সহায়তা করিয়াছেন। তিনি এই কয়েক মাস মধ্যে সিরাজ গঞ্জ ও বৈদ্যজামতৈল, বওড়াজেলায় নওখিলা, ময়সন সিংহ জেলায় দেওয়ানগঞ্জ ও থর্মা, রঙ্গপুর জেলায় পাগলা হরিপুর, জাসাম ধ্বড়ী জেলায় স্থবর, গোয়াল পাড়া গোয়ামটুলী ও কলিতা পাড়া তৎপর গোহাটা, বড়পেটা, হাজোরাসিট্লা ও কলিতা পাড়া তৎপর গোহাটা, বড়পেটা, হাজোরাসিট্লা বঙ্গা, স্থান কুশী, মরচ, তেজপুর, মঙ্গল ধই, নওগা জেলায় নওগা, স্থান কুশী,

জাল এবং উপর সাসামে শিব সাগর যোড়হাট, ডিক্রগড়, আদি স্থানে শাস্ত্রীয় যুক্তি ও জ্ঞান পূর্ণ ব্যাপ্যনিদি দারা লোক সকলের ধর্মভাব রক্ষি করিয়াছেন। ভাহার মত্রে গোহাটা ৬ গুরেশর মহাদেবের বাটাতে একটি হরি মভা ও তথাকার মুর্মাল বিদ্যালয়ের ছাত্র দিপ্রের দারা একটি ফুর্নাতি স্পারিণী সভা এতিন্তিত হইরাছে।

শ্রীযুক্ত তর্ক চ্ড়ামণি মহাশয় ও কুমান-পরিব্রাজক
মহোদয় কলিকাতা নগরীতে যে ধর্মের মহান্দোলন
করিয়াছেন ও মধ্যে ২ এখনও যে করিয়া থাকেন,
তাহাতে এবার একটি নৃতন ফল দেখিয়া ওখা হইলাম।
বিশ্বিদ্যালয়ের উপাধিশারী কতিপয় স্তরোধী য়ুবক,
ইংরাজি ভাব-মদান্ধ স্থাহিদু ফ্লিন্তু সন্তান গণকে সনাতন
ধর্মের সারবতা ইংরাজিতে বুঝাইবার জন্য বন্ধপরিকর
হইয়াছেন। পূজাবকাশে ইহারা পশ্চিমোতর প্রদেশে
আসিয়াছিলেন। কাশী-কারমাইকেল লাইব্রারিতে
ক্রিদিন ইংরাজিতে বক্তা করিয়া আর্ম্য ধর্মের সারবতা বুঝাইয়াছিলেন। বুঝিলাম দেশের বাতাস
ফিরিয়াছে।

ধর্মান্দোলন।

(হাগুরা)

১০ই অগ্রহায়ণ তারিখে হার্য়াধিপতি পরম ধর্মিষ্ঠ প্রীমৃক মহারাজা কৃষ্ণপ্রতাপ সিংহ বাহাছুর কে সি এম্ আই মহোদয়ের গুনত্বে হাতুয়া গোপাল মন্দরের স্থানাল প্রাঙ্গণে প্রকাণ্ড চন্দ্রাত্তপের তলে এক মহতী-সভার অধিবেশন হইয়াছিল। মহারাজার ঘোষণা-ক্রমে তাহার রাজ্যান্তর্বতী অনেক স্থান হইতে অনেক লোক সমাগত হইয়াছিল। মহারাজা স্বয়ংও অমাত্যবর্গ-পরিবৃত হইয়া সভার উপস্থিত ছিলেন। সাদরে আমন্তিত হইয়া পরিব্রাজক শ্রীপ্রীক্ষণনন্দ স্থানীজী কাশী হইতে তথায় গিয়া বক্তার আসন গ্রহণ করিয়াছিলেন। শ্রগমাথদেবের মন্দির-সংস্কারার্থ

বে ৩ লক্ষে টাকার এয়োজন হইয়াছে, তাহাই সংগ্রহ করিবার জন্য আজ সমস্ত হিন্দ্বালর নিকট ভিকা প্রার্থনা করা হইতেছে। সভাগ ২ ৬ সংবাদ প্রাদিতে ইহার বিপুল আন্দোলন ওচনিতেছে। হাত্যার এই মহতী সভাতেও তাহা ই প্রস্তাবালি ইইল । এথসতঃ পণ্ডিত চক্রবীপ শ্মা মহাশ্য সহা আংবানের উদ্দেশ্য মুঝাইরা দিলেন। তদন্তর পণ্ডিত, মুরলীধর শাস। ্ষুহাশুর স্বাগীজীকে ব্যাপ্তানের জন্য সন্মুরে।ধ করেন। স্বধর্মা-রক্ষা, ধর্ম কীভিন্ত ভের পরিরক্ষণ ও উন্তি সাধন এবং দেবভান আদির পরিচ্যারে আবশ্রকত। কি স্বামীজী এই বিষয় গুলি কখন ৭ উত্তেজন। পূর্ণ ভাষায় শ্রোত বর্গকে উমাদিত করিলা, কখন জানগঞীর ভাবে ধর্মের সারবতা বুঝাইয়া কখন প্রেমাল্ড ঘারা গলিত নেত্রে গলগদ স্বরে ভগবদ্ধাব হ্রধারস-খবাহে **জোত্**বৰ্গকে অ'।থিনীতি ভাষাইলা সভায় স্বৰ্গীয় ভাবের অবতারণা ক্রিলেন। সক্তোর গ্লির স্মন হ।তিয়া উঠিল, সকলে আনন্দ ও ভক্তি পূৰ্বাক দেন-মিশির সংক্ষরোপ সংখ্যালনে অগ্রসর ইইলেন তেবে জি ি প্রান্তির সংক্ষরোপ সংখ্যালনে অগ্রসর ইইলেন তেবে জা **মহারাজা দ্**রং ৩০০০১ ও অন্যান্য সকলৈ মিলির। खाग्र २००० । छोक। मा शंगा कति (तम अत्राप वानकः) इन्हेल। हाएकात भगारमकात आयुक्त वाचु विश्विम विद्याती , দেও, দেওয়ান জীংক্ত বাবু দেবেন্দ্র নাথ দত্ত, প্রপারি-েটভেন্ট উনুজ বাবু গিলাজ নাথ দত বিএ, এবং অন্যান্য অমাত্য বৰ্ণ নহ মহারজে৷ সামীজীকে মুখোচিত সম্বর্জনা ও সভাবণালি করিলেন ও তাঁছার সহিত मानार्थ थान स्थी रेडेटलन । योगीकी समुक्त रहेत। তৎপর দিন সন্ধার পর বাঙ্গালী ভদ্র মণ্ডলীর প্রবোধনার্থ বঙ্গ ভাষায় ভাষত্রপাসনা বিংয়িণী ও প্রেসায়ত বর্ষিণী একটি বঞ্তা করেন। এবং চতুর্থ দিন জুল-গুছে वर जगकार्य गर्मा प्रकारिक भिका भयस हिन्ही ভাষার একটা বজ্তা করেন। होজ্যের সকল লোকেই স্বামীজীর অন্তায়ধান উপদেশ শুনিবার জন্য অতিশয় আগ্রহ প্রকাশ করিয়াছিল । ধর্মির্চ রাজার রাজ্যে धार्त्याभारमान द्य किंकि जानत रहेत, जाहार जात मत्मह कि!

शास्त्र ।

शिष्ठः १-कगरलय् — খাণতি পূর্বাক নিবেদনম্ -- •

মহাশর ! আমি একটি তঃশী আর্য্যনন্তান। আমি " वर्ष श्राहातरकत " अकजन आइक। त्वनविन्तालरमूत् সাহায্য কালে অংশার বিশেষ অনুরাগ আছে। গত পূর্ণিনা (১লা কাতিক) তারিখে আমার গুটি কতক ব্রমুবান্ধবকে নিমন্ত্রণ করিয়া কিঞ্চিৎ জল্যোগ করাই। গত পূর্ণে দিবমে অনুমান করিয়া আয়োজন করা হয়। কিন্তু তহ পর দিবদে নিমন্ত্রণ করিয়া দেখি, আয়োজন অপেকা লোক অধিক হইয়াছে। এখন চিত্ত চণান্হইল, ভাবিলাম কি করি ? কিছুই স্থির করিতে পারিলাম না। কেবল মধুধুনমাক ভাকিতে লাগিলাম। বলিয়া চিন্তা কলিতেভি, হঠাৎ বোধ হইল কে যেন একটি দ্রীলোঁকের বেশ দারণ করিয়। আমার কাণের নিক্ট আসিয়া বিভিল, " আমাকে শ্রণ কর্না বাছা। তোর ভাবনা কিসের ? মা, আমার ঘটে 'মুপ্তি ভিক্ষা ' শিহ্রিল। উঠে, জনা আনন্দে নুতা করে, মথার্থই "মা যার মহায়, তার খাবার ভাবনা কিনের 💡 " আমি তংকণ্থ উঠিল নিলা পাঁচে পোলা চাউল " মা অন-পূर्नात्क खाः । कतिहा " मन्नवार्षे " किलाम । यथार्थ বলিতে কি সেই অল্ল দামগ্রীতেই দকলের পরিপুর্ত্তি হইল, মা অলপুৰ্ণা কুলান কৰিয়া দিলেন, কাৰ্য্য অতি ঘটার রূপে সম্পন্ন ইইনা গেল । মহাশন । এই পত্র খানি "ধর্মা প্রচারকে" একটু স্থান দিলে। কুতার্প হইব। অনোর বিধান জানিয়াছে নে, "মদলঘটে" রীভিমত মুপ্তি ভিকা বিলে গৃহস্থ চির কুশলে থাকিবেন ও সকল আপদ্ বিপদ্ হটতে রক্ষা পাইবেন।

বার্জীতপুর **८जना वर्कगाने** श्रीरगाशालनाम नाम सञ् তাং ৫ই কার্ত্তিক ১২৯৮

বিগত ২৯শে স্থাখিন বৃহস্পতি বার হইতে ১লা কার্ত্তিক শনিবার পর্যান্ত দিন ত্রের গুপ্তিপাড়া ধর্মসভার नवम वार्विक मरहाष्मव ভগवक्रत्र ।- (त्र नु-कृ भाग्न निर्वित्र সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। এই সময়ে খ্রীমন্তাগবতাদি ধর্ম-শাস্ত্রের বিশদ ব্যাখ্যা ও ভগবন্ধাম-দঙ্কীর্ত্তন আবণ করিয়া ধর্ম পিপার সাধক মহোদয় দিগের প্রাণ রিগ্ধ হইরাছে। পাপের প্রাণর কিরণে ও পাশ্চাত্যতর্কের প্রবলতায় ভারতীয় জনগণের চিত্তকেত্র দিন দিন শুক হইতেছে ৷ नर्स्य प्रज्ञल छ्रावादनत निक्छे श्वार्थना कति, त्यन उँ।शात, চরণচ্ছায়াতলে আশ্রয় গ্রহণ করিয়া ভক্তিনদীর মধুর मिताल ज्लाहर प्राप्त किन मिन महम इहा । थार्थ पिन সভাপতি জীযুক্ত জ্রীশচন্দ্র চক্রবর্তী মহাশয়ের উদ্বোধন-ব জুতা পরে সহকারী সম্পাদক শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শ্রীপত্ি কবিরত্ব মহাশয় কর্ত্তিক মহার স-ব্যাণ্যা ও বক্ত তা ২য় দিন—ব্ৰাহ্মণ-পণ্ডিত' বিদায় ও 'পণ্ডিত শ্ৰীযুক অম্বিকাচরণ বিদ্যারত্ব সভাচার্য্য মহাশয় কর্ত্ত বক্তা এবং ৩য় দিন-মহা সঙ্কীতীন ও সংসার সৃমুদ্র সম্বন্ধে বিদ্যারত্ব মহাশয়ের হৃদয়গ্রাহিণী বক্তা । পরে সভ্যগণ কর্ত্ত সন্ধীর্ত্তন হইয়াছিল।

বিনীত। শ্রীযোগীন্দ্র চন্দ্র দেন সম্পাদক।

পরিব্রাঙ্গক শ্রীকৃষ্ণানন্দ স্বামী ছাপরা বেরিলি ধর্ম-সভার বার্ষিক উৎসবোপলক্ষে গমন করিলেন।

বেদবিদ্যালয়ের যায়।

মুষ্টি ভিকা।

আখিন।

প্রীযুক্ত বনমারী সিংহ, করওয়া	>112	3
" হর লাল দাস গুপু, ধুবড়ী	blld	,
" বোগীন্দ্র নাথ বিখাস, কলিকাতা	/	•
" কালশশী খোষাল, পাতিহাল,	/	,
" আশুতোম বন্দ্যোপাধ্যায় ঐ " কালীকুমার ভট্টাচার্য্য মুর্সিদ্যোদ	/	,
" কালীকুমার ভট্টাচার্য্য মুর্সিদ্দৌদ	··· 84d.	,

" শশিভূষণ ধর)	•	
ত্তবপুর, মোগল	ह्नी	8.
" शकानम मात्र,)		
" णामि निः, तामत्वर्गना नात्नु	•••	, 110
" বক্শী রাম দাস, গোলা	•••	2020
" রাজীবলোচন দাস, কানাইবালার	•••	340
" আশুতোষ লাহিড়ী, রংপুর	••• 2	ب
" काली (माइन त्मन, पिनाक्षभूत	•••	410
" গোপীমোহন রায়, কলিকাতা	••1	>01
" কৃষ্ণনাথ মুখোপাধ্যায়, কুণ্ডলা	•••	>2,
" আগুতোষ সান্যাল মনারপুর		1100
" চন্দ্রক্ষার মিত্র, মলারপুর	•••	- 110
* বিপিনবিহারী রায়, সালতাদা	•••	40
" মধুদূদন দাস, গোরালপাড়া		৬,
" গোবিন্দচন্দ্র শ্বর, সাহেবগঞ্জ বরিসীল	· ···	• ()
" ভুলদীদাস বন্দোপাধ্যায়, ভেরিয়াতে		シャノン・
" রমণীমোহন বন্ধ, দিনাজপুর	•••	>01
* কুঞ্জমোহন গোস্বামী, স্বনামগঞ্জ	***	b-1
" রাজেন্দ্রমোহন বস্থ, আজিমগঞ্জ	•••	ه زاد
" কপালী এমুন্ধ মুখোপাধ্যায়, ভেরিয়াত	ড <i>িয়া</i>	. -
" বিশ্বেশ্বর সেন, গুপু, বেন্দাগ্রাম যশহ		 الا
" मरहण्डल छहे मात्र, ठाम्मी, वित्रान		৯৷৽
" বঙ্কুবিহানী ঘোষ, কান্দি		२५०/३०
" প্রতাপচন্দ্র সিংহ বালিয়া, কান্দি'	•	< 110
শ সূর্য্যকান্ত সিংহ এ		2H/>0
•		
"রাখালচন্দ্র সেন, জামালপুর		21
" অখিনীকুমার ঘোষ, জ্রীহট্ট	** a mrd	२५०
ভোলানাথ মুখোপাধ্যায়, সাত্য়য়া,দীননাথ পাত্র, য়ামপুর হাট	शस्कृ	24e/0
" त्रेभानहत्त्व तार्य, मातातहत्, रेममनितः	₹	810
" হরিমো হ ন সেন, শিলচর	•••	· c1 ·
" কালীচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ্য্য, বিল্মাড়িয়া	•••	>210
" কৃষ্ণনাথ মুখ্যোপাধ্যায়,কুণ্ডলা	•••	>01
,	366	4/:0

কাৰিক।	चात्रक कार्टिक
" क्खविहाडी भूरथाशाया, बानक्रें।	ব্রীযুক্ত মহারাজা দরভঙ্গা আগফ }
" हतिनातायन ट्रोध्ती, काकिनीया मजालदात	त्मरण्डेखत ७ अक्टोबरत्रत मक्रम } 8°। २°।
স্টানেজর প কাশীধা ম া। • "	বিপিন বিহারী রায়, পুনপুন
৺ কাশীধানের মৃষ্টি ভিকা মাছ আধাৰণ ১৬/১/৫"	বীরেশ্বর মুখোপাধারে, সিমলা ১৬,
শ্ৰীণুক্ত কাশীৰাথ সাহা ['] পাৰনা 🔻 💮 🕡 ০''	. 60/ 80%
" ভারত চল্ল চল্লবর্তী, ধান বড়া, পাবনা 🔧 🤚 🦠	বাৎসরিক রৃতি।
" शिलात नाम वछ, वालिक भूते 💛 🗸 🗸 🗸	শ্রীযুক্ত কালী মোছন ফোন, দিনাজ পুর ৫১
" চক্ত কুমনে বল্যোপাধ্যার স্থমকা	
" জ্যোতিরিন্দ্র নাথ ধেন কলিকাতা . ৪১	>5210 B>0-
ভাৰনাৰ চক্ৰ মিত্ৰ বৰ্দ্ধমান " ২	আখিন ও কার্ডিক মাহার সায় ও বায়।
্" হরিকাদ ঘোষ কুটি গোলা, পূর্ণিয়া ৩০	व्याधितत क्रमा ७२५/১৫
" ভুবন মোহন সেন, আহিমপুর ১॥১০	কার্ত্তিকের জনা ৯১॥১১৫
90 N > C	ं (बार्व
' अर्क कानीन मान ।	व्याचिम मार्टमत'थत्र ।
ত্থিন ও কার্তিক অধিন ও কার্তিক	মাসিক দক্ষিণা ও হতি দ.ন - ৫৭॥০
শ্রীযুক্ত যোগীক্ত নাথ বিখাদ, কলিকাতা ৴৽	মাসিক দাক্ষণা ও য়াত দান দ ৫৭॥০ ছাপাই খ্রচ ২৪১০
্" কুফাদাস বহু, বাজিত পুর	মাশুল /০
" শিউ তেয়ারী, রামকোলা ১১	বাজে পরচ . ৪৮০
the sale to the sale of the sa	(मिंडिः म्दिरक कम)
" शास ताथा ८१। विक्य तास भारत्य । " तास ताथा ८१। विक्य तास भारत्य ।	>b9/e
हिनः त । १००	কার্ত্তিক মাদের খরচ।
" हेस्स क्यात तात, वृक्षन ८२ हि	মাদিক রুতি ও দক্ষিণা / ৭২॥০
ধ্যা সভা বংপুর	বেদবিদ্যালয়-সভার বার্ষিক অধিবেশনে নিমন্ত্রিত&্রখ্যাপক
হরিসভা দিনাজ পুর	शनक विषास चा में
শ্রীযুক্ত প্রিয় নাথ দত ফুলবাড়ী ২০১	মান্তল খরচ /•
An annual territoria de la companya	. तार्ष वत्र 84%
३०१८० २४	>0910
শাদিক इতি।	त्मां हे
ক্রীষ্ঠা লব স সুন্দ রী বৃতি নাহ ভা দ্র	वाकी सबूक ১২৫ / 5 •
७ या। इन २०५ २०५	🗐 ভারাপ্রদন্ন মুখোপাধ্যায়
কেনচিং অখিচায়েনে, সূচিত পুর 🟒 🗼	दलशाशक ।
•	



धन्त्रं श्राःत्रकाः

" বুলং পবিত্রং জ্ননী ক্লতার্থা বস্থন্ধরা পুণ্যবতী চ তেন। অপার সন্ধিৎ সুখসাগরেন্মিন্, লীন্ং পরে ব্রন্ধণি যস্য চেতঃ॥ ",

শুদ্ধ হয়।

ভাগ (এক এব স্থন্ধর্মো নিধনেহপ্যকুলতি যঃ।) শকাকা ১৮১৩ ১০ম সংখ্যা শরীরেণ সমন্ত্রশু সর্ক্মন্যতু গছতি। " মান মান

যাজ্ঞবন্ধ্য-সংহিতা।

(পূর্ব্বপ্রকাশিতের পর)

অমেণ্যাক্ত মৃত্যা হৈছে ক্ষাদিকর্বণাৎ।
বাক্ শস্ত মন্মূর্নির্ণিক্ত মৃত্যাতঞ্চ সদাশুচিঃ॥

মল মৃত্রাদি অমেধ্য মুক্ত বস্তু গন্ধ শূন্য করিয়া মৃত্তিকা জল দারা, ধুইলো শুদ্দ হয় । কোনও বস্তুর শুদ্ধতায় সন্দেহ হইলে, আসাণের বাফ্যে ও জল প্রক্ষেপ দারা, শুদ্ধ হয়। অজ্ঞাতাশুদ্ধি বস্তু সর্বাদা শুদ্ধ হয়।

শুচি গোচুপ্তি ক্রটোয়ং প্রকৃতিস্থং মহীগতং। তথা মাংসঞ্চাণ্ডাল ক্রব্যাদাদি নিপাতিতং॥

পবিত্র ভূমিতে একটা গরুর পানোপযোগী নির্মাল জল থাকিলেও তাহা শুদ্ধ বলিয়া পরিগণিত হয়। চাণ্ডাল এবং কুরুর কর্ভ্ক নিহত, পশুর মাংস শুদ্ধ হয়।

রশারগ্রীরজশ্চায়া গোরশো বন্তধানিলঃ।
বিপ্রুবন শ্রুচিঃ ॥
কিরণ, অগ্নি, ধূলি, ছায়া, গো, অখ, পৃথিবী, বায়ু,
বাস্পাকণা ও মক্ষিকা স্পর্শে কোন বস্তু অপবিত্র হয়
না। ছগ্ধ দোহন কালিন বৎসত পবিত্র হয়।

অজাখায়োমু খং মেধ্যং নগোর্ন নরজামলাঃ। পন্থানশ্চ বিশুদ্ধন্তি সোম সূর্য্যাংশু মারুতৈঃ।

- ্ ছাগল এবং অধ্যেত মুখ পবিত্ত; গোজাতির মুখ ।
 মাজুদ্য মল সকলেই অপবিত্ত। চন্দ্র সূর্য্যের তিরণ ও
 বায়ু স্পর্শে পথ পবিত্র হয়॥
- মুখজা বিপ্রদিবা মেধ্যা তথা চ মনবিন্দবঃ।

 শাশ্রুচাস্থাতং দত্ত স্কুং তাঁজ্যা ততঃ শুটিং॥

 মুখ নিংস্ত লালা হিন্দু, মুংচ্যুত আচমনীয় জলং
 কণা ও মুখ গত শুক্রা লোম অপবিত্ত হয় না ।
 ভোজনাবশেষ দত্যত উচ্ছিন্ট পরিষ্কার করিলেই মুখ

সারা পীরা ক্তে হতে তুক্তা রথ্যোপদর্পণে। আচান্তঃ পুনরাচামে বাদোবিপরিধায়চ॥

স্নান ৩ পান করণানন্তর, হাঁচি, নিদ্রা ভোজন ৫ পথ প্রযুটনের পর অন্য বস্ত্র প্রিধান করিয়া, ছুইবার আচমন করিবে।

রথ্যা কর্দ্দনতোয়ানি স্পৃন্টান্যন্তখ বায়সৈ:। মারুতেনৈব শুদ্ধান্তি প্রেন্টক চিতানিচ॥

মার্গন্ধ কর্দম ও জল অন্তাজ, কুরুর ও কাকাদি কর্ত্ব স্পৃষ্ট হইলে বায়ু দারা, গুদ্ধ হয়। অপবিত্তা, ভাটালিকা ও বায়ু দারা, পবিত্ত হয়।

ক্রমশঃ।

· স্বার্থ-পরতা **গ**

সময় গুণে প্রাণ প্রিয়তম পুক্র চবিষ চক্ষে পড়ে, পরম আহা গীয় । শত্রু হইয়া দাঁড়োয় । মনের এক অবৈস্থায় বে ভাব, ফে ভাষা অতীব মধুর বোধ হইতেছিল, অবস্থান্তরে তাহাই আবার বিষবৎ অনুমিত হয়। লগ্ন ক্রমে যাহ। একবার প্রম প্রিত্ত ভাবিলাম, কালদোষে তাহ।ই আবার বিকৃত আকার ধারণ করিল। জগতের তো ব্যাপার এই ! কখন কি ইয় কিছুই বুঝিতে পারা যায়ন।।জগতের এ রক্ষ অবস্থায় জাসিয়া নিজের एक जिन हो है शो हिला व प्रहें कि है विशास करा - लारकत নিকট আমার ম্যাদানুরপ সন্মান পাওয়া অনেক শেষাগ্য সাপেক—প্রায়ই উল্টো ফেরে পড়িতে হয়। অগত্যা " স্বার্থ-শরতা " শব্দ বেচারাও এই শেষ পালায় পড়িয়া গিরুছে। কখন কি জন্য কে ইহাকে এরপ শান্তি দিক, তাহার নির্দেশ করাও সহজ নহে । তবে কেইই যে ইহার প্রকৃত প্রকৃতি প্রকাশ করিতেন না धमन नरह, चारतक है कथा व कार्या तम जाव दमभा-ইয়ৢছেন। সে দকল কথা সময়ে বলিব। এখন দেখা यिक, त्रीका कथाश " यार्थ-शतका " विलाल कि तूरा छि छ । यिन निर्णत थारा क्ना कहे अभाग गरन करतन, তিনিই স্বার্থপর এবং তাঁহার সেই ভাবের আখ্যাটীই "স্বার্থপরতা"। আমরা মোটা মুটিতো এই বুঝিয়া থাকি; किन्तु (कर तकर वलन, "शालात मन्न रहा रंडेक, शामात ভাল হইলেই হইল। এ ভাবার্থ টা ভাহারা কোথা হইতে টানিয়া আনিলেন, তহাতো আমরা কিছুই খুঁজিয়া ঠিক করিতে পারিলাম না। তাঁহাদের মতে ' স্বার্থ পরতা" মহাপাপ, স্বার্থপর ব্যক্তি ভয়ানক কলুষিত নরকের कीं। निःयार्थि। जननमन्हे कीदानत छ ए गु, देहा ্ তাঁহাদের স্থির সিদ্ধান্ত। আসরা কিস্তু, কে জানে কেন, ইহার বিপরীত বুঝি। তাঁহারা লোকের যে কুভাবটীকে লক্ষ্য করিয়া কথা ওলি বলিয়াছেন, তাহা বাস্তবিক ঠিক; কিন্তু এ ভাবটা " স্বার্গ পরতার " স্কন্দে তঁ;হারা

চাপাইলেন কেন ? আমাদের ছির বিখাদ, বার্তি দিশ্বিই জীবনের লক্ষ্য, স্বার্থ ভিন্ন জগৎ এক দণ্ড চলিতে পারেনা, স্বার্থ পরতাই জীবের অবলম্বনীয়া

বাসনাই জন্মের কারণ, আবার বাসনাই অবস্থাওরে মুক্তি পথের সাথী। তাই জনন মরণ কার্য ও জনন মরণ তারণ-কারণ মলিনা ও বিমলা ভেলে বাসনা দিবিধ।

- বাসনা দ্বিধা প্রোক্তা শুদ্ধাচ মলিনা তথা
- र गिन्ना कमा त्ना त्रृः खका कमा निनामिनी बें त्यांश नामिर्छ।

বাসনা যুক্তই জীব আর বাসনা বিমুক্তই শিব (বাসনা না থাকিলে—প্রয়োজন না হইলে জগং, তোমার কাছে আসিব কেন ? মর্ত্যু লোকই বাসনার ভোগ ভূমি, এ রাজ্যে বাসনাই আমার সহচর—মন সঙ্গে থাকিতে বার্সনা আমাকে, ছাড়িবার, নয়—ধোবা নাই "বাসনা" জালায় কে ? হুত্রাং যাহাকে (মলিনা বাসনা) লইয়া যাহার (বিসলা বাসনা) জন্য আসিলাম তাহাকে, ছাড়িয়া, যাহা করিব তাহা না করিয়া করিব কি ? হাটের মাঝে বোকা সাজিয়া—স্বার্থ হারাইয়া বাহাত্রী কি ?

প্রত্যেকে নিজে নিজে ভাল হও, সকলেই ভাল হইয়া যাইবে—নিজ নিজ স্বার্থ সাধন করিয়া দেশ, সকলেই স্বার্থ বজায় থাকিবে । আর্গাগণ ব্যপ্তিগত উন্ধতি অবনতির দিকে দৃষ্টি রাখিতেন, এখনকার মত সম্প্রিগত—সাচা ঝুটা সারে নাথে খিচুড়া পাকাইয়া "বিড়াল চোকো" ভালমন্দের ধার ধারিতেন না।

বিশেষতঃ স্বার্থ পরতাই ভাব পদার্থ। স্বার্থ পরতার অভাবই নিঃসার্থ-পরতা স্ততরাং তাহার আবার পৃথক্ অভিত্র কোথার ! অভাব বলিয়া কোনও পদার্থ নাই ভাবের অবকাশই অভাব । স্পতরাং দেখিতেছি, স্বার্থ ছাটা কোন কাজই হয় না মন, বুদ্ধি, চিত্ত, অহস্কার রস, রক্তা, কেদ, অস্থি, মক্তাদির সম্বামে গঠিত দেখে ষার্থ পরতা ভাব নাই, তাহা যাহারা বলে বলুক;
কিন্তু আমরা তাহা স্বীকার করিতে পারি না—তাহা
পার এ সিদ্ধান্ত ভাত্তি সন্ধুল' ভিন্ন আর কিছুই বলিতে
হাই না। বিভিন্ন ভাবোদীপক শব্দ প্রয়োগই যে এ
কালের মূল তাহা আর বলিয়া দিতে হটবেনা।
মানের বিলীনাবস্থাপন ঘোর সমাধিস্থ যোগী ভিন্ন
বৃদ্ধি তরজ্ঞানী ব্যতীত, নিংস্বার্থ কে! অহৈতুকী
ক্রাত্তি ভাবদভক্ত ভিন্ন

অধাতর খায় সায়হুং সায়হুণং খাতর স্কৃতঃ।

যৎ করে। মি জ্গনাতঃ তদেব তব পূজনম্॥

যাঁহার একমাত্র সিদ্ধ মন্ত্র - তিনি • ভিন্ন - প্রকৃত নিঃস্বার্থপর (অর্থাৎ স্বার্থ নিঃস্বার্থ উভর ভাবাতীর) কেহ কি আর আছে ? মূলের, এই কয়টা ছাট দিয়া সামাজিক লোকের ভূমি আমার্গ ভেদ বুদ্ধি যক্ত জনের, ভাল মন্দ বিচারবান্ গণের ভূই একটা স্বার্থ থানা কার্য দেখিয়া যাহাম ভ্রোহাদিগকে নিঃস্বার্থ-পর বলে, তাহাদিগকে সত্যবাদী বলিব কিরূপে ?

ছংখার কান্নায়, কুবিতের কাতর কণ্ঠ ধ্বনিতে দ্যাদ্র চিত্ত ইইরা কাহাকেও কিছু দান করিতে দেখিলে আমাদের নিংস্বার্থ বাদীরা তাহাকে হয় তো, হয় তো কেন, নিশ্চরই, মহা নিংস্বার্থ তা-পর দাইকুল ভূমণ বলিবেন, কিন্তু আমাদের জিহ্বা তাহাকে মহাজ্যাধ পর ভিন্ন আর কিছুই বলিতে চায় না । নে মত দানী, যে যত পরোপকারী আমরা ভাহাকে ততই বেশী বেশী স্বার্থী বলি । তাহার কারণও আছে। আন্যের অভাব দূর করিতে আমার এত মাথা ব্যথা কেন ! তাহারও হেছু আছে। প্রকৃত পঞ্চে অন্যের অভাব নর, আমারই । আমি অন্যের ছংগ দূর করিবার জন্য মাহাম্য করি নাই; কিন্তু আমারই কফ্ট কমাইবার চেন্টা করিয়াছি। জন্যের ছংগের সহিত আমার বৃত্তি সমূহের কোনও যোগ নাথাকিলে আমি কখনও ভাহার আমুকুল্য করিতাম না। ইচ্ছার উদ্রেক বিনা

कार्या (काशाय ? प्रश्नी रहेगा 6 क्रांग ना जानाहे (नहें ता দ্যার প্রকাশ কোথায় 🕈 আবার প্রকৃত জুঃখী হইলেও करुण यात ना ठा शिशा (क्रम किंदिन मशांत छे उसक ना-হইয়। বিপরীত কোধ রতির উদয়ে বিভিন্ন ফল প্রস্ব करत रकन ? यपि পरतत अक्रम शामात मारनत मूथा কারণ হইত, তবে সে যে ভাবেই চাউক না কেন, আমি সকল অবস্থাতে এফ ভাবেই তাহার প্রতি ব্যবহার ক্রিতাম। মে শক্র হউক ব। মিত্র হউক, করিণ বা কঠোর যে সংগ্রুটক চাউক না কেন আমি অন্য ভাব মনে স্থান না দিলা ভাষার কেশাপনোদ্রই একমাত্র ঘুঁক্য করিয়া কার্য্য করিব । কিন্তু এই টুকু বুঝিতে रहेरल ९ " या मि " " या मात " त्वाव धाका हाई। যদি অভাব বলিয়। আমি কোন একটা ভাব নিজে শর্মভব কবিতে না পারি – যদি সামার নিজের অভাবে ছুংখে ক্লেশ বোধ না হয়, তবে অন্যের কাতর কঠের খর আমার ছঃখের উল্রেক ক্রিবে কিরূপে ? বুঝিলাম रंग कारज वा कथां। यागांत मन जिजिल, गीलल-যাহাতে আমার মন আহত হয়, তাহারই প্রতি আমার কোন ক্রিয়া হইবার সম্ভব। তবে আমি স্বার্থপির নই তো কি !

আমি শোকে তাপে বিষয় বিপদে বিপন্ন হইয়া অনেক সময় অনেক কট পাই, আনার এখনও স্থামাইত ভিন্ন পদার্থের বোধ আছে, স্ত্রাং স্বত্রব স্থা সুংগ বুঝিতে পারি—আমার দৈত বুদ্ধি আছে বিলিয়াই স্থাকে ছুংখ হইতে, ভিন্ন দেখি— একটা শান্তিকর অপরটা অশান্তি দায়ক বলিয়া বোধ হয়। তাই স্থারে সদ্ধানে বিল্প বিনাশনে এত ব্যস্ত। শাস্ত্রে শুনিলাম, কাজে দেখিলাম স্থা স্থাতিনাশিনী, তিনি আমাকে সম্পদে বিপদে, শাশানে কাননে রক্ষা করেন তাই ডাকিয়া থাকি—"নমস্তে জগভারিণি আহি স্থানে"। সুধানাম যদি জীবের দুর্গতি দলনে সমর্থ না হইত, ত্রে

कामना युक्त की रवत छे भामना स कि मात्र भिष्मा ए । ठाकू रतत कार्ष्ट माथा कृषिया यिन मकल मरनात्रथ ना इंदेलाम, उर्द मार्र्स ७ कभाल वृद्धा रकन । निर्द्धत कामना भृत्वहे, वामना वि:माहिङ की द्वत मूथा सका, धर्म कर्म, भृष्काभामना मृत्रहे रमहे क्षना । उर्द की व स्थिभित न्य किरम !

নিঃ স্বার্থপর পরম যোগী ন্দ্রের সাধনাবস্থাও স্বার্থ পরতার উপর প্রতিষ্ঠিত। কয় জন শুক্দের শঙ্করাচার্য্য হইয়া জন্ম গ্রহণ করিয়া থাকে । বাস্তবিক নিজের স্বার্থের প্রতি দৃষ্টি না থাকিলে, নিজ কল্যাণ কামনার ইচ্ছা না হইলে জীবের বাসনা বিমৃক্তির বাঞ্ছা হইবে কোথা হইতে ! নিম্নের কয়েক পংক্তিই এভাব পরিক্ষুট

কোন সময়ে জনৈক রাজা কোনও সাধুকে বলিয়াছিলেন " আপনিই প্রকৃত নিংস্বার্থপির পুরুষ। সাধু
ভব্র করিলেন—আমি না আপনি ? আমি নিত্য অমূল্য
পরম পদার্থ লাভের জন্য, ভুচ্ছ সংসার মাত্র ত্যাগ
ক্রিয়াছি, যাহা বাস্তবিক কিছুই নয় বলিলেও হয়।
ভারে আপনি কিঞ্ছিৎ স্বপ্রবং স্থেই ভূপ্ত ইইয়া অমূল্য
পদার্থের দিকে একবার চাহিয়াও দ্রেন না। আমি
সর্বোভ্য পদার্থের জন্য র্থা পদার্থ ত্যাগ করিয়াছি
মাত্র; কিন্তু আপনি ভুচ্ছ সংসারের নিমিত্ত সর্ব্ স্কর্মপ পরম পদার্থকে ত্যাগ করিয়াছেন, অতএব দেখুন
দেখি কে বেশী ত্যাগী, আমি বলি—আপনিই সর্ব্র

এই অর্থেই কৰি বলিয়াছেন —

" অপমানং পুরক্ষা মানং কৃষাতু পৃষ্টতঃ।
সার্থমুদ্ধেৎ প্রান্তঃ স্বার্থ অংশেহি মূর্খতা॥ "

তবে নিংশার্থ বাদীদের ব্যাগ্যাত নিংশার্থ e স্বার্থ পরতা লোক কে, পোদ নাম বদ্নামের ভাগী করে কেন? "তেজীয়সাং ন দোসংশ বড় দোষ বুঝি দোষের মধ্যে গণ্য নয়? আজ তোমার আমার দোষ তিলে

তাল হইয়া দাঁড়ায়, আর স্আট্ বাহাদুরের কুক হুকর্মে পরিণত হয়। তুমি খুন করিলে ফাঁদী—খন 🕏 নরক। ব চলোকের, রাজা রাজ্ছার দরবারে—অধিকার বিস্তার লালগা লালায়িত তরবারে—রুধির ধারায় ধরণী আলুত হইলে অলতঃ গুণবাদ ও অত্তে অনত স্বর্ধবাদের ব্যবস্থা। সংখান্য সম্পত্তির জন্য লোকের यर সামান্য অনিফ ঘটাইয়া হীন ভাবে কার্য্য সাধন করিলে ভূমি দত্য, আবার সেই ভূমি জোর জমক দেশাইয়া সৈন্য সামন্ত সহ স্বার্থ সিদ্ধির জন্য দেশ উচ্ছিন্ন দিলেও বীর বিজেতা সিকন্দর । তুমি অধিক আশা না করিয়া জীবদ্দশোপযোগী যৎ স্বল্প স্বার্থ সাধন জন্য অন্যের সামান্য বৈষ্য়িক হানি কর, তুমি चार्थ भत - निजनीय, जावात हेर भत्रानारकत सार्थ সাধন জন্য দান ধ্যান করিয়া গ্রহীতার লোভ, যাচঞা প্রবৃত্তি বাড়াইয়া দিয়া ভাহাকে ভৃণাদপি লঘু চিত্ত করিয়া জন্ম জন্মান্তরের সৌভাগ্য হুণে বঞ্চিত করিয়া मा e, তृशिष्टे शतम मानी, निःश्वार्थ — शूग क्लांक । अह ভাবেই कि এ ভেদ বুঝিব ? না জী দীয় সুবুদ্ধি সজে-টিলের মতে মত দিয়া বলিব, যে আধুনিক আখ্যাত নিঃসাণী ও স্বাণী উভয়েই স্বাৰ্থী, কিন্তু পূর্বের ক্ত পুরুষ নিজ প্রকৃত স্বার্থ কি তাহা তিনি জানেন। আঁগার "কলাণ সাধনই যে ভাঁহার স্বার্থ সিদ্ধির মূল, নির্মাল। বাসনা গোগেই যে ভোগ বাসনার অবসান, ইহা তিনি অবগত আছেন বলিয়াই তিনি নিঃস্বাথ পর। আর সাথী নিজ সাথ কি বুবোনা, ৫০ ৬০ বৎসরের বিলাস হৃণই তাহার স্বাথের চরম সীমা, দেছেন্দ্রিয়াদির স্থ স্কাধনে তাহ র স্বার্থ সাধন যে হইল না. আলার শাতি তথই যে তাহার স্বার্থ সাধনার গুড় লক্ষ্য তাহার সে বেধ ন।ই তাই সে " স্বার্থ পর ", কিন্তু সব দিক, বজায় রাণিয়া, পোরাণিক অথের ব্যক্তায় না করিয়া, আধ্যুনিক অর্থ বিভাট না ঘটাইয়া সকলের সমান সম্মান রাণিয়া, পান হ'তে চূণ না'ণস|ইয়া আমরা আধুনিক অভিধান শিষার্থ — পরের শ অর্থ শ স্বাথ = (নিজ কল্যাণ) +
শ পর শ (অনাগীয় বা শত্রু), অর্থাৎ নিজ কল্যাণ
সাধনে যাহার অনুরাগনাই এই ব্যাখ্যা করিলাম।

নিঃপার্থ অভিলাম। প্রেম ভিক্ষা।

আর্থ্য পরিচয় দিতে ইচ্ছা করে,
স্মভাবের গুণ চাই বিধাতারে।
আমি হই ছঃগী তাহে ক্ষতি নাই
জান্য জুগা হলে জুগা হতে চাই
আপনি কাদিব, কিন্তু পুছাইব
অপরের আনি—ভিক্ষাতব চাই!
মিথাধন মান চাহে না ন প্রাণ
অসার, সংসারে সকলি সমান
পর উপকারে লাগি এই চাই।
এই অভিলাষ করি হে ঈশ্বর ।
কটে পরিপূর্ণ আমার অন্তর
খাটিতে থাকিব, খাটিয়া মরিব
মম এই আশা পূর্ণ কর তাই।

ভগবানের সেশ্চিত অপুভব ভিন্ন সামাদের কাদের কাশন হাঁহার প্রতি সমাক প্রেম বা ভক্তি জন্মিতে পারে না । ভক্তি স্থুলত: নয় প্রকার, কিন্তু শাস্ত্রে সোড়শ প্রকার ভক্তির উল্লেখ আছে, যথা ; অর্কনা, বন্দনা, প্রবণ, কীর্ত্রন, স্মরণ, স্থতিবাদ, তপস্থা, মোগ, আমা-নিবেদন প্রভৃতি যাহার যাহা উপাস্থা দেবতা তাঁহাকে করিতেই ক্রমে প্রদ্ধা পূর্বক আমত্রাধীন হইলে ক্রমে চিত্রের মালিন্য দূর হওত: এক মাত্র অচলা ভক্তি দ্বারা সেই স্কিদানন্দ প্রমান্থার মাধুর্য্যে বিভার হইয়া আশ্বহারা হইতে পারিলে এক মাত্র পূর্ণ ব্রক্ষের স্বরূপ জানিতে পারা যায়, এবং তথনই জীব জীবত্মক্তি লাভ করে।ভক্তিই সাধনার শেষ, ভক্তিই পরম গতি। ভক্তি বিনা মুক্তি নাই, প্রীতিও নাই। যত দিন

না বিশুদ্ধ ভক্তি জন্মে তত দিন জীন পুনঃ পুনঃ পতিত হয়। এক মাজ ভক্তিই প্রদাকে প্রাপ্ত কণায়। অন্য বিতীয় উপায় নাই। যোগ প্রতপ্র্যাদি সকল কার্যা, শাস্ত্র পুরাণ প্রভৃতিতে ভক্তি আছে বর্টে, তৎ সমুদ্য ইহার পুর্ববিত্তা কার্যা। কেন না অনেক সময়ে অনেক মহার্যা গোগী গণ ও উচ্চ সোপানে উঠিয়াও কখন কখন তাঁহাদের মনে অবিশাস এবং নৈরাশ্য উপস্থিত হইয়া থাকে। কিন্তু সচলা ভক্তি একবার জন্মিলে আর অবিশাস আমিতে পারে না। বিশ্বাসই আশার মূল এবং বিশ্বাসই ধর্মের মূল। ইতরাং ভক্ত সাধক জ্গদীশ্বকে প্রিয়ারূপে উপলব্ধি করিয়া আর কখনই নৈরাশ্যে মগ্র হন্না। একথা স্বয়ং ভগবানই বলিয়াছেন। যগা,—

শেষ্টি নাঞ্চ নে হকাঃ তেহি ভক্ত তমা মতাঃ।

 শামার ভক্ত দিগের যাহারা ভক্ত তাহা নাই উত্তম

 ভক্ত। ভক্তি না জামিলে এবুং ভক্তি যোগ না সাধিলে

 প্রেম-স্বরূপ প্রমেশ্রের স্বরূপ কোন মতেই জানিবার

 উপায় নাই। ভক্তি চর্ম সিদ্ধি, ভক্তি হইতেই অণ্ড

 বেলাও উৎপন্ন হয়।

•

" সর্বে নশ্যতি ব্রহ্মাণ্ডে প্রত্বন্তি পুনঃ পুনঃ নমে ভক্তাঃ প্রণশ্যন্তি নিঃশঙ্কদ্চ নিরাপদা। "

ত্রক্ষাতের সকল জীবই নাশ প্রাপ্ত হয় এবং পুন: পুনঃ উৎপন্ন হইয়া গর্ভ যন্ত্রণা ও সংসারের ত্রিতাপ ভোগ করে। কেবল আমার ভক্ত গণ অমর অজর হইয়া অনন্ত কাল সালোক্য সাঞ্চি, সামীপ্যাদি চতুর্কিণ মুক্তি লাভ করতঃ ভোগাবসানে আমাতৈ লীন হয়।

কামরূপ কামাখ্যা।

বশিষ্ঠাশ্রম। (পূর্বাতুর্তি)

যাগ, যজ্ঞা, যোগাভ্যাদ পূর্বক জ্ঞানের উচ্চতর স্তর পর্যান্ত আরোহণ করিয়াও যথন মহর্ষি বশিষ্ঠের হাদয় পরিভৃপ্ত হইল না, তথন বিশ্বভ্রমাণ্ড এদবিনী

মাংয়ের জ্বলম্ভ জাগত মূর্ত্তি দর্শন করিয়া ভাইার তিজুবন মোহিনী রূপে মনকে বিমোহিও করিয়া ত্রিতাপ তারিণীর স্থচার চরণ ছাঃগায় প্রাণ জুড়াইবার জন্য কামাণ্য শৈল' হই ত প্রায় ৪॥০ কোশবর্তী বিজন বনে বসিয়া প্রাণ মনে ঐক্য করিয়া' মায়ের আরাধনা করিয়াছিমেন। এই পবিত্র স্থানটি "বশিষ্ঠা শ্রম " বলিয়া প্রসিদ্ধ। জ্ঞানী ভক্ত, মহাওপোধনের পবিত্রাসন मर्गान पन वड़ वाहिल इहेल। कराक वर्ष पृत्वि आधि ব্যে ছুরারোগ্য বাত ব্যাগি:ত আকোও ুঁহইয়াছিলাম, মাধ্যের কুসায় তাহা হইতে আরোগ্য লাভ করিলে,ও সেই অব'গ আমার পদ দয় পুর্ববং বলিষ্ঠ নাই, এই জন্য দূর গমন করিতে হইলে অনেক সময়েই আমার (कान ना दकान वाहरनत माहाया नहेट हा । विना চেকার ভাষা আপনা থাপনি ছুটিয়াও যায় । বশিষ্ঠা-শ্রম গোহ।টী হইতে যাত্য়াতে প্রায় নয় কোশ। প্রাতে তথায় গিয়া সন্ধ্যাব মধ্যে ফিরিতে হইবে, এক नित्न ৯ तकां म हिन्द इहेर्त, शांतित कि ना मर्ल्स् হইল ! আবার ভাবিলাম, যখনই কোথা ও মাকে দর্শন कति (व गाँहे; जन-गांग जल-गांग वा शंज वांजी, वाहनांवि পাই। কেন না মা আমার রাজ রাজেখরী, তিনি পূর্ণাৎ পুণ্তিনা, ঠঃহার দারে কিছুরই অভাব নাই । বশিষ্ট ব্নবাদী খাঘি দরিদ্র আক্ষণ, তিনি বাহনাদি এখন কোথায় পাইবেন। মনে২ মাকে বলিলাম মা, তোমার প্রম ভক্তের প্রিত্তাসন দেখিতে মাইব, শক্তি দাও সাম্প্র দাভ যেন পাদ্যারেই যাইতে সম্প হই। जगम्मा भक्ति महा कतिहा भक्ति मक्षांत कतित्वग ।

্যে পথ গোহাটী হইতে বরাবর শিলং পর্যান্ত গিয়াছে, বশিঠাশ্রমে যাইতে হইলে সেই পথ ধরিয়া প্রায় আড়াই কোশ যাইতে হর । তাহার পর সে পথ ছাড়িয়া দক্ষিণ (ডাইন) দিকে যে পথ গিয়াছে, সেই পথ দিয়া ভ প্রায় দেড় কোশ যাইতে হয়। তাহার পর আর রাজ পণ নাই । চা-বাগান ও বনের ভিতর

দিয়া অবশিষ্ট এক কোশ গমন করিলে বশিষ্ঠাঞ্জমে যা ওয়া যায়। পথের ছুই ধারেই শদ্য ক্ষেত্র 😮 উত্তর मृत्रांवित भाष्टिक भिन माना पृष्ठे इग्न । अब शास्त्र শাতপতাপে পথিকগণকে ছায়া দান করিতে পারে अक्त श्र क्यां नि ना रे विलाल । द्या । त्यां वा नी ভদ্ৰ গণ ভয় দেখাইয়া বলিলেন যে, প্ৰচণ্ড আতপ তাপে আপনার যাইতে বড় কফ হইবে। আমি বলিলাম মা আমাকে আঁচল ঢাকা দিয়া লইয়া যাইনেন তিনি चौरमभ कतित्वहे हैलारमव जनमजारम मृश् कित्र निवातन कतिशा फिरवन । उँ। होता विकास तम्य रहेरनहें ভाष, नडूना तफ़ कक्षे रहे:त । वागात निधाम वामात मा बामात मन नानका करिया किरन । পাঠক ৷ বলিতে আহলাদ হইতেছে, সমভিব্যাহারী বর্ধ সহ আমি বশিষ্ঠা শ্রমের প্রে চলিলাম, থরে থরে মেধ রাশি আকাশে থেলিতে লাগিল, কোথাও বিভাস না করিয়া আমরা একেবারে আশলস্থানে উপস্থিত হই-লাম। পথে একটি হাট বসিয়াছিল, তথা হইতে বশিষ্ঠে-শ্বর মহাদেবের পূজার মামগ্রী ও এ দেহের ভিক্ষোপ-कीं वी जना ७ नि मध्य नहेनाम । यागात नाम यामार्थ ব্যক্তি এক বেগে এত দূর আসিতে পারিবে, এ আশা ছিল না, কিন্তু মায়ের কুপায় মেঘের ছায়ায় ছায়ায় অক্লেশে আদিয়া বশিষ্ঠাশ্রেমে উপস্থিত হইলাম।

মহর্ষির আখানের চারি দিকেই গভীর বন। এই বনে রহদ্হৎ হস্তী, ব্যান্ত, বিশাল বিষধর আদি সক্রাদা বিচরণ করে। নিবারিণীর নির্মাল নীর ধারা ঝির ঝির ঝরঝর করিয়া বহিতেছে—প্রবাহরাশি যথন পর্বতের উদ্ধন্তর হইতে নিম্ন তরে পড়িতেছে প্রবল বেগে অন্যান্য প্রত্র শণ্ডে আহত প্রতিহত হইরা স্থমপুর আনন্দ ধানি পুর্বিক ফিরিয়া ঘুরিয়া হাঁসিয়া খেলিয়া নাচিতে ২ বনের ভিতরে ২ চুপি ২ কোথাও বা কুল ২ কল ২ করিয়া তরঙ্গ বালা গণ জীড়া করিতে ২ কোন দিকে ছুটিয়াছে, পর্বত ছাড়িয়াবন অতি জম করিয়া

পলাইতেছে, বিহস বর্গ নানা রবে বন আকুলিত করিয়া রাখিয়াছে, এতাবৎ দেখিতে শ্বুনিতে বড় মনোহর। আকাশের সমস্ত মেঘ কাটিয়াগেল, প্রচণ্ড মার্ভি তাপে चाकां भ मधल चाल्ह्स कितल - जागता वरगत गारवा कल **ध्यवारक् न्नान क**िलाग—यानम ७ ७ कि मक् दिन शामान, শতে বিষয়া ৰশিষ্ঠ মাকে জাকিতে ২ প্রেমে বিভার रहेशा मगाधिए पूर्विशाहित्नन, त्महे वामनत्क न्यार्भ করিয়া পূজা করিলাম। মনে ২ তিরোহিত তপোধনের তত্র বিরাজিত তাপদী শক্তির নিকট প্রার্থনা করিলাম, বৈন এই রূপ জান মিলিত প্রেম ভক্তি পাইয়া প্রাণ ভরিয়া মা বলিয়া ভাকিতে পারি। তদনস্থয় শিব মন্দিরে আবেশ করিলাম। মন্দিরটি অতি আচান ও একাঞ্চ. স্থানে ২ ভগ হইয়া গিয়াছে চুসংস্করাভাবে স্থানটি কিছু मिनि इहेशार्छ। छितिनाम, गर्छ 📞 विनम्भा इहै। छ মধ্যে ২ व ६ ई मर्श्र वाहितै • इहेशा था कि । मिन्न तित स्वा ভাগ অভিশয় অক্ষার-পূর্ণ, দীপালোকে মহাদেব মূর্ত্তি দর্শন করিতে হয় । বিশাল কায় শঞ্চর লিঙ্গের পূজা করিয়া হাদর মন উলাসে নৃত্য করিতে লাগিল-সঙ্গেই मार्ट्न मिर्जंत नाम ज्योकात পांधाजर्गत मूर्ण ज স্থানে ট এবং দ স্থানে ড উচ্চারণ শুনিয়া আরও হাঁসি পাইতে লাগিল (गथा-जिछे ग्रह ७ निगु छन ७ निर्मा বশিষ্ঠেশ্ব নাঠায় নমঃ)।

মন্দিরের নিকটেই এই গভীর বনমধ্যে কাশীবাদী
একটা বাঙ্গালা মুবা বৈফব সম্যাদী স্বহস্ত নিব্যিত এক
খানি স্থানস্ত পরিকার কুটারে বাস করিয়া থাকেন।
তথায় বাল গোপালাদির সেবাও আছে। আশ্রম
দর্শনার্থীগণ প্রায় তাহারই আশ্রমে গিয়া বিশ্রাম করিয়া
থাকেন। সম্যাদীটি ভাল মানুষ, লোক জন গেলে
সংকার পূর্লক স্থান দান করেন ও তাহাদেরই প্রদত্ত
অর্থাদিতে দেবংসবাও এক প্রকার চলিয়া যায়। কিছু
না থাকিলে সম্যাদী বনের ফল মূল থাইয়াও দিন
কাটাইয়া দেন। আসরা সেই থানেই বিশ্রাম ও ভিক্লা-

जित तात्र किताग। **अहे जनमत्त (मर्हे (न**नी अकि রাজার হন্তী পৃষ্ঠে আমারই পূর্বব পরিচিত একটা সন্মানীকে লইয়া উপস্তিত্ইইল । সন্মানী সামাকে, কস্মাৎ বশিষ্ঠাশ্রমে দেখিয়া বহু আহলাদ প্রকাশত ক্রি-रनन • जामारक रखी পृर्ध गाहेबात जना जिल्हा অনুরোধ করিলেন। আমি কিন্তু তথারীর আঞাম হইতে হক্তীতে গমন এথকর বেশ্ব কুরিলাম না, আবার পাদচারে নেলা ৩টার সময় যাত্রা করিলাস—তখনু প্রামর তর রোদ্র তাপ হইয়াছিল, কিন্তু মতক্ষণ বনে ২ আদিলাম ত্তক্ষণ কট ইইল মুা, মাঠে আসিবামীজ্র রৌডেরণ তাভিতেজ দেখিয়া আবার মাকে বলিলাম মা " চেকে দে তোর সুর্গদেবে নিবীড় মেবেতে "। মা আমার দীন দ্যাম্যা, অমনি হান হইতে কান পা ৄত্যা **ভনি লেন**⊸ দেখিতে ২ ঘোর মেছে আক্স ছাইরাপেল, শীত্ল বায়ু বহিতে লাগিল, গা জুড়াইয়া গেল। (এই সময়ে त्म रेमनी नीला रमंथलाभ-जु!श मनवं मभरक विलाह সাহস হইতেছে না!) প্রবল ধারায় বারি বর্ষণও হইল। পুরাণে লিখিত আছে যে, যাহারা কামরূপ কুমা-

থার দীমার মধ্যে বাস করিয়া দেহ ত্যা^{য়}
তাহারা মহাপাপী হইলেও, মৃক্তি লাভ করিত তাহাতে

যসরাজের প্রার্থনায় বিষ্ণু আদির অন্ধ্রাধে মহাদেব

আজা করিয়াছিলেন, যে আর কেই কামরূপু বাস

করিতে পাইবে না। তাহাতে দিবন্ত গণ সকল লোককে তাড়াইয়া দেয়, অবশেষে বশিষ্ঠকেও বিতাড়িত

করে। বশিষ্ঠ অনেক অনুনয় বিনয় করিলেও এবং মৃক্তি

আদি কিছু চাহেন না, কেবল মাকে একবার দেখিতে

চাহেন, এতাবিছিজাত করিলেও, শিবদূত গণ তাঁহাকে

কামরূপ ছাড়িতে বাধ্য করিল । মহর্ষি কুপিত হইয়া

বলিলেন, মা, আমাকে যেমন দেখা দিলে না, আমিণ

অভিসম্পাত করিতেছি, যে তোমার এখানে কোন

সাধকই তোমার দর্শন পাইবে না—সিদ্ধি লাভ করিতে

পারিবে না। ঋষির রাগে গরিব সাধকেরই হানি হইল।

ষস্ততঃ কামরূপ এখন আর দিন্ধি সাধন শ্রুত হওর। হইয়া তাঁহার প্রতি অন্যাচার করিতে কান্ত হইলেন।

যায়না। যৌবন প্রলভ চিতের প্রবর্ণতা প্রয়ক সাধনে

করিতে পারিতেন, নিম্ন নিখিত রভান্তটাতে তাহা
কামরূপের কামিনীগণ বিদেশাগত বাক্তি গণকে

ভেড়া করিয়া রাখিত না; কিন্তু যাহারা সেকালে এই

মান ক্রিয়া আসিতেছেন, এমন সময়ে এক জন যবন

হর্ম দেশেকোন প্রকারে আসিত, আর সহসা খেনে

যাইবার হ্রিধা করিয়া উঠিতে, পারিত না, তাঁহারাই

মাত্র না বলিয়া, পুনরায় নদীতে গিয়া স্লান করিলেন।

অগতাহি ভেড়া হইয়া থাকিত।

ত্রুলনাথ প্রত্যাগ্রন করিলে সেই যবন প্রকার ক্রেলের ক্রিলা

ক্রেনাথ মহারাজ, চরিত। (পুর্বাঞ্জাশিতের পর)

जिक्नारथत छान मक लाहे आकृष्ठे हहेगा हिल वरहे, কিন্তু কএক জন নীচ-মনা ব্ৰাহ্মণ ছিল, তাহারা একনাথ-কে বিশ-নয়নে দেখিতে লাগিল। ইহার একটী কারণ এই যে, ফাঁহারা কথকতা করিতেন তাঁহারা একনাথের সমক্ষে হীন- এভ হইতে লাগিলেন, এবং তাঁহাদের ভার্থ উপার্জনের পক্ষেত ব্যাঘ্যাৎ হইতে লাগিল। একনাথ কথকতা আরম্ভ করিলে আর অপরের কথা শুনিতে কেছ গমন পরিত না। আর একটা কারণ এই যে, একনাথের ভদৃষ্টান্ত দেখিয়া এবং তঁহোর সত্পদেশ ভাবণ করিয়া অনেকে কদাচার ত্যাগ করিয়া সচ্চরিত্র হইয়া, উষ্ঠিল। তাহাদের পাপের প্রায়শ্চিত জন্য ব্যবস্থা লইবার আবশ্যকতা রহিল না । শতরাং ভট্টাচার্য্য महाभारतत अर्था भार्जातत त्राचा १ रहेर वाणिता चभाषकभन धननारणत् था प्रताका थाराम করিতেন, এবং নানা. প্রকারে তাঁহার অনিষ্ট চেটা क्तिएक। किन्न अकनाथ, अधाशक महाभारमत कृष्टे ুকথা শুনিয়াও শুনিতেন না, এবং তাঁহার প্রতি যে 'অত্যাচার হইত তাহ। অমান-মুখে তাহা সহ্য করিতেন। প্রহাত, তাঁহাদের প্রতি সম্বিক সম্মান প্রদর্শন कतिराजन । धकनारथत अहे यमाञ्चायिक त्रावशांत । সহিষ্ঠা দেখিয়া, অধ্যাপকগণ আপনা আপনি লজ্জিত

লোকের অভ্যাচার একনাথ যে কত দূর পর্যান্ত সহা করিতে পারিতেন, নিম্ন নিখিত রভান্তটাতে তাহা প্রভীয়মান হইবে – এক দিন তিনি গোদাবরী হইতে সান ক্রিয়া অ।সিতেছেন, এমন সময়ে এক জন যবন ঠাহার অঙ্গে থুৎকার করিল । একনাথ যবনকে কিছু गांज ना विलिया, शूनताय नमोटि शिधा स्नान कतिरलन । একনাথ প্রত্যাগমন করিলে, দেই যবন পুনর্বার ঠাহার অঙ্গে পৃংকার করিল। একনাথ পুনর্বার স্নান করিয়া অ'নিলেন। এই ব্যাপার সমস্ত দিন ব্যাপিয়া চলিল। কথিত আছে গৈ, দিবা অবসান হইলে, অত্যাচারীর বার্জ্রোধ হইল। এই অদ্ভুত ঘটনার সংবাদ চারি मिटकं श्रात्राध इहेल, ध्वर हेश टम्श्वात जना लारक मरल २ जामिए नाभिन । जाजाहाती यवम व्निल (य, এकनाथ निभन-कार्निक नाक्ति धवर जारात বাক্রোণহওয়া, ঈখর কর্তৃক দেও,ব্যিতিত আর কিছু নহে। তথন সে কর-যোড়ে একনাথের সমকে দণ্ডায়মান হইল, এবং ইঙ্গিতে তাঁহার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিল। একনাথ বুঝিলেন যে, সে ব্যক্তি অনুতাপ করিতেছে। তথন তিনি হস্ত উঠাইয়া তাহাকে আশীর্কাদ করিলেন। অমনি সে কথা কহিতে লাগিল। এই আশ্চর্য্য ব্যাপার প্রত্যক্ষ করিয়া দকলে বিস্ময়ান্তিত ইইল, এবং একনাথ যে এক জন মহাপুরুষ তৎপক্ষে কাহারও আর সন্দেহ রহিল না। একনাথের পাণ্ডিত্য ও রচনা শক্তির খ্যাতিও চারিদিকে পরিব্যাপ্ত হইল। এমন কি. কাশীধামের পণ্ডিতগণও তাহা অবগত হইলেন। একদা তথাকার একজন প্রাদিদ্ধ পথিত সংস্কৃত ভাষার কয়েকটা কুট কবিতা রচনা করিয়া, তাহার ব্যাখ্যা করিবার জন্য, একনাথের কাছে পাঠাইয়া দিলেন্। একনাথ এই ক্ষেকটি কবিতার চারি প্রকার ব্যাখ্যা করিয়া পণ্ডিত প্রবরের নিকট প্রেরণ করিলেন। মহারাষ্ট্রীয় ভাষায় ব্যাখ্যা কর। হইয়াছিল। পভিতজী দাকিণাত্যের

ত্রাঙ্গান, স্থতরাং একনাথের ব্যাখ্যা হৃদয়ঙ্গম করিতে পারিয়াছিলেন। ব্যাখ্যা অতি চমৎকার হইয়াছিল। তিনি নিজে একনাথকে মনে ২ সাধুবাদ দিলেন, এবং অন্যান্য পণ্ডিতগণকে তাহা দেখাইলেন। ব্যাখ্যা পাঠ করিয়া সকলেই আনন্দ লাভ করিলেন, এবং মুক্ত কঠে একনাথের প্রশংসা করিতে লাগিলেন। তাঁহাদের মধ্যে একজন পণ্ডিত এতদুর পর্যান্ত একনাথের অফুরাগী হইলেন যে, তিনি পৈঠনে গমন করত একনাথের সংহত কালাপ করিলেম।

একনাথ শিশু দিগকে বড় ভাল বান্নিতেন। তিনি তাহাদিগকে কোলে লইয়া মিন্টান্ন থাওয়াইতেব । यिन (मशिटान, जाहाता नाता हहेट जानक नृता আদিয়া পড়িয়াছে, তাহাদিগকে বাটাতৈ লইয়া যাইতেন। কি ভাঙ্গাণ কি ভদ্র যে কোন ব্যক্তির সন্তান ্হউক না কেন, সকুলকেই কোলে করিয়া লইতেন, धारः जान तामा (मशैष्टिका। यमि अक्र भाकाश कमाठाती ব্রাহ্মণ গণকে ব্রাহ্মণোচিত সম্মান দিতে প্রস্তুত ছিলেন না, তথাপি তিনি তাহাদিগকে মূণার চক্ষে দেখিতেন না। কি সদাচারী কি কদাচারী, কি আহ্মণ কি ওজ. দকলেরই যাহাতে উন্নতি হয় তৎপক্ষে একনাথ যত্নবান ছিলেন। তিনি যে কেবল মন্দিরে বসিয়া উপছেশু দি:তন এমন নহে, সাবকাশ মতে লোকের বাটীতে গমন করিয়া কদাচারী ব্যক্তিকে নানা উপদেশ দারা সংপ্रে আনিবার জন্য চেন্টা করিতেন, এবং দদাচারী ব্যক্তি যাহাতে ধর্ম পথে আরও অগ্রসর হইতে পারেন छ ९ भरक यह वान इहै एउंन । मन्त लाक रक আনিবার জন্য তিনি এক চমৎকার উপায় অবদমন করিয়াছিলেন। ইহার দারা সে আপনিই লজ্জিত ছইয়। কুকার্য্য হইভে বিরত থাকিত। এ প্রকার ঘটিয়াছে বে কেই তাঁহার বাটীতে চুর্ন্নি করিতে আদিয়া দ্রব্যাদি হস্ত-গত করিতেছে এমন সময়ে একনাথ তাহাকে দেখিতে পাইলেন। চোরও হাঁহাকে দেখিয়া কতাক

দ্রব্য লইয়া পলাই,তে উদ্যত হটল, একনাথ উচ্চেপরে তাহাকে যাইতে বারণ করিতেন, এবং আরু যে ২ দ্রব্য সে লইতে ইচ্চা করে তাহা লইয়া যাইতে বলিতেন। ইহাতে চোর অপ্রতিভ হইত, এবং ক্রমে ২ চৌ্যা রতি ত্যাগ করিত।

সাধু ব্যক্তির যে ২ গুণ থাকা আবশ্যক একনাথের জীবনে তাহা প্রতিফলিট হইয়াছিল। তিনি এই রূপে সাধু চরিত্র বর্ণনা করিয়াছিলেনঃ—

অন্তর নির্মাল ঘাঁরে মধুর বচন।
না থাকুক গল দেশে রাদ্রাফ ধারণ॥
বহুদশী যিনি, আছে আগ্রজান ঘাঁর।
না থাকুক মস্তকেতে জটাভার তাঁর॥
কুনয়নে রামণীরে না দেশে যে জন ।
না থাকুক অসে তাঁর ভ্যাকুলেপন॥
পর দ্রের মন্দ আর নিন্দায় যে মৃক।
দেই ত প্রকৃত সাধু সদা তার স্বং॥
অনেকেই ক'রে থাকে উপদেশ দান।
সেই মৃত কার্যা করে কোথা সে প্রান !
বাক্য মৃত কার্যা ফার সেই মহাজন।
ভাঁহার চরণ সবে করহ পূজন॥

এই প্রকারে লোকের হিত সাধন এক অবীলছন করিয়া একনাথ পরম আননেদ দিন যাপন করিতে লাগিলেন। তাঁহার চেন্টার আনেক কলাচারী ব্যক্তি সদাচার সম্পন্ন হইলেন, এবং যাঁহাদের মন ধর্ম-প্রবণ ছিল তাঁহারাও সমধিক উন্নতি লাভ করিলেন। সংসারের মধ্যে থাকিয়া কি প্রকারে পরমার্থ লাভ করা যায় একনাথের কার্য্য কলাপ দেখিয়া সকলে হুদ্যুদ্ধ করিতে পারিল। একনাথ, দুইটা কন্যা একং একটা পুজ সন্তান লাভ করিয়াছিলন। পুজটী সমধিক জ্ঞান লাভ করিয়াছিল, এবং হরি পণ্ডিত বলিয়া বিশ্যাত হইয়াছিল।

जिक्नात्थत जीवन वृजात्छ कजको चाम्हर्या घटनात উল্লেখ আছে। এই ঘটনা গুলির উপর পাঠকগণ বিখাস স্থাপন করুন বা না ফিরুন, ইহার মধ্যে এক-নাথের যে মহত্ত প্রকাশ পাইয়াছে ভাহা অবশ্যই তাহাদের প্রীতিকর হইবে । এই জন্য তাহা নিম্নে বির্ভ করিলাম। একদা এক নাধ তাঁহার পিতার বাৎসরিত প্রান্ধোপলকে ভ্রাহ্মণ ভোজনের আয়োজন कतिशाছितननं, शामा ज्या मकन णाक छेउम ऋर्भ প্রস্তুত হট্মছেল। বাদীর বাহিরে পর্যান্ত তার্থার ভগন্ধ বিকার্ণ হইয়াছিল । • একনাথের বাটীর নিকট দিয়া কএক জ্বন হীন জাতীয় ব্যক্তি গমন করিতেছিল। ভাহারা এই হুগদ্ধ পাইয়া পরম্পর বলাবলি করিতে লাগিল—আহা! কি উত্তম গন্ধ পাইতেছি। এ প্রকার केंद्रेग ज्वा भागारमत जीत्गा घटने कि ? अहे कथा छनि একনাথ শুনিতে পাইলেন। ক্রথনই তিনি তাহাদিগকে ভাকাইয়া পাঠাইলেন, এবং সেই সকল থাদ্য দ্রব্য দারা তাহাদিগকে উত্তম রূপে ভোজন করাইলেন। जमने खत, द्धाञ्चलि भित्र क्रिका श्रीमता स्वा क्रा क्रिना। ব্ৰাহ্মণ গণ শুনিতে পাইলেন যে একনাথ নীচ পোক দিগকে সর্ব্যাতো ভোজন করাইয়াছেন। ইহাতে ভাঁহারা অপমানিত বিবেচনা করিলেন, এবং একনাথের প্রতি মন্দ বাঁক্য প্রয়োগ করিয়া তাঁহার বাটীতে ভোজন कतिए अयीकात कर्तिएन । इंश छनिशा धकनाथ खित ভाবে तरितन। किय्रः, भरत (मिश्निन, कथक জন ব্রাহ্মণ আসিয়া উপস্থিত হইয়াছেন। একনাথ তাঁহাদিগকে সাদরে ভোজন করাইলেন। পরে ঠাহার। अत्क २ विषाय लहेशा भगन कतिएक लाशिरलन । अक नार्थत श्राञ्चितांनी खांकांग गंग मृत रहेर्छ एमिएलन, কএক জন ভাঙ্গণ ভোজন করিয়া যাইতেছেন। তাঁহারা নিকটে আসিয়া অবাক্ ছইলেন। ত্রাহ্মণ দিগের মধ্যে কেহ ২ তাঁছাদের পূর্বব পুরুষ, কেহ ২ প্রতিবাদী। এই অন্তুত ব্যাপার দেশিয়া পৈঠন বাদীগণ স্থির

করিল যে, এক নাথ এক জন ঈশ্বর জানিত ব্যক্তি। তথন তাহারা একনাথের নিকটে আসিয়া ক্ষমা প্রার্থনা করিল। একনাথ তাহাদিগকে সাদর সম্ভাষণ করিলেন।

গৈঠনে এক জন সদাচার সম্পন্ন গৃহস্থ বাস করিত। সে জ্ঞানবান্ ও পরম ভক্ত ছিল । তাহার নাম ছিল রাম)। তাহার স্ত্রীও সচ্চরিতা। ও মুশীলা ছিল, কিন্তু জাড়াংশে তাহারা হীন ছিল : উভয়ে প্রতি দিন এক নাথের কথা ও কীর্ত্ন আবণ করিত, এবং উভয়েরই **धक्नार्थ**त छेलत विरमय आका किना छेलरमम मिनात সময়ে একনার্থ বলিতেন যে জাতি বিচারের কোন আবিশ্যকতা নাই। এক নাথের মুকে ইছা ভাৰণ क्रिया न्त्रामा वित्वहना अतिल (य, अक्रनाथ यथन জাতি সানেন না, তখন তাঁহাকে সে ভোজন করাইতে পারে। এই স্থির করিয়া সে এক দিন একনাথকে নিমন্ত্রণ করিল। এক নাথ জানিতেন যে রামা এক জন পুণাবান্ ব্যক্তি এবং পরম ভক্ত। তিনি তাহার আহ্বান উপেকা করিতে পারিকেন না । রামার আনন্দে ভোজন করিতে মহা বাটীতে গিয়া লাপিলেন। এই কথা শুনিয়া কএক জন ব্রাহ্মণ রামার वांग्रीटि भगन कतिल, अनः (मिश्रिल स्य अक नांध छथांग्र ভোজন করিতেছেন। তাহারা বাহিরে আসিয়া কিয়দ্যুর গমন করিলে পর, ক এক জন ভালাণের সহিত সাকাৎ হওয়াতে, তাহাদিগকে একনাথের শুদ্রের বাটাতে ছোলনের কথা বলিতে লাগিল। ইহা শুনিয়া সে ত্রাক্ষণ গণ বিস্মান্তিত হইল । কারণ, তাহারা একনাথকে তাঁহার বাটীতে দেখিয়া আদিয়াছে । পরে তাহারা সকলেই এক নাথের বাটীতে গিয়া দেখিল যে, ভিনি তাঁহার শিষ্যদের সহিত কথোপকথ্ন করিতেছেন। ইহার পর, তাহারা রামার ,বাটীতে গেল। সেখানে গিয়া দারের নিকট হইতে দেশিল যে একনাথ তাস্থল ভক্ষণ করিতেছেন । তাহারা একনাথের নিকটে

যাইতেছিল। এমন সময়ে তিনি অদৃশ্য ইইলেন। কোথায় • ছাণিরা আর্থ্য ধর্মা প্রচারিণী সভার বার্ষিক উৎসব হইয়া গোলেন কেছ ছির করিতে পারিল না । এই ব্যাপার গোলা। সহরের ভিম ২ প্রধান ২ ছানে সভার অধিবেশন যে দেবতার লীলা, তাহা তাহারা বুঝিতে পারিল। হত্যায় সমস্ভ সহর কয় দিনী উৎসব্ময়, ইইয়াছিল ।

যে সকল লোক একনাথের পুরাণ ব্যাখ্যা ভ্রিতে আসিত, তাহাদের মধ্যে একটা হুন্দরী স্ত্রীলোক ছিল। हैनि कार्प धवः ११ गिकत्वत मन इत्र कित्रां हित्वन । যাঁছারা ভাল লোক, তাঁছারা দেই স্ত্রী লোকটার দেব ভাব হৃদয়প্রম করিকেন। অস্করিত্র ব্যক্তিগণ তাঁহাকে কুদৃষ্টিতে দেখিত। কিছু দিন পরে, পুরাণ ব্যাখ্যা শেষ रहेन भत. इंगे लांक मण चिंधारत धुँह तमगीनेत পশ্চাদতী হইল । স্ত্রীলোকটা ইহাদের মন্দ মভিপ্রায় বুঝিতে পারিল। কিন্তু তাহাদের প্রতি লক্ষ্য না করিয়া। জ্রত পদ সঞ্চারে গোদাবরীর দিকে গমর করিতে नाशिन । कर्म नमीत जीति जैशनीज इहेशा करन নামিল। পাছে রমণীটা আতা হত্যা হর, এই আশক্ষা করিয়া লোক ছুটা তাঁহাকে ধরিবার জন্য হাত বাড়াইল । এমন সময়ে গোদাৰ্থী ছুই ভাগে বিভক্ত हरेन, ध्वर छी लाकी लाक इत्रेटक द्वार त्वाख অবলোকন করিয়া অন্তর্ণ্যান হইল। এই ঘটনার বিষয় गकत्न कानिएक भातिन। धकनारथत्व छारा कर्न-গোচর হইল। পর দিন পুরাণ ব্যাখ্যা আরম্ভ হইবার পুর্বের একনাথ উক্ত ঘটনাটার উল্লেপ করিয়া বলিলেন त्य क्षी त्मांकी भन्ना (मनी । शरत (आंडांगंगरक বুঝাইয়া দিলেন যে লোকের চরিত পবিত হওয়া আবশ্যক। ভাছা না হইলে কেহ কখন ধর্ম পথে অগ্রসর হইতে পারে না। মন যার বাহিরের অমুষ্ঠানে সে কখন ও পরমার্থ লাভ করিতে পারে না।

. ধর্মোৎয়ব।

ছাপরা।

১০ই হইতে ১৪ই পৌষ পর্য্যন্ত করেক দিন ধরিয়া।

গেল। সহরের ভিন্ন প্রধান ২ স্থানে সভার অধিবেশন হ ওয়ায় সমস্ভ সহর কয় দিনী উৎসবময়, হইয়াছিল। প্রতিদিন সভায় লোকে লোকারণ্য হইত। পরিব্রাদক শীক্ষানন্দ সামী ও পতিত শীব্ৰ অমিকা দত ব্যাস মহাশয় ক্রয়েক দিন নাুন।বিধ জ্ঞান গছীর ● ভক্তি পূর্ণ উপদেশ ছার। লোক সকলকৈ কুতার্থ করিয়াছিলেন। দেশ বিদেশ হইতে পণ্ডিত ও সন্ধান্ত ব্যক্তি বর্ণের সমাগম ও হইয়াছিল। এই উৎসবোপলকে, ভগবানের পुका, পাঠ, खाक्राग टार्कन, मीन मतिप्रक मानामित्र छ क्तांनत्रभ जाष्टि इश नाहे। वालक नरभंत अभीकि मक्षा-রিণী মভার মহা মহোৎদব ও এই সঙ্গে ইইয়া গেল। এই সভায় স্বামীলী " আদর্শ-মানব " বিষয়িণী বক্তৃতা করিয়াছিলেন। এ সভাটি স্বামীজীর থেরণীয়ু বেহার वानी मिराबर उरमार अ छेमारमत कन । अ मना বিহারের মধ্যে ধর্মোৎসাহ বর্জন করিয়া অনেক উন্মার্গ-গামীকে হুপথে এবর্ত্তিত করিয়াছে। ছাপরাবাসী वात्राली गगरक ७ मजात महरगागी इहेरज एम भिटन चामता चारु अशी रहेत।

वान-(वितिनी।

১৭ ই হইতে ২১ এ পোষ পর্যান্ত বেরিলী সদ্ধান্মত বর্ষিণী সভার বার্ষিক অধিবেশন ও মহামহোৎসব হইয়া গিয়াছে। এই উৎসবে পূজা, পাঠ, বক্তা ও সংস্কৃত পরীক্ষোতীর্ণ বালক বর্গকে পারিতোষিক দান ও পণ্ডিত বর্গের সংকার হইয়াছিল । ধর্মোপদেশ দান করিবার জন্য কাশী হইতে পরিপ্রাক্তক শীযুক্ত গীকৃষ্ণানন্দ স্বামী, কপুর্থলা হইতে পণ্ডিত শীযুক্ত রঘ্বর দ্যাল বেদান্ত স্থ্য আদি আহত ও উপনীত হইয়াছিলেন। লাহোর, আলিগড়, লক্ষ্ণে, মথুরা, এবং নিক্টবর্তী বহুতর স্থান হইতে অনেক লোক উৎসব

দর্ণনে আসিয়াছিলেন। বেদান্ত-ভূমণের আদ্ধ তত্ত্ব বিষয়িণী বকৃতা অতি ভ্ৰম্ব ও সারগর্ভ হইয়াছিল। দ্যান্দী মতের অসারতা দেখাইয়া তিনি বেদ ও আতি হইতে বহুল প্রমাণ সহ আছের আবশ্যকতা ৬ উপ-কারিতা প্রদর্শন করিয়াছিলেন। পরিব্রাঞ্জক মহাশ্রের বেরিলীতে এই প্রথম পদার্পণ। তাঁহার মুখে হিন্দী ভাষায় कुट मिश " जिलामना उद् " ड अक मिन " कुरुलोगात " খাশ্চর্যা ব্যাখ্যা গুনিয়া শ্রোতা মাতেই চমংকৃত ও বিমোহিত্রইয়াছেন। প্রে: মর তরঙ্গে প্রত্যেকের হৃদয় গদ্গদ হইল, কত শত সম্ভান্ত শির তাহার চরণে मुठे।हेन, केक भक छेनाधि धाती, तास वाहाछ्तापित रेख ্তাঁহার পদ দেবা করিল, তাহা বলিতে পারি না। তাঁহার বকৃত। বকৃত। নহে, যেন প্রেম লহরী মাল। স্বংগ্র मंनाकिनीयं नाम प्रजा भगरक शविद्य कतिन । छाहात মুখে ধর্ম কথা শুনিবার জলা কত লোকে লুধিয়ানা, नाःको. चानिगरु वानि दांत डाहादक नहेशा याहेदात জন্য যত্ন করিল, কিন্তু স্বামীজীর অবকাশভাবে য়া ওয়া হইল না। সভার উৎসব ফুরাইল, বিদেশী नाक मकन हिना (शन, दितिनीत मञ्जाख लाक वर्भ याभीकीरक छाड़िरलन ना । अक निन ध्रे मिन করিয়া তিন দিন স্বানীজীকে ঠাহারা রাখিলেন ও দেবা 🥶 আমি। সহ তাঁহার নিকট শাঞ্জীয় নানা রহস্ত এবণ করিয়া কুতার্থ ইইলেন। এবার উৎসবে স্বামীজীর স্মা-গ্রেম বেরিলীবাদী বর্গের ফলয়ের অনেক অন্ধকার ঘুচিয়া গেল, অনেক বিপথগানী সদ্ধায়ত পানে জন্ম मकल कतिल।

কাশী।

কাশী—মহাশাশান। হতরা এখানে উদ্যা উৎসাহ, চেকীর স্পান্দন অতি অপ্পই দৃষ্ট হইয়া থাকে। তবে সাধক চেকী করিলে শ্রশানকে জাগ্রত করিতে পারেন, ইহাই সামাদের বিশ্বাস এবং দেখিলামণ তাই।

वात्रामी काणी वात्री भएगतं मध्या नाथात्र कार्या इन्ड क्किंश कतिवात कना कर्माम शृश्य वर्ष एप गाये हैं ना । পরিব্রাজক মহাশয় ভা, আ, ধ, প্র, সভার কার্য্যালয় মুক্ষের হইতে কাশীতে উঠাইয়া আনিবার পর হইতে মহাশাশানের ভদাস্ত্রপ ভেদ করিয়া ক্রমশঃ চেষ্টা 🗷 উদ্যাম শিখা জ্লিয়া উঠিল —জড়তা ও নিস্পন্দতা ধীরে২ দ্ধ ইইতে লাগিল। সভা স্মিতির যে প্রিত্তে প্রমৃতি বিস্তার করিয়া তিনি ভারতের চারি দিকে ধর্মালোচনার পুনরুদ্দীপনা ক্ষেত্র প্রসারিত করিয়াছেন, সেই আদর্শ लहेशा ज्याद्म ७ हति मडा, हति डिक अनाशिनी मडा, इति नाम श्राहिती मधा वालतक्षिनी मछा अ वर्गासम ধর্ম রক্ষণী সভা সংস্থাপিত হইযাছে। সকল সভাই যথোচিত উৎসাহে কার্যা করিতেছেন দেশিয়া আমরা অতিশয় হুণী হুইয়াছি। কাশীর ন্যায় মহাতীর্থে এই রূপ ধর্মালোচনার স্থান যতই বুদ্ধি হই ৰ, তভই আমর্ আনন্দিত হইব।

হরাত্ইতে ৫ই মাঘ পর্যান্ত "বর্ণশ্রেম ধর্ম রকিনী দভার" বার্ষিক মহোৎদব হইয়া গেল। ই যুক্ত বাবু দোমনাথ ভাছড়ী মহাশয়ের সায় ৫ সম্পাদকীয় প্রয়েই সভাটির কার্যা প্রনির্দাহিত হইতেছে। উৎসব কালে দ্রীযুক্ত পণ্ডিত প্রমণ নাথ তক্ক ভূমণ, জায়ক্ত পণ্ডিত মহাদেব শ্বৃতিতীর্থ, শ্রীযুক্ত পণ্ডিত উমেশ চক্র স্মৃতি তীর্থ, শ্রীযুক্ত পণ্ডিত উমেশ চক্র স্মৃতি পণ্ডিত জয় নারায়ণ তর্করত্ব মহাশার শ্রীমন্তাগবত ব্যাথ্যা ও বক্তৃতা করিয়াছিলেন। সংস্কৃত বিদ্যার্থী বর্নের যোগ্যতাত্মসারে কিছু ২ পারিতোধিক দান ও ব্রুতির ব্যবস্থা করাও হইয়াছে। কাশীস্থ বাঙ্গালী ব্রাহ্মণ পণ্ডিত গণকে প্রতিষ্ঠাভাগী হইতে দেখিলে আমাদের হৃদয় আনন্দে নৃত্যু করিতে থাকে। মা অমপূর্ণার কুপায় ধর্মের জয় জয় ধ্বনি ভারতে ভৈরব রবে পুনর্বিদ্যাধিত হৃষ্টক।

C	वन विमागलदात चाय । वाय ।	মাহ অগ্রহায়	ণ এবং	' " গোবিন্দচন্দ্র হুর, শ্যামপুর বরীশাল "	o,
	পেষি ১২৯	- 1		" চন্দ্ৰভূষণ সেন কলিকাতা "	,>°\
	মুষ্টি ভিক্ষা	অগ্ৰহায়ণ	পোষ	" প্রদর্ক্ষার মূখোপাধ্যায়'মতিহারি "	311%
3	পূর্ণানন্দ দেন দাইহাট	>110.	u	" কালীব্রন্ন চট্টোপোধ্যায় গদাইপুর্	1/°
æ	আদ্যনাথ বিশ্বাস লোকনাথণ	ধুর ২১	*	" স্নংকুমার রায় চৌধুরী 🕮 হট্ট "	4
"	তারাধ্যম বন্দ্যোপাধ্যায় স	য়দাবাদ ৫১	«	•	
"	नवीनहन्द्र मात्र जाजूशा औरहे	d>.	« •	এককালীন দান। বি অগ্রহায়ণ	•পৌষ
"	মধ্সূদন রায় দিনাজপুর	>°\	« ,	গ্রীউমেশচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় সিমলা ১৫১	"
er.	कृष्णनाथ गूर्शश्रीसाग् कृष्ण	ना ३०,	> २॥•	" রঘুনন্দনপ্রসাদ সিংহ বাঁকিপুর ৫১	"
"	রমনীকান্ত চট্টোপাধ্যায় সিধ	গ্রপুর ১৯১০	•	" হুগাপ্রদাদ বাবু ত ছাপরা ১%	२५०
"	দীননাথ পাত্র রামপুরহাট	৩।•	811/-	" দীননাথ পাত্ত রাসপুরহাট ৴:-	"
44	চণ্ডী চরণ ঘোষ কলিকাত [°]	٠.	a . ,	" নেপালচন্দ্র কুমার ব্যাটরা 🗸	"
"	ভোলানাথ মুখোপাধ্যায় সা	তঘরা ৴৽		" 'বিপিনবিহারী রায়	٩.
•	তারকত্রন্ম দেন ওপ্ত সানিখ	1 >21	"	" উমাপদ চক্রবর্তী মাদ্রাজ "	>/
•	চন্দ্র ভূষণ ভট্টাচার্য থোকসার	•	٥,	" শামাচরণ মুখোপাধ্যায় ত্বানীপুর "	21
ø	শশীভূষণ মুখোপাধ্যায় ভুমর	गर ••"	ગ ‼ ૰	" রসণী মোহন মলিক মোহরপুর "	51%
66	লক্ষীনারায়ণ সেন ঝালদ্হ	«	• >/	" যতুনাথ সাহ ছাপরা "	2,,
ĸ	জনচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় বরীশ	भाग "	> 0	" नीलकर्श्व हर्ष्डोशोधाय गर्नाहेशूत "	/。 -
í,	অক্রচন্দ্র আচার্য্য কুমড়াবা	F "	01%	মাদিক রুতি।	
ec	গিরীশচন্দ্র শর্মা ধলা	"	34.	লবঙ্গ জন্মনী রতি কাকিনা ১•১	>-/
a	गःलाकनाथ (म नातशां) 🖹	१ रहे	2%	- শ্রীশ্রীগোপালদাস বহু বাজিতপুর /	"•
66	বৈকুণ্ঠনাথ দত্ত মাটবেড়িয়া	"	₹ 1°	" वीरतभत म्रथाशायाय कानीमाठे क्	* *
	রমনীমোহন মলিক মে হে র	পুর "	२॥%	'' मरोताका चात्र छात्रा २०	66

भग প्राह्म तक।

" কুলং পবিত্রং জননী ক্লতার্থা বঠ্মন্ধরা পুণ্যবৃতী চ তেন অপার সন্বিৎ সুখসাগরেন্মিন্, লীনং পরে ব্রহ্মণি যস্য চেত॥

১৪শ ভাগ
 ১১শ সংখ্যা

" এক এব স্থক্ত শো নিধনে হপারুবাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্কামনাত্র গচ্ছতি॥"

भक्षाका २५०० कालुस याग

যাত্তৰক্ষা সংহিত।।

(পূর্বর প্রকাশিসূতর পর)

তপন্তথ্য প্ৰজন্ম। আকাণান্দেদ গুপুরে। তৃপ্যাপ পিত্দেশ নাং ধন্ম সংরক্ষায় চা

বেদ ও ধর্ম রক্ষার নিমিত, দেবত। ও পিতৃগণের ভৃত্তি জন্য সীয় তপোবলে ব্রহ্মা ব্রাহ্মণ সকলকে স্কন করিয়াছেন।

নৰ্কান্ত প্ৰভাৱে বিশ্বাঃ প্ৰাহতাধ্যয়নশালিনঃ। তেভ্যঃ ক্ৰিয়াপরাঃ শ্ৰেষ্ঠা স্থেড্যোহপ্যধ্যাস্থিত্যাঃ॥

ব্রাহ্মণ দকল বর্ণের শ্রেষ্ঠ, তন্মধ্যে বেদপার্গণ ব্রাহ্মণ শ্রেষ্ঠ, তাহার মধ্যে আবার বেদোক ক্রিয়া-শীল ব্রাহ্মণই শ্রেষ্ঠ, এবং ক্রিয়াশীল ব্রাহ্মণের মধ্যে আহ্বত্তুই প্রেষ্ঠ।

নবিদ্যয়া কেবলয়া তপদা বাপি পাত্রতা।

য়ত্ত বৃত্তিমনেচোভে তদ্ধি পাত্রং প্রকীতিতং ॥

কেবল মাত্র বিদ্যা কিমা তপদ্যা দ্বারা, স্থাত্র

হয় না; মাহাতে বিদ্যা ও তপ্দ্যা উভয়ই আছে,

তিনিইউত্তম পাত্র।

গোস্তিলহিরণাদি পাত্রে দাতব্যসচ্চিতং।
নাপাত্রে বিদুষা কিঞ্চিদাসনঃ শ্রেয় ইচ্ছতা।

আগ মঙ্গল কামী ব্যক্তি গো, ভূগি, তিল, হিরণ্যাদি বিদি পূর্বক সংপাতে দান করিবেন। অপাতে কদ।চ° দিবেন না।

বিদ্যাতপোভাা গ্রান্ত নতু গ্রাহ্য । গুহুন্ প্রদাতারমধে। নম্তগীয়ান মেবচ॥

বিদ্যা ও তপ্স: হীন আক্ষণের প্রতিগ্রহ করা উচিত নয়, অতিগ্রহ করিলে দাতার স্থিত নরকৈ গতিহয়।

দাতবা° প্রতাহ° পাত্রে নিমেতে চু বিশেষতঃ। যাচিতেনাপি দাতবাং শ্রহা যুক্ত শক্তিতঃ॥

শীর সামণ্যানুসারে প্রত্যাহ সংপাত্রে দান করিবে; গ্রহণাদিতে বিশেষ করিয়া দান করা উচিত। শ্রহাযুক্ত হইয়া মাচককেও সাধ্যমত দান করিবে।

হৈমশৃঙ্গী খুরৈ রোপ্য়ে: স্থালা বস্ত্রসংযুতা।
সকাংস্তথাতা দাতব্যা কীরিণাগোঃ সক্ষিণা॥

স্বর্ণসভিত শৃঙ্গ, কৌপ্য সভিত খুর, সমর্বস্থা স্থীল। স্থাবতী গাভী দ্ফিলা ও কাংস্য দোহনীর সহিত দান করিবে।

দাতান্যাঃ স্বর্গনাথে।তি বংসরান্ রোসসংগিতান্। কপিনা চেতারয়তি ভূগশ্চ সপ্তমং কুলং॥ যত্থলি গোদেহে লোম থাকে দাতা তত কংসর স্বর্গ ভোগ করেন। কপিলী গাভী দান করিলে সপ্তম পুরুষ পর্যান্ত উদ্ধার হয়।

সৰৎসাবোমত্ল্যানি মুগামুভয়তোমুখীং।
দাভাস্যা: স্বর্গায়োতি পুর্বেণ বিধিনাদদ্ধ॥
পুর্বেলিক বিধানামুসারে সবৎসা উভয়তোমুখী
গাভী দান করিলে, গাভীর ও বংসের লোম পরিমিত
বংসর দাতার সর্গেছিতি হয়।

যাবৰংসদা পাদোবো মৃশং যোন্যাঞ্চ দুশাতে !
তাবলো পৃথিবী জেয়া যাবদাৰ্ভং নম্পতি ॥
. প্রদাব সময় যোনি মুখে বংদের সন্মুখের পদদ্য
ও মুখ যথন দৃষ্ট হয় তৃংকাল হইতে গর্ভ মোচনের
প্রাক্তাল পর্যন্ত গাভীকে উভয়তোম্থী কহে; আর
তংসময় গাভী পৃথিবী তুল্যা হয় । (অর্থাং দেই
ভবস্থায় দান করিলে পৃথিবী দানের ফল লাভ হয়)।

্যথাকথঞ্জিত হয়েন্॥

ব্যথাকথঞ্জিত হয়েন্॥

ব্যথাকথঞ্জিত হয়েন্

যথাকথঞ্জিত হয়েন্॥

ব্যথাকথঞ্জিত হয়েন্॥

ব্যথাকথঞ্জিত হয়েন্॥

ব্যথাকথঞ্জিত হয়েন্॥

ব্যথাকথ্জিত হয়েন্॥

ব্যথাকথ্জিত হয়েন্

ব্যথাক্ষিক হয়েন্

ব্যথাক্ম

. ক্রেমশঃ।

একনাথ ম্হারাজ চরিত।

(পূর্বাপ্রকাশিতের পর)

একদা একনাথ রজনীতে নিদ্রিত আছেন, এসন
সময়ে চারি জন দহা তাঁহার ঘরে প্রবেশ করিয়া দ্রব্য
সকল সংগ্রহ করিতে লাগিল। এই সময়ে অকস্থাৎ
তাহারা অন্ধ হইল। তখন তাহারা পলাইবার চেন্টা
করিল। এই গোলযোগে এক জন পড়িয়া গেল এবং
শক্ষ্ পুরাতে একনাথ জাগিয়া উঠিলেন। দহাদের
তুরাবস্থা দেখিয়া তিনি তু:খিত হইলেন এবং একে ২
তাহাদের চক্ষুতে হন্ত বুলাইলেন। তথনি তাইকা

দর্শন শক্তি প্রাপ্ত ইলা এই ঘটনাতে দগ্যগণ বিশ্বয়াবিত ইল। ভাহারা একনাথকে এক. জন সহাপুরুষ
বলিয়া শ্বির করিল। কুকার্যা করাতে তাহারা ভীত
ইয়া দ্বা গুলি ফেলিয়া পলাইবার উপক্রম করিল।
কিন্তু একনাথ তাহাদিগকে যাইতে নিষেধ করিলেন
এবং তাহারা যে ২ জব্য লইয়াছিল তাহা তাহাদিগকে
প্রত্যেপণ করিলেন। দস্যগণ অভিশয় অপ্রতিভ ইইল।
তাহারা একনাথের ক্ষমা প্রার্থনা করিল এবং ক্ষমন এ
প্রকার কুকার্য করিবে না এই বলিয়া প্রতিজ্ঞাবদ্ধ
হইল।

. . এক সময়ে, পৈঠলের এক জন ভ্রাহ্মণ, একনাথের কাছে এক টুকরা সে!া রাখিয়া স্থানান্তরে গমন 'করিয়াছিলেন। এক নাথ তিছো দেবমদেরে রাখিয়া দিয়াছিলেন। কিছু কাল পরে, নির্মাল্যের সহিত তাহা নদীতে নিকিপ্ত হইয়াছিল। কএক বংসর পরে আহ্বাণ ঠাকুর প্রত্যাগমন করিয়া একনাথের নিকট সোণার पूक्ता हेकू हाहित्लन, अकनाथ मन्मिततः मकल ऋारनहे षञ्गकान कतिलन, किस्र एम जगण না। আক্ষণ ঠাকুর ইহা অবগত হইয়া একনাথের , জ্ঞতি ছুৰ্বাক্য সকল প্রয়োগ করিতে লাগিলেন। এক-नाथ भाषा जारत ममुख्य महा कतिरमन। खाक्का ठीकृत একটু স্থির হইলে পর, একনাথ তাহাকে সঙ্গে লইয়া গোদাবরীর তীরে গমন করিলেন। তথায় উপনীত হইলে পর, একনাথ নদী হইতে কএক টুক্রা পাথগা जूनिशा नहेरनन, जनः ठाश शहेरठ खाक्रागरक छांशत निक्कत एवा केठाहेशा नहेल विमालन । अकनाथ তাঁহার সহিত বিজ্ঞাপ করিতেছেন এই বিবেচনা করিয়া ত্রাহ্মণ ঠাকুর একনাথের কথা গ্রাহ্য করিলেন না। কিস্ত একনাথ বিশেষ রূপে অমুরোধ করাতে ত্রাহ্মণ ঠাকুর তাঁহার হস্ত হইতে এক টুকরা পাথর উঠাইয়া লইলেন। ভাহার হাতে আসিবা মাত্র, প্রস্তর পও হ্বর্ণে পরিণত इटेन। धरे बााभात (मिता। बाना ठिक्त विकासिक ছইলেন, এবং একনাথের নিকট কমা প্রার্থনা করিলেন।

একনাথের অসাধারণ ক্ষমতা, ভাঁহার পরহিত
পরার্গতা এবং শাস্ত প্রকৃতি, লোকের মনকে এ প্রকার
আকর্ষণ করিয়াছিল যে, ভাহার নাম তাহাদের কাছে
প্রাতঃ স্মরণীয় হইয়া উঠিল। ভাহার দর্শন তাহাদের
কাছে দেব দর্শনের ন্যায় প্রতীয়মান হইত, এবং
ভাঁহাকে চিরংমারণীয় করিয়া রাখিবরি অভিপ্রায়ে
ভাঁহার স্মরণ চিহু সংস্থাপন করিবার ক্রন্য সকলেই
যন্ত্রান্ হইল।

এখন আমহা একনাথের কবিত্ব ও এছ ংচনা সম্বন্ধ কিঞিৎ আলোচনা করিব। তিনি এক জন হুর্কুবি ছिলেন। इं। होत क्वा उन्नां दे क्या खंड ' हिल (य, তিনি কথা কছিতে ২, অথবা জাগ করিবার সময়ে ুখনগল কবিতা রচনা করিতেন। ক্থন শ্লোক ও পদ धावः कथन वा था चन्न, शिक्ठात्वा कतिवात ममस्य उँ। हात মুখ হইতে বহিৰ্গত হইত। তাহার শিষ্যাণ এই সকল লিখিয়া রাখিয়ণছিলেন। তিনি কএক খানি উৎকৃষ্ট গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন। তাঁহার কবিতা অতি প্রাঞ্জল ও অমিষ্ট, এবং ঠাছার বর্ণনা শতিও মথেষ্ট ছিল। লোকে আগতের সহিত তাঁহার এছ গুলি পাঠ করিত। ভাষাম্বর করিবার ক্ষমতাও তাঁহার বিলক্ষণ ছিল। একটা ঘটনা সূত্রে একনাথকে কাশীধানে যাত্রা করিতে হয়। সে ঘটনাটা এই । ভাগব্ৎ গ্রন্থ খানি যত দূর বহুল প্রচার হওয়া উচিত তাহা হইতেছে না. ইহা বিবেচনা করিয়া একনাথ অতিশয় ছ:খিত हरेलन। लात्क महरक छ। हात मना ध्वनाठ हरेए পারে এই বিবেচনা করিয়া তিনি সরল ভাষায় তাহার টীকা করিতে আরম্ভ করিলেন। এই টীকা এরপ ভাবে व्याथा। इटेंटि नाशिन तम, जर्म जरुपी तमान जन अक्री व्यथारा शत्भिक इटेल । अहे आर्इत इटेंगि অধ্যায় সমাপ্ত হইলে এক জন আক্ষণ তাহার প্রতিলিপি कतिया नहेत्नम्, अत्रः हेन शार्ठ कता छ। हात् देनिक

কার্য্য হইল। কিছু কাল পরে, ইনি কাশী ধামে গমন করিলেন, এবং তথায় গঙ্গার তীরন্থ কোন সোপানের উপর বিদয়া এই অধ্যায় ছুইটা প্রত্যহ পাঠ করিতে लाशित्नन। त्य मकल महालाङ्कीय खाक्तग देश खातन করিতেন, ভাঁহার। ইহার ভাব ও ল।লিভা ছাদয়ঙ্গম করিয়া মোহিত হইতেন। সে সময়ে, কাশীহত এক জন মহাবিদান, সন্যাসী ছিলেন। এক জন ও। ক্ষণ তাঁ সার নিকটে গিয়া ভাগণতের অপূর্ব ব্যাখ্যা,কথা শুনাই-रलन। याभी कि छोड़ा दिविवात देखा श्राकाण कतिरल, ভ্রাহ্মণ চাকুর তাহা আনাইয়া সামীজির হঁস্তে অর্পণ করিলেন। স্বামাজি তাহা পাঠ করিয়া অতীব আনন্দ ला'छ कहिरलन। किछ, अक्षे कातरेश जिन गाथिछ ছইলেন। তিনি বিবেচনা করিলেন নে, সংস্কৃত গ্রন্থ সকল মহারাষ্ট্রায় ভাষায় অনুবাদিত হইলে;সকলেই তাহা ' পাঠ করত শারের মর্ম অবগত ইইবে া হতরাং, ত্রাক্ষণ পণ্ডিত গণের ম্য্যাদ। হ্রান হইবে। এই বিষয় আনে।-চনা করিতে ২ তিনি তাঁহার শিষ্যগণকে ফক টীক। গঙ্গায় নিকেণ করিতে আজা দিলেন, এবং, টীকা কঠার নাম অবগত হইয়া তিনি একনাণকে আনিবার জন্য তাঁহার কএক জন শিষ্যকে পাঠ।ইলেন । ই হারা পৈঠলে উপস্থিত হইয়া শুনিলেন যে, একনাথ নাথ-মন্দিরে কথা কহিতেছেন। তথায় উপস্থিত হইয়া এক নাথের কথা শুনিতে লাগিলৈন। কথা শেষ হইলে পর, তাঁহারা স্বামীজীর লিখিত পতা একনাথকে দিলেন, এবং তাঁহাকে কাশীধামে য।ইবার জন্য অমুরোধ, করিলেন। স্বামীজি একনাথকে তাঁহার প্রণীত ভাগ-বতের টাকা লইয়া যাইতে আদেশ করিয়াছিল্রেন। একনাথ, স্বামীজির আদেশ অগ্রাহ্য করা প্রামর্শ- সিদ্ধ বিবেচনা করিলেন না। ভাগবতের টীকার পাঁচ অধ্যায় সঙ্গে লইয়া তিনি কাশীণামে গমন করিলেন । তথায় উপনীত হইয়া একনাঞ্ স্বামীজির সহিত সাক্ষাৎ किशिष्ट बालाएगत भन थागे है किना

इंश्वित निक्र हेरेट नहेंगा शाठ कति हान । शरत, একনাথ্কে স্বামীজী সম্বেধিন করিয়া বলিলেন শে, মহারাষ্ট্রীয় ভাষায় ভাগবতের ব্যাণ্যা করা তাহার পক্ষে উচিত হয় ন।ই। ইহাশুনিয়া একনাথ দীর ভাবে বলিলেন যে, এরপে করাতে ত আরো উভ্নই হ্ইয়াছেণ মাহারা সংস্কৃত ভাষায় বাৎপন ভাগবতামত পান করিয়। পরিত্থ হইবেন । ইংগ অপৈকা আননেদর বিষয়, আর কি হইতে পারে ? বিশেষতঃ শাল্তে ত এ সম্বন্ধে কোন নিষেধ বাক্য নাই। ইছার পর, একনাথের সহিত স্বামীজির নানা শাস্ত্র স্মায়ে তর্ক বিতর্ক হইতে লাগিল। কাশীর পণ্ডিতগণ সে সময়ে উপস্থিত ছিলেন। স্বামীজি তর্ক করিতে ২ রোযান্তিত, হইতেন, কিন্তু, একনাথ অতিধীরভাবে প্রাধের প্রসূত্র দিতেন। 'এক নাথের বক্তাশক্তি এবং বেলাম্ব ও অন্যান্য শাস্ত্রে পারদর্শিতা দেখিয়া ভোতাগণ বিজয়ালিত হইলেন। ঠাহারা একসারে এক নাথকক সাধুবাদ দিতে লাগিলেন। স্বামীজি এক-নাপের কোন ২ প্রাপ্তের প্রত্তির দিতে সক্ষম' হইলেন না। অগত্যা তিনি একনাথের কাছে প্রাভব স্বাকার করিলেন । কাশীধামের প্রধান পণ্ডিতকে পরাভ্র করাতে একনাণের স্থ্যাতি চারি দিকে পরিব্যাপ্ত ছইল। তিনি পণ্ডিতগণের অনুরোধে ত্থায় কিছুকাল অবস্থিতি করিলেন।

0.21×16 1

পৈতৃক্য। (Heredity)

্ভাদ্র মাদের "ধর্ম প্রচাংকে" "জন্মান্তর" প্রবন্ধে পৈচুকত্বের (Heredity) উল্লেখ আছে। খানা-ভাব বশতং ও বিদয়ের বিস্তারিত বিবরণ তথন দিতে পারি নাই। আজকাল পাশ্চাত্য বৃদ্ধিতে আমাদের শাদ্রের আলোচনা করিলে জনেক কথা আধুনিক গণের নিকট সুদস্তত এবং সুস্পান্ট হয়। তাই পাশ্চাত্যগণ-সিদ্ধ

বিগয়ের ভিত্তিতে আসরা "জন্মান্তরের" আলোচনা করিয়াছি। কিন্তু দেই সকল সিদ্ধান্ত গুলির বিস্তৃত পর্যালোচনা আবশ্যক বোধ হইতেছে। সেই কারণে আমরা প্রথমেই পৈছকছের আলোচনায় প্ররত হইলাম। বলিয়া রাখি যে ডারবিণ, ধ্যালেস এবং বাজ্মানে কৃত এই সকলের অনুসরণে এই প্রশ্ন লিখিত হইল। তাথাদের সিদ্ধান্ত এবং যুক্তি দারা ইয়ার কলেবর পরিপুক্ত এবং সেই সিদ্ধান্ত সকলের অনুসমন্ করিয়া আমরা সাম্রানুমােদিত নৃত্ন সিদ্ধান্তের অব-তারণা করিব।

় ্মাতৃত্ব এবং পিতৃত্ব অথবা জীত্ব এবং পুণস্থ নিলাইয়া মকুণ্ হস্তি। মাত্ অভের, গ্হিত পিতৃ বীষ্ট (Sperm) मिश्रानि छ इहेता अफ अमुके ' ७ अशुक्त छेलारत कीत স্ষ্টি হয়। হতরাং অনুমান হয় যে পিড়ুমাড়ুদোসগুণ পুলে সঞ্জিত হওরা সম্ভব । এবং বহুতর পরীক্ষা দারা দ্রীকৃত হইয়াছে যে পুল পিতার আন্ধন্ধ, আকারান্তর সামান্য ভাষান্তর মাত্র । প্রধু তাই নয়, পিতার পাপ পুণ্যের ভাগীও পুঞ্র। এমন কি একজনের **८मार्सिट् बर्श गर्छे इस ; भार्छ २ वर्शन वर्षान्छ, वर्श** ্বংশান্তর পর্যান্ত একজন মহাপাপীর পাপ গুলাহ ছুটিতে থাকে। স্ত্ৰীয় এবং পুস্ত্ব কি তাহ। পাশ্চাত্য কোন বিজ্ঞান দশনের দারা এখনও পরিক্ষুট হয় নাই। কেবল মাত্র আবয়ন পার্থক্যে যে জ্রী পুরুষের নির্দ্ধারণ रश ठाश नार्। तकन ना था छाक की नहें औदि धनेर পু•স্ব गৃক্ত। চলিত ভাষায়ে যাহার। পুরুষ ভাষাদেব জী• শকি সন্মৃত অবস্থায় (Latent form) আছে মাত্র। (मथा शिशार्ष যে অনেক বৃদ্ধা পদী অতি জরাবস্থায় তাহাদের অওস্থালী পরিত্যাগ করিয়া शुक्र स्माहिक वावहारत शर्वेष्ठ रत । हेरारकहे " Secondary sexual character " वरल । भातीतञ्ज्ञिन्श्व, इंहात ज्यानक जाम्हर्या२ घलेंगा उदल्प कतिराज शारतन। ञ्चताः पतिशा लक्षा याजिक जीव जनः शूःख इहि

विकित्र भक्ति विश्वात । ब्रेशता क्रक् भक्ति न रह-मधान कौत-पंक्रि । Protophasm अनः Germ-plasm এই छूडे मजीव की छापू मकरा आयों जगरत छैर शक्ति। निक्जीव জড় শক্তির সন্মিলনে কোন প্রাণীর উৎপত্তি ভদ্নাবণি কোন বৈজ্ঞানিকই আবিষ্ঠার করিছে পারেন নাই। दक्त अगन कतिशा - काशात दक्षतगाश की द्वार शिक र्श, कि इलारा, दकान् अधानूगाशी, कि निगरंग शर्छ ह जान মকুদ্যাকার ধারণ করে, ভাষা বুঝিয়া উঠা কঠিন। लागारनत गर्भा अकृषे। कथा श्राह्म व बार्ष्ट रा श्रुक्तरमत मिक्शिक भूत्रमम् ध्वः नामार्क जीमग्र. अत्त अ मिकियान्। जीगर्गत म्लिगार्च जीग्रा अवः अवन् ९ मिळिगान्, अवर नामार्क्, श्रूक्षममा ९ मच्छू । পাশ্চাত্য কোন বিজ্ঞান শান্ত্রে ইহার বিরুদ্ধ কোন कथाहै नाहे। भातः लुकार्गः । छ। तिवन छूटे कृत्नहे বলিয়াছেন "(In one part of the system the mother in another the father predominates ; certain organ and faculties are derived from the mother, others from the father and in others the parental influence may be equal.)" (य शृतकत भतीत अक জংশে পিতার, অপরাংশে মাতার শক্তি এবল; কোন্ অৰয়ৰ ও মানসিক রতি মাভার অনুকৃল, অপর সকল পিতার অ্মুরূপ এবং জন্যান্য অনেক মাহ-পিছ শক্তি রামঞ্জা সন্তুত। বিশেষতঃ মহামতি ভারবিণ্ ভাহার "Variation of animals and Plants under Domestication " নাম্ক পুস্তকে আয়াদের এই প্রচলিত হিন্দুমতই প্রকার স্থার সমর্থন করিয়াছেন।

বীজ্যান (Weismann) বলেন য়ে " in each individual a portion of the Specific substance derived from the parents is not used up in the construction of the body of that individual, but is reserved unchanged for the formation of the configuration of the succeeding generations." প্রেমান হল । পিতার

मजूनाटक भिकृतक खेलानारनत अकाश्म अकृषिक इस अनः अशताः भ मण्णा हिक शारक अनः जानामी बः म-धतगालत छेरपित कातन वीर्या भूष्टि करत । अहे विषयि বুঝিতে হইলে "Theory of Natural selection " हि त्या छे दिए। छात्र निष्य अहे थित्र ती आधार गरे शास्त्र छा क्रगटक न्याभ्य। कृत्तम । क्षेत्रभाटक हे प्राप्त क्षान्तायुत অমুক্ল শরার ক্রিয়া লয়। যে দেশে শীত অধিক ज्याकात कन्न गठन लागम, त्राहे कन्नहे यावात छन्न थिक्षान दिन दिना मुंगी; शाशादिकत दिन में गुणादिक ग्रेप्स त्लाम नाहे, माहेनितीसास श्वाकारन त्नामपूर्न গণ্ডার পাওয়। নাইত। কিন্তু মকুয়া মনস্বী; জলবায়ৄ-গত• शार्थकात महित मामक्षमा ताशिए इहेरल भी त ध्रमान दिन मालून कि इ लाग्न हर्ने छ हत ना , गरनत উদ্ভাবনী শক্তির দারা এই आভাবের পূরণ করিয়া লয় মাতা। " সংকার তত্ত্বে " মালেচিনার সময়ে আম্রা हेशत विञ्च वाथा कतिन। अभन विलया ताभि एगु अरे मनः भक्ति थारवारण मञ्जरमात मन मश्काता स्थाप रेगा जीवज्ञ खत ननात मञ्दानात भतीत तिनाम विद्राप्त भार्थका हरा न। नर्छ, किन्छ मरनत छम्छि इत, मःकात अवि कारके शृश्के लाशिय। गाम जनः उड्डमा अनमन तिल-ক্ষণাপ্ত কিছু ঘটিরা থাকে। পি্তার মনংশক্তি ও সংস্কারের পুঁটুলি Germ-cells বীধ্য কোমের মধ্য দিয়া পুত্রে নকারিত হয়। পরস্তু মাতৃ শক্তির প্রভাবে, অবস্থা বিশেষে পিতার এই মনংশক্তি ও সংস্কার-এন্থি, নাহাকে শাস্ত্র কারের। " অদৃন্ট " এবং "অপুর্বে" विविधार इन, शूरका कि इत। शतियम् हे इत अवः कि इ বা সম্মোহিত অবস্থায় থাকে। এমন হয় যে পিতৃ বীগে নিহিত গুৰা পিতৃগণের গুও শক্তি মাত্রজোদ্ঞিত মাতামহ অমুকূল শক্তি সংযোগে তাহারা আবার क्षिता छेऽठ। প্রপিতামর गाहा ছিলেন, প্রপোত্র হচাৎ ৎতমনি হইল। পিতার নিজম্ব চাপা রহিল, মাতার

সম্মৃত্ শ্বিকের সংযোগপ্রভাবে বছদিনের ভাপহতে এক অমুল্য নিধি আবার ফুটিয়া বাহির হইল। কেই আপনার মত নৃতন হইয়া জন্ম গ্রহণ করে না, করিতেও পারে না। সহজ্ঞ ২ বৎসরের মাতামহ ও পিতামহ মহা-পুরুষগণ যাহা সঞ্চিত করিয়া জন্মদাতা পিতার সাহায্যে ষে উপাদানে আমাকে এপ্তি করিয়াছেন আমি তাহাই। পরস্ত আবার বিশ্ব খর্ষ্টি-শক্তি দামঞ্জদা দিকেই धीवमान। मुकलाक मभान कतिया, मक्लाक मःयछ कतिया कि जानि कान् পথে, 'आशाप्त छामादेगा লইয়া যাইতেছে। এই ফিয়া শ্রতিফিয়ার সঞ্চাতে অনেক শারীর ও মানস দোষ সামলাইয়া উঠে। তত্তাচ তিন চারি শতবৎসর পর্যান্ত একটা বংশগত দোষ, বা ত্ত্ব বিশেষকৈ পরিক্ষ্টাবস্থায় থাকিতে দেখা যায়। পারদ-জনিত দোষ দাত পুত্র পর্যান্ত থাকে। কুন্ঠ, অমু রোগ, শুল, শীরঃ পীড়া, মেহ, অজীর্ণ (Dyspepsia), বুদ্ধি হীনতা, অমনক্ষতা ইত্যাদি রোগ সকল এক জনের-পাষ্ণভা হেতু পারদ ব্যবহার জন্য নানা আকারে পর ২ বংশধরগণে প্রকাশিত হইয়া থাকে । এক জনের অত্যন্ত মাদক (Alcohol) দ্রব্য ব্যবহার জন্য উনাততা, শীরঃগীড়া, অমুশূল, বিহনলতা, অতিশয় কামুকতা, গ্রহনী ইত্যাদি রোগ বংশামুক্রমে বিকশিত इइ त्व थाक । इंड तार्शत थ्यान २ हि कि शानरा अहे পৈতৃকত্ব জন্য রোগাদির প্রশেষ অন্ত্রসন্ধান হইতেছে। যাহ। সহজ, আজ্মাণুত (congenital) তাহা ছুরারোগ্য। अविभ প্রোগে উপশম হয় বটে, তবে আরাম হ€য়া অসম্ভব। হৃতরাং চিকিৎসকে চিকিৎসা করিবার পুর্বের 📲 ই বিষয়ের বিশেষ অনুসন্ধান করিবেন যে, রোগ পিড় পৈতাঁমহ উচ্ছু খুলতা জন্য পৈতৃকত্ব সঞ্চারিত প্রকৃতিগত (तांग, ज्या ज्या वित्यम जना (यथा महामाती हेलानि দার্বজনিক সংক্রামক) রোগ, কিস্বা রোগীর অনিয়মের ও অত্যাচার জুন্য রোগ। যেমন নিজের দোষে অকাল মৃত্যু হয়, তৈমনি পূর্বতন পূর্বে পুরুষগণের

মহাপাপেও অকাল মুত্যু হয় । পূর্বৰ পুরুষগণ স্থাংবত । নিয়মানুষায়ী থাকিলে, পুট বীৰ্য্য ৫ তেজমী হইলে, বংশধরেরা অবশ্যই পৃষ্ট ও বীণ্যবান হইবে ৷ वालक वीर्यावीन, एडज्यी, निक्रलक निर्माल (मर रहेरल) **এবং নিজে শাস্তাসুমোদিত নিগ্রমে থাকিলে, দেশী**য় খন্য কোন উৎপাত না হইলে, ত। হার অকাল মৃত্যু क्यूनरे रहेरव ना । ताजात भारभ महामाती हेलानि সংক্রামক রোগ হয়, পিতৃ পিতামহের পাপে শিশু রুগ্ন. কতবিশিষ্ট, অল্ল বীর্যা, অল্ল ভোগী ইয়, এবং নিজের পাপে অভ্যাচারী হইয়া যৌবনেই মৃত্যু মুখে পতিত হয়, অথবা চির-রোগী হয়। এই প্রসঙ্গে রামায়ণের সেই প্র হীন ওাক্ষণের গল্প ম্মনে পড়ে। ভ্রাক্ষণ নিজে 'বুঝিয়াছিল যে, ভাহার অথবা ব্রাহ্মণীর বীর্য্যাত কোন দোষ জনা সদ্যোজাত শিশু সকলের মৃত্যু হইতেছে না, তাহারা তুই জনেই নিষ্পাপ এবং ক্রিয়াওণে ইহাও বুঝিয়াছিল যে, পৈতামহ কোন দোষই তাহাদের কাহার ও শরীরে নাই। তাহারা পবিত্র বুংশের পুণ্যবান জीत-युशल। कारगरे विलट्ड स्टेरव (माय तोकात । রাজার ব্যবস্থাঞ্ণে দেশের জল বায়ু পবিত্র থাকে। 'তিনি মাগ মজাদি করিয়। সমগ্র রাফৌর বায়ু নির্মাল রাখিবেন, সংক্রামক রোগের কীটাগু (Bacilli) সকল মরিয়া যাইবে। ল্বন্থ, সবল কায় নিম্পাপ মনুষ্য হঠাৎ মরিতে আরম্ভ করিলে বুঝিতে হইবে বায়ু দৃষিত হইয়াছে, Sanitary Department বে-বন্দোবস্ত হইয়া পড়িয়াছে। ত্রাহ্মণ তাই বুঝিয়া রামচন্দ্রের ছুয়ারে আসিয়া অভিযোগ করিয়াছিল।

কেবল শরীরের উপাই পৈতৃকত্বের ক্রিয়া হয় না।
"Within certain limits the thief steals as the duckling swims, by instinct; the murderer resorts to violence as naturally as a cat hunts a mouse; — virtue is inherited like land or money."
ভারবিণ বলেন যে হংসশাবক যেমন স্বভাবত:ই জলে

সম্বরণ দিরা থাকে তেমনি চোরেও অনেকটা প্রকৃতির তাড়নায় চুরি করিয়া থাকে, যেঁমন মার্জ্জারে স্বভাব সিদ্ধ বুদ্ধিতে মৃধিক স্থীকার করিয়া থাকে তেমনিস্বতএব নর-হস্তা জোর জবরদন্তি অত্যাচারের প্রতি ধানিত হয়; জমি কমা অর্থাদি ঐশ্বয়ের ন্যায় সৎপ্রকৃতি সাধুতা এবং প্রিত্তাও পিতৃদ্ত। পিতৃ পিতামহ ও মাতানহাদির স্ঞিত দোষ গুণের মেমন অধিক।রী তেমনি স্তবৃদ্ধি ও কুবুদ্ধির আমরা অধিকারী। তবে কথা এই যে " pedu-Farities of body or mind when they are not transmitted directly become transformed in passing from one generation to another, +++ what the parent transmits is not his insanity, but a constitutional defect which may manifest itself under different forms. " অর্থাৎ শারীর ও মানসিক Cमास e अन विटमस यथन समाक् आकृषावकास वः मा-ন্তরে সঞ্চারত না হয়, তথ্য তাহারা আক্লারান্তর প্রাপ্ত হয়। উন্মাদ এস্ত পিতার পুত্র যে পাগলই হইবে এমন কোন কথা নয়, তবে পিতার উন্মততা পুত্রে সঞ্চারিত হইয়া, আকারান্তর প্রাপ্ত হয় এবং স্বাস্থ্যগত দেশি রাথিয়া যায়। পৈতৃকত্বের এই আকারান্তর প্রাপ্তির (metamorphosis of Heredity) অনেক দৃষ্টান্ত* আছে। ইউরোপীয় দৃষ্টান্ত না দিয়া আমাদের এই वाऋालातमध्यत छुट्टी पृथ्छे छ पित।

নাম করিব না কোন বাঙ্গালী বাবু বিল:ত গিয়া পুরা সাহেব মাজিয়া, সাহেবী ভাব ভঙ্গি চাল চলনে সম্যক্ দীক্ষিত হইয়া এবং একটি মেম বিবাহ করিয়া এ দেশে আসিয়াছিলেন । বাবু ব্যবহারে সাহেব সাজিয়াছিলেন বটে. কিন্তু বিধির বিভ্ন্ননা চামড়ার ধৌমতা চাঁচিয়া ছুলিয়া উঠাইতে পারেন নাই; তাহার অর্জ্বাঙ্গ ভাগিনী গৌরী. বিভালাকী, কটাকেশী এবং ইংরাজী চক্ষে হুলরী ছিলেন! বাবু দেহত্যাগ করিয়া-ছেন, ভাহার পুত্ত কন্যা ভানেক গুলিন। পুত্র ক্য়টি,

পিতার অপুকরণে অয়ক্ষান্তিকে নিন্দা করিয়া কৃষ্ণ প্রভায় গোরবাখিত হইয়াছেন, তবে বিদ্যায় বৃদ্ধিতে পিতার যোগ্যপুত্র এবং ভাব ভঙ্গিতে পিতা অপেকা অধিকতর সাহেব । কিন্তু আঁশ্চর্য্যের বিষয় এই বে কন্যৰ কয়টি, বিশেষতঃ একটি (যাঁহাকে আনীরা জানি) আকার প্রকারে, শরীর দেখিঠাবে পুরা বিবি হইলেও প্রকৃতিতে সম্পূর্ণ বাঙ্গালিনী । বেমন বীঙ্গালীর গৃহ লক্ষ্মী দেবৰিছে ভক্তি-মতি, আচানবতী এবং সদাই बीए। वगक-मूर्य (जमिन देशि नातिकात प्रदी इहेत्ल स হিন্দুক্ল।চার পকপাতিনী, বাঙ্গালী বসন ভূমণ অনু-রাগিনী, সদাই লচ্ছাবনত মুণী, ভতিমতী, আদ্ধাবতী जानः शिविजा। डाशाक (लिशिलाहे बारन इत (कान হিন্দু কুলাঙ্গণা মৃত সঞ্জীবনী মন্ত্ৰীবলে বিলাতী বিবির শরীরে প্রবেশ করিয়া বাুস করিতেছেন। এখানে বাঙ্গালী পিতার সন্মৃঢ় হিন্দুত্ব কঁন্যায় নঞারিত হইয়। প্রকাশিত হইয়াছে মাত্র।

অপর দৃন্টান্তঃ—একটি বাঙ্গালী বাবুর ক্রিম পুঁম
আছে। জ্যেষ্ঠ ও কনিষ্ঠ স্থবৃদ্ধি, শান্ত ও প্রর্ণপ. সধ্যমটি উন্মত, পক্ষাবাত প্রাপ্ত ও কদাকার। আমরা নিশ্বস্ত
সূত্রে অবগত ইইয়াছি যে, বাবু যথন মদে চ্র ছিলেন
তথন ব্রতপরায়ণা, উপোষিতা পত্নীতে জবরদন্তি
অভিগমন করিয়া এই মধ্যম পুত্রটি জগতে আনিয়াছেন।
আমাদের জানিত এমনতর অনেক গুলি আশ্চর্য্য দৃন্টান্ত
আমরা উল্লেখ করিতে পারি। সকলে একটু অনুসন্ধান
করিলেই এই প্রকার অনেক আশ্চর্য্য ঘটনা জানিতে
পারেন। ঘরে, বাহিরে, পাড়ায় ২ পৈতৃকত্বের দৃষ্টান্ত
আছে। এই সকল পড়িয়া ও ইহার অলোচনা করিয়া
মনে হয় নে, দূরদর্শী ধীমান অর্জ্বন পুণ্যভূমি কুরুক্তে
ভগবানের সম্মুথে মুদ্ধের বিপক্ষেবর্ণ সঙ্কর উৎপত্তির
আশ্বা রূপ মৃক্তি মুক্ত আপতি সত্য মুক্তিই নিবেদন
করিয়াছিলেন।

পিতৃ দোষ্থণ সঞ্চারণের । একটা সীমা আছে,

কেন না " Always striving after perfection, or rather uniformity of type, Nature either purifies a race of its physical and moral defects, or, if the type be too vicious, exterminates it. तारकात निषम ७३ (ग. गर्व मामक्षमा कता. ८ मार्यत ছाम कता। (यगारन मामञ्जमा हत ना. ५नाम सःवत्य ক্র। অসম্ভব, তথায় বিনাশ অবশ্যন্তাবী । সংসারে जातक शारभत वर्ग त्वाश शाह्ताहा । भूतात शरभ ना চলিলে তিন পুরুষ টি কা'ভার। রোগাঁ পিতা রুমা মাতা इहेरल, इस बाजा बक्या इहेरवन, नग कीनजीवी कूहे अकि शृक कि साहा रेगगरवर् मितिशा याहरत्। स्नात ৰ্যন্ধি পিত। রোগী, হন, মাত। সৰলা ও পবিতা হয়েন ভাছা হইবে মাতৃতণে পুজে পিভার দোষ সামলাইয়া याहरत । छन्न भातीतिक त्ताश तनिगतन दहरत ना, বীর্ঘ্যত 🤋 মান্সিক রে।গই মহাপকার সাধক। শারীর দোষ পত্নীর প্রভাবে এবং অবস্থার ও দেশের ভণে भौता ২ নির্মালীকৃত হইয়া বায়। কিন্তু পিতৃ বীর্যাগত ও মানসিক রোগ ধরা পড়া কঠিন এবং উহাদের ফলু 🕏 विषम्य । द्रःभ शतम्भद्रात महाशास्त्रत कल गरनत বিকুতি, সেই বিকৃতি জনা বংশলোপ নিশ্চিত, এবং মহাতঃমের নিদানভূত কারণ তাহাই ८महे कनाहे जागाएमत भारत विवाद वत कनात বিচার এতই অধিক, গর্ভাগেনের এত আঁটা আঁটি ও ভার্যাকে পুজোৎপাদনের নিমিত্ত উপায় বলিয়া থাকে। নরলোক প্রসমাজের প্রতি দৃষ্টি করিলে, বিবাহকে हिन्द्रत ठएक एमशहे खगत्र । आमात शांशशूरणात (वाका (कवन गामिडू वहित ना, আমার বিয়ত্ম পুত্রকেও সেই ভার দিয়া বাইব্। অন্য কেই ভাগ্য-লেশক আছে কি না জানি না। পিতা ও সাতাই প্রের বিধাতা ভাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই। आगारनत कार्यात कना बागता त्यमन आगामी वः-भ क्षृत शर शत निक हे मात्री रङ्ग निश्न श्राहर श्राहर श्राहर विकास स्थापन विकास स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन
দায়ী। তাঁহারা য়াহা দিয়াছেন তাহার হিদাব বুঝাইয়া
দিতে হইবে, এবং পরবর্তীগণকেও তেমনি নিকাষ
ছিতে হইবে। আয়রা অরম্ভ শুঝলমালার একটি শুঝল
মাত্র—আয়াদের দায়িছ অতিশয়। কিন্তু সকলের
মোলের দায়িছ অতিশয়। কিন্তু সকলের
মোলের কাছেং। যদি তাহা পাকিত তবে দেশের
রাজন্য-বর্গ নিঃসন্তান হইত না, অল্লরীয়া হীয়-য়ন্তিজ,
বাক্য-সর্বশ মন্ত্যাধ্যে দেশ পরিপূর্ণ হইত না, এত
শৈশব মৃত্যু হইত না, এমন স্ত্যাচার ব্যভিচার থাকিত
না, এত আহ্বর্রোধ, হিংসা, কল্লয়, য়িথ্যাকথা,
প্রবশ্বনা পাওয়া যাইত না। কি জানি ভবিষ্যতের গর্মের
সার কত তুর্দশা সঞ্জিত আছে, তবে এমনি পাপের
প্রবিহে আম্রা ভাসিতে থাকিলৈ হিন্দু নাম আর অধিক
দিন জগতে প্রচারিত থাকিলৈ বা। ভগরান সে তুর্দিন
হইতে রক্ষা করণে।

শীরুষ্ণ-সংক্পায়ত।

পরিবাদক শায়ক ক্রীক্ষারন্দ সামী মহোদয়ের প্রতিষ্ঠিত "কাশা-বোগাঞ্চনের" পরিত্র শোভা সোন্ধ্য অবলোকন করিয়া রিশেষতঃ ভক্ত বংসলা মা বোগেশরীর দিব্য জাগ্রত জলন্ত মূর্ত্তি দর্শন করিয়া হিন্দু মাতেরেই সদায় পরিত্রত হইয়া থাকে । স্বামীজী মখন কাশাকে অব্যতি করেন, তথন ধন্ম পীপান্ত অনেক জ্রী পুরুষ তাহার নিকট আসিয়া অনেক উপদেশ গ্রহণ করিয়া থাকেন। তাহার সেই সকল সারগর্ভ জপদেশ-রাশির সারাশে দেশ বিদেশীয় শুক্রারু বর্গ শুনিতে নিতান্তই আগ্রহ প্রকাশ করিয়া থাকেন। তাই আমরা " প্রীক্ষ্ণ-সংক্রামৃত" শীর্ষক প্রবন্ধে, ধর্ম প্রচারকের, সম্ভবতঃ প্রতি সংখ্যাতেই জল্লাধিক পরিয়াণে প্রকাশ করিতে চেন্টা করিব।

বিলাস ও বৈরাগ্য।

এক দিন যোগাঞ্জমে সমাগত ভক্ত মণ্ডলীর সংধ্য জ্নৈক ব্যক্তি পরিভাজক সহাশয়কে বলিলেন, স্বামীদ্ধি। আপনার যোগাঞ্জনের শোভা গৈত্রা, সৌন্দর্য্য দেণিয়া কেই ২ বলে যে বৈরাগ্যের লীলাভূমি সম্যানীর আঞ্জাম এত সাজ সজ্জা কৈন! বেশ, বিন্যাস, সাজস্মাজ তো ভোগী দিগেরই বিলাস সম্পত্তি, সম্যানীর আশ্রমে এ সকল ভাল দেগায় না। ইহা শুনিয়া স্বামীজী ঈমদ্ হাস্ত করিয়া বলিলেন, ভাবুক সাধক না হইলে আছি কবি অক্সার ভাব রসেঁ ভূবিতে না শিখিলে মাজের কুপাসিন্ধুর তথা বিন্দু পানের অধিকারী না হইলে বিলাস ও বৈরাগ্যের প্রকৃত চিত্ত পরিক্ষ্ট দেখা যায় না। অন্যে না বুনিয়া আমাকে অকথা কুকথা বলে বলুক, তোমাদিগকে বিলাস ও বৈরাগ্যের গুড়তত্ত্ব ব্রাহিয়া দিই। শ্রোহ্বর্গ প্রকর্প হইয়া শুনিতে লাগিলেন।

শোভা, সাজ, সজ্জা, সৌন্দর্য্য, বা্থ্য্যাদি ভগবানের অন্তর্গিণী শক্তির বিকাশ। ভগবান্ বয়ং পরম ভদার, সৌন্দর্য্যের পরাকান্তা তাঁহাকেই আশ্রয় করিয়া নিত্য বিষ্যমান রহিয়াছে। যেখানে তিনি, সেই খানেই ভাব, हमहे बारनहे ट्यांचा, रमहे बारनहे विकाम, रमहे बारनहे टमोन्मर्या, तमहे थारनहे जम-माध्या, तमहे भारनहे ज्यान-त्मत इत। चित त्रीमाभिनीत नात दौनिया दौनिया° সকলকে আমোদিত করে। যে গ্রাহাকে দেখিতে চায় বা যার, সেই তাঁহার সৌন্দর্য্য শোভায় সেই তাঁহার त्रापुर्या- अजाग वित्याहित हहेशा यानत्म नाहिशा छेत्रे, প্রেমে বিভোর হইয়া পড়ে। যে ঠাহার সমাচার भाइत (महे उं। हाटक मिकन, त्य डं। हाटक ভावित. त्महे विलाम जूलिल, त्य छै। हाटल माजिल तमहे देवतांगा ধরিল, যে তাঁহাকে দেখিল সেই বৈরাগ্য-শৈল-নিঃস্ত প্রেম নিঝ রিণীর ফশীতল জলে ভূবিয়া গেল, আর ভांतिल ना। य ভांतिल तम प्रवित्त नां, य प्रवित्त तम উঠिল ना।

ভগবান্ শোভা ও সোন্দর্য বরপ। তবে শোভা ও সোন্দর্য মন্দ কে বলিল ৮ কে বলিল শোভা সাজ ও সোপর্য্য বৈরাগ্যের বিরোধী, ! কে বলিল শোভা ও ।
সোপর্য্য বিলাদের সামত্রী ! স্বর্গের বর্ণনা পাঠ কর,
দেখিবে স্বর্গ শোভা ও সৌন্দর্ক্যে জরা, দেবতার খ্যান
পাঠ, কর, দেখিবে তাঁহাদের জী অঙ্গে শোভা ও
সৌন্দর্যাধ্যের না। যথন মা অন্নপূর্ণার স্তবে পুড়িবে—

তিকার হার মণি কক্ষণ কর্ণপুর,
কাঞ্চী ক্লাপ মণিকান্তি লসদ্দুক্লে

তথ্যামপূর্ণ বর কাঞ্চন দর্বি হত্তে

ভিক্ষাং প্রদেহি গিরিজে ক্ষ্বিভায় মহামু॥ "

তগন কেমন করিয়। ভক্ত হৃদয় বলিবে—মা আমার বিলাস বেশ ধারিণী। যখন বৈরাগ্যের বিশাল মূর্ত্তি ফ্রট। কলাপ মণ্ডিক ভত্ম ভূষিত শিবের তাওব স্থাব পাঠ করিবে—

> " অণর্বে সর্বে মঙ্গলী কল্পা কলন্ব মঞ্জনী রস প্রবাহ মাধুনী বিজ্ঞাণা মধুত্রতম্। স্মানাস্তকং পুরান্তকং ভবাস্তকং মণান্তকম্ গজান্ধকান্তকং তমস্তকান্তকং ভল্লে।

তথন কোন্ সাহসে বলিবে, যোগীন্দ্ৰ জগদ্ভক বিলাস বিভ্ৰমে পড়িয়াছেন ? যখন শখা চক্ৰ গদা কমল ধারী বৈক্ঠ পতিকে রক্ষ বোদকায় কীরিট, কুঙল, মালা, চন্দন চর্চিত দিব্য অঙ্গে পীত পটুবাসে অংশা-ভিত দেখিতে পাও, তখন কোন্ বৃদ্ধিতে বলিবে বৈক্ঠ বিহারী বিলাস বেদীতে বিশ্লাম. করিতেছেন ; যখন নারায়ণ স্তব কালে—

" ঘন নীরদ সন্ধাশ ক্বত কলিকল্মধনাশ।

যমুনা তীর বিহার ধৃত কৌস্তভ মণিহার

পীতাম্বর পরিধান হার কল্যাণ-নিধান॥

নারায়ণ জয় গোবিন্দ হরে॥ ''

शांठ कतिरन, ज्यन कि मांधक विलाख शांतिरन, र्य नावायन माक मञ्जा कतिया विलाम दिन धांतन कित्या-एकन ! त्य निरक द्वानजाव दम्भिदा, त्यहे निर्कहे दमीम्मर्या—दमहे निर्कहे यूनीकन मरनार्शाज अनिद्य েশোভা--প্রভা প্রতিভা বিতরণ করিতেছে । যেগানে **८म्द** श्वा ८मरे शात्मे ८७। श्रवित मञ्जार भूत्रात इंडेग्रा थारक । तुन्तरेवर्तनतः सन्ति द्व २ मर्गन कत्, काशीत প্রতি দেব।লয়ে গমন কর্র, দেখিবে খোভা সৌন্দর্য্যের বেলা বসিয়াছে। যে সৌন্দর্য্য বুমে না, সেই বিলাসী, বে এর্ড সোন্দর্য ব্ঝিয়াছে, বে সোন্দর্যের সাগরে ভূবিয়াছে দেই মজিয়াছে দেই বৈরাগ্য আত্রয় করিয়া-ছে। यে भीन्मर्यात जञ्जून निर्मान जान व्यवशास्त कतियाद्यः, त्मेरे भा वाष्ट्रिया मत्नत मयला धुरेया निर्मन चन्दत रहेशा नक्षांनी माजिशाह । यात भीनशा रवाय नारे तम मनिन मःमात छा छित्रा मन्त्रामी रहेत्व কেন ! স্ম্যাসী যত হলের ভাল বাদেন এত আর কেহ वारम्ना। श्रमादात अञ्चलां विलास है मन्नामी महाला **নাটা মাণা ছার সংসা**রের সাজ ছ'ড়িয়া ঝর ঝরে দিগম্বর পরিধান করেন, ফুলরকে ভাল বাসেন বলিয়াই महाभी माजा भाजा भाषात द्याया दर्भावा वित्रकात পারে বিলায়-ভবন রচনা করিয়া থাকেন, সম্যাসী অন্দর দেখিতে ও হুন্দর হইতে ভাল বাসেন বলিয়াই মৃত্র পুরীষ, কেদ, রস রক্ত খেদ, মাংসমজ্জামেধ যুক্ত নশ্বর দেহ ভেদ্ করিয়া মুক্তি মার্নো চিদাকাশে শুভন্তু নিবাদে আন্ধন্ধানাভ্যাদে নিরত থাকেন। বিষয় বিরাগীর মত-শুদ্ধ সম্যাসীর মত "শোখিন " (সোল্ব্যা প্রিয়) আর নাই । ইন্ধনে মৃত পরিমাণে রদ থাকে, তাহা জালিলে তাহা হইতে ততপরিমাণে ধূম নির্ণত হয়, ঐ धूम हत्क नागित्न हकू बतन । जन नत् । जरे जन टमीन्नर्ध्य यनि विश्वक्ष ना हरा, अथवा ट्रमोग्नर्थ्य अकारभव व्याधारत यञ পরিমাণে মলিন উপাদান शाकिरव, धुरमत न्यांश के मलिनारम कीरवत मन्यूर्य मलिन विलाम वृद्धित উদ্রেক করিবে এবং ভাবী হুংখের সূচন। সঞ্চার করিয়া দিবে। আর বিশুদ্ধ উপাদান হইতে * সূর্য্য কোটি প্রতীকাশং চক্রকেটি স্থশীতলম্ "দীপ্তির ন্যায় বৈরাগ্য बन खर ज कि छ। मिल इहे एक बादक। स्मीमधा वृद्धिहै।

ममाभी कारम देवतारगीत है भी भना करिया (मम् ट्यम—ভाল वामा कीव थ्यवारकत मृत छेशामान। এই ভাল বাসাই জীবকে ভোগ বিলাদে অনুরক্ত করে. এই ভালবাসাই জীবকে সংসার ত্যাগী বিষয় বিরাগী অনুরাগী ভক্ত করে। প্রেম তরঙ্গিনীর আঘাটায় পড়িলে মানব বিলাসাবর্ত্তে ডুবিয়া মারা যায়, আবার অকুরাগের বাঁধা ঘাটে নামিয়া নাহিলে বৈরাগ্যের ত্রশীতল জল প্রবাহে ত্রিতাপতপ্ত ৯ দুয়ে শাস্তি দার্ভ करत । रेवताशा ভालवामात सम्मृत तम এवः विलाम ''.ভাশবাসার * শিটা। স্নচ্ছুর ব্যক্তি গণ ভাল বাদার—সোন্ধ্যানুরাগ রূপ কল্লভরুর শীত্র ছায়ায় বসিয়। বৈরাগ্যের বাভাস িভোগ করেন, জার বিষয় বিমৃত্ মানবগণ সেই ভালবাদার তরভলে বিলাদ বিজ্ঞম রূপ পিপীলিকার দংশনে ভালায়তন হয়। শোভা সৌন্দর্য্যের তো দোষ নাই—অনধিকারী कौरवत क्रमग्रहे मकल (मारमत आकत । खेग्र ममस्टहे উপকারী বটে, কিন্তু অযথারীতিতে প্রযুক্ত হইলে ভাষা অপকারী বলিয়া বোধহয়। বস্তুতঃ প্রেম—ভালবাদা— আদক্তি—অনুরাগ পদার্থটী ভাল, কিন্তু অয়থা স্থানে— অংযোগ্য পাত্তে—অনধিকারে ব্যবহৃত ইইলে কুফল প্রসব করে। তুমি গুরুকে ভাল বাসো, শাস্ত্র ভাল বাসো, विष्णा, छान, मरकर्य छाल वारमा, मा अन्नशृशीरक ভাল বাসো, শ্রীরাণাকৃষ্ণাদিকে ভাল বাদো—ভাল-বাসা এখানে হুফল প্রদান করিবে । আর ভূমি মদ भाहेरक, त्रभानम गाहेरक, चानात धन नहेरक, माधू निमा कति एक वा वाशर क्षाय हिना कि जान वारमा, ভাল বাসা ভোমাকে কুফল দান করিবে। অভএব ভাল বাসা বা অমুরাগের দোষ নাঁই, দোষ লোকের ভালবাসা প্রয়োগের। রূপ ভাল বাসিতে ইচ্ছা হয়, ভাল বাদো—প্রাণ ভরিয়া সাধ মিটাইয়া ভাল বাদো। হ্রপকে ভাল বাসো-ক্রপকে ভাল বাসিও না ৷ **रियमन किकी मिकी दिनात ! निन्दूरत स्मर्धत आ**खा

माँ फ़ारेल भामनर्ग मूगड अक्रू छे ज्जून (मगाय, तमरे क्रभ रय क्रभ रमिथल—रय क्रभित मिरक मन लाग णानिया जिल्ला नयन था। भारत भी उन इस-आगि क् इहेशा ए त्य क्रभ (पिश्ल चार्गि छ इहेशा मांडाहे. তাহাই ম্ব-রূপ, আর যাহা দেখিলে আমি ম থাকিলেও কু হইয়া দাঁড়াই, অথবা যাহা দেখিলে কু আমি আরও ष्यिक कू रहेशा भौकारे, 'ठाशाक लाक स कुन ়বলিলেও খামি তাহাকে কুন্দপ বলি। যাহাতে হাত मित्म जामात हाउँ मिन हहेशा याश, छाड़ा (य अक: गिनन, जाशास्त्र मास्त्र नाहे।यहि ज्ञान दिन्दा हेण्डा হয়, তবে মা অন্নপূর্ণার রূপ দেন, এরাধা-কুফের রূপ. শ্রীরাম-জানকীর রাক দেখ। পরিবাঞ্জকের मशीरा थ। एडु " बहे तत्र गौगरत पूर्वल शरत. गिरहे ু নাম রূপের - চেউ আপনি । নায়িকা বৃদ্ধিতে যুবতীর রূপে, মমতা বুদ্ধিতে পুত্র কন্যার রূপে মুগ্ধ इडे ७ ग, छ। दार छ ८ छ। यात यन यानिन इहेशा , याहे रव, **এই** जना अनकत तल क्तल - चात ভगवारनत तलहे "স্তরূপ "। যাঁহাকে ভাল বাদিলে আর কাহাকেও चान वानिएक देखा हा ना डांशाक चान वारमा। তাঁহাকে প্রাণ ভরিয়া ভাল বাসিলেই সংসারে 'বৈরাগ্য' বুদ্ধির উদয় হয়। অত এব ইহাই দিদ্ধান্ত জানিও যে, বিষয়ে ভাল বাসার নাম " বিলাস " ও ভগৰানে ভাল व।मात नामहे " देवताशुं"। भाल वामात मिलनाः (भत नाम विलाम ७ विश्वकारभात नाम है दिवागा। त्नाक (एथारन) माज मण्डा जारिशत नाम रेवताशा नरह।

সাজ শোড়া ভোগীরও আছে, সাজ শোভা সন্নান্ত যোগীরও আছে। অলকারাদি পরা যেমন ভোগীর সাজ, অলকারাদি না পরাই তেমনি বিরাগীর সাজ, অলকার না পরিলে যেমন ভোগীকে ভাল দেখায় না, অলকার পড়িলে তেমনি বিরাগীকৈ মানায় না। যে অকুলির নাম নাই, ভাহাকে অনামিকা বলে, কিন্তু বিবেচনা করিয়া দেখিলে, "অনামিকাই" তাহার

নাম তৈমনি সাজ-শোভা না থাকাই বিরাগীর সাজ-ও শোভা। তৈল কড্লুলাদি যেমন ভোগীর শোভা, ভন্ম বিলেপনাদি ভেমনি সন্ন্যাণীর শোভা । যাহাতে यारा, मानाय, यादारा वाहात कांक रय, छ। दाहे छाहात সাজ। সাজ নাই, এমন কেহই নাই। এখন বুঝিলেতে! माज शिकित्वर विवामी श्रांना ! (य मार्ज विवाम বুর্দ্ধির উদয় হয় তাহ। ত্যাগ করিবে, যে সাজে বৈরাপ্ত বুদ্ধির চল্ডেক হয় তাহাই ধারণ করিবে। একণে যোগাশ্রমের সাজ শোভার বিচার কর। ইহার অধিশরী মা, যোগেখরী, নানা র্জাভরণ ভুষিতা। তোমার অবস্তা মেয়েটাকে দেখিলে যে শ্রেণীর ভাল বাসার• উদয় হয়, এই স্বাচ্ছতা মাকে দর্শন কুরিলে যে শ্রেণীর ভালবাসার উদয় হয় না ; এরূপ পদিলে সংসারে অনাসক্তি ও বিরক্তি এবং ভাগবতী ভক্তির উদয় হইয়া থাকে। এ সাজ সাজাইতে — এ সাজ দর্শন করিতে কোন্ভক কোন্তপখী না ইচ্ছ। করেন 🧈 এ সাজ কি বিলাস বুদ্ধি প্রণোদিত ? • অপ্রিমের প্রত্যেক ঘরে দেব লীলা, যাগ যজ্ঞ, সাধু তপস্বী, ভক্তোদ্ধারাদির বিচিত্র চিত্রাবলি আছে । বাবুদের বৈঠক খানায় যে বাইজীর মেম সাহেবের, বা কুকুর বিড়ালাদির ছবি থাকে, এতাবৎ ভাহা নছে । ইহার একএক থানি চিত্ত মহাভারত, রামায়ণ, এমদ্রাগবৎ, রহদারণ্যক উপনিষদ্, পুরাণ, তন্ত্র ও বেদ মন্ত্রের প্রতি-লিপি মাত্র। ভাগবদাদির অধ্যায় ২ পাঠ করিয়া যে উপকার হয়, সময় বিশেষে যেগাপ্রমের এক ২ খানি চিত্র নিরীক্ষণ করিলে তদপেকা অধিক পরিমাণে জ্ঞান. ভাবের উচ্ছ্বাদ উঠিয়া থাকে। কবির কবিতা ও চিত্ত⇒ করের চিত্র পট একই জিনিষ । কবি শব্দের দারী, চিত্রকর রূপের দ্বারা ভাবের বিকাশ ও বিন্যাস করিয়া থাকেন। যোগাঞ্জমে বসিয়া রলিতে পারি, প্রভো । (य मितक कितारे णाँ। शि, ८गरे मितक द्वामातक तमिश।" व्यत्नक मिन गांधन। कतिशा मानव त्य छाव, थांथ, रन

নাই, এণানকার এক ২ খানি চিত্র দর্শনে এবং ভাহার व्यनिशास जार। नाज इहेगा थाएक। कछर माधक आछा-ৰতের এক ২ থানি চিত্র দর্শন করিতেই গলদশ্র নয়নে ख्यायाम् स्वातं कित्यार्टिन। (मिश्रा न अ, रवाशाध्यास खि अनार्थ हे ज्ञावस्तात्वाकी शक कि ना । मनामीता बढ़ कवि, बढ़ छत्रिक, छ। है 'मन्त्राभीत' कन साहे अन्त **ज़ीनात অভিনয় ह**रेशा थारक। या आयात आनन्त्रशी, মা আমার বৈষ্ণাক্রন-বিনোদ বালা, ভাবম্যী মা ভাবের कत्रक वाशनात निरक की वरक वाकर्षण कतिशा थारकन । ্য ভাবের উচ্ছ্যাদে উ। হার দিকে জীবের গতি হয়, ভাষাই বৈরাপ্য, আর যাহার আবেগে জীব তাঁহাকে ভূলিয়া ধ্য ভাহাই বিলাস। যোগাঞ্মের পবিত্র ে শোভা বিলাস বিদ্ধিনী নছে, এ শোভা ভক্তি মিঞিত क्कान देवतारगातह महवामिनी। त्य मकन हिन्ह जिल, कान, देवतारगात छेकी शक, रम मकन हिरू कि मन्नामी शक चानत कतिहा थारकन। अभारन त्यात्र वानिएछत উত্র বৈরাগাণবা উদাস্ত দেখিতে পাইবে না, গীভার প্রেম মাখা বৈরাগ্য মা যোগেশরীর চারু চরণ আগ্রয় করিয়া রহিয়াছে। বাহা অধোগতির অনুকুর্ল ও ভগব-क्षर्भट्यत वाधक, छाटाहे " विनाम " अवर वाटा मरमाता-দক্তির প্রতিকৃষ ও ভগবদ্দনির সাধক তাহাই বৈরাগ্য। (संशादन दक्षण नारे दम शादन देवताना नारे, दय शादन ख्यवम् छाव विलाम चारकः ८महे थात्न हे देवतागा विमामान । रिवताशा मतः ভृमित উত্ত বালুকাম্বণ নছে.— উহ। ख्रावर (थ्रम निष्कु मध्या छ्राजीत छ्र्या कूल विन्ना জানিবে। দেমন মৃতপক ছানা বড়া খাইতে ভাল नारा ना, अहा तरम पुनारना श्हेरलहे जान नारम, रमहे क्रम देवताशा (करल जेमाया ७ जान मृतक इहे(लहे खाल इस ना, खेरा खगतर ८ श्रम तरम खुत् २ द दा। **हा** है। म्भारत रेवतांशा ठारे. किन्त ज्यवान ज्यूतांश ठारे । श्राद्य अमुबारगत नाम " विलाम" अवः ভशवादन THE TRACE SEE SEED WHEN THE PARTY WE SEED THE

তিনি ভগবদ্রস বিলাসা ইইয়া থাকেন। তথনই বিলাস ত বৈরাগ্যে দশ নিটিয়া যায়। অদ্য এই থানেই বিশ্রাম।

আমরা পরস আহলাদের সহিত প্রকাশ করিতেছি

যে, দিনাজ পুরের পরম ভক্ত হিন্দু • সাবিক দানশীল

শীযুক্ত মহারাজা গিরিজা নাথ রায় বাহাত্বর কলিকাতার

অপ্রসিদ্ধ করিরাজ শ্রীযুক্ত অবিনাশ চক্র করিরদ্ধ মহাশরের চরক • অপ্রস্তের প্রচার কার্য্যে নগদ ২০০ তুই

শক্ত টাকা সাহায্য প্রদান করিয়াছেন এবং ঠাহার
পুস্তকাবলীর প্রত্যেক এক কাপি গ্রহণ করিয়াছেন।

হিন্দু হইয়া ঘাঁহারা লুপ্র-প্রায় হিন্দু শাস্ত্রাদিন উদ্ধার
করে এরপ মৃক্ত হস্ত হন্, 'ঠাহাদের প্রশং সা আমরং
শক্ত মুখে করিতে পারি না।

श्दर्भा ९ गत्।

ध्याग ।

১। বিগত ২৫ এ ৫ ২৬ এ মাঘ শনি ও রবিবার চুই
দিন ধরিয়া এলাহাবাদ কর্ণেলগঞ্জ হরি সভার বার্ষিক
উৎসব হইয়া গেল। উৎসবে শ্রীমন্নারায়ণের পূজা,
দিক্তি দিগকে দান, জীমন্তাগবদ্ ব্যাখ্যা, হরি সংকীর্ত্রন
হইয়াছিল। পরিব্রাজক শ্রী শ্রীক্ষানন্দ স্বামীজীও
নিতাত অপুরুত্ব হইয়া তথার গিয়াছিলেন। তিনি চুই
দিন হুললিত হিন্দী ভাষায় ধর্ম ও উপাসনা তত্ত্ব বিষগিণী বক্তা করিয়াছিলেন। শ্রোত্মাত্রেই আনন্দ
পূর্বক এই কথাই বলিতে লাগিলেন যে এলাহাবাদে
এরূপ ধর্মার্থ যুক্ত সারগর্ভ ও হ্মাধ্র বক্তা তাঁহাবা
আর কথন। শুনেন নাই। এই বক্তায় ছিন্দুনানী
বর্মের অক্তিশ্য উৎসাহ ও উদ্যম বাড়িয়াছে।

कानभूत्र।

২। ২৫এ ও ২৬এ দায় কানপুর ছরিস্ছার সাধং ক্রিক উৎসাই সামার প্রকৃতি সামার ক্রিয়া ক্রেয়া প্রকৃতি পাঠ, আক্ষা ভোজন দরিন্দ্র দিগকে দান, ও বক্তাদি শ্বারা পবিত্র উৎসবের গোলব প্রকাশিত হট্যাছে। ভগবান্ সর্বাত্র ধণ্য-ভাবের উন্ধৃতির সন্বাবস্থা করিয়া দিন।

বিগত ১০ই পৌৰ বুঞ্জাতিবার হইতে ১৩ পৌৰ রবিবার প্রয়স্ক্র তেলেহাটা আঃ ধঃ প্রচারিণী সভার পঞ্চম সাধৎসরিক উৎসব নির্কিন্দ্র সম্পন্ন হইয়াগিয়াছে। পণ্ডিত প্রবর ঐয়ুক্ত শিক্ষান্দ্র বিদ্যার্থন মহাশয় দুয়া পরবশ হইয়া अहे छैदगर्व छंडाभगन कत्र इ. इ. लिख, मात्र १ एड-विनी वक्कांस প্রত্যেক 'শোলাকে স্থান্তিত ও আয়-বিস্মৃত করিয়াছিলেন। বিশেষতঃ শেষ দিবসের ছয় ঘণ্টা ব্যাপিনী (রাসলীল। সমন্ধে) ভুলন্ত বজুভায় যে অসাধারণ ক্ষমতা প্রকাশ করিয়াছেন। তাহং বর্ণনাতীত। ধন্মগত আৰু ভক্ত সম্পাদক জীয়ক্ত ভোলানাথ চক্ৰবৰ্তী মছাশ্যের চেফী। ও যত্র অতীব প্রশংসনীয়, যদিও ভিনিন অল বয়ক, ঠাহার কার্যা কলাগুলিখনেক রজেও অসুকর-ণায়। কেবল হাঁহার একার সঁত্রে পরম প্রদ্ধান্দল শ্রীযুক্ত, জীকুণ্যানন্দ সামী, জীম্কু লিবচন্দ্ৰ বিদ্যান্ব, জীব্**ক** कुछ्छमाम द्वमान्ड नागील, ङीहुङ अस्मिकाहत्व विकातिङ ও গ্রান্য মহাপ্রাপ্র এখানে পদার্পণ করত ধর্মো-পদেশ দানে আমাদের আআকে পরিত্ও, করিয়া बार्टकन । एकेंग्ले सम्मा मध्याम नरह, गाहार छ मर्द्यात भरत्र गत्त्र भागाकिक e खानीत छित्रहि इस तम निगरसाध ভোলানাথ বাবুব বিশেষ যত্র ও চেটা আছে । আমরা কার-মনো বাক্যে খাখনা করিতেছি,জগদীশর ভোলানাথ বাধুর মত উল্লোখাও ৯দরবান পুরুষকে দাঁঘ-জিবী। 작곡이 1

गगालां हन।।

১। "উপদেশ কথা" এবং "নিশীথের অশ্রন্ধারা"। এই ক্রিণ্ডা পূর্ণ পুস্তক ছই থানি ধর্ম্মোৎসাহী শ্রীপুক্ত রাজা শশিশেগরেশ্বর রায় মহাশয়ের বিরচিত । ছল্পোন্মের স্থানে ২ সামান্য ২ দোষ থাকিলেও ক্রিতা গুলি অতি অ্নপুর ও মনোহারিণী হইয়াছে। পুস্তকের পত্তে ২ ছত্তে ২ রাজা বাহাছুরের উচ্চ হদয়তা, সনাতন ধর্ম্মনিষ্ঠা, স্বদেশাসুরাগ, ভগবদ্ধক্তি আদির অস্পাই পরিচয় পাওয়া যায়। ক্রিতা গুলি পড়িতে ২ আরও পড়িতে ইছা হয়। প্রকাশকের পরিশ্রম মার্থক ইইয়াছে।

২। " জ্ঞান তৰু " এবং " তৎ কম্পদ এদীপ "। এই হুই খানি পুস্তক ভিক্ষু জ্ঞানানদ গিরি পরিব্রাজক নহোদর কর্ত্ব প্রণীত। নীতি, ধর্ম ও জ্ঞানের অনেক নিগৃত কা। তানিট ও জললিত কবিতার এথিত হইয়া-ছে। কবিতা ওলি সরল ও রস মাধুনী পূর্ণ। ইহাতে অনেক কাজের কথা ও ভাবের কথা আছে—১রচন। নৈপুণো পাণ্ডিতাও যথেন্ট লক্ষিত হয়। মূল্য প্রত্যেক খানির চারি আনা।

বিজ্ঞাপন।

শ্রীযুক্ত শিরচন্দ্র বিদ্যার্থর কর্ত্তক ব্যাখ্যাত : প্রকাশিত পুস্তকারলী।

তন্তত্ত্ব — (১২শ সংখ্যায় ৯৬ ফলান্ন সম্পূর্ণ হইবে। ৯ম সংখ্যা পর্যান্ত প্রকাশিত হইবাছে। বাঁকী ও সংখ্যা ও শীছই প্রকাশিত হইবে।) গ্রন্থ সমাপ্তি না হওয়া পর্যান্ত মূল্য ৩২। ডাং মার ১১০।

তন্ত্রশাস্ত্র এবং তান্ত্রিক মাধনা সময়ে আভ কাল माधातन मञ्जूषारा त्य मकल कान्ति मन्धा पिन पिन वस्त मृल इंटेंट्ड्डिंग मध्मात्वरार्यंत मात्र देवनशिक दलारकत চকুতে অলৌকিক স্থিন ধর্মের গভীরগর্ত্ত মাধনা ও মিজিতভ্র সমূহ দিন দিন ৰে সকল কদ্ধ্রাখ্যায় কলুমিত, গুরুপদেশ ব্যতিরেকে নিজবুর্ন্ধিনীমাণ্যায় দুষিত এবং নাস্তিকভার রূপান্তর আধাোগ্রিকবাদে অলীক বলিয়া। প্রতিপন্ন হইয়া ডটিতেছে, যুক্তি তর্ক বিচার দারা মেই সকল সংশ্যের সমূলে উচ্ছেদনপূর্বক মথায়াধা শাস্ত্রীয় নিগৃঢ় সিদ্ধান্তের উত্তাবন করাই এই বিস্তুত এত্তের প্রধান উদ্দেশ্য। যে দকল তত্ত্ব ইহাতে ব্যাখ্যাত হইতেছে তাহার সংক্রিপ্ত তালিকা এই--(১) তল্পের মাবি-ভাব ও উপযোগিত। (২) তন্ত্রপ্রামাণ্য বিষয়ে শাস্ত্রীস্কর সম্মতি (৩। গায়ক্রীতত্ব ও নাকরি উপাসনা শেক্তিতত্ত্ব) (৪) মন্তর (৫) গুরুতর (৬) শিষ্লাফণ (৭) সাধারণ উপাসনাতম (৮) বীবাচার, পশ্বাচার প্রস্তৃতি আচার ভেদ (১) প্রথমকার (১০) শব সাধ্যাদি ও মারণাদি ঘটকর্ম (১১) তাল্লিক গৃহস্থ ধর্ম (১২) मामक-मश्मात (১৩) তাজিक मधार (১৪) वरेटकर्टन (১৫) তীর্থনাত্রা (১৬) অফীন্ন প্রভৃতি বোগ (১৭) শাক্তশৈব বৈষ্ণৰ প্ৰভৃতি প্ৰেণ্ণাৰ্যনার সমন্ত্র (১৮) শক্তিলীলা (১৯) माधरकत यस मिक्ति । जीदशुक्ति (২০) তাল্লিক সাধকগণের সাধনা ও সিদ্ধি রভান্ত। এই বিংশতিতত্বের প্রসন্থান অন্যান্য বিষয় সকলও ব্যাখ্যাত হইতেছে।

क नत्मा जगवरं वीक्रान्याम

धर्म श्रा श्रा तक।



" কুলং পবিত্রং জননী ক্বতার্থা বস্ত্রন্ধরা পুণ্যবৃতী চ তেন অপার সন্ধিং স্থাসাগরেমিন্, লীনং পরে ব্রন্ধণি যাস্য চেত॥

১৪শ ভাগ ১২শ সংখ্যা " এক এষ স্কন্ধশ্যো নিধনেহপ্যস্থাতি য:।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্যমন্যত্ত্ব গচ্ছতি॥"

শকাব্দা ১৮১৩ চৈত্ৰ মাস

যাত্তবন্ধ্য সংহিতা। (প্রাক্ষতি)

শ্রান্তং সন্ধাহনং রোগিপরিচর্য্যা হরার্বনং।
পাদশোচং দ্বিজ্ঞা জিফ মার্ল্জনং গোপ্রদানবং ॥
শ্রান্ত ব্যক্তির শ্রমাপনোদন, রোগীর পরিচর্য্যা,
দেবতার অর্জনা, দ্বিজাতির পাদকালন ও উচ্ছিফ
সার্ল্জন করিলে গোদানের ফল লাভ হয়।

ভূদীপাংশ্চাম বস্ত্ৰান্তন্তিলদৰ্পিঃ প্ৰতি প্ৰয়ান্। নৈবেশিকং স্বৰ্ণধুৰ্য্যং দহা স্বৰ্দে মহীয়তে ॥

ভূমি, দীপ, অন্ন, বস্ত্র, জল, তিল, মৃত, অনাপ্রিতকে আঞ্র, গৃহস্থাঞ্ম জন্য কন্যাদান ও স্বর্ণ সমন্বিত ব্রুদদান করিলে স্বর্ণলোকে পূজা প্রাপ্ত হয়।

গৃহণান্যাভয়পান ছত্রমাল্যাকুলেপনং। যানং বুক্লং প্রিয়ং শয্যাং দছাত্যন্তং স্থী ভবেৎ॥

গৃহ, ধান্য, অভয়, পান, ছাতা, মালা, চন্দ্নাদি অনুলেপন, যান, রুক্, শ্যা ও এহীতার প্রিয় বস্তু দান করিলে দাতা অত্যস্ত স্ব্ধ প্রাপ্ত হয়।

न्द्रभग्नेमाः बक्त धनात्माण्डाश्मिकः यठः।
क्रमाः नुमनाद्योजि बक्त लाक मनिहारः॥

* সর্বর ধর্মময় বেদ দান করিলে [অধ্যাপনা করাইলে] সমধিক ফল লাভ হয়। অতএব বেদ দান কারী অবিচলিত ব্রহ্মলোক প্রাপ্ত হয়।

প্রতিগ্রহ সমর্থেছিপি নাদত্তেয়ঃ প্রতিগ্রহং।
যে লোকা দানশীলানাং সঁতানাপ্রোতি পুজলান্॥
প্রতিগ্রহ যোগ্য হইয়াও যিনি প্রতিগ্রহ না করেন,
শীল ব্যক্তির যে ২ দান লোকে গতি হয়, তিনিও তৈথে,
সমুদ্য শৌক প্রাপ্ত হয়েন্।

কুশাঃ শাকং পয়ো মৎস্থা গদ্ধাঃ পুল্পাং দধি কিতিঃ। মাংস শয্যাসনংধানাঃ প্রত্যাখ্যেয়া নবারিচ॥

কুশা, শাক, হুগা, মৎস্থা, গন্ধান্তব্য, ফুলা, দধি, ছুমি, মাংসা, শায়া, আসন, গিদ্ধ চাউল প্রভৃতি বস্তু শক্ততে দান করিলেও কথন প্রত্যাশ্যানু করিবে না।

অযাচিতান্বতং গ্রাহ্যমপি তুক্ত কর্মণঃ। অন্যত্র কুল্টায়ও পতিতেভ্য স্তথাবিদঃ।

বিনা প্রার্থনায় চুক্ত কর্মকারীর দান ও এইণীয় পরস্ত ব্যভিচারিণী, ক্লীব পতিত ও শক্ত অ্যাচিতভাবে দান করিলেও গ্রহণ করিবে না।

रमन। जिथा र्कन कृत्क शक्त एका थि रमनह । नर्काकः व्यक्तिगृज्जीयाना स्वाह्म विकास দেবতা ও অতিথির পূজা, গুরু ও ভৃত্যের নিমিত এবং লাগ্ন পোষণ জন্য সক্তেই দান গ্রহণ করিবে।

ত্রে মশঃ।

সংস্কার তত্ত্ব।

মনসীতাই মনুষ্যকে জীব জগতের সর্কোচ পদে অধিষ্ঠিত করিয়াছে। আমাদের চিন্তা-শক্তি আছে, ত[हे चामता मर्न्द श्रमान-चामता मनूर्यो। हेउत कुछ मकल (म: १), चर्न, चकु चेव करत व्यवः जरका । र मकन কথাই ভুলিয়া যায়। আঘাত করিলে যতক্ষণ বেদনার তীত্রতা থাকে ততক্ষণ ক্রন্সন করে, কিন্তু শরীরের ব্যব। ब्रुं। हेरन हे नकन ताना हे हुकि शा या श ; हुर्यन मि छुरक কোন রেখাই অঙ্কিত হয় না; স্মৃতির ক্রিয়া অতি অল্লই থাকে। ইঠর জন্তরা সংকার শূন্য বলিলেও হয়। তা शामित महज भातीत छावहे खेवन। याश हहेरा प्रशूत আশন্ধা আছে, যে ব্যাপারে শরীরের অনিষ্ঠ সম্ভব ভাহা ইহার। অনেকটা বুঝিতে পারে। কিন্তু ইহা শিক্ষা এবং চিন্তা জীনিত নহে; সহজ এবং শরীরজ । ইংরাদাতে বলৈ Instinctive, যে জিয়া দারা এই সহজ পশুজান সংস্কৃত হইয়া মনের বিকাশ হয়, এবং মনের বিকাশ হইলে পেশী শক্তির হ্রাস হইয়া মস্তিকের পুষ্টি এবং মূণাবয়ৰ প্ৰক্ষুটিত ও ভাৰযুক্ত হয়, যে জিয়া দারা শরীরের ও মস্তিকের • হৃদ্যেসকল রতি পরিম।চির্ন্ত 👁 পরিপুন্ট হইয়া বিকশিত হয় তাহাই সংস্কার ক্রিয়া। हेहात उद्दे अथन कारलाहा।

দ্বামাতেই স্থানি নিয়ন । পাশ্চাতাগণ ইহাই
বুনিয়াছেন এবং জগতকে তাহাই বুঝাইতেছেন ।
কিল্জ ক্ষুত্রাতিক্র অপুনীক্ষণে দর্শনীয় কীটাণু হইতে
বিশ্বিজ্য়ী মনস্বী সন্থা পর্যান্ত সকলের মধ্যে একটা
ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ আছে । পরিমাজ্জিত, পরিবন্ধিত এবং
সমুন্ত হইয়া সন্থা উৎপদ্ম হইয়াছে মাত্র, অনন্ত
শৃগ্ধানায় সব আবদ্ধ; অনন্ত শক্তির প্রেরণায় তাবৎ

পরিচালিত হয়। তাই মনে হয় অনস্তকাল হইতে সকল পদ। थे इं रुष्ठ इहेश। चार्ह । मुख्यतत धाराण नाहे. নৃতনের স্থানও অসম্ভব । কারণ, স্প্তি অনন্ত সীকার করিলে, যাহাঁ আছে তাহাই, নূতন নহে। নূতন যাহা তাহা পুরাতনে ছিল না, স্নতরাং নূতনের আগমনে পুরাতনের ঊণতা পূর্ণ ইইল, অভাব মোচন ইইল বুঝিতে হইবে। পরস্থ অনন্ত আধারে আধ্যে অনন্তই সম্ভব। श्यें ७ खरोत (य पान विष्ट्रम ६ भार्षका नाहे, त्य খানে অনন্ত ভ্রম্টার সৃষ্টিও অনন্ত এবং পূর্ণাভিপূর্ণ। তুমি আমি বুঝি না, বুঝিতে পারিও না, তাঁহার অজ্যে অনন্ত শক্তির দারা ক্রমে ২ সকল ওও কথাই প্রকাশিত ह्या। ७३ भृक्ति किया है मक्त तिल्भ भितिया । ७ वर शावर्भनार्थत পরিচালিক। ইহার অনম্ভ নাম, অনম্ভ थन। जीत उद्ध देशारक जार्ग छेन्न डि थानी तरन । মকুদ্যের মকুষ্যত্র এই জাল বিকাশের ছারা পরিক্ষাট হইয়াছে। ধীরে ২ প্রকৃতির শক্তি যোজনা দাল, জলবায়্র কিয়া ধারা দেহের উন্নতি হয়, শুরীর স্তপুন্ট, छेशरयाशी अतः महिए इस । श्रवृत्ति छनि अरक २ ফুটিয়া উঠে, পরে মন দঞ্চার হইয়া শারীর উন্নতি আর হয় না; মন পুট হইতে থাকে, মন্তিজের আয়তন বৃদ্ধি ह्रा, मकल, किक । (शभी धालि कार्य। किम । मतल ह्रा । যাহা জন্ত শরীরে শেশী-শক্তি (muscular action) ও এরতির এেরণায় সমাধা হয়, মানব দেহে তাহা মন: শক্তি দারা স্থ্যস্পান হইয়া থাকে। দেহ সম্বন্ধে মনুষা অবনত জীব ইইলেও মানসিক তেজের দ্বারা এই অবনতি সামল।ইয়ালয়। মনের এই ক্রমোন্তির যুক্তি অকু-যাগ্রী ইন্দ্রিয়ত্ব সিদ্ধ হইয়াছে; অন্য কোন গুপ্ত শক্তির প্রেরণায় যে মনের বিকাশ তাহা অগন স্বতঃসিদ্ধির ন্যায় স্বীকৃত। আমাদের শ্লাস্ত্র বলেন, মনের নাশে— মন, বৃদ্ধি, চিত্ত, অহন্ধারের বিলুপ্তিতে, আক্সার মৃত্তি হান। পক্ষান্তরে জমোমতি প্রণালী বুঝাইতেছে, যে गत्नत विकारण - गन, वृद्धि, विक ष्ट्रशातत श्रुक्तात्न

মকুদাত্ব হয়। যাহা থাকিলে, আমরা মনুষ্যা, যাহার উৎকর্দে দেবত্ব প্রাপ্তি সন্তব, তাহা নক্ট করিলে মুক্তি পাইব, অনন্ত দাগরে মিশিব। অথব। অন্য কথায় বলি না কেন; জন্ত হইলে, পশু হইলে মুক্তি হয়। কিন্তু কথা এই যাহার অনুপত্মিতিতে, ও অভাবে পশুত্র, তাহার প্রকাশেও পরিপুত্তি হইরা, পরিণামেও কি পশুত্ব পুন: সঞ্চার হয় ? প্রশুত্র ছাড়িয়া মানুষ হইয়া মনুষ্যার পরিচছদ পরিধান করিয়া আবার তাহা পোড়াইয়া থাক করিলে কি হয় ? মানুষ মরিয়া কি হয় ? সংস্কার তত্ত্বের ইহাই কঠিন প্রশ্ন। আমরা যতদ্র পারি এই প্রশ্নের মীনা সায় প্রত্ত হইব। প্রথমে বুঝা ঘাউক সংস্কার কি ও তাহার ক্রিয়া কি রূপ।

জীব মাজেরই বাঁচিবার চেন্টা -প্রবন । যাহাতে শারির রক্ষা ই ওয়া সম্ভব তাহা সকল প্রাণীই পাইয়া [®]থাকে । এবং দেখের জনবালুর উপ্যোগী করিয়া জীবগণের শরীর ও নি িয়ত হইয়া থাকে । যদি কোন গ্রীম খধানু দেশের জন্তুকে ধীরে ২ শীত-প্রধান Cम: म नहेशा या अशा यात्र छाहा हहेटल टमहे कन्छ यनि মরিয়ানা যায়, উহর শারীর প্রাকৃতি ক্রমে ২ শীত প্রধান দেশের উপযোগী হইয়া উঠে । লোমপুনু। জীব হয়ত লোমশ হয় । পরস্তু যদি শারীর উন্নতি ভাথবা পরিবর্তন অসম্ভব হয়, তাহা হইলে হয়ত সেই জন্ম মতি কের এক নৃত্ত লিয়া ফুটিয়া উঠে, উহার চেটা হয় কিনে প্রকৃতির প্রচণ্ডতার প্রতিরোধ করে। এই চেন্টাই সংস্কার স্ষ্ঠির আদি কারণ। এবং সংস্কার সমষ্টিই মনের বিধাতা। বৈশাথের প্রচণ্ড রৌদ্রতাপ, গরু বাছুর যাহারা মাঠে চরিতেছিল দে তেজ সহ্য করিতে পারিল না, ছুটিয়া গিয়া এক বিশাল বট রুক্ষের ছায়ায় আশ্রয় লইল / বটের শীতল ছায়ায় তাহাদের সকল কফ দূরে গেল। পশুগণের সংস্কার রহিল যে বুকের ছায়ায় দাঁড়াইলে রেছিতেজ হইতে রকা পাও।। যায় : এম্নি ধীরে ২ নানা বিষয়ের সংকার

হইতে থাকিলে, স্মৃতি শক্তির বিকাশ হয়। ইহা এক জীবনে বা এক দেহে সম্পন্ন হয় না। নানা দেই धात्र कितिया (काणे २ वर्मन क्रें में मारति हु: थ রেশ সহা করিয়া তবে মনুষ্ঠা জীব হওয়া যায়। যণন জগতের নিত্য পরিবর্তনের মুখে পরিবর্তিত হইবার জন্য গুমুক্ল ও উপযোগী শারীর-শক্তি আর কুলাইয়া উঠে না, তথনই সন্তিকের গুপ্ত ভাঁভারে গিয়া হাত পড়ে। প্রতরাং মন্তিকের উন্নতি হুইলে শারীর উন্নতি হওয়া এক প্রকার বন্ধ থাকে । আন্ধারকার চেটা এবং লগৰ অলপের অনুভূতি এই চুইটি বৃত্তি বেঁশ প্রকাশিত হইলে আপন। আপনিই, দেখিতে, শুনিতে, বুঝিতে, আখ্রাণ করিতে, খাইতে, অনুভব করিতে ২ নানা বিষয়ের সংক্ষার-বিদ্ধ ইইটে ২ স্মৃতির উদ্রেক হয়, এবং মন্ত্রে বিকাশ হয় । পৈতৃকত্বের নিয়মানুষায়া এক জীবনের মঞ্চিত সংস্কার রাশি, পরবভিগণে সঞ্চারিত হয়। ইহার উন্নতি করিয়া, ঘদিয়া, মাজিয়া বংশের পর বংশে বিভারিত কেরিয়া। তবে মতুষাত্ত্বে পরিণত হয়। প্রাণীত্ত্বর তিনটি অবস্থা আছে – অন্তি, ভাতি, ভাতি। দেহা হইয়া কেবল অস্তির জ্ঞান – আছি এই মাত্র বোধ থাকে, অন্য ক্রিয়া নাই, অন্য চেন্টা নাই, অন্য অনুভূতি নাই, ইহাই জीবছের এথম ওর। তার পর 'ভাতি' पर्याद আমি আছি এবং অন্যতে খাছে, এবং আমার অভিতর তাহারা বুঝিতেছে ; আমি চলিতেছি, নড়িতেছি এই মাত্র জ্ঞান মথন হয়, তখন স্বিভীয় স্তর। ভৃতীয় "ল্রীতি" অর্থাৎ অনুভূতি, ল্লুগ, হুংগ, বাধা বিরোধের অনুভূতি যথন হয় তথন এই অবস্থা প্রাপ্ত হয় । প্রথমে জীত্ব. পুণ্য ওচ প্রোতঃ ভাবে সন্মিলিত, পুরু-ভুছের সায় ক।টিলে নৃতনের উৎপতি। বিতায় অবস্থায় স্ক্রী পুরুষ ছুইটা ছুই স্থানে থাকে তবে তৃতীয়ের সাহায্যে অন-মুভূত ভাবে জীবোৎপত্তি, মুগা রুক্ষাদি। তৃতীয় অবস্থা পূর্ব সম্ভোগ জ্ঞানাবস্থা। কেমন করিয়া এই তিন স্তরের

মধ্য দিয়া সংস্কার সঞ্জিত হইতে ২ মদের চোলাইয়ের মতি পরক্ষারার দেহী পূর্ণ গ্রাপ্ত হয় তাহা এই প্রবন্ধে বিচার্যা নহে । ডারবিণের এবং অন্যান্য পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণের পুস্তকে ইহার বিস্তারিত বিবরণ আছে। অনুস্থিতি সংস্কারের ভিত্তি, প্রাকৃতিক পরিবর্তন জিয়া উহার মাল স্বালা, এবং শিশ্য উহার মুজুর মিস্তি।

• এতব্যতীত প্রাণীয়ের অন্য ছুইটি ভিন্ন প্রকৃতির স্তর আছে। একটি আধ্যান্ত্রিক অপরটি ভৌতিক, অথবা পঞ্জালক জড়দেহের স্তর। ধার্থম সূক্ষা, অশরীরী, বিতীয় ৰূপ ও জড়। একটি মনন্ত, অন্য সান্ত। এই বে ত্রিলোক ব্যাপী ক্রমে:মতির প্রধানী, ইহা জীবদেহ পকে, শরীর ও শারীর বস্তু ইহা বারা পরিচ।লিত হয়। কিন্তু সাল্রি প্রথা স্বতন্ত্র। উহা অন্তর পথে, অন্তর মাণাইয়া অনতে পরিব্যাপ্ত। হতরাং ইহার কথা বিরাট, বিশাল, ও অনন্ত ব্যাপী। তুমি আমি অনন্ত সাগরে. অনংস্তর মধ্যে, অনস্ভের প্রফার । আনস্তের অংশ অন্ত্র, অনুভাগও সাত্ত নহে, তাই সেই ভূমা বিরাট পুরুষের অংশ হইলেও আমরাও সেই আমি— '' সেহিহং '। শাস্ত্রে আছে পরমাত্রা গুটি পোকার ন্যায় জড়াইয়া ২ ঘুরাইয়া ফিরাইয়া নিজের স্বা লইয়া, নিজের শক্তির ছারা নিজ্কে আবদ্ধ করিয়া জনন মরণ শীল ভখাত্থাংশভাগী চেহী হয়। যথন আবার গুটিতে আবদ্ধীট হলর প্রচাপতি ইইয়া উঠে, তথন ভীতরের চেফার তাহার নিজ উদ্যাসে, কে। টী ২ ফের রেসমের বন্ধন ছিন্ন করিয়া, গোড়ার বাঁধুনি এলাইরা দিরা অপরূপ শোভা ধারণ করিয়া, অুনম্ভ আকাশে উড়িয়া গিয়া অনন্ত নীল সাগরে ভুবিয়া যায়। 'তেমনি প্রমায়াও সংস্কার সূত্রে আচ্ছাদিত ष्ट्रेश मञ्जारम्ह भारण करिया, फेन्नक हहेरा २ शाल পুণার – রজত ও কণক-ময়ুত্তায় জড়াইতে ২ যথন চরমোৎকর্ষ প্রাপ্তি হয়, চিলানন্দ্রময়ের অপ্ররপ অন্প্র নোহন্মাধ্রী প্রকাশিত হয়, সংস্কার ওটির সধ্যে

চৈতন্য-তমু-তেজে শ্রাম শোভা লগোরবর্ণ প্রাপ্ত হয় ; कथन " अक श्राचारिकण " मकन वामना - विलाम नम्हे হইয়া, সংস্কার এছি ছিন্ন বিচ্ছিন্ন হইয়া, মন, বুদ্ধি, চিত্ত, অহস্কার ভক্ষতুপে পরিণত হইয়া, অনত্তের পাখী সকল ছি'ড়িয়া, সকল ছাড়িয়া অনন্ত আকাশে, অনন্ত নীল-সাগরে অনন্তের হাত ধরাধরি করিয়া, অনস্তের অঙ্গে মিলিয়া যায়। আমতা যতদির দেহী থাকিব, ততদিন সংস্কার চাই, ভাল মন্দ চাই, দেখা শুনা চাই, বুঝা পড়া চাই, ত্রত নিয়ম চাই। দেমন স্কুতার মুথে কোন ভারি দ্রব্য বাধিয়া লাট।ইতে খুব শীঘ্র জড়াইতে থাকিলে, যখন স্তা শেষ হইয়া ঘাইলে, তখন গুরুতার वश्रकः नाष्ट्रस्यत चावर्त्-त्वरण ख्रका छन्टा रकत शहिया ভাপনিই খুলিয়া হায়। ভেঁমনি এই কর্ম-ভেরে মুখে প্রসালার গুরুভার জড়াইয়া দিয়া অনতের উপর ভর করিয়া দর্বালোক খ্রিতে থাকিলে, দর্বায়োনি পরি खनग कतिया, यथेन जड़रइत झाम रय, जथनहे छेल्छ। रक्त খাইয়া দকল বাধন খুলিয়া যায়। কারণ , অনন্ত স্ঞান্ত চাতুরীর মধ্যে জড়ত্ব সান্ত, কেন না উহা মায়া মোহ মলিনত। উপহিচ । যদি বলত অনন্তের সৃষ্টি সুবই স্থানন্ত; তবে তুমি আমি দেখি, তোমার মামার দেখায় মেন ইহার আদ্যন্ত আছে যেন ইহার উৎপত্তি পরিণতি चाट्य गत्न इश त्मन अक्षे। अपभ चाट्य, चात अक्षे। অন্ত আছে। ইত্রাং মায়ার জগতের, মায়ার ইক্জাল পরিব্যাপ্ত জড়জগত সাত্ত ও সাদি। কামেই তোমার আমার যত্দিন জড়্ছ তত্দিন আমরা দেহী ও সংস্কার युक्त। यगरखत अः भ गगख भा वृत्थितन मुक्ति त्काणात !

এখন বুঝিলাম যে দেহের উপর শক্তির ক্রিয়া যাহ।
ভাহাই দংস্কার। অধিকস্ত দেহে যাহা হয়, যে ক্রিয়ার
দাগ থাকে, ভাহা চিরস্থারী, এবং যৃত দিন দেহ তত
দিন ব্যাপী। কামে কামেই ক্রিয়াফলও অবশ্রভাবী,
এবং ক্রিয়ার প্রতিক্রিয়াও অপরিহার্য্য। কত কোটী ২
জন্ম পরিজ্ঞমণ করিয়া, কত লক্ষ ২ যোনি ঘুরিয়া

ভাগিয়া তবে আমার এই আমিন্ত। এই আমার উন
নিংশ শতাব্দীর আমিছে কোটী ২ জন্ম সঞ্জিত সকল

সংস্কার সকল জিয়াফলং সকল প্রতিজিয়ার অভিব্যক্তি স্ব স্ব স্থানে চিহ্নিত আছে । তাহা না ছইলে
আমার এই আমিন্ত থাকিত না, আমি যাহা তাথা

ইইতাম না। তবে বাহ্য ও নানা দিপরীত শক্তি দ্বারা

কেহ ২ বা ব্যাহত ও সন্মৃঢ় আছে মাত্র, কেহ বা
আকারান্তরিত ইইয়াছে। তাই শাস্ত্রে আছে " অবশ্যমেব ভোক্তব্যং কৃতং কর্ম শুভাশুভম্"। কবি ও
গ্রিয়াছেন: —

"The moving finger writes, and having writ,.

Moves on; nor all your piety nor wit

Can lure it back to cancel half a line,

Nor all your tears wipe out a word of it."

যাহা একবার লিখিত হইয়াছে তাহা মুছিবার নহে, তাহার ফল অনিব:হা, সে লেখা ছুরপুনেয় প্রত্যেক চিঞার, প্রত্যেক বারের দেখা, শুনা, অনুভবে যে অগণ্য সংক্ষার রাশি স্ঞিত ইইতেছে তাহারা শারীর, ও মানসিক পরিবর্তন করিয়া তবে নির্ভ হয়। কোন কার্যাই নিক্ষল যায় না, কোন ব্যাপারই শারীর ও মান্সিক পরিবর্তনে পরাও মুখ नहि। (म किशांत (य मन छ। हा मर्स्तकारम, मर्न्ता-নশার হইবেই, তবে বাহ্যিক অন্য কোন শক্তির बाता (म किशाक्राक्राक्र अिट्तां रहेरे भारत माळ । चालित माहिका भक्ति बार्फ बर्फे, उरत हार्फ न्थिती है মাণাইয়া আগুণে হাত দিলে হাত পুড়ে না । এত-ছ্যতীত কার্য্য করেৰ পরম্পরা অন্ত্রকাল ব্যুপী, অ্যাম এবং অনমুধামুগ। অর্থাৎ ক্রিয়ার উৎপত্তি, ফল থাপ্তি ও নৃতন . পভিব্যক্তি, বিষয়িদাং ক । যাহার উপর যে ক্রিশার কার্য্য হইতেছে তাঁহার যত দিন স্থি 🔩 ততদিন সে ক্রিয়ার পংম্পরা বাড়িয়া চলিবে । জীব ित्काल खांगी, भत्रभाशांश ना पूर्तितन, जीरतत जीतरवत

चापि है नाहे चन्न 3 नाहे, छ छ ताः की याप दि (निन्न-भतीता) या किया हहेया थारेक छ हात कार्या कारन भतान्त्र चन चन्न कार्या। कारयहे चार्यापत दिष्य।-चना, बुनात मर्भा याहा ह्या, छाँद्रात जापि ६ चन्न चार्या। भतियाँ भाहे ना।

অতংপর বিচার্গ্য মুহ্যু কি, ও কাহার সম্ভবে। যাহা প্রিবর্ত্ন-শাল তাহা ই মৃত্যু সম্ভবে। গীতার উপদেশ (ग, जाजात प्रकृत गाँठ तिनाभ गाँठ, शहित इन गाँठ १ যতদিন নিৰ্বাণ মুক্তিনা হয় ততদিন জীবালা অৰ্থাৎ ক সোঁপিহিত সংক্ষার-সমন্বিত আলার ও বিনাশ ন।ই। এই মেদ-মজ্জা বদা-কন্ধালাদি পূর্ণ দেহের বিনাশ অবশ্যন্তারী अतर जलिङ्गिंग, तकनल हेहाहे नौह, मुद्रा महाहे আসম এবং টহার জিয়া শ্রীরের অন্যান্ জিয়াব সহগানী। প্রথমে দেইছ হইবার সময় ইহতে সে প্রোটো প্রাক্তন (Protoplasm) সমষ্টি নিহিত আছা, ঘাহার খণ্শ ইই.ত আয়জ পুরোর উদ্ভব, যাহাতে সকল সংস্কার, সকল ক্রিয়া ফল সঞ্চিত গাকে; ভাইব মৃত্যু-নির্নাণ। গুতরাং বুঝিতে হইনে যে দেহের निगारम, कीनाजात अथना लिक्ष मतीरतत पृका गाहे. উহা চিরকাল বিএজিত এবং সক্রিয়ানি প্রবাহ্ত । মোটা দেহের বিনাশ বিবরণ অনাবশ্যক, তবে স্ফা লিঙ্গদেহের বিলয় ব্যাপার জানিবার e বুঝিবার বিষয়। मकल है जिस भिक्तियुक, ' श्ली हो। हारा हम श्रीत श्रीत সংস্কার সম্প্রিত যাহা, তাহ।ই লিঙ্গ শুলার । আলাগু-ভূতি হইলে লিঙ্গ শরীরের মৃত্যু হয়— মৃতি হয়। মনুষ্য — তাৰ একটু বিশেষ মহা মনুষ্য ব্যতীত "আছেজান" অর্থাৎ " আমি আছি " ইত্যাদি জ্ঞান হর না। তাগয়. মধ্যম, উত্তম পুরুষের বিভাগ করা মভাতার একটু **छे**क अपनीटि बात्र मा इट्टिंग नक महक न: है। মতরাং আমার " আমিত্ব " জ্ঞান টুকু মনুষোত্র জীব লোকের ত নাই, তাও মহুদেরে সংগ্রেমন **टिशन शासून इडेल इडे**रिन ना, निर्मान नुक्ति, द्वित

या हिं ना रहेल रहा ना। भाषात अरे आभित्र छा। नहे भूक्तित, धारान छेशामान । कारयहे अभागक कीनरयानि शहिस्मा कतिया मःकारतत व्यक्तेशाच्च बाहा मगाक् আবদ্ধ হইয়া সমুদ্যত্ব প্রতি হইলে, নানা সাধ্য সাধনের পর পুর্ণাপ্ত ন প্রকাশিত হইলে, তবে মুকি। অথব। সংস্কারের উন্নতি ও বৃদ্ধিতে গশুত্রের নাশ এবং এসা छ। नज्ञभी भूरर्वन्त्र भूर्व श्रामत मूहना रहा। व्यर्भन मीशत शर्द्धक वात्रुत म्यानत्न मागतवस्क (क। ही २ বুদ্বুব্ ফুটিয়া উঠে; কিন্তু মাথার উপরের অন্ত আকাশের অনম্ভ প্রন রাশি ব্যন ছোট ২ জলের ফুট গুলিতে গিয়া আঘাত করে, তখন কুদ্র প্রাণ অমনি আহলাদে কাটিয়া জনতে মিশিয়া যায়। C • মনি कीत निक संग्रीय त्यात भू है ल महेशा नाना ८०० थारण করিয়া, পরিমাডিভত ও সনুন্নত হইয়া যখন খনস্ত পরিব্যাপ্ত মহাপুরুষকে "সেই জামি যে আমি এই আলোক সাঁধারে পড়িগা মহাকৃন্তিপাকে ঘুরিয়া বেড়াই লান সেই আমার আমি " বলিয়া চিনিতে পারে, তণন চুন্দকের আকর্ষণের ন্যায় মহামায়ার মহাশক্তি প্রয়োগ দ্বারা অনম্ভের অংশ অনন্তকে পূর্ণ অনুয়ে ঢালিয়া সিশাইয়া দেয়। শুত্রাং জীব পশুদের না ছাড়িবে, মাকুষী সংস্কার ছারা পরিকৃত না হইলে মুক্তি অণবা লিঙ্গণরীরের মুহু অসন্তুব। তবে " পশু শব্দার্থে যিনি যাবৎ বস্তুতে সুমান আল প্রকাশ দেশেন " ইহাই সিদ্ধ হয়, তাহা হইলে মনুস্তের পরিণাম পশুর আবশ্যক এবং অবশ্যস্তাবী।

জীব এক দেহাতেই অন্য নৃতন দেহে "জলোকাবং" গিয়া সঞ্চারিত হয়। সংস্কার সহিত জীবালা,
(অথবা লিঙ্গণনীর) দেংশুন্য থাকিতে পারে না ।
কারণ সংস্কার-ফল দেহে প্রকাশিত হয়, এবং দেহ
ব্যাপী । শাজেরও দিন্ধান্ত এই । কাষেই বিজ্ঞান
ভাবিক্ত জীবতর মানিলে এবং কর্মবাদ স্থাকার
করিলে জন্মান্তর বিশ্বাস করিতেই হইবে । বাস্তবিক

এতবড় বিশাল বিশ্বব্যাপী জীবজিয়া এমন শৃথ্বা ও ক্ৰমোন্নতি ইহা কেবল মনুষ্যভেই প্ৰধ্বসিত হইতে পারে না। তবে একটা শ্রন্ধ এই উঠিতে পারে যে. যদি কথাবাদ মানিতে হয় তাহা হইল আস-শক্তির-ইচছা-শক্তির অন্তিত্ব স্বীকার করা কঠিন এবং অনুক্তি-যুক্ত। জীৰ কৰ্ম সূত্তে বাঁধা, কৰ্মের দারা আহার सृष्टि, वाशिक व्यानोकिक कियात बाता कीरवत कीवइ, চিপা, সেধা, প্রবৃত্তি আদি সকল ওলিই কিয়ার সংঘর্ষে উৎপক্ষ। জীব ভূণবং কঁরা সাগরের প্রবল ভোতে ভাসিয়া যাইতেছে। মুক্তি বিচারের ছারা ,ইহাই ছির সিদ্ধান্ত বলিয়া বোধ হয় । পাশ্চাক্য পণ্ডিত গ্ৰাণ Theory of circumstance নইয়া আজকাল এত राख। जागामित मर्गो श्रीतक्तराम बाह्ह रहे, उरर পুরুষাপবিভূকম নহে। আজ কলে তোমার, আমার ন্যার, অপদার্থ, অপটু অসহিষ্ণু, ভীরু জীবরাই कशाल वाचा करतिशा वमृत्येत तमाय मिशा शातक। কিন্তু হিন্দুর পুরুষার্থ অলোকিক অগুর্বা। হিন্দু শিশাইয়াছে যে, পুরুষকার দ্বারা কীট্ বিশাল হইতে পারে, পথের রাভভিশারীও সার্বভৌম সম্রাট হয়। হিন্দুর শিক্ষা নৈরাখ্যের শিকা নহে। আশা, উৎসাহ 🤊 উদাস এই তিনটিই হিন্দুর মূল মন্ত্র। চিরদিন ছঃখ নাই, এক জীবনে না হয় শত জীবনে সাধ্য সাধিত হইবে, কিন্তু ভাষা ছুরাশা নহে. ভাষা ভায়তাণীন করামলকবং। এ বারের, তেজধীর, বিশ্ববিজয়ীর পর্ম। আমরা হাহাদের সমকে কুকুর হইলেও সেই বংশের বলিয়া ক্ষুদ্র হৃদয়ে স্পদ্ধা করি। কাষেই ইহার विक्षं क्रिका छ खित कतिया विमया थाकित अंडावाय-গ্রস্থ হইতে হইবে। পরস্ত পুরুষকার বুঝিতে হইলে শক্তিতত্ত্ব আলোড়ান করিতে হইবে। ইহার বিচার ভবিশ্যতের জন্য রহিল।

(पर-लीला।

প্রাণ হইতে পাইওনিয়ার আফিদের শাতাঞ্জী শ্রীন ক রাম চরণ শুরু মহাশয় শ্রীমংস্থানীজীকে ধে একটা দেবলালা রহস্ত লিখিয়া পাঠাইয়াছেন, আমরা ধর্মালা পাঠকগণের গোচরার্থ ভাহা নিম্নে প্রকাশ করিলাম।

পরম পূজনীয়

. ্রী জীগহারা শ্রীকৃষ্ণনন্দস্বাদী শ্রী শ্রীচরণ পদ্মেষ্
সহাগন্

যে রন্ধা জীর ভক্তির বিষয় আপনার সমীপে নিবেদন করিয়াছিলাম তাহা আপনার গোচুরার্থ নিক্ষেলিগিতেতি—

वृक्षः जीत नाम वाछ। मिशा बातासिया, (जना कान-পুরের অন্তর্গা আমে উহার নিবাস, এবং উহার পুত্রের নাম ক।লিকা প্রসাদ, জ।তিত্ত্ত্রাক্ষণ কান্যকুজ প্রাড়ে উপাধি (লক্ষা ভট্টাচার্য্য শ্রেণী) বুড় বাজার নন্দাপুর মহলা, আমাদের আমে অর্থাৎ নরতলে, উহার কেহ সম্পর্কিত নহে। কানপুরের অন্তর্গত তিল্পারি আমে ভরদা তেওয় রির ভাতা কালীতেওয়ারির পুতি উক্ত কালিকা প্রশাদ পাঁড়ের ঘরে বিবাহিতা। যথন ভরদা তে গ্রারির প্রপৌত্রির শুভবিবাহ হয় তথন কালিকা आगाम विवाद निमालि इ इहेश। जारमन धवः जाम त ভ:তাও সেখানে ততুপল কে যান, ক্রেকথা বার্তায় উনি সমাতার বিবরণ বলিলেন, যে আমার মাত। ঠাকুরাণী প্রায় ২০।২২ বংসর অবধি পক্ষাঘাত পীড়ায় পদহী না ছিলেন, এবং উঁহার তীর্ণাটনে নিতান্ত ব্যঞ্জা থাকায় व्यामि उँहारक कानी, व्यामा, मधुता, रेनियात्वा, চিত্তকুট ইত্যাদি স্থানুন গাড়ী করিয়া লইয়া যাইতাম এবং তথায় গিয়া তিনি নিম্ন হাতের উপর ভর দিয়া চলিয়া দর্শনাদি করিতেন। তাহার পর আজ প্রায় ছই তিন মাদ হইল আমি এ চদিন গ্রামের বাহির যাইতেছি এমন मगुरम आमात गोगात एहल (नो किसा आमिसा गोगीरक

বলিল্, তোমার মাতা ঠাকুরাণীর পুনঃপদ প্রাপ্তি হইরাছে, पर्याट छ हात शा हिल ना छिन शा शाहेतारहन । आर्म তংকণাৎ দৌড়িয়া আসিয়া দেশিলাম, উহার শুভ मः नाम यथार्थ हे नरि, अनः रम्भिनाम छेनि अभरम हिन्सा আসিতেছেন। দেখিব।মাত্রই লামি পায়ে পড়িলাম এবং ১· मन्द्रोकात शर्मा श्रीत्राहिशा विकृत्य कृतिनाम, छ० গিশ্চাৎ জিঞানা করিলাম নে মা, ইহার সমস্ত ইতি হ।স আমাকে বলুন। উনিবলিলেন মে, আমি আমার वै। यह श्री श्री कियार है, मात्रत मानित पूर्व करिए क গিয়াছিলাম,কারণ আমি সেই গানে প্রত্যুহই মাইতাম অঁদ্য যাইয়া দর্শন করিবার পর আমি কাঁদিতে লাগি-नाम जनः विनाम एर महाराज्य। स्वीम वर्ष शाशिशमी, (कनना अञ्चानिष्ठ ७ निशा कि एम जाशनि विमन मानी त्य शक्त निगतक ठक्क मिशा शादकन अवर शमहीन निगदक পদ দিয়া থাকেন, আমি কি অপরাধ করিয়াছি মে व्यामि शनदीना इदेशाहि, अवः व्यामात, द्वामात मन्दितत ঘণ্টা বাজাইবার নিভাপ ইচ্ছা তাহা করিছে <u>গুণ</u>রি-ভেছি না এবং ফুল পত্রাদি লইয়া পূজা করিছে পারি न। इंश विलिश चात • कै। फिट लाशिनाम, तम मूछ-র্ভেই জানিতে পাহিলান, মেন আমার কেই বলিতেছে যে তোমায় কে বারণ করিতে:ছে ! ভূমি কেন ঘণ্ট। বাজাও না। তখন খামি মন্দিরের চতুজ্পার্শে দেখিতে नाणियाम । दम्भिनाम दम्भारम दक्षे गाहे, विद्वहन। করিলাম যে স্থালু মহাদেবের বাক্য ব্যতীত আরু ক।হারই এবাকা নহে। ইহা মনে করিয়া দ্রায়ান, ছইলাম এবং তথন দেখিলাম আমার পা হইয়াছে এবং পায়ের উপর ভর দিয়া ঘটা বাজাইতে আরম্ভ করি-লাস, এমন সময়ে তৎস্থান্য (ছেলেরা, যাছারা পেল। করিতেছিল বলিতে লাগিল বুদ্ধা পাঁপাইয়াছে, ইহার পর থানাপর আসিয়া বলিলেন তুমি এখন বাড়ী যা 🐔 আমি বলিলাস যদি পড়িয়া যাই, তখন তিনি বলিলেন त्य महात्मव (छ।गांक था मिसां हिन पूनि शिक्टनन।

তৃথন আমি বাড়ী আসিলাস, তার পার আর কিছুই জানি নাম তখন, ঠাহার বাড়ী আসার পার আমি চরণ ধূইয়া চরণাম্ত লইলাস । টনি রলিলেন আজ রাত্রি জাগরণ করিব। আমি তাহা করিতে সম্মৃত হইলাম। সেরাত্রিতেই তাহার পাচুটী হুই পুইন্ট হইয়া উঠিল। এখন এ প্রকার চলিতে পারেন যে আমি তাহার সাঙ্গে চলিতে পারি না। অনেক লোক দর্শনের জনা আসিতে লাগিলেন। এই ইকাল হিন্দি শালের ওজান্তা শালের কালু গুন চৈত্র মাসের ঘটনা—

মোহন লাল পণ্ডিত দর্শনের জন্য গিয়াছিলেন র উপিও আমার ভাতাকে এঘটনা বলিয়াছিলেন, আমার আত্যও সে খানে গিলাছিলেন, তখন সেই আমের থানাবার কায়ত্ব ছিলেন, বর্ত্তনান মুসলমান থানবার, মন্দির কলিক।প্রসাদের বাড়ীর সন্ধিকট— আপেনার নিকট আমল্ চিঠিও পাঠাইতেছি দেখিবেন। আপেনার সেবকাধ্য সেবক

की ताम हर्ग एका।

কারাগার।

মাধ্যতে ৰত্ব্যক্তি স্বতঃ এব এত আনন্দোৎ কুল জন্ম অগ্নন, মাধ্যকে প্রমাপ্রেয় অবশ্যবিশ্যকীয় কার্য ও সংসারের ভ্রতিতি স্বরূপ বলিয়া মন্মুদ্য মাত্রই এহণ করে, মেই প্রিণয় সম্মাকে লোকে বিবাহ-"বন্ধন," "প্রিণয়-পাশ" বলে কেন। আবার ঐ এক প্রম শান্ত মোগী মহান্ত পুরুষ সেই আনন্দোহ-স্ব কেথিয়া ঈনং হাসিতে হাসিতেই বা —

दिहा तहा मनक है कर इ. स्था मनरम धि छ छ उँ रा, इक्षा हो लि दि स्था लोगता, दुष्टल् शत् तल्ला छ रा उ इक्षा निनारक का ता भात च कल निल्ला दि न १ जा मात मह मा भात की दिन अमा हो लि व दिला छि है एक शांत, कि सु कु नि मा हम ता गांव अमान विक्रिक, नित्त क विक्र क छ महा ज्ञात भूथ है है छ । क ता छ न

निमारिनी नानी निःश्ख इहेल किन, हेश है मरन श्वास्त ममग्र खानि । अन खानीन सर्भत— खानाम क्छरमत खान माज ता है। हैगा बामता खर्तीम नाम-मण्णिटिक कि कर्छात कर्छ कत क्रिक्त खानि क्रिक्त क्रिक्त खानि क्रिक्त
শাবার সংক্ষাই উঠিল—অহা! কি আশ্চর্য !
পরিণয় ব্যাপার যদি কুবল ভব বন্ধন সরপ হয়,
কঠোর রেশকর কারাপার মাঞ্জয়, তবে ছুদ্দান্ত হিরগা
কশিপুরও বিরুদ্ধে যে জননী এইলাদের কাণে কাণে,
আমে বিষ আছেশ্বলিয়া দিয়াছিলেন, মে মা কেঃম্
থাণে সাত্যাদেটিন না করিয়া সন্ত্পদেশনা দিয়া,
আশান পুত্রকে আনক্ষে বর মাছাইয়া পাঠাইয়া দেন !
সাক্ষাং প্রকৃত্যংশ স্থর্রপিনী, সেহময়ী, সবলা হিন্দু
মহিলা মণ্ডলী সধ্যে ঐ কোমলা ললনা প্রাণেই বা
থারপ প্রবঞ্চনা, নিষ্ঠুরপ্রপা, অক্তাপরাধী নিরীহের
প্রিতি অভ বিতাড়না, কিরপে সন্ত্র হয় !

পর্যায় ক্রমে তথন আমার মনে এই চুইটা সংশায়
উপিত হইলে, প্রথমেই পুর্নেঃক্র সমস্তা পুরণ বা
প্রমাণ করিবার অত্যে, পরিক্র নারী চরিত্রে এই আপাত
বিচিত্র দোষের চিত্র মাক্র আছে কি না দেখিতে লাগিলাম, বিবাহের সময় কন্যার ভবনোহেশে
মাত্রা করিবার অব্যবহিত পূর্বে ক্রণেই, স্লেহম্যা জননী
বাংসল্য প্রেম্চল্চল্ স্বাস্ত্র ব্রন্তর, ক্রম্মা জননী
হলে, কাণে কাণে "কাহাকে আনিতে ফাইতেছ"
ক্রিক্রাসা করিয়া ঐ খে ত্রিস্ত্র করাইয়া লইলেন — মে
"আপনার দাসীকে আনিতে যাইতেছি"; ইহার তাংশ্প্র্যা কি । এ কাট বহু ক্লে

প্রচলিত চির প্রসিদ্ধ স্ত্রী আচার বা দেশাচার। আবার স্মার্ত ভট্টাচার্যা সহাশয় জী আচার বা দেশাচারকে স্পাচার বা ধর্মাচার বলিয়া গিয়াছেন। অভূতব পাছে न(बाहा वध्-श्रवात-विकात-श्रेष्ठ शूब विकारतत (अशीरन, পুত্র বধু কর্ত্ক পুজনীয়া জননীকে নির্যাতিতা, লাঞ্ডি करतन, अहै, जरतह छ उन ली-जाहात ना जिमका करन সমাজে প্রচলিত আছে, এরপ নির্দেশ করা নিত্রও মুণিত; ভাহা মে ইযুগ্ধ ব্যক্তির প্রগল্ভতা মাতে, সম্পূর্ণ अंदगी कि क अथा शाहा । कात्र । प्र नताभग शूर छत প্রকৃতি के রূপ কলুগিত ম। পূর্নেই বুঝিয়াছেন, সে भूं रखत खिम जा रम इतिगाकीत अक कृ एका रत हे छे ड़िया যাইবে তাকি আর মাবা স্মাজ বোনোন নাং বিশেষ বোঝোন, তত্ত্ৰাচ নে ঐ প্ৰথা প্ৰচলিত, ইহার গুপু সৰ্মা— ঁরহস্ত কি, তাহাই তেখন সন জিজাপ হইল। তত্তরে যা হির সিদ্ধান্ত হইল, তাহাডেই জামার মন প্রাণ मन्नु हे, भाख , इरेगा (शल। वृतिलाम भून्तिका इल छ। न-ভক্তিমতী প্রসূতিগণ শাধ্যায়নিংত জন্মচ্য্যাশ্রমী, জ্ঞানী भूत्कत मर्यामा, माधातरणत निकृष्ठ तका कतियात कना, দংদারাশ্রমোচিত দার উপদেশ, সংদারে গুবিফ হইতে যাইবার পূর্বাকণেই ঐ রূপ ইঙ্গিতে নির্দেশ করিতেন বা স্মরণ কর।ইয়া দিতেন। সেই প্রথামুসারে মা এপন । गत्कर ७ विलिश (ছिरलन, मःगारत '' छ। गांत " কাহাকেও ভাবিও না—আপন পরিণীতা জীকেও নহে—" আমার " ভাবিলেই তাহাতে অভিগান रहेताहे दक्तां बनाय, दक्तां रहेराउरे कलर अशास पिता मश्मात छात भात रहेता गांत, আন্ধীবন কফ পাইতে হয়। অতএব ভাবিও জী " आगात " नरह 🕹 " जनतीत नाभी "। जरहा ! अ कन्नी भारकत मार्था । जावात जाक्तर्या आर्थिका-পূর্ব ৩ও অর্থ রহিয়াছে। এই দেহ রূপ কুর্র खकार शानती था ठाक यून भतीत धातिनी मां, त्मह

বিভূতি মাতা। তাই কোশলে ইঙ্গিতে বলা হইল, তুমি সেই বিশ্ব প্রথাবিনী জগতজননীর দাস, তোমার সংধ্রিণা তাঁহারই দাসী। জুগদন্ধার আদেশ মাতা পালন জন্য যাগ, যজ, দান, প্রভৃতি যে কোন সংসার কার্য দারা সংসারে হাহার সেবা করিতে হইবে, তাহারই সাহাগ্যার্থ প্রধানা শক্তি স্বরূপিণী 'তিনি, যাঁহাকে আজ হুনি আনিতে ঘাইতেছ তিনি তোমার কাম-বিলাগিনী রমণী নৃহেন—ইহাই ইঙ্গিংত বলিয়া, মাতা পুলকে সাবধান করিয়া দিলেন। অত্তাব কয়াধুর নায়ে উপদেশ দিবার মাতা আছেন কিন্তু প্রহলাদের নায়ে পুল কৈ, যে হরিকে এ কারাগারের সধ্যে ক্ আকর্ষণ করিবে ! সেই অভাব হেতুই আজ সোনার ভারতের এই হুর্দণা। অত্তাব সাধ্বী স্কুটা হিন্দু-রমণীর জল্যে আবার প্রতীরণা, কোথায় ?

বর কন্যার গৃহে সভাস্থ হইলে, সভার মহামজো পাধ্যায় পভিতৰ্গ, মহামান্য গুরুজন বর্গ প্রভৃতি সক্লে উপস্থিত থাকিলেও, সর্বাত্যে স্ত্রী সম্প্রদায়ের মঁথিটি वतरक लहेशा या ख्या हत । जगात व्यथरमहे जानात जी আচার আমিল। অত্রস্থ কুল কামিনীগণও স্পান্টাকরে বুঝাইয়া দেন, স্ত্রী ভোমার বিলাস-রমণী নহেন — শুক্তি-স্বরূপিণী । ত।ই তোমার স্করের বিদ্যা অনুচা সীমন্ত্রী আজ শিব দীমন্তিনীর ন্যায়,তব ছদয় কন্দরের মহাবিদ্যা সোড়শী রূপে, ঐ পুরুষর্শের ক্ষে চড়িয়া মৃত্ মধুর হাসিতে হাসিতে, ভাঁহার এক ভাবে এমত, ভব ঘোর বিভোর, ভোলার প্রতি ইঙ্গিতে কহিলেন. যে আমিই সৃষ্টি শতি সরপিনী, আমার ইচ্ছামত সৃষ্টি कार्या जामात है हिन्नजानुगात नेकरण पूरि जनामाल. निर्लिश ভाবে यात्रात महात्रठा कतित्यनाळ, ठाहे वाष সর্ববাঙ্গ ঢাকিরা সর্ববারে কেবল ঈশ্প মাত্র করিলাম मावधान, आभारक विलाम-वैनिठा छ।वि ६ ना ।

শেশেও স্ত্রী জাচার বাদর-শিষ্যা। এপানেও

बामा भूटर धाताला भूति (कान सात्नामिन्त हम्मूर्णि हिन्दि मार्गरना (हलन्छात्र छेशान**ः छ** मचा म्बनी अमं अब ७ था (क ; चात वतरक छ। इ। यही ঠাকুরাণী বলিয়া প্রাণ্ম করিছে বলা হয়। ইহাতে ব : যদি ত। হা উপেকা করত পদাক্ষুষ্ঠ প্রহারে তুঞ कतिक हैं लिया यात् छ एएं. छ मिनी अपनत जानत्मत আর দীনী বাকে না, আর সতাই তুকুম মত প্রণাম করেন, ভূঁ,হা.ক নিভাও মৃঢ় বোকা মনে করিয়া कागिनो क्ल छপइ। म करतन। है हा दाता तूबा र्शन. ভাঁহারা জানাইলেন ৬ প্রতাক্ষ শিপাইলেন, স্ত্রা মাত্রই षष्ठी यक्तिशिगी; किन्न जोत এই অन्ति, (भन, भञ्जा, মাংসময় দেহটাতে—উপরকার টাতে বিশ্বস্থ হইলা যদি ভুনি সেটাকে গপ্তী ঠাকুৱানী বেংধে সম্মান কর, শ্রেরা কর, তবেই রম্পীগণ মনে মনে হাসিবে এবং ভোনাকে চিংজাবন ন্ত্ৰী সম্প্রদায় সংধ্য नवत व्यवता ७ जालवानीय वज्र रहेशा नगारक नाना क् इना राक्षना तथ प्रथान रामनी रहेशा थाकि : उ हरेतन কিলা তুমি স্মাজের আবজ্জনা রাশির নায় কেবল শতমুণীর মুখে বিধ্বস্ত, বিতাড়িত, স্থিত ইইয়া দুরে निकिथ इहेरत, ८भरम नामत-भगारिक हेश ७ द्वाहेगा, দেওয়া হইল, যে এ পর্যান্ত যে সকল শিক্ষা প্রাপ্ত হইলে, যদি সংসারে তদ্পুরূপ ঠিক চলিতে পার, তবে অচিরাৎ ঐ রূপ নিয়োভ, নিঃসঙ্গ, নিস্ফেউ ভাব পরি-পাক হইয়া গেলে, তাহা প্রকৃতিনিষ্ঠ হইলে. এক দিন এমন দিন আসিবে সে দিন আবার কুলবালাগণ আজ-(कत गङ धलकारनत जलतात जलात जलाता। किताता, ুনির্ভীক ভাবে স্বাস্থারি গুরি ছাড়িয়া, স্মাজ ওপর্যের जानकी विभि भागन छत्. न छेनानीन अ मतल छ। त তোমায়ভাল বাদিবে, কত আদর করিবে, সোহাগ করিবে, স্লেহ বিকীর্ণ করিবে । আর তুনি তাহাদের (महे मक्त ভाবেই जम्बात जन्म नागो — ८ श्रमाधान-चांगीत मध्त करलील छनिएक शिकिरन, हित्रींगरगत जग **ट्यामात क्या भीवन धना द्हे**ता वाहेत्त ।

অত্রব বেখানে ক্লা আচার, সেই থানেই যখন এন্ত রক্ষে অগস্তার তবিশিক্ষা, তখন স্ত্রী সম্প্রদায় মধ্যে আবার প্রবঞ্চনা, নিষ্ঠ্র পণা কোধার ? জী আচারের ঐ সকল অতি গুহা তব্ব শিক্ষা, জ্ঞানোপদেশ ও বেদান্ত-নিন্দোষিত বৈরাগ্য বিচার-গুবাহ মানবের নানা কল্ম ভাব অতি সহজেই ভাসাইয়া দিবে, এই জনাই বিবাহের আদি, অন্ত ৬ মধ্যে ক্রা সম্প্রদায়ের ভিতর অন্ত দদার স্ত্রী অ চার ব্যবহা । কিন্তু হায় । আজ কাধা ভারতের কপাল দোমে, তাহাত মুণিত, অতি কুসংস্কার, গুলীল বলিয়া পরিগণিত হইয়াছে।

য় হউক, জী সপ্প্রকায় বা জী আচার মধ্যে আর কোন দোষ নাই বুঝিলাম। পরে পরিণয়কে তবে ভক্ত প্রবর তুলদিন্য স্বামী ছেলগানা রূপে কেন বর্ণন করিলেন ! লোকে বিবাহ বন্ধন, পরিণয়-পাশ কেন বলে, তাহাই একাণে বিবেচ্য।

শ্রীক্রিফাননের মেলা।

২। সেলার প্রথম দিন, যাঁহার নাম চিরক্সরণীয় করিবার জন্য এই সাধু সেলার উদ্দ্যাগ, সেই জ্বান স্পাদ আ আফুফানন্দ স্থানী মহোদ। কংশী হইতে যুাতা করিয়া যগন সাইখা কৌশনে পৌ ছিলেন, জমনি ।
তাঁহাকে অভার্থনা করিবার জন্য দলে ২ ভন্ত লোকমণ্ডলী, দালা পতাকা, কৌপা ছত্র দণ্ডাদি সহ হরিনাস
সংকীর্ত্তন করিতে ২ ভক্ত বুন্দ আসিয়া উপস্থিত
হইলেন, ঘন ২ বন্দুক ছুটিতে লাগিল, আনন্দের মহারোলে সেলাভূমি মাতিয়া উঠিল । সামীজীর
অভার্থনাথ বয়ংপ্রাণ বিচক্ষণ ভক্ত জমীদার শ্রীষ্ক্
দীনবন্ধু বাবুর বিরচিত যে কীর্ত্তনিটি গান হইয়াছিল,
ভাহা নিল্লে প্রকৃতিত হইল —

(" खुळ जानम भारमत रमला "— छत)
माभ भूताहरू माभू रमला रमण्यम जास।

क रमलास भद्री अर्थ काम रमाक्ष प्रजूर्ति मं क्लाफिस ॥

रमलात रूनाल्या कि छुठीम, यथा त्रामा कृष्ण ताम,

रमानी मह रनारभधती करतेन अभिक्षान; — क रखारकना

रमान रमना नस, करू माभरकत माभ शुर्व हस ॥ > ॥

इ'(য় বিরাগী যে জন, করে আ সা বিসহ্জন, হরি
• कि জীব मुक्कि করেন বিতরণ; — সেই চিরানন্দ কৃষ্ণানন্দ এ সেলায় হলেন উদয়॥ ২॥

জীবের ধর্ম মভাবে, কলির কৃটিল প্রজাবে, উঠ্লো ছরিনামের খেলা যাঁরে আবিভাবে; — তাঁর গুণের গান্ গাইবো ব'লে এই মেলার এই খভিনয়॥ ৩॥

হবে সাধুদরশন, যাতে কল্স খণ্ডন, মুক্তি শক্তি পরাভক্তি হইবে সাধন— (কাভর) হয়ে দীনবন্ধু ব'লে যেন কুফানসদ হ'ন সদয় (মেলায়)॥ ৪॥

ত। সেলায় জী জীরাধাকৃষ, জী জী অন্নপূর্ণা. জী জী সীতারামের সংগঠিত ও প্রসজ্জিত দিব্য মৃত্রির বিবিধা-প্রারে পূজা হইয়াছিল, সন্মুথে প্রভাহ চন্দ্রাত্তপের ছারায় জীনছাগবত ব্যাখ্যা, সনোহর সাহী কীর্ত্রন, বালক সংকীর্ত্রন ও রামায়ণ পান হইত। মেলার ভাধিনায়ক স্থানী জী চারি দিন জ্ঞান ৬ ভক্তি পূর্ণ উপদেশ ব্যাখ্যানে সহজ্ঞ ২ জ্যোতাকে কতার্প করিয়াছেন। কত ব্যোন্রনারী বক্তা প্রবণে মনের সাধ নিটাইয়াছেন,

छ। हात् भौभा नाहें। ठाहा (क (मधनात क्रना छैं। हात्र कथा छनिनात क्रना मरल २ (मोक ०००० द्रेछ। ०

रेवस्वन, नास्त्रल, मृत्रात्मण स्वामित शाम में का विक कु सिंगा दिला। २ मिन का शामित्र में निष्ठा में निष्ठा में निष्ठा में निष्ठा है सा दिला। देन में निष्ठा में निष

द। नाम्नाला (मर्ला अन्याना (मना एमिस्ड रियमने गणातन लारकते मगागम द्या माळा, का रमनाय त्करन जः हा है नरह ; माधातन जी शुक्र रियत मरणारिका भगाने कि कर्ता गाय ना है, उद्देश हा हिम, छे किन, छनी नाम, जानि अर्नक महायु अ मिलिंड 'स्वारकत मगारिम' हे शाहिल । छे प्राम, छोका, कृ निकालों, कानी कामी, छे छत भाषा, नी तक्ष्म, नर्कमान, मृत्रीमानावान, आनि दह मृत मृत स्म हहे एक रमना रमितान, का भर्छ स्म स्मान माने माने आगियाहितन । नामरान रमाकान, का भर्छ स्म स्मान माने माने माने स्मान स्म

৬। পণ্ডিত জীয়ক অমিকা চরণ বিদ্যারভের শীন্তাগবত ব্যাণ্যা হইয়াছিল এবং জীয়ক প্রসম কমার हक्ष्म श्री श्रीमान् भौनिक ही तात्त, कियान् भौनिक मू स्थानि । असे प्रमाना भन व्यान स्थानि का स्व हा कता श्रम् कि पर्याना भन व्यान स्थानि विद्या हिल्ला। असे रमलात प्रमान विद्या हिल्ला। असे रमलात प्रमान विद्या हिल्ला। किस धर्मात , रमलात महत्य २ , द्यारक त्रमान हिल्ला। किस धर्मात , रमलात व्यान हा भाषि वा रमाल स्थान है। वाक्राना रमर्थ वा रमाल वा प्रमान देश भाषि वा रमाल का प्रमान देश भाषि वा रमाल का प्रमान देश भाषि वा रमाल का प्रमान है। वाक्राना रम्भाविक खाद प्रतिहालिक स्थाप थाकि वा रम्भाविक खाद प्रतिहालिक स्थाप थाकि वा रम्भाविक खाद प्रतिहालिक स्थाप थाकि वा रम्भाविक खाद प्रमान वा स्थाप ।

धर्म। ९ गत्।

গত ২৯শেকাল গুণ, লোকনাথপুরস্থ এ । তারিভক্তি প্রাদায়িনী সভার পঞ্চম বার্ষিক অধিবেশন
ইইয়া গিয়াছে। সভায় ঐ মুক্ত সীতানাথ শিরোরয়
এবং প্রামৃক প্রীনাথ শিরোমণি এবং জী মুক্ত অজিভ
নাথ নায়রত্ব মহাশয় গণ তিন দিবস জী মন্তাগবত,
প্রীমন্তর্কালী ভা প্রভিত পাঠ এবং বক্তা দায়ায় সভাস্থ
সকলের ধর্ম ভাব উদ্দীপন করিয়া ছিলেন।

বিগত ১৬ই ফাল্ভণ হইতে ২ রা চৈত্র পর্যান্ত সমদশ দিন ব্যাপিয়া ৮ কাশীদামে ভারতধর্ম মহামণ্ড-লের অধিবেশন হইয়াছিল । বেদার্ত্রন, স্বন্তিবাচন, বেদপাঠ, ধর্ম শাস্ত্র ও পুরাণ পাঠ, শাস্ত্রপুক্তন, পণ্ডিতার্চন, সভাপতি অভিনেক, ভারতে ধর্ম প্রচারার্থ মন্ত্রণা, বক্তৃতা, ধর্মদগীত সঞ্চীর্ত্তন আদি নানাবিধ ব্যাপার অকুতা, ধর্মদগীত সঞ্চীর্ত্তন আদি নানাবিধ ব্যাপার অকুতা, ধর্মদগীত সঞ্চীর্ত্তন আদি নানাবিধ ব্যাপার ক্রেছিল, শালগ্রাম শিলা ও চতুর্কেদ রৌপ্যময় দিংহাদনে বদাইয়া শহাঘাতী প্রনিপ্রক্রিক ধ্রজপতাকাদি সহ মহাধুমধানের সহিত সভাস্থলে লইয়া যাওয়া হয়। পণ্ডিত গণের দিন্ধান্ত ও বিদেশীর রাজা মহারাজগণের সহাক্রত প্রতিত ও বক্তাগণের সংস্কৃত ও হিন্দী ভাষা প্রাত্রি পণ্ডিত ও বক্তাগণের সংস্কৃত ও হিন্দী ভাষা

এই মহাসভায় সমবেত হইরাছিল। বিদেশ হইং জিনক প্রতিনিধি আসিয়াছিলেন। রাজ্ঞা শশি শেখনে খরের ঐকান্তিক যত্নে ও কাশীর মহারাজার বিশে সাহায়ে এই বিরাট ব্যাপার নির্কিন্ত্রে সমাধা হইয় গেল। রাজা শশিংশপরেশর হৃদয়বান্ পুরুষ। যথাও ধর্মের হৃদয় তঁহার আছে। ভগবানের কাছে প্রার্থ করি, এই রূপ ধর্মান্দোলনে তাঁহার উৎসাহ চিরকান অবিচলিত থাকুক। নিম্নলিখিত সঙ্গীতটি সভা উপলঙ্গে গীত হইয়াছিল—

বাহার, মধ্যমান ঠেকা॥ ১॥

ছাতীয় সন্মান গিয়েছে অনেক দিন,

'হৈ ভারত বাস্থিণ, করিয়ে দেব অরণ,
সেই অরণ, মনন, নিন্দ্যাসন,
ভল্পন সাধন যত, সে দিন হয়েছে গত,
যে দিন হয়েছে ভারত অধন্ম হীন পাপাদীন।
আগুনিক পদি সন্মানে, আপনাকে ধনা মানে,
আভিমানে নাহি মানে মুনি সদৃশ প্রবীণ;
ভাপন ভোবে গেমন কাকে, পরভিন্ধ পোলে থাকে,
তেমনি মানে মানীলোকে, এমনি ভ্রান্ত মলিন।
কোথাগেল সে অভাবে, কোথাগেল সে প্রভাব,
কালের প্রভাবে এবে ভারত প্রদা বিহান;

আর কি প্রভা প্রকাশিবে, যজ্ঞান্নি গিয়েছে নিজে,
ইন্দ্র যায় ইন্দ্রহ লভে,সে এক দিন ভার এ এক দিন।

থাম্বাদ্ধ-একতালা॥ ২॥

ভারত ধর্ম মহামণ্ডলে, যোগ দান করি হিন্দু সকলে, মগ্ন প্রায় ধর্ম, ধারণ করি বালে, মুক্তি সাধন কর হুযুক্তি বিধানে।

ঘটেছে এককালে ধর্ম নিবন্ধন, জলধি মন্থন জলধি বন্ধন, স্থান্য করি তাই হে আখ্যা নন্দন, কার্য্য কর বিশ্বেশ্বর স্থান্য নি

বেদ প্রণিহিত ধর্ম স্থান, ভাগত সাতার ধর্ম মাত্র প্রাণ মাতৃ হত্যা আজ হইয়ে সন্তান, দেখিতেছ কোন্ প্রাণে;— স্থান্মে নিধন যদি হতে হয়, সেও ভাল, পরধর্মে বড় ভয়, সারকোনায়ধার্ম তথাজয় বিভিন্ন প্রিটিভ প্রাণে ধ্যা

বৈশ্বিদ্যালয়ের আয় ৩ ব্যাম। হ মাঘ ও ফার্ মৃষ্টি ভিকার মূল্য।	षुष:३२ <i>৯</i> ৮	क्षकालीन मान।
্ষ্টি ক্রাপ্ত করে ক্রান্থ হা প্রাপ্ত করে ক্রান্থ হা		111 413
" পঙ্গাদিনাথ মুনোপাধ্যায়ু বকিপুর 💎 🥕	\	জীশশীভূদণ বন্দ্যোপাধ্যার এজেন্ট কাশীধ্যে ১১
" চৈত্তনাচনণ দাস জীহট্ট ু ২ং		" अन्यालिका ७ वर्गश्री (मन्ता, कतिनध्र ८॥४०
" গুরুগোবিক মজুন্দার কাকি নিয়া 🔍	· · ·	ু হরিংমাহন মেন সিলচর কাছ ি ছ ় ,৫১
" হ্রলাল দাস গুপু ধ্বড়ি ৮৭/০	•	" মহিমচন্দ্ৰ বটক ৮ গোশীগ়াম
* ভুবন মোহ এ সেন আমিন্পুর ১/•		" एक विष्या गाँ गाँ । विष्यो ३०
* হরিদাস বল্লোপোগ্রায় বারাস্ত ১1/০		"জনৈক আলাৰ কুমার ৮ কাশীধাম 🔍
• * যজেখন মু:বাপখোল মিরটি	\ \	लेकिभिन निहाती तास क्वीनी ट्वेंसन '
🕶 जेगानहञ्च नाम यागानिया 🗐 हद्दे 💎 ३५४०		ं भत्रफ छ पः म भिज 🗳 . 🗸 •
"বিদেশর দেন ভাও পাটুরাগালী বাধরগঞ্জ ৬১		" গ্রহ লাল দাণ নিত্র ঐ
 শ্রাগী-জনাথ বিশ্ব:ম কলিকাত। ১১০ 	•	"स्तारत स्व भित्र भव। , , , ,
"৻ভালানাথমুগোপাধায় ব্যাঞ্জাড়হারুড়া ।∙		. " দীননাথ পাত্র রামপুরহাট 🕠 🕠 🕠 ১०
" কেদার নাথ [®] গোসামী বঁড়া জীরামপুর 🗷	\	শ গ্রানচেরণ মুখোপাবাবে ভবানিপুর ১
[*] হরিমে হন সেন সিলচর কাছাড় 🌼 🤏 ১১	`	ত কাশীবাস হইতে সাং পেয়ালী 💢
" কালীচন্দ্র ভটাচাব্য বিল্যাড়িয়। 🥏 🐉		প্রীঅপ্রিনী কুমার ঘোষ পাওুয়া নিছেট্ট ।/•
" হরিনারায়ণ <u>ুমু</u> গোপাণায় দাইবাট ৮১	,	" त्यातिन्म हत्स माग तानूहत था ध्रा
"পূৰ্তিকু মুখোপাধাধ বহ্নমান 🔭 । 🏕	40	" इनाहे भि र मिन्द्रती खें /·
" श्रीनाथ गतकात भाषा किनराष्ट्रा आर्र	•	" महातामयामामि विमाक्ष ने /-
" শুনোচরণ চট্টোপালটের 🗟 হট 🕒 🦠	٠.	
শ দান্যাগ পালে রাম্পুরহটে	. ७॥५५	261190 57434
" ক্যামাচরণ চক্তরভী গো কুলগালী	3.1	মাণিক রুতি ৷
" ভূপতি ভূষণ অধিকারী ওড়প " মধুসুকন দাস কলিতপ্যভূা গোয়া লপাড়া	b.	শীযুক্ত সহারাজ দারভঙ্গা মাহু ডিসেম্বর ২০১
" अयुप्तन पान नगण अवस्ता द्यासामा । एक " ज्यानम् वत्नता शायास नित्नान	e,	के के भारकाश्वाति २०।
* শ্রীনাথ দাস ফারাসগঞ্জ নোয়াখালী	8	
" ञेनानहस्य तारा मतारहत	8	ঞীবিপিনবিহারী রার চৌধা ফেঁশন 🗸 • 🗸
" কুঞ্নাথ সিংহরার নাকাসিপাড়া	ミルノ・	জ্রীনতী লবঙ্গরন্দরী দাসা কাকিনিয়া মাহ সাঘ > ১১
ত্তাকনাথ শৰ্মা ন্যাস্ত্ৰ গ্ৰী হট	321	८मर्गख्य नाथ पछ ८म अयान राष्ट्रगाताङ मार ८० मि € . •
" मनोज्ञा भत त्यायवाज्ञी निमित्त " कालोक्यात ताय जिल्ला हाकी	3/	বিশেষর মুখোপাধ্যায় কালীঘাট পৌৰ হহকে শাস্ত্রণ ১৫১
े किटमाती त्याहन माम खड़ाशूत क्लमाड़ि	3.1	TAPA AN MANAGEMENT AND
	1 4b1/30	8.4. 0.4.

জনা——(——————————————————————————————————	+oneiso-	ছাত্রাবাসের বায় মাছ মাঘ ১৬৫।১১৫ আগাড় পৌণ তক	रहेर्ड
ই ফাল্ভণ	٠٤١/٥٠	के काल अन	•
ি ু শিল্ড । এককাশীন সাহায্য মাহ মাৰ	3611d.	নিম্ন্তেণ নিম্ন্তেশী কর্মচারীর বেডন সাহ মাম	>>/
ঐ সাহ ফাল্ভণ	34:0	ঐ ফাল্ গুৰ	رھ
গাগিক ৰুতি নাহ মাঘ	8 . 4 .	ছ।প।ই ব্যয় নাম	•
के काम् ७१	٥٠٦٠	क्षे का मुख्य	*
	₹>91/>¢	নাশুল ব্য় যা ঘ ঐ ফা ল্ত ৰ	1•
न्यं रि: वेह्र्ड	७२२५/>•	কুদ্ৰ বায় সাৰ	4.
	€8.0€	के कान्धन	10/30
ধরচ		निगामात क्या क्या विषय एउन क्या गात्रना	२२ २०
चाठार्थागत्वत मिल्ला गार याच			-
के बार काल्छन	৩৯,	•	8 • Ja
ছাত্র ত্তি নাই মাব	38	ঞ্জী জাবালা মুখোণা	मा अ
चे कान् छव	2.1	(संशिक्षा	

.